

(Maha Granth)
'Vai Naam' Churhave Kaal Ki Phaans
'वे नाम' छुड़ावें काल की फांस

English - III
SECOND EDITION-2025
(All copy rights reserved)

दस वचन

1. सदा सच बोलना।
2. सतगुरु से प्रामर्श।
3. एक नारी, सदा ब्रह्मचारी।
4. नेकी की कमाई से निर्वाह।
5. जुए व चोरी से कोसों दूर।
6. शराब व नशों से सख्त परहेज।
7. मांस से सख्त परहेज।
8. जगत में सभी से प्रेम व मैत्री भाव (वासुदेव कुटुम्बकम्)।
9. मन माया से परे निज (हंसा रूप) को जानें।
10. ईच्छा रहित भक्ति।



(आत्मन कोष)

SATGURU SATNAM ASHRAM

15-GARDEN AVENUE, TALAB TILLO, JAMMU (INDIA) 180002

Mob: 9419284038, email: vainaamsurtidharajmu@gmail.com, Website: www.vainaamsurtidhara.org

vainaamsurtidhara

(Maha Granth)
'Vai Naam' Churhave Kaal Ki Phaans
'वे नाम' छुड़ावें काल की फांस
English - III

“सच्चे भक्त की पुकार, पूर्ण समर्पण व भक्त की भेंट
'सत्यपुरुष साहिब जी' के चरणों में”



(Fully Devoted to the Lotus Feet of Sant Osho Ji Maharaj
& Sant Madhu Paramhans Ji (Ranjhri Wale)

“सत्यपुरुष एक वृक्ष हैं, निरञ्जन उनके डाल,
तीन देव शाखें भई, पात फूल संसार”

‘वे नाम’ पास दो वस्तुएँ, सार नाम और सुरत नाम।
ब्रह्मण्ड में नहीं किसी पास, सुरति सब्द नाम।।
(दोनों दात सत्पुरुष जी द्वारा साहिब सत्गुरु
“वे नाम परमहंस जी को प्रदत्त की गईं)

साहिब सत्यपुरुष कृपा

आज प्रातः जब मैं ध्यान में बैठा था तो “साहिब सत्यपुरुष” जी से अंदर से प्रेरणा मिली, कि साधक उज्ज्वल जी के पास जाओ और उनकी बात का उन्हें उत्तर दो कि वो 99 प्रतिशत क्यों हैं जबकि साधक उज्ज्वल जी के अनुसार वो तो सतगुरु जी का हर आदेश मानते आये हैं और कभी भी उन्होंने किसी बात का उल्लंघन भी नहीं किया। फिर तुरन्त ही “सत्यपुरुष” आदेश अनुसार मैं ज्योति दृष्टांत तस्वीर को लेकर उन दोनों के कमरों की ओर गया। वहां वे दोनों और श्राविका जी भी उपस्थित थीं और प्रणाम ईत्यादि करने के उपरांत फिर मैं वहां से वापिस आ गया और श्राविका जी के सामने कुछ नहीं कहा। थोड़ी ही देर के बाद पुनः “सत्यपुरुष साहिब जी” के आदेश पर मैं दोनों के पास कमरे में पहुंचा। साधक उज्ज्वल जी ‘बड़े साहिब जी’ के संसारी रिश्ते में चचेरे भाई हैं। उन्होंने मुझे प्रणाम किया तो मैंने भी “बड़े साहिब जी” और उन्हें प्रणाम किया जो कि मेरी प्रतिदिन की दिनचर्या का हिस्सा है। प्रणाम करने के उपरांत साधक उज्ज्वल जी मुझ से पूछने लगे कि सतगुरु जी एक प्रार्थना है कि आप मुझे बतायें कि आप ने किसी समय कहा था कि बड़े साहिब जी 100 प्रतिशत हैं और मैं 99 प्रतिशत हूं, ऐसा क्यों है ? क्या मैंने कभी आपकी किसी बात का उल्लंघन किया है ? मैं तो आपकी हर आज्ञा भी मानता हूं, फिर एक प्रतिशत पीछे क्यों हूं ? वो एक प्रतिशत क्या कमी है ? मैं तो बड़े साहिब जी से ऊर्जा भी लेता हूं और आप से भी। इस पर मैंने मुस्कुरा के उत्तर दिया कि आप की जिज्ञासा के अनुरूप ही आज मैं आप की बात का उत्तर देने आया हूं, आज आप भी पूर्ण हो गये हैं तभी तो दौ बार आज मुझे “साहिब सत्यपुरुष जी” ने ज्योति दृष्टांत की तस्वीर के साथ आप के पास आने के लिये प्रेरित किया। उन्होंने आपको पूरी तरह से स्वीकार किया है। इस पर वे दोनों अति मोहिनी मुस्कुराहट लिये एक दूसरे को निहार रहे थे। आज “साहिब सत्यपुरुष जी” ने आप को भी 100 प्रतिशत कर दिया है। आज से मैं आप दोनों को दण्डवत प्रणाम किया करूंगा, और यह कहते हुये इस दास की आंखों में आंसु छलक रहे थे। फिर जैसे ही मैं साधक उज्ज्वल जी को प्रणाम करने लगा तो वे बोले कि पहले आप मुझे प्रणाम कर लेने दो। फिर मैंने उन्हें गले लगा लिया और उन्हें दण्डवत प्रणाम भी किया। देखा ! “सत्यपुरुष साहिब” हम्हें क्या-क्या सिखाते हैं कि हम्हें सभी को सदा आत्मिक रूप में ही देखना चाहिये और हमेशा कैसे झुक कर ही रहना चाहिये। आप ने आज मुझसे सब पा लिया। आप तो “साहिब सत्यपुरुष जी” की धरोहर हो मेरे पास अब। इतना कहकर मैं वहां से

वापिस चला आया। उन दोनों ने श्राविका जी को भी ये सब वृत्तान्त सुनाया। आज ना जानें क्यों मैं आत्म-विभौर होकर अति अति प्रसन्न हुआ हूँ कि अंदर तक गदगद हो गया हूँ कि कैसे इन दोनों को मालिक ने अपने आशीर्वाद से नवाज़ा, क्योंकि इन दोनों ने ही पिछले काफी समय से अपनी पढ़ाई के बावजूद भी संगत की और “सत्यपुरुष साहिब जी” की बड़ी सेवा की। ये जितने भी सत्संग आप तक पहुंच पा रहे हैं ये सब इन दोनों की सेवा ही है जो बिना कभी किसी हिचकिचाहट, किन्तु-परन्तु और विघ्न के तुरन्त ही सत्संगों को यू-ट्यूब पर डाल दिया करते हैं। अपनी इस सेवा को इन दोनों ने ही बड़ी श्रद्धा और पूरे समर्पण से निभाया है। इन दोनों के चरणों में मेरा बारम्बार प्रणाम है।

श्रद्धा से झुकना और पूर्ण समर्पण से अपने ‘सत्तगुरु’ की हर आज्ञा का पालन करना ही तो साधक का सच्चा काम है।

नोट : बड़े साहिब (सक्षम) जी” के विषय में और अधिक जानकारी के लिये ग्रंथ ‘वे नाम सुरति धारा – मौक्ष का भेद और ग्रंथ ‘सुरति निरती से सत्यलोक सफ़र’ अवश्य पढ़ें !

सतगुरु ‘वे नाम’ दास

INDEX PART - 1

S.No.	Topics	Pages
1	GRANTHON KI SOOCHI	1
2	SATGURU AAHWAN	2
3	PRASTAVNA	3
4	PREFACE (ENG.)	6
5	BHUMIKA	8
6	SURTI MESSAGE	9
7	WHAT IS "VAI NAAM SURTI DHARA"	10
8	WHO WE ARE	11
9	MOKSH NIMANTRAN	14
10	PURPOSE OF LIFE	17
11	BHAJAN	21
12	SATGURU SATNAM AASHRAM	23
13	SAAT POORAN SANT	26
14	SATPURUSH SANDESH	27
15	ATAM BANDHAN (KULF KUVARHA)	28
16	SURTI PRAVAH	29
17	हमारे अंदर छे: शरीर जिससे संसार बेख़बर रे U-tube SATSANG 1124 (17-3-25)	37
18	SATLOK PAHUNCHI AATMAYEIN	49
19	SANGAT KE BACHHON KI POORI ZIMMEWARI	60
20	SATGURU JI KE PRATI KRITIGYATA	63
21	SAADHAK AVINASH AUR SAADHIKA AASHU JI KI BETI GARIMA	64

INDEX PART - 2

S.No.	Topics	Pages
1	HOW TO BE FREE OF EGO-HOPE-FUTURE	65
2	KAAVYA - 1	70
3	WHEN WE WILL LIBERATED FROM DEMANDS	75
4	KAAVYA - 2	78
5	KAAVYA - 3	80
6	UNIVERSAL TRUTH LOVE & JOY	82
7	SURRENDER TOWARDS SATGURU OF TIME	83
8	KAAVYA - 4 (AMARLOK KIYATRA)	84
9	KAAVA - 5	85
10	UNLESS DOUBT - WISDOM IS IN DOUBT	86
11	KAAVYA - 6	87
12	KAAVYA - 7	88
13	KAAVYA - 8	89
14	LIFE IS JOURNEY OF DESIRES	91
15	SATYAGURU'S PLACE IN THE SOCIETY	91
16	LOVE	94
17	KAAVYA - 9	94
18	KAAVYA - 10	95
19	SEED IS BOUND TO GROW.....	95
20	KAAVYA - 11	98
21	FAITH	99
22	TRUE BHAKTI LEADS US TO TRUE MUKTI	102
23	KAAVYA - 12	103
24	PROBLEMS OF THE CHANGING WORLD	103
25	MISERY	106
26	KAAVYA - 13 ...SATGURU-SATPRUSH MAHIMA	106
27	KAAVYA - 14	107
28	OUR BODY & MIND REFLECTS WORLD & SURTI SUPREME CONSCIOUSNESS	109
29	MISERY & SURTI CONSCIOUSNESS	111
30	MIND AND MAYA	112
31	RELATION OF MIND & SURTI CONSC'NESS	113
32	NATURE OF CHILD IN THE WOMB	115
33	SUPREME CONSCIOUSNESS	116
34	SURTI CONCENTRATION	116

S.No.	Topics	Pages
35	PARA BHAKTI	119
36	PERMANENT MOKSH BY ALIVE HOLY NAAM	122
37	SAAR SABAD & SURAT SABAD	123
38	FREEDOM	131
39	HOW TO MODIFY OTHER'S BEHAVIOUR	135
40	PARAS SURTI'S EFFECT ON MIND & SURTI	140
41	THE KNOWLEDGE OF UNKNOWN	143
42	KAAVYA - 15	146
43	HOW TO MAKE CHILD SURTI CONSCIOUSNESS AT THE INFANCY STAGE	151
44	KAAVYA - 16	158
45	WHO REGULATES US & HOW ?	163
46	KAAVYA - 17	167
47	SERVE SATGURU TO HAVE BLESSINGS TO SERVE PEOPLE	170
48	KAAVYA - 18	172
49	VOICE A UNIQUE GIFT TO USE WELL IN TIME	174
50	CAUSE OF FEAR	174
51	FROM SEED	176
52	WHO IS TRUE SATGURU ?	177
53	KAAVYA - 19	178
54	SIX BODIES HUMAN BEING POSSESS	183
55	PERFECTION IS TRUE SPIRITUALISM	185
56	ROLE OF SURTI-NIRTI (PRANA) & BONDAGE OF MIND AND MAYA (BODY)	187
57	SATYA-SURTI-LOVE (ANAND)	189
58	FUTURE SHOCK	190
59	KAAVYA - 20	193
60	THE TEN PROMINENT ARTERIES / VEINS	194
61	MOOL SURTI	196
62	BASIC SOURCE OF SOUL SURTI	198
63	AMARLOK OF SUPREME CONSCIOUSNESS	198
64	SOUL, SOUL & SOUL ONLY	201
65	ETERNAL PRINCIPLES IN ALL FOUR YUGS	205
66	VOILENCE WITH VOILENCE ... OSHO JI	208
67	PERSONAL UNTOLD INCIDENT OF LIFE	209

S.No.	Topics	Pages
68	GURU NANAK'S ECO WISDOM	210
69	SATGURU NANAK JI... BY KULBIR KOUR	215
70	SATGURU NANAK JI... BY HARMINDER KOUR	217
71	TRUTH - LOVE & ILLUSION	219
72	LAW OF ATTRACTION	221
73	AS YOU SOW SO SHALL YOU REAP	222
74	RELATION OF SURTI & SUPREME CONSC.	225
75	SOUL SURTI - HANSA	226
76	KAAVYA-21	228
77	LOVE & SURTI CONSCIOUSNESS	229
78	THE SUBTLE EXPANSION UNIT - CHETNA TO SUPREME CONSCIOUSNESS	232
79	HOW TO BE SPIRITUAL	233
80	MIND - SURTI CONSCIOUSNESS	234
81	TO BE ONE WITH SUPREME CONSCIOUSNESS	235
82	POWER & VALUE OF "VAI NAAM SABAD" OF TRUE & REAL SATGURU OF THE TIME	237
83	KAAL NIRANJAN (SAYYAD) KE KAABU MEIN HAIN SAB JEEV BICHARE	240
84	KAAVYA-22	242
85	KNOWLEDGE OF SELF LEADS US TO OUR REAL ABODE	244
86	ANYBODY CAN BECOME ANGRY	246
87	KAAVYA-23	247
88	KAAVYA-24	249
89	KAAVYA-25	250
90	CONSCIOUSNESS IS ETERNAL	251
91	WHAT IS ULTIMATE SIDDHI	252
92	THE ULTIMATE GOAL OF MAHA NIRVANA	253
93	KAAVA-26	254
94	ALWAYS REMAIN IN SATGURU'S BELIEF	255
95	PRESENT - PAST AND FUTURE	256
96	HOW TO ATTAIN AWARENESS	259
97	SATGURU SANGAT LABH	263

सतगुरु ‘वे नाम’ परमहंस साहिब जी की सुरति से ओत—प्रोत
ग्रंथों की सूची

क्र:	ग्रंथों के नाम	प्रकाशन वर्ष
1	भजन संग्रह—1 (प्रथम पुस्तक)	2013
2	भजन संग्रह—2 अमर सुरति से भरे भजन	2015
3	भजन संग्रह—3 सतगुरु जी की अमर सुरति से भरे भजन	2017
4	भजन संग्रह—4 साधकों द्वारा श्रद्धा सुमन	2017
5	अमर सागर	2017
6	परमहंस सुरति महिमां	2019
7	“Secret Of Permament Liberation” (English) .. 1 “मोक्ष का भेद” ग्रंथ (अंग्रेज़ी में) पार्ट—1	2020
8	आनंद सागर	2022
9	गीता अमृत सार	2022
10	अल्प मुक्ति से पूर्ण मोक्ष	2022
11	अनुराग सागर	2022
12	वे नाम सुरति धारा	2022
13	“Surti Nirti Se Satlok Safar” (English) .. 2 “सुरति निरति से सतलोक सफ़र” (हिन्दी व अंग्रेज़ी ग्रंथ) पार्ट—2	2024
14	“Vai Naam Churhavein Kaal Ki Phaans” (English) .. 3 “वे नाम छुड़ावें काल की फांस” (हिन्दी व अंग्रेज़ी ग्रंथ) पार्ट—3	2025

अगामी प्रकाषित होने वाले ग्रंथ

- 1 सतगुरु जी द्वारा हिन्दी में लिखे जा रहे ग्रंथ लिखित प्रक्रिया में ।
- 2 सतगुरु जी के रुहानियत से ओत—प्रोत अनुभव और सफरनामों ।
- 3 सतगुरु जी की आभा से भजन नये रूपांतरण में ।

“Vai Naam Surti Dhara” “Nijdham Ke Santon Ko Samarpit”

सत्तगुरु आह्वान — BLESSINGS

**“Sahib Ji Aap Hi Aao, Aap Hi Likho, Aap Hi Likhao -
Aap Hi Sampooran Ho - Sarvagya Ho - Saamrthvaan Ho -
Aap Hi tou Karta Ho - Ham to Nimitt Bin Hain -
Keval Drishta Hi hain - Ham tou Saamrthheen Hain -
Hamara Saamrth Aap Bano”**

**“Param Poojniye ‘Santon Ke Sant’
Satguru ‘Vai Naam’ Paramhans Sahib Ke Shree Charnon
Mein Anant Koti Anginat Asankhya Baar Pranaam”**

काल भगवन के खेल से बचो, बचावनहार एको सतगुरु ‘वे नाम’

‘वे नाम सुरति धारा’

वर्तमान युग में साहिब सतपुरुष भक्ति धारा को संत शिरोमणि ‘वे नाम’ परमहंस जी निरंतर अपनी अमृतमयी वाणी प्रवचनों से प्रज्ज्वलित किये हुए हैं। उन्हीं के अमृतमयी प्रवचन श्रृंखला को ‘वे नाम’ सुरति धारा से जाना जाता है।

Very Very Important Note :--

Where-ever in the “Vai Naam Surti Dhara” - Hanso ka pyara Nijghar AMARLOK’ Granth, the word (i.e. ‘Vai Naam’) is written in single inverted comas represents only to Satguru ‘Vai Naam’ Paramhans Ji & the same word (i.e. “Vai Naam”) where-ever have been coated in double inverted comas represents to Supreme Power Sahib Satyapurush Ji’s “Videh Daat / Saar Sabad” & “Surat Sabad”.

—0—

प्रस्तावना

सत्तगुरु सत्यनाम सत्य साहिब जी – माईने गुरु (GUIDE) भी सत्य, उनका नाम भी सत्य और साहिब यानि हम सब जीवात्माओं (हंसों) के पिता (कुल मालिक) भी सत्य !

जी हां ! सत्य जो अजर-अमर-अविनाशी है, कभी ना मिटने वाला, अटल-अनंत, अपार जिसकी कोई सीमा तय नहीं कर सकता !

जबकि जिस संसार में हम सब जगत जीव अपना जीवन गुज़ार रहे हैं, वह तो नश्वर है, नष्ट हो जाने वाला ! भ्रम है, माया है, जो हम सब को भ्रान्तियों और रूढ़ीवादि विचार धाराओं से बांधे हुए है, और जिसे हम त्रिलोकि संसार और अन्य ब्रह्मण्डों के रूप में जानते हैं। इन तीन लोकों को रचने वाली कोई एक ताकत जिसे हम भगवान स्वरूप ना ना प्रकार के नामों से भजते पूजते हैं और जिज्ञासु भक्त जन इसी की ही कर्म प्रालब्ध बंधन व्यवस्था में अपनी-अपनी आस्थाओं के अनुसार आराधनाएं युगों-युगों से करते चले आ रहे हैं। परन्तु क्या हमने कभी अपने आप को जानने का प्रयास भी किया है कि हम आखिर हैं कौन ? कहां से आये हैं और वास्तव में कहां हमें मृत्यु उपरांत जाना है ? कभी भी क्या आत्म मंथन करके यह खोज करने का प्रयास किया है कि हमारी आत्मा का असली घर कहां है अर्थात् इसका केन्द्र कहां पे है और हम इस तीन लोक नगरी में अनजाने वश किस की कैद में युगों-युगों से झकड़े हुए हैं। क्या कभी भी ये विचार हमें असमझस में नहीं डालता कि कब तक आखिर हम इस अंतहीन आवागमन के चक्कर पे चक्कर काटते रहेंगे ? और कहीं अगर इस ओर हमारी जिज्ञासा बने ! तो हमें इसके निवारण के लिये कहां और किस के पास जान पड़ेगा ? कौन हमारा मार्ग प्रशस्थ कर सकता है और इस चौरासी चक्रव्यूह की कैद से छूटने के लिये कैसी-कैसी बाधाओं से हमें पार होना होगा ?

ऐसे उपरोक्त और अन्य कई प्रश्नों के उत्तर जानने के लिये और इस समस्या के निवारण के लिये हमें किसी ऐसे मार्गदर्शक की खोज करनी होगी जिसके पास इन सब प्रश्नों के उदाहरण सहित उत्तर उपलब्ध हों ! पर

गौर—तलब अर्थात् विचारनीय बात यह है कि क्या यह सब जानने की हमारे अंदर वो जिज्ञासा है, तड़प और लगन है और इसके लिये क्या हम कोई भी कीमत देने के लिये तैयार हैं ? और सब से महत्वपूर्ण कि जब हम अपने मार्गदर्शक, गुरु—सत्तगुरु अर्थात् पूर्ण सत्तगुरु के रूप में उन से रूबरू होकर उनकी शरणी में जाकर भरौसा भी कर लें, तो क्या अपने इस दुर्लभ, कष्टों और दुखों से भरी इस कैद से छूटने के लिये उनके प्रति पूर्णतया समर्पण होने को तैयार हैं ? और अगर आप का उत्तर ‘हाँ’ है तो आप बड़े ही भाग्यशाली हैं कि आप “पूर्ण सत्यगुरु — साधक — सत्यपुरुष” त्रिवेणि संगम तक अपने बड़े उच्चतम कर्मों के कारण मनुष्य जीवन के सर्वोच्च उद्देश्य की प्राप्ति ‘मोक्ष’ हेतु अग्रसर हैं, जिसके लिये आप बधाई के पात्र हैं ।

उपरोक्त इसी असली उद्देश्य की प्राप्ति हेतु समय—समय पर पूर्ण संत सत्यगुरु परमहंस बन कर सत्यलोक अर्थात् अमरपुर निजधाम से इस धरती पर आया करते हैं । संतों के संत ‘साहिब कबीर’ जी ही एक मात्र संत हम सभी हंसात्माओं अर्थात् जीवात्माओं के पिता ‘साहिब सत्यपुरुष’ (कुल मालिक) से ‘सार नाम’ की दात को लेकर आज से करीब 600 वर्ष पूर्व सभी जीज्ञासुओं के उद्धार के लिये इस धरा पर आये थे । उसके बाद आज के मौजूदा वक्त में संत सत्यगुरु ‘वे नाम’ परमहंस जी, साहिब ‘सत्यपुरुष’ जी से दौ बार ‘सार व सुरत’ दात पाकर मार्च 2012 से सभी जगत जीवों को चौरासी चक्रव्यूह से छुटकारा दिला कर सत्यलोक निजघर ले जाने को निरंतर प्रसासरत हैं । पूरे चारों लोकों में इस वक्त साहिब सत्यगुरु ‘वे नाम’ परमहंस जी का ही पहरा चल रहा है ।

साहिब ‘सत्यपुरुष’ जी के आदेश अनुसार सतगुरु ‘वे नाम’ परमहंस जी जगत के जीवों को जगाने के लिये अपनी मधुर अमृतमयी वाणी द्वारा पिछले तेरह वर्षों से हिन्दी और अंग्रेज़ी में निरंतर सत्संग और प्रवचनों की श्रृंखला समस्त संसार को प्रसाद के रूप में बांट रहे हैं जो अभी भी जारी है, ताकि सारा संसार इस प्रलोभन भरी माया नगरी त्रिलोकि के भ्रम जाल से मुक्त होकर अपने असली धाम निजघर सत्यलोक पहुंच पाये । इसके लिये उन्होंने ‘साहिब सत्यपुरुष जी’ की प्रेरणा और कृपा से अनेकों ग्रंथ (ग्रंथ सूचि देखें), हजारों अदभुत परन्तु साधारण भाषा में दोहे, आलोकिक काव्य और प्रेम और वैराग्य से ओत—प्रोत अति

भाव विभौर कर देने वाले भजन रच डाले, और अभी उनकी रूहानियत से भरपूर स्वयं के अनुभवों कलम रूकी नहीं है। वह अधिकांशता मौन रह कर अपना अधिकतम समय रोज़मर्रा की आश्रम की दिनचर्या के ईलावा लेखनी में ही व्यस्त रहते हैं और हर वक्त सुरति व सिमरण में रह कर सारे संसार का पहरा दे रहे हैं।

इसी कड़ी में एक और अदभुत ‘वे नाम सुरति धारा’ विचारधारा से ओत प्रोत अमृतमयी लेखनी भंडार ‘वे नाम छुड़ावे काल की फांस’ ग्रंथ साहिब सत्यगुरु परमहंस ‘वे नाम’ जी द्वारा रचा गया है, जिसका अध्ययन करके सभी जिज्ञासुजन सहज भक्ति मार्ग का ज्ञान और सुरति भेद जान कर और अपने जीवन में आत्मसात करके ये मनुष्य जीवन सार्थक कर सकते हैं। ये ग्रंथ भी पहले ग्रंथों की तरह निजधाम के संतों को और विशेष कर दौ महान संतों सत्यगुरु ‘मधु परमहंस जी’ और संत ‘औशो जी’ को समर्पित किया गया है। ये महान ग्रंथ सभी ‘हंसों’ द्वारा और सभी ‘हंसों’ और पाठकों के लिये ही लिखा गया है।

नोट : इस पूरे सहजभक्ति मार्ग और ‘वे नाम सुरति धारा’ की विचारधारा से ओत-प्रोत ग्रंथ रचने का उद्देश्य तभी पूरा हो सकता है जब हम पूरी श्रद्धा और समर्पणता से समय निकाल कर, **Preface** से लेकर, अन्य एक-एक प्रसंग जिसका ब्योरा ‘सूचि’ (index) में बड़े आसान स्वरूप में **page no.** और विषयों के साथ अंकित किया गया है, को ना सिर्फ पढ़ें, अपितु उसके भावों को आत्मसात भी करें, अपने जीवन में उन विचारों को डालकर जीवन सफल करें, स्वयं भी लाभ उठा कर औरों को भी इससे लाभांवित करें।

और अधिक जानकारी के लिये कृपा ‘वे नाम सुरति धारा’ यू-ट्यूब चैनल और ‘वे नाम सुरतिधारा’ वेब साईट को एक बार अवश्य जांचे परखें। किसी भी त्रुटि एवम सुझाव के लिये आप दिये गये **mobile no.** और हमारी **e-mail** पर भी संपर्क कर सकते हैं।

PREFACE

The foremost purpose of writing this greatest holy granth of ‘Supreme Consciousness’ of ‘Supreme Power Sahib Satyapurush Ji’ is to aware all the ‘Hansas’ of this cosmos about the hidden secret and real truth i.e. ‘Alive Holy Naam’, Surti-Nirti (pran) and ‘Sushmna Nerve’. What is the importance of breath in true spiritualism ? Human birth is why so important in spiritual journey ? Why the human birth has been given to us ? What are the impacts of baser elements of cosmos of the Kal Niranjan (Bhagwan / Mann) / Ek Onkar / Kaal Purush ... to whom we all call as Ishwar, Allah, God ?

Similarly how we (human-beings) are the segments of ‘Satyapurush Sahib Ji / Supreme Surti ? How we all can achieve our goal of life i.e. ‘Liberation from the clutches of Nirankar Bhagwan ? And what are the ways of Sant marg / Sehaj satya bhakti marg of true spiritualism ? How we can recognize the true spiritual master who possesses the immense power of ‘Chetan Surti’ to transform the Soul surti to Chetan surti and Supreme consciousness through ‘Satyaguru’ ‘Vai Naam’ of the time who has been bestowed the ‘Alive Holy Naam’/Saar Naam through the Surti of ‘Supreme consciousness / Sahib Satyapurush Ji’ of ‘Satyalok’ ?

What is the definition of ‘Satyalok & Trilok’ ? How ‘Satyaguru’ transform the Surti of his disciple / saddak & how one can visit the different loks through 6-bodies, the human being possess i.e. (Sthool, Sookshm, Astral, Subtle, Gyan dehi, Vigyan dehi) & how these human bodies can be obtained through worship ?

Through this greatest granth of the time you are going to get the complete information of ‘Kal Chakra’ along with its complete picture. How we can understand the basics of these 21 loks ?

As we all know through many wonderful religious epics and granths written by the great-great spiritual personalities of this cosmos about the philosophy and ideology of the Kal Niranjan / Ek Onkar / Nirakar Bhagwan. In spite of so many religions in which all the human beings seems to be involved in different ways of worships i.e. Sargun and Nirgun Bhaktis, no one is laying the complete focus on true and Universal religion i.e. humanity on the whole and more over about the ‘Hansas’ (Atma-Mann = Hansa / the purest form of Atma i.e. Hans-atma).

Every one is after the materialistic world and its belongings. It seems that human beings have forgotten completely about their true self and identity.

So this ‘unique holy granth’ “VAI NAAM CHURHAVE KAAL KI PHAANS” of the time has been written completely on the ‘holistic and spiritual experiences of Satguru ‘Vai Naam’ Paramhans Ji of the time and not on the basis of earlier granths and holy books.

“As per Satguru ‘Vai Naam’ Ji this Granth belongs to all the Hansas of this Universe. It has been written for all the Hansas and by all the Hansas. And the whole credit of writing this Granth goes to ‘Sant Osho Ji & Sant Madhu Paramhans Ji”.

One can have the brief knowledge of ‘Satya Bhakti’ through this granth, even the whole secret has been mentioned in the ‘Aartis’ of Sahib Ji. So not only read but study thoroughly the ideology of Satya Bhakti Marg / Sehaj Marg of the true Supreme Consciousness i.e. ‘Supreme Satypurush Ji’ of Satyalok / Sahib lok, so that the human goal of life may be achieved with the blessings of ‘Sahib Satguru ‘Vai Naam’ Paramhans Ji of the time.

भूमिका

“वे नाम परमहंस जी” कह रहे हैं, जो दात में जग जीवों को दे रहा हूँ, इसे सार सब्द के नाम से जाना जाता है । संतों ने इस दात को ‘सार सब्द’, अक्का सब्द, विदेह नाम व मूल नाम से भी सम्बोधित किया है । सतपुरुष जी ने दास के तीन बार निजधाम जाने के बाद पहला ‘सार सब्द’ सुरति से उत्पन्न व प्रदान किया । उनके दिए हुए सब्द से सर्वथा भिन्न है । दास की पहली निजधाम यात्रा के समय स्वयं सतपुरुष जी व चार महान् संतों, साहिब कबीर जी, बाबा नानक जी, साहिब रवि दास जी और संत मीरां बाई जी ने मुझ आत्मिक शरीर ‘हंसा’ को अत्यंत ऊर्जा प्रदान की ।

निजधाम पहुंचने पर पहला संदेश जो सतपुरुष जी ने दिया कि किसी को भी जग में बुरा मत कहना । इस बीच में लगातार साहिब सतपुरुष जी से सुरति सूं गोष्टियां होती रहीं जिनमें वो सतपुरुष सत्ता का ज्ञान और जीव आत्माओं को जगाने हेतु दास को प्रेरित करते रहे । दूसरे दिन प्रातः लगभग तीन बजे से कुछ पहले का समय था, सतपुरुष जी दास की कुटिया में प्रकट हुए और सुरति में ही पूछा कि क्या आप बुल्ले का कथन, “रब दा कि पाना, ऐदरूं पुटना ते इधर लाना” को समझते हो । मैंने बड़े श्रद्धा भाव—युक्त हो के सुरति में कहा, बाहर की दौड़ छोड़ के अंदर की ओर जाना ही अपने प्रियतम को पाना है । वह आनंदित मुद्रा में मन्द—मन्द मुस्कान लिए हुए सत्य ज्ञान समझाने उपरान्त अदृष्य हो गये ।

तीसरे दिन तीन बजने को कुछ समय बाकी था, अभी बस मैं उठने ही वाला था, तभी सतपुरुष जी कुटिया में प्रकट हुए, एक अदभुत प्रकाशमयी आभायुक्त रोशनी से सारी कुटिया ज्योतिर्मय हो गई । सतपुरुष जी आलोकिक प्रकाशमयी आभायुक्त सुरति सूं ‘सार सब्द’ उच्चारण करते हुए अदृष्य हो गये, यह सारी घटना दास के लेटे—लेटे जाग्रत अवस्था में ही घटी । उनके दर्शन उपरांत उसी पल में उठ बैठा, सुरति से इस ‘सार सब्द’ को ग्रहण किया । यह अदभुत और अनोखी अवर्णित घटना इस से पहले कभी नहीं घटी । ज्यादातर संतों के पास उनके सतगुरु का दिया हुआ ही “सब्द” होता है, सतपुरुष जी से सर्व प्रथम ‘सार सब्द’ साहिब कबीर जी को ही मिला था । इस दास को ही केवल दो बार ‘सार सब्द’ सीधे सतपुरुष जी से मिला ।

यह ग्रंथ सतपुरुष जी की देन है, उसी को ही कलमबद्ध किया गया है । सतपुरुष जी के द्वारा बार—बार प्रेरित करने पर तथा उन्हीं के आदेश से दास जग जीवों को जगाने और सत्यपुरुष सत्ता की महिमा का बखान कर रहा है । ये गद्दी भी शुरू करने का आदेश और प्रेरणा सत्यपुरुष जी ने ही प्रदान की ।

Surti Message

Dear all the Human Beings as well as Hans-atmas, We are not mere body, not Mann & Maya, even we are not Atma. Basically we are Hansas... non-perishable, immortal and possesses immense power within called ‘Chetan Satta’ & finally we all are part and parcel of ‘Sahib Satpurush Ji’ who is the only ‘Surti Punj’ complete in himself. And we all Human Beings/Hansas have emerged from that very ‘Surti Punj’ of ‘Sahib Satpurush Ji’ the ultimate ‘Supreme Power’. Only the ‘Satguru Paramhans’ of ‘Sehaj Satt Bhakti Marg’ could recognize that power amongst Jeevatma and named as ‘Hansatma’.

This unique alokik Granth containing huge divine material of ‘Sahib Satpurush Ji’ in it is fully devoted to all the Hansas/Human Beings which has been written for all the Hansas/Jeevas and written by all the Hansas only for the spiritual upliftment & complete Moksh of all the Jeevas/Hansatma. The only aim to write this Unique Alokik Granth is to make all the Jeevas/Hansatmas aware about the ideology of ‘Sehaj Satt Bhakti Marg’, so that they can liberate themselves from the Mann & Maya Mohini Jaal and clutches of Triloki Nath Kaal Niranjan Bhagwan Nirankar. This granth has been pendown the thoughts & sermons of Param Hansas through the Surti of Sahib Satguru Paramhans ‘Vai Naam Ji’ who has been bestowed with the ‘Paras Surti’ of ‘Sahib Satpurush Ji’ the ultimate Supreme Power in this Universe.

‘वे नाम’ कहे :-

प्यारो पाओ पूर्ण सतगुरु ओट, केवल वोहि तारनहार ।

यत्न प्रयत्न सूं कुछ ना होई, सतगुरु ही मोक्ष देवनहार ।।

--0--

“Vai Naam Surti Dhara” “Nijdham Ke Santon Ko Samarpit”

WHAT IS “VAI NAAM SURTI DHARA” ?

“Vai Naam” Surti Dhara is flowing for the welfare of Atma / Hansa on the ideology of Sehaj Satt Bhakti Marg since Mar 18, 2012 as it was emerged by Sant Shiromani Satguru Paramhans ‘Vai-Naam Ji’ who possesses immense power within himself through Surti Naam (Saar Daat / Videh Naam / Sanjeevan Naam) given by ‘Sahib Satpurush Ji’.

Sant Satguru Paramhans Ji is the only dignity through out the universe after Sant Kabir Ji who have been given the ‘Saar Naam’ Daat directly through the ultimate supreme power “ Sahib Satpurush Ji”. “Vai Naam” Surti Dhara is spreading the true spiritual messages of Sahib Satpurush Ji through the chetan surti of Satguru ‘Vai Naam’ Paramhans Sahib which can liberate the Jeevas/Atmas from the clutches of Kaal-purush the God of Trilok (Niranjan/Nirakar) and get them free from the endless cycle of deaths and births. i.e complete moksh. The person who does bhakti selflessly without any hope, demand and greed & follows all the ten (10) traits/principles of “Vai Naam” Surti Dhara, they are entitled for ‘Sehaj Satt Bhakti Marg’ to attain complete moksh.

The Ten Principles are as follows :-

- 1 Always speak the truth.**
- 2 Always seek guidance from Satyaguru (Internally).**
- 3 Ek Naari Sada Brahmchari.**
- 4 Refrain from taking Liquor & intoxicants of any kind.**
- 5 Don’t be slave of Mind and Body (Maya).**
- 6 Only earn right type of earning to run your family.**
- 7 Keep yourself away from theft and gambling.**
- 8 Refrain from consuming Meat etc.**
- 9 Follow the policy of universal religion of love & affection only. (Sanatan)**
- 10 Do Bhakti without any self interest.**

—0—

Who we are ?

The Supreme Satguru Paramhans of present time our worthy, almighty, respectable and unique Sampooran Sant Satguru “Paramhans ‘Vai-Naam Ji” and many other Sants of Nijdham have narrated the Supreme Power & Ultimate True God as ‘Sahib Satyapurush Ji’ who is beyond the jurisdiction of Kaal Jaal... i.e. Three Loks and resides in the Fourth Lok i.e. Nijdhaam/Satlok, from where all Hans Aatmans have come. As all religions, saints and granths are of the view that “God is One” but who is that one power who is the ultimate supreme power, only this thing is to understand and realised. As per Sehaj Satt Bhakti Marg the ultimate supreme power is only ‘Sahib Satyapurush Ji’ to whom we all should worship selflessly to get ‘Complete Moksh’ i.e. liberation from the endless cycle of deaths and births for ever.

Sant Satguru Paramhans ‘Vai-Naam Ji’ tells the people about ‘Satya Bhakti’ of ‘Sahib Satpurush Ji’ through his own experiences of ‘Sahib Saakshatkaar’. He never preaches his sermons based on the holy and religious books of earlier saints and religions, but fully tells about the ‘self experienced’ ‘Safarnaamas’ and ‘Saakshatkaars’ with the Saints of ‘Nijdhaam’ and ‘Satyapurush Ji’.

Every individual on this earth has a purpose of life. The purpose in general is to free himself from the bondage of life and death. This is possible when one rises above Karma theory. Karmas can only lead to fruits and can’t free us from the bondage of life and death which is true & real essence of life. Thus the purpose of life is to realise one’s essential being to discover the supreme self within and to attain spiritual enlightenment by the grace of spiritual Satguru who is already ‘enlightened’. ‘Surti’ plays a vital role in our body...

सुरति से देख सखी वह लोक, जहां से हम सब आये हैं ।
सत्य लोक सच्चा घर हंसों का, अमर लोक हमारा है ।।

We have come from Amarlok and are prisoners in this lok of Nirakar (Niranjan/Ek Onkar) where the philosophy of karma functions and you can't get true liberation in karma philosophy. You can be dog of the street or of a rich house even with all luxuries and benefits but can't be liberated from the bondage of karma. All living beings have an Atma, a soul that provides us the characteristic of a living being, without the soul the body is lifeless i.e. garment (Dress) of 'Soul'... "Hansatma has nothing to do with 'Karma Philosophy'? The soul is a break away fragment of super consciousness (Satyapurush, Sahib, Satnam, Parampursh Sahib). But here on this planet all souls are imprisoned by Kal Niranjan (God) Parmatma, who, due to karmic bonds is locked into a cycle of birth and death.

Try to understand ...

Who we are ?

From where we have come ?

Where we have to go ? and for what we have come ?

What is our true self (Nature)

Sahib Satguru Paramhans 'Vai-Naam Ji' is working on the ideology of 'Sant Matt' which was initially established by Sant samrat Satguru Kabir Sahib ji. He was the first to establish the sagacity, grace and importance of 'Sar Naam' (Satnam / Videh Naam / Sajeewan Naam / Alive Holy Name) which can neither be created nor destroyed and that can't be even written or spoken but can only be infused in Surti. It is also known as 'Para Bhakti'. The whole world is busy in worshiping God in their own ways, only the exception one, realized about the real secret of true worship of God (Satyapurush / Parampurush).

Kabir sahib was the first ever Saint (Sant) in this universe of spiritualism, who revealed the most important secret of Supreme Lord (Parampurush / Satpurush / Sahib). He established the third right mode of worship associated with 'Supreme Lord' which is known as 'Pra Bhakti (True Bhakti / Satya Bhakti) after Sargun and Nirgun Bhaktis of Nirankar / Mann / Kaal Jaal.

“Vai Naam Surti Dhara” “Nijdham Ke Santon Ko Samarpit”

“Vai Naam” Surti Dhara is throwing real and true knowledge before the world for spiritual elevation and obtaining permanent and everlasting bliss (salvation). Sant Satguru Paramhans ‘Vai-Naam Ji’ is giving all experiences undergone to establish truth before the human beings.

Sahib Ji has made very clear in the under line words :-

**“Kaag Palat Hansa Kar Deena,
Aisa Purush Naam Mohe Deena;
Akkah Naam Likha Na Jaaye, Parha Na Jaaye,
Bin Santan Koi Nahin Paaye”**

The Alive Holy Naam given by the ‘Supreme Lord’ to Satguru Paramhans ‘Vai-Naam Ji’ is a blessing in disguise in the whole Brahmand for the human beings for spiritual elevation, going back to real abode Satlok to attain permanent salvation and to be free from the bondage of life and death cycle. He blesses the devotees with ‘Paras Surti’ related to Supreme Lord. ‘It’ has the power to transform Soul to Hansa and enable it to reach the real abode ‘Amarlok’. Without true and real Satguru no body can be blessed with this ‘Sar Naam’ (Surti Sabad). Satguru gives real ‘Naam’ which is bodyless, not to be spoken or written, it can’t be recited by tongue. It can be received in ‘Surti’ through ‘Chetan Surti’ of Satguru Paramhans Ji.

**“Veh ghar ki sudhi koi na bataave,
Jahan se Hansa aaya hai”**

**जात हमारी ‘वे नाम’ है, मात पिता निर्लम्भ राम ।
गृह हमारा सतलोक है, सतगुरु सुरति विश्राम ।।**

**सत आनंद प्रेम समान, धर्म नांही कोये ।
चारों वेद नहीं जानत, सतपुरुष कहानियां ।।**

Moksh Nimantran

A COMPLETE SURTI MESSAGE TO ALL THE ‘HANSAS’ OF THIS PLANET / UNIVERSE

Dear Atamhans Jeevas, We all are the children of Sahib/Satprush Ji who possesses immense power of all kinds within himself. He is complete in all respects & supreme master of all the jeevas in this universe. He lives in all the jeevas and belongs to Satlok. We all living in this planet / triloki have been detached from Sahib Satpurush Ji since the creation of this universe / three loks / srishti and are grabbed very badly in the prison of Kal Niranjana / Kalpurush, the creator of this universe and continuously drowning deep and deep in the clutches of Kalpurush after being attracted and hypnotized by the lust & luxuries of Moh Maya jaal.

All the jeevas in this Triloki jagat are innocent and ignorant about the truth of Sahib Satpurush Ji. First of all only the Sant Shiromani Sahib Kabir Ji could know about the Truth of Sahib Satyapurush Ji but the Jeevas of this three Loks could not get much from him about the Supreme Lord. After him Sant Satguru ‘Vai Naam Paramhans Ji’ is the only complete Sant in all respect in this Universe / Planet who got the “Sar Naam” and “Surti Naam” daats in Surti in two different times directly from supreme power ‘Sahib Satyapurush Ji’ to his Paras Surti to get Jeevas liberate from the clutches of Kalpurush/Kal Niranjana and escort them to ‘Satlok/Nijdhaam’ which is the ultimate abode of all the jeevas in this planet.

As per the Sant Satguru ‘Vai Naam Paramhans Ji’ we all the Hansatmas/Jeevas were brought here only to play a match with Mind (Mann) and Maya (Body) and to get liberated permanently from the cycle of birth and death in this planet, but were misguided, deceived and misled by the forces of Kal Niranjana in the names of caste, colour, creed, sargun / nirgun bhaktis, needs, desires, lust, greed, emotions and moreover a solid karam pralabd bhandan jaal etc. etc. to have actual survival over here. Most of the Hansatmas are grabbed very badly through Moh Maya Jaal and they are striving very hard and worshipping so many different different God Goddesses, Isht etc since the formation of this Triloki according to their faith, belief, dedication, devotion etc. But inspite of all these they all are being deprived of Moksh till now. Our Atma is now considering itself as if it is also part and parcel of this Triloki and forgotten its original identity and abode permanently from where it has come. These all forms of worships takes the jeevas away actually from liberation i.e. moksh. That’s why we all the jeevas are being brought again and again in the endless cycle of birth

and death. But our actual aim is to find and realize the truth and achieve the ultimate goal of life i.e. Complete Moksh / Nirvana / Salvation.

Now, one question if we ask from ourselves, that for any above alike situation, Are we worried really about that ? Are we sure that the bhaktis which we are doing at present in different ways are sufficient enough to liberate us from Kaal Jaal ? and the ‘Moksh’ in which bhakti if it is available, should we not search and realise that option ? so that we may not waste yet another priceless human birth anymore which we get after so many difficulties. Simultaneously, we must also realise and check whether we are worshipping in different ways with self interest or selflessly and that too on blind faith or bhed chaal ? And finally whether we are serious actually and curious to know about the truth of Almighty Sahib Satyapurush Ji, the ultimate Supreme Power ?

For all such type of queries and their solutions help us to achieve our spiritual goal i.e. the complete moksh from true and real “Sant Satguru Paramhans” who comes time to time in all yugs. To continue this process “Sant Satguru Paramhans” of present times Sant Satguru ‘Vai Naam Paramhans Ji’ is devoting his time constantly and guiding all the jeevas/hansatmas spiritually to get them liberated from the endless cycle of birth and death since 2012 through his alokik, divya, sermons of his own spiritual experiences.

Inspite of the very tough, struggleful, simple but complete life style he is unique in his spiritual teachings through out the globe. And not only of this country, planet, globe, brahmand but across the Sun-Maha-Sun stage i.e. of Satlok/Amarpur/Begampur ‘he’ is unique and uncomparable. He has been bestowed the immense top spiritual power of Sahib Satpurush Ji. He is working on behalf of Sahib Satpurush Ji’ on this planet, as he possesses the ‘divine surti’ of Sahib Sat Purush Ji to liberate masses from the cycle of birth and death.

This all has become possible only through his more than fifty one years of Nirankar Bhakti where he got Nirankar Darshan first and later on was handed over by Kalpurush to Sahib Satpurush Ji on 18-03-2012 where too he got spiritually elevated within no time and got Sahib Satpurush Darshan along with all the powers with the purpose to get the shattered ‘Hansatmas’ liberated from the clutches of Kalpurush and escort them to their original home /abode Satlok / Nijdhaam / Begampur.

Since then Sant Satguru Paramhans Ji is regularly doing efforts selflessly for the spiritual upliftment of the Jeevatmas. So, any one who is

curious about the spiritual goal i.e. Permanent Moksh (Salvation/Nirvana) and ready to devote for the cause, we welcome them all to please come in the shelter of Sahib Satguru Paramhans Ji to have his divine Darshan and to move further for next course of action.

Basically, the teachings of Sahib Satyapurush Ji are all about to achieve the purpose of liberation i.e. to sacrifice the belongingness, affections and emotions (art of leaving) along with the art of effective and purposeful service to humanity at large. His teachings tells us : Who we are ? From where we have come? For what we have come ? & Where we have to go ? How this universe came into existence ? And finally, how the elimination happens, all the way to attain permanent salvation (Nirvana/Moksh).

“Vai Naam” Surti Dhara ideology has been emerged for the welfare of the masses in general and their spiritual upliftment, i.e. ‘Complete Moksh’ & many other materialistic economic issues are being taken care of selflessly under the complete control and command of Sant Satguru ‘Vai Naam Paramhans Ji’ & also to promote the cause of Satya Bhakti of Sehaj Marg / Bringa Matt / Para Bhakti of Satyapurush Sahib Ji.

.....Vai Naam Surti Dhara

चारों वेद जानत नाहिं, सतपुरुष साहिबन का भेद ।
जग में पूर्ण सतगुरु बिन, कौन बतावे निजघर भेद ।।

हंसा भ्रमण को आया सतलोक सूं, फंसा मन माया की लार ।
मन माया एको जानिये, सार नाम सूं उतरो भव पार ।।

इस जगत का सब से बड़ा प्यारो, पूर्ण सतगुरु का सत्संग जान रे ।
सत्संग छूत की बिमारी प्यारो, रोगी का संग करने से रोग लगता रे ।।

जानने का रोग ध्यान का रोग, पाना ही सच्ची भक्ति जान रे ।
सच्ची बात एक ही प्यारो, स्वास्थ्य संग स्वास्थ्य का रोग लग जाता रे ।

PURPOSE OF LIFE (v.v. imp.)

Every individual on this earth has a purpose of life. But in general the purpose of all the human beings should be to free themselves from the bondage of life and death which is possible when one rises above karma-theory. The karam philosphy is all because of ‘Mind’ in our body. The continuous cycle of birth and death is the outcome of ‘Kaal Niranjana’ (Mind). All the souls on this planet are imprisoned by ‘Kal Niranjana’ (God / Parmatma), which due to karmic bonds is locked into a cycle of births and deaths. The good and evil thoughts are being infused in every individual by ‘Mind’ in body and entraps soul to make it work according to his will.

So soul acts as a slave of ‘mind and body’ and never attains freedom from the clutches or bondage of ‘mind and body’ (Mann & Maya / Kaal Niranjana). Mind and body toss the soul though soul can’t be their part, but still it functions in an unawakened, unrealized person, under the will of mind. The body is only a shell that houses the soul.

Whereas pure ‘Soul’ lives for ever in ‘Amarlok’ (Satlok), the real home (abode) of every soul (Hansa). We have come from ‘Amarlok’ and are prisoner in this ‘Trilok’ where the philosophy of karma functions and one can’t get true liberation in this philosophy. Every individual in this mortal world is living an un religious and un-holy life. Our true religion lies within us and we are moving outwards. Our soul ‘God Almighty’ is in our every breath but, we are in search of him outside the body. Even ‘Vedas’ and other religious scriptures are silent about ‘Satyapurush’ and does’t give even an hint of ‘Him’.

The uplift of soul and its liberation from mind and body (Maya) is possible, when we have a contact with ‘True Satguru’, who is himself enlightened and has not only realised self but has become free from the bondage of birth and death. He is the complete ‘Satguru’ by whose very contact there flows the Supreme Bliss through his ‘Paras Surti’ (Sat Sabad / Saar Sabad). For every hurt or happiness one always feels thankful. Whatsoever happens, good or bad, makes an opportunity to

grow. Use that opportunity as spring board for something higher. A close relative dies, there is a pain, sorrow, anguish and misery, but use that opportunity to meditate on death and penetrate within to have a glimpse of real life purpose in this world. It is the body of five elements which get destroyed, but soul never dies.

We have to think about soul, how to spiritually elevate ourself to understand the true purpose to be human being and get permanent liberation from the endless cycle of life and death in this world. The ‘Soul’ is entrapped in the shackles of karmas whereas ‘Soul’ has no concern at all with any kind of karma philosophy, countless human beings are entangled in ‘Mind and Maya’ and find no way to liberate themselves from the clutches of ‘Kaal Niranjana’. This all is due to ignorance of human beings. They are not aware of true and real abode of ‘Hansa’ and its real father ‘Supreme Lord’ (Satprush). In the same way people are in search of true and real ‘Sant’ (Satguru) who can liberate human beings from the clutches of ‘Kaal Niranjana’. ‘Vai Naam Satguru’ has performed miracle to change human life and elevated every ‘Soul’ to attain permanent ‘Nirvana’ (Salvation / Moksh) through his ‘Paras Surti’ for attaining the real abode Satlok / Amarlok / Begampur to have communion of ‘Soul’ with ‘Supreme Super Soul’

Prior to this universe, we all were living in ‘Amarlok’ in the form of ‘Hansas’, swimming in the infinite ocean of ‘Amarlok’ like a fish in the ocean, in that world we were leading very happy and prosperous life along with ‘Supreme Lord’ (Sahib/Satprush Ji), who used to shower tremendous love and affection on us.

Those who have awakened spiritually, rising above physical reality, tell us that this world is nothing but an ‘illusion’ only. It is a passing show in grand scheme of creation. There are worlds upon worlds, plans upon plans within us. Who-so-ever is outside, all resides within us. ‘Satguru Sahib ji’ says to every soul of this universe that this lok belongs to ‘Kaalpurush/Nirankar’. The net of karma is spread all over in this universe. All souls are in the bondage of ‘Kaalpurush / Nirankar’ and there is no way to escape from his shackles and to get liberation. Only a true Real Master

(पूर्ण सतगुरु) can take anyone out of this chain of karmas. ‘Kaalpurush’ has entangled all the souls in the cycle of Eighty Four (84) lacs yonies. ‘He - himself’ resides in ‘Niranjan (Nirakar) Lok’, which is ‘jyoti-sarop’ all around the lok in the ‘Shunya’. ‘He’ watches everything, every happening in these three loks (त्रिलोकी) which have been created by ‘Him’ out of the five material elements (पंच-तत्त्व). All these five elements are in different, definite and fixed ratio’s. The life of the loks is ‘Eight Arabs, Sixty Four Crores Years’. ‘Four Arabs and Thirty Two Crores’ years make a day and of the same duration a night of ‘Kaalpurush’s Ahoratri’ (अहोरात्री night).

This world is like a beautiful and charming dream, don’t consider any one in this world as your own or of any use. This is a land of ‘Aliens’ and not of ‘Souls’ to live in. This world is like a paper-boat which is sure to drown in the sea of water. This world is like a dry hay, a spark of fire is sufficient to destroy the whole world with a twinkling of an eye. The musical notes, Devi Devtas, ‘Nirankar’ (God) are nothing but a dream ‘thoughts of imagination’ (illusion).

There is a need for every human being to awake, arise and understand that you are the grain of ‘Super Soul Supreme Lord’ (Satprush). “A ‘Super Power’ has been making its presence felt in us after we being blessed with ‘Saar Naam’(सार नाम) (Paras Surti / Alive Holy Naam / Mool Surti) from ‘True and Real Master’ (Satguru). ‘Mind and Maya’ disappears as if they were purly illusions and dust, cover on the surface of ‘Soul’ (Hansa / Atma). ‘Mann’ (Mind) itself is ‘Kaal Niranjan / Nirankar’ exists in every human being. When ‘Mind’ is subdued, all the sufferings of the body will also get eliminated as they are the root cause of ‘it’ “.

To get liberation from the cycle of Deaths & Births i.e. ‘Moksh’ means one may not come into the womb of mothers again & again in this universe, is the only aim of human beings actually, which has been totally forgotten by him and amalgamated with ‘Mann’ very badly and treating himself as part of this human body. Where as by

liberating ourselves from the clutches of ‘Kaal Bhagwan’, Ek Onkar, Nirankar Niranjan who is actually the fifth son of “Sahib Satpurush Ji” the ultimate supreme power who resides in Amarlok/Satlok; abode of all the hansatmas, we get rid off from the Karman Pralabd jaal of Triloki Nath Kal Niranjan and finally go to our permanent home of our Atma/Hansatmas i.e. Nijdham/Satlok to meet with our true father ‘Sahib Satpurush Ji’. And this all becomes possible only through the blessings of a complete master, guide, Satguru who has been blessed with the super power of ‘Sahib Satpurush Ji’ i.e. “Saar Daat/Vai Naam Daat” through the paras surti of Amarlok/Satlok.

At present the ‘Sant Satguru Paramhans Sahib ‘Vai Naam’ Ji is giving the same message of “Sahib Satyapurush Ji” to all the jeevas/human beings/hansatmas to get them liberated from the clutches of Kaal Niranjan so that they can reach Satlok/Nijghar the original abode of all the hansas. From March 18, 2012 onwards Satguru ‘Vai Naam’ Paramhans Sahib ji is continuously delivering the super spiritual messages of “Sahib Satyapurush Ji” among the general masses through out the universe. At present times he is only the complete ‘Saint’ of Satlok/Amarlok who have been blessed with the unique true “Vai Naam” daat (Surat Sabad & Saar Sabad) two times, first on March 18, 2012 and then on March 22, 2012 respectively through the Surti of “Sahib Satyapurush Ji” directly at Rehari Ashram (Tapo-Bhoomi of Satguru ‘Vai Naam’ Paramhans Sahib Ji). With this alokik unique daat Satguru Sahib ji is making the people aware about the ideology of “Vai Naam Surti Dhara” & the Sehaj Satt Bhakti Marg without any colour, caste and creed. He is working on the ideology of universal religion of all the jeevas/hansatmas (vasudev kutumbkam) and liberating themselves from ‘Mann/Maya’.

Satguru ‘Vai Naam’ Paramhans Sahib Ji is observing and watching presently very minutely and deeply the whole of this universe as well as other loks in this planet. He even guides Trilok Pati Kaal Niranjan the God of this universe if need arises so that every thing goes on smoothly. But in general he never interferes in the working of ‘Ek Onkar’ Kaal Bhagwan.

Sahib Satguru ‘Vai Naam’ Paramhans Ji says the Pooran Sants requires nothing except the selfless true love and devotion from their deciples. During Corona Epidemic period Satguru Sahib Ji stopped all the Sangat to visit Ashram for satsang almost one month advance before Corona Epidemic emerged in March 2020 at Ashram. Satguru Sahib Ji was doing regularly satsangs since March 2012. But after the emergence of

the Corona epidemic Satguru Sahib Ji started giving sermons on U-Tube Channel ‘Vai Naam Surti Dhara’ from April 12, 2020 onwards which are now continuously flowing really as “Vai Naam Surti Dhara” through the surti of Sahib Satguru Ji till date.

‘Sampooran Satguru of Nijdhaam’ Sant ‘Vai Naam’ Paramhans Ji is rendering his services to the masses to make people aware about the ‘Sehaj Bhakti Marg’, to liberate them from the chakravyuh of ‘Kaal-Jaal / Nirankar’, to educate the ‘Jigyasus’ (जिज्ञासु-जन) about the techniques and methods of spiritual elevation and also to give complete knowledge about ‘Mann, Maya and Body’. (मन, माया और शरीर).

—0—

भजन : ना लो सपने कहीं सपनों से नैया पार होती है

ना लो सपने – 2 कहीं सपनों से महं सागर पार होता है ।
कहीं मन माया में रहने से—पूर्ण मोक्ष दात मिलती है । ना लो सपने – 2

- 1 अंगारों में मिलावट है – यही दुखों का कारण है ।
हीरे समान बनना है – जो राख से दूर रहता है ।
इसी को सच्चा प्रेम तुम जानो – हर जीव सच में हंसा रूप प्यारा है ।
ना लो सपने –
- 2 मन माया जान लो कचरा – जो हंसा संग मन रूप लिपटा है ।
आशा तृष्णा धूल माटी है – जो हंसा को आत्म रूप देती है ।
हंसा को राख डकती है – जन्म मरन चक्र दे जाती है ।
ना लो सपने –
- 3 जीवन जिस को तुम कहते – वही तो राख की ढेरी है ।
आत्म मन मान में खोई – भगवन की पकड़ी लोई है ।
आप शून्य में हैं रहते – हंसों का बंधन वे ही हैं ।
ना लो सपने –
- 4 कचरे में भी हंसा जोत सुरति है – “वे नाम” सूं पहचान मिलती है ।
भरोसा विश्वास जगने से – निजघर की प्यास जगती है ।
सतगुरु प्रतिनिधि साहिबन के – सतपुरुष उन से ही प्रकटाते हैं ।
ना लो सपने –

- 5 जहां लग वाणी मुख मन सूँ – तहां तक काल का वासा है ।
महां शून्य पार अलख पुरुष सुरति लखे – तहां हंसों का देश सुरति है ।
हर तरंग में चेतन सुरति वासा – वहीं परमपुरुष का वासा है ।
ना लो सपने –
- 6 सतगुरु सुरति बिन कचरे के प्यारो – आदि नाम में सुरति स्वांसा का जब वासा ।
जब तलक अर्द ओ उर्द में नहीं सुरति – तब लग संदेह का संग वासा है ।
सतगुरु को पूर्ण सौँप दे मन, माया – विश्वास भरोसे का सुरति में हो वासा ।
ना लो सपने –
- 7 सुरति सब्द में रहने से – मन, माया से खेल खेला जाता है ।
मन चेतन हो जाता है – मूल सुरति में जा समाता है ।
सुष्मिना सम हो जाती है – ईंगला पिंगला बंद हो जाती है ।
ना लो सपने –
- 8 कुण्डलीनी सुष्मिना सूँ चेतन हो जाती है – निरति इसी सूँ दसवें द्वार आती है ।
सुरति निरति के मेल सूँ हंसात्मां (शुद्धात्मां) – सतगुरु संग वे द्वार प्रवेश करती है ।
सतपुरुष प्रकट हो जाते हैं – सौलहं सूर्य रोशनी दे निजघर ले जाते हैं ।
ना लो सपने –
- 9 सुरति का खेल तुम जानो – सतगुरु महिमां को पहचानो ।
पारस सुरति की महिमां न्यारी है – सुरति चेतन करने की महिमां को पहचानो ।
दुख सुख में भेद मत जानो – ‘वे नाम’ दात पाना ‘वे नाम’ सूँ जानो ।
ना लो सपने –
- 10 अक्षय पुरुष ईक पेड़ तुम जानो – निरंजन डार पहचानो ।
त्रिदेवा शाखायें तुम जानो – पात फूल संसार पहचानो ।
‘वे नाम’ पूर्ण मोक्ष दाता तुम जानो – निजधाम की महिमां को पहचानो ।
ना लो सपने –

ना लो सपने – 2 कहीं सपनों से महां सागर पार होता है ।

कहीं मन माया में रहने से—पूर्ण मोक्ष दात मिलती है । ना लो सपने – 2

—0—

1—सतगुरु सत्तनाम आश्रम 'सत्तपुरुष निवास' (मंदिर)

जगत में मुख और मन से मन रूपी देवी देवताओं की पूजा भक्तियां और अराधनाएं की जाती हैं, इसलिये जगत में पूजा स्थलों को मन-प्रतीक मंदिर कहा जाता है। सहज सत्त भक्ति मार्ग में मन रूपी ईष्ट व मन से परे का भक्ति मार्ग है। इस मार्ग में जीवात्मा शुद्ध होकर हंसा रूप धार कर अपने मूल परमपिता परमात्मा “साहिब सत्तपुरुष जी” में जा समाती है अर्थात् मोक्ष को पा जाती है।

साहिबन कुट्टिया एवं साहिबन हाल

सतगुरु 'वे नाम' परमहंस साहिब जी की वाणी अनुसार 'वे नाम' परमहंस जी की तपोस्थली रिहाड़ी आश्रम साहिबन कुट्टिया नाम से प्रसिद्धी पायेगा। साहिबन कुट्टिया रिहाड़ी में साहिब सतगुरु जी ने दोनों “सार नाम व सुरत सब्द” साहिबन सत्तपुरुष जी से सुरति सूँ ग्रहण किया तथा इसी साहिबन कुट्टिया में साहिब जी ने निजधाम के संतों के दर्शन पाये।

प्लॉट नः 264, रिहाड़ी कालोनी, जम्मू—180005

संपर्क करें :— 7006811151

Ashram Rehari “Sahiban Kutia”

In his Satsang Surti wani, Satguru 'Vai Naam' Paramhans Ji often tells us about the importance & value of Rehari Ashram which is said to be the 'Tapo-Bhoomi' of Satguru Sahib Ji where he was doing all his meditations and tapasya-saadhna and all other spiritual activities from the last so many years in his life. The value which this Rehari Tapo-Bhoomi of Sahib Satguru Ji possess is found no where else through out this planet because this is the only place where the Maalik of Chaar Loks “Sahib Satpurush Ji” along with other great Saints of Nijdham / Satlok / Amarlok / Begampur i.e Sant Baba Nanak Ji, Sant Sahib Kabir Ji, Sant Meeran Bhai and Sant Ravi Dass Ji has come to meet and bless the Sahib Satguru 'Vai Naam' Paramhans Ji after the receipt of “Surat Daat and Saar Daat” from “Sahib Satpurush Ji” himself in the same under

ground ‘Tapo-Bhoomi’. Even after four days of receipt of the supreme Saar Surti Daat from Sahib Satpurush Ji Lord Rama and Lord Krishna too came to meet ‘Sahib Satguru Paramhans Ji’ at this ‘Kutia’. Never before such type of incident has occurred on this planet before this. As per the wani of ‘Sahib Satguru Ji’, any one who will visit this Ashram with true faith and belief, full devotion, dedication and commitment will surely get rewarded for what is wishes & desires regarding devotion and love. And that desire of him will also not count in his karams. So we all must bow down at this ‘Tapo-Bhoomi’ as much as we can, to get maximum as far as true spiritualism is concerned. Whereas ‘Sahib Satguru Ji’ in general is not in favour of doing bhaktis with desires as far as true spiritualism is concerned. The person who does bhakti selflessly is more rewarded.

मांगन मरन समान है, मत मांगो कोई भीख ।

मांगन से मरना भला, यही संतन की सीख ।।

And when we are talking about ‘ashrams’, religious places, sthans etc. etc. we ourselves even after knowing the ideology of Sehaj Bhakti Marg i.e. ‘Vai Naam Surti Dhara’ from ‘Satguru Sahib Ji’, time and again get involved in the same discussions and statements of having our own ‘ashrams’ & ‘sthans’. According to Satguru Sahib Ji this whole universe is ashram for all of us, where-ever we sit with the ideology of ‘Vai Naam Surti Dhara’, that place is ashram itself. Even in spite of having already two great ashrams of “Sahib Satpurush Ji”, the actual importance and value is of that ‘Rehari Kutia’ only which is the ‘Tapo-Bhoomi’ of Satguru Sahib Ji where all the top spiritual dignities have come to meet and bless Satguru Sahib Paramhans ‘Vai Naam’ Ji. So we all must possess only love, preet, virah, tadap and devotion for ‘Sahib Satguru Paramhans Ji’ and bow in surti all the times at ‘Tapo-Bhoomi’ at ‘Rehari Kutia’ because even no other religious place in this whole universe possess such a supreme value which this ‘Tapo-Bhoomi’ of ‘Sahib Satguru Paramhans Ji’ has.

सब्द विदेह लिखा ना जाये, बोला ना जाये बताया ना जाये ।

उसे कोई किसी शास्त्र से प्यारो, कैसे जान सकता रे ।।

2—सत्तगुरु सत्यनाम आश्रम

15—गार्डन एवेन्यू, तालाब तिल्लो, जम्मू – 180002

इसी प्रकार से तालाब तिल्लो सत्संग आश्रम को ‘साहिबन हाल’ के नाम से जाना जायेगा। इन दोनों आश्रमों में “साहिब सत्यपुरुष” जी का सदा वास रहेगा। साहिब सत्यगुरु ‘वे नाम’ जी की वाणी अनुसार ‘साहिबन कुटिया और साहिबन हाल’ अपने नामों से जगत में प्रसिद्धि पायेंगे। इन दोनों आश्रमों को निजधाम के मंदिरों के नाम से भी युगों युगों तक जाना जायेगा।

Sant Satguru ‘Vai Naam’ Paramhans Sahib Ji says :-

“Sahib Satpurush” himself who is in every body as a soul surti Supreme Power also. “All this, which has been written is written only by all the “Hansas”, for all the “Hansas” and all its credit that too goes to all the “Hansas” of the universe.

Satguru ‘Vai Naam’ Paramhans Ji has remained successful in explaining the ‘Truth, Difference and Secret of ‘Sahib Satpurush Ji’ and ‘Bhagwan Nirankar’ to the masses since March 18, 2012 onwards. Since then regularly and constantly “Vai Naam Surti Dhara” is flowing like a river on this planet (Trilok) including the Satlok/Amarlok Nijghar Nijdhaam, abode of all the ‘Hansas’ as well and which will also continue to flow and flow till many many Qayamats to come...and for the welfare of all the Jag Jeevas and’ Hansas’ as well.

हजरत मुहम्मद को गांव-गांव से प्यारो, भगाया जान रे।

पर अब उन की पूजा करते प्यारो, प्रायश्चित पश्चाताप करते जान रे।।

सात पूर्ण संत

और दासों के दास संत 'वे नाम' परमहंस जी'

v.v.imp.

पूर्ण संतों का अर्थ है जो स्वयं भी सत्य हैं और सदैव सत्य का ही प्रचार प्रसार करते हैं और समस्त संसार को भी सत्य का ही मार्ग बता कर जीवों का कल्याण करते हैं, ऐसे संतों का आगमन कभी कभार ही इस धरा पर होता है। भाग्यशाली हैं वे जीव जो पूर्ण संतों के समय में ही ना सिर्फ इस धरा पर पैदा होते हैं अपितु उनकी शरण तक किसी भी प्रकार से पहुंच पाते हैं। अन्यथा समस्त जीवों को ना जाने कब तक इस आवागमण के चक्रव्यूह में पड़े रह कर ना-ना प्रकार की त्रिलोकि काल-जाल की भंयकर यात्नाओं व त्रासदियों से गुजरना पड़ता है।

सर्वप्रथम जैसा कि पहले भी कई बार इस भेद को उजागर किया गया है कि वर्तमान से करीब 600 वर्षों से भी पूर्व संतों के संत, शिरोमणि संत 'साहिब कबीर दास जी' ही एक मात्र संत इस धरा पर आये थे जिन्होंने इस संसार को सत्य भक्ति / परा भक्ति / बृहंगा मत्त / सहज मार्ग का भेद और विधी बताई। परन्तु भगवान काल निरंजन के कर्म प्रारब्ध बंधन इस व्यवस्था में अधिकांश जीव (मानव) इस भेद को समझ ही ना पाये और चौरासी आवागमण चक्र में ही उलझ कर रह गये, जबकि बहुत सारी ऐसी जीवात्माएँ (आत्मां – मन = हंसात्माएँ) भी हुई जो इसी समय काल में संत 'साहिब कबीर दास जी' के समकक्ष पहुंच कर उनसे सत्य ज्ञान (सार सब्द दात) को प्राप्त किया और अंततः अपने असली घर सत्यलोक / अमरपुर लोक पहुंच पाये, जहां के हम सभी हंसात्मा मूल निवासी हैं और 'साहिब सत्यपुरुष जी' हम सभी हंसों के असली पिता हैं। ऐसी सभी आत्माओं में से चंद विशेष आत्माएँ मुख्यता इस प्रकार से हैं :-

1	Sant Kabir Das Ji	संत परमहंस (साहिब कबीर जी)
2	Sant Sant Madhu Paramhans Ji	सत्यगुरु (मधु परमहंस जी)
3	Sant Paramhans Mira Ji	संत परमहंस (मीरा जी)
4	Mahan Paramhans Osho Ji	महान परमहंस (ओशो जी)
5	Sant Paramhans Baba Nanak Ji	संत परमहंस (बाबा नानक जी)
6	Sant Paramhans Ravi Das Ji	संत परमहंस (रविदास जी)
7	Sant Paramhans Bade Sahib Ji	संत परमहंस (बड़े साहिब जी)

और सब संतों के दासों के दास सतगुरु परमहंस 'वे नाम'

सत्यपुरुष—संदेश

हम सब एक परम पुरुष, साहिब के लोक से आये ।
हंसा रूप हमारा, सत्तलोक के वासी ।।
काल—जाल के वश में पड़ कर, भूल गये अविनाशी ।
यह है काल—जाल का फंदा, काटे कोई परमहंस प्यारा ।
सार—सब्द की सुरति देकर, सब को करे न्यारा ।
सुरति से हो आत्म चेतन, तभी कटे ये बंधन सारा ।
बंधन छूटे निजघर जाये, बन जाये हंस प्यारा ।
परमहंस की शरणी आकर, पावे परमपुरुष प्यारा ।
यही है परम मुक्ति पद, सार नाम रस सारा ।
पर कोई कोई ये पावे, सतगुरु का प्यारा ।
तू तो निजधाम सत्तलोक, बेगमपुर का वासी था ।
मूल सुरति रूप तेरा, हंसा रूप निराला ।
काल—जाल में आकर फंस गया, और फिरे बेहाल ।
तीन पाँच पच्चीस का पिंझरा, जहां पर पड़ा वश काल ।
चल हंसा सत्तलोक, छोड़ ये संसारा ।
मिल परमहंस सूं पाओ, हंसा रूप न्यारा ।
जहां जाये फिर ना आये, मुक्त देस हमारा ।
वो ही निजघर मुक्ति देस, बेगम पुर प्यारा ।
ग्याहरवें द्वार अष्टम चक्र से, जब हों प्राण निकास ।
सतगुरु संग परमपुरुष के लोक, पल में जा समाता ।
बहुरि ना भवसागर आता, सुरति में जा समाता ।
फिर वह मोती भौग लगाता, गर्भ कबहु ना आता ।
हंस बन हंसों के संग—संग, परमानंद पा जाता ।
हम सब एक परम पुरुष, साहिब के लोक से आये ।
हंसा रूप हमारा, सत्तलोक के हम वासी सारे ।।

संदेश वाहक

सतगुरु “वे हूँ परमहंस जी”

—0—

आत्म—बंधन (कुल्फ़ कवाड़ा)

औंकार का कुल्फ़ कवाड़ा, जीवों को लगता बड़ा प्यारा ।
यह भेद पूर्ण संत जानत हैं, होते जो साहिबन प्यारे ।
सुरति आत्म बंध पड़ी हृदय में, लाखों जन्म से प्यारो ।
आत्म परमात्म नहीं प्यारो, यह तो सतपुरुष का अंश प्यारा ।
सार सब्द है कुँझी कुल्फ़ की, पूर्ण संत इसका रखवारा ।
लाखों जन्म का बंधन टूटे, जब खुले कुल्फ़ कवाड़ा ।
मन औंकार काल निरंजन एको, जिस दियो कुल्फ़ कवाड़ा ।
सत्तपुरुष का अंश है आत्म, जाने पूर्ण सतगुरु प्यारा ।
जब कोई पाता दात पारस सुरति की, खुलता कुल्फ़ कवाड़ा ।
यह कार्य पूर्ण सतगुरु करता, होता जो साहिबन प्यारा ।
साधक को झुकना जब आता, पल में खुल जाता कुल्फ़ कवाड़ा ।
सुरति निरति मूल सब्द से, आत्म से बने हंसा प्यारी ।
आत्म के सब बंधन टूटे, साधक गुरु संग पावे निजघर प्यारा ।
अब टूटा औंकार का कुल्फ़ कवाड़ा, जब मिला सतगुरु प्यारा ।
ये भेद 'वे नाम जी' देते हैं, जिन पायो साहिबन प्यारा ।।
आत्म अंश साहिबन की, ताला औंकार का जाने संत प्यारा ।
ताला औंकार रूपी मन का, घट में बंध आत्म सुरति प्यारो ।
सार सब्द कुँझी ताले की, खोले कोई पूर्ण संत प्यारा ।
सुरति छूटे सब्द ईक करे निरति से, ऐसा सब्द हमारा ।
आत्म से सब्द करे हंसा, 'वे नाम सब्द' साहिबन प्यारा ।

—0—

सम्मान मिलता जग में प्यारो, महां योगी सिद्ध पुरुष कहलाता रे ।
सच्चे भक्तों को अपमान मिलता प्यारो, नकली पाते सब सम्मान रे ।

—0—

‘सुरति प्रवाह’

हे जीवात्म साथियो,

हम सब सतलोक से आये सतपुरुष जी के निज अंश हंसा हैं अर्थात् सतपुरुष जी (परमपुरुष, साहिब जी) ‘सत्त’, सतलोक ‘सत्त’ और हम सब हंसा भी उन्हीं के अंश होने से हम सभी भी ‘सत्त’ का ही रूप हैं। चाहे कुछ काल के लिए ही सही परन्तु हम सब मोहनी माया में लिप्त हो कर निज रूप (हंसा अर्थात् सत्त रूप) को भूलाए बैठे हैं। अंततः हम सब ‘सत्त’ से ही उपझे ‘सत्त’ रूप हैं और ‘सत्त’ में ही जा समाएंगे। जग में विरोध किसका और कैसे कर सकते हैं, हम सब तो ‘एक’ (साहिब सतपुरुष जी, परमपुरुष जी, साहिब जी, परमपिता, निरलम्भ राम जी) से ही आये अर्थात् मूलतः ‘सत्त’ से बिछड़े हम सब ‘सत्त’ ही हैं। माया में फंसा ‘सत्त’ रूप को भूला जीवात्मा साथी अगर कमजोर अवस्था (अहम व क्रोध वशिभूत) में है अर्थात् माया ही में उलझा है उसका भी विरोध कैसा ? वो तो हम सब के स्नेह व प्रेम का पात्र है, घृणा का पात्र कैसे हो सकता है। घृणा और कटाक्ष से किसी को उद्विग्न तो किया जा सकता है परन्तु उसका रूपांतरण कदापि नहीं हो सकता। स्नेह और प्रेम से तो किसी का भी रूपांतरण किया जा सकता है। जगत के सभी प्राणी ‘सत्त’ रूप होने से स्नेह के पात्र हैं फिर चाहे वे किसी भी अवस्था के क्यों ना हों।

“वे हूँ परमहंस जी” की वाणी अनुसार :-

“मैं” तो सब का दास हूँ मेरा नित्त काम संगत के लिए झाड़ू-पौचे करना, पानी भरना, संगत की धरियां बिछाना, उनकी चददरें धौना व उनकी आवभगत करना तथा सारी संगत की सेवा सबूरी करना है, मैं तो सतगुरु हूँ ही नहीं, ये मानता हूँ और सब की सेवा करना ही मेरा परम धर्म है, मैं ऐशो आराम करने के लिए इस धरा पर नहीं आया हूँ, यहां तक की छोटी से छोटी चीज़ जैसे कि मैं तो फटे हुए पौचे भी सुई से सिल कर बारम्बार प्रयोग में लाता हूँ तथा मेरे द्वारा प्रयोग में लाये हुये वे पौचे भी स्वच्छ व निर्मल रूप में दिखेंगे। मैं तो सब का दास ही हूँ क्योंकि जगत के हर प्राणी में “साहिब सतपुरुष जी” का अंश सुरति रूप में विद्यमान है।

संगत की सेवा ही मेरे “साहिब सतपुरुष जी” की सेवा है। “साहिब सतपुरुष जी” की सेवा के लिए मैंने अपना तन, मन व धन सभी कुछ त्यागा है तभी तो “सतपुरुष जी” दीन दयाल हुये और मुझ दास पर उन्होंने अति कृपा की कि मुझे अपने दास रूप में स्वीकारा। मेरे परमगुरु मधु परमहंस जी रांझड़ी वाले ने भी मुझ पे अति कृपा की है जिन्होंने अपनी शरण में मुझे केवल स्थान ही नहीं दिया अपितु अति कृपा करके सार-सब्द

की अनमोल दात भी प्रदान की। उन्हीं के स्नेह व कृपा से बहुत अल्प अवधि में ही पूर्ण साहिब सतपुरुष जी को उन्हीं के रूप में पाया।

हे जगत जीव आत्माओं, बिन सहज सतमार्ग के पूर्ण सतगुरु परमहंस जी की शरणी जाये कोई भी जीव मोक्ष पथ की ओर अग्रसित हो ही नहीं सकता। हे जगत जीवो – सहज सतमार्ग के पूर्ण सतगुरु परमहंस जी की शरण में आओ, ‘सत्त’ रूपी पूर्ण सतगुरु परमहंस जी की कृपा से निज ‘सत्त’ रूप को जानो और ‘सत्त’ (हंस) हो जाओ और पूर्ण ‘सत्त’ (सतपुरुष, परमपुरुष, सतलोक, निजधाम, बेगमपुर) में जा समाओ। बिन पूर्ण ‘सत्त’ हुऐ मन-माया रूपी आवागमण नहीं मिटता।

“जगत जीवों की रक्षा व कल्याण ही
मुझ ‘दास’ का एकमात्र परम ध्येय व लक्ष्य है”

जगत मे अधिकांशतः मानव किसी ना किसी की पूजा-अराधना जन्म-जन्मांतरों से करते चले आ रहे हैं। माना कि कुछ मानव मूर्ती पूजा (साकार रूप) व कुछ ऊँ, ओईम, ईक औंकार, खुदा, अल्लाह, ईश्वर व रब अथवा (निराकार रूप) मनन, हवन, ध्यान व पूजा करते आ रहे हैं। पर कोई तो कारण रहा कि सभी अपनी यथा शक्ति व सामर्थ्य से की गई पूजाओं, अराधनाओं व सज्जदों से भक्ति मार्ग से विमुख होते चले जा रहे हैं। मुख से जप, भजन, आरती, हवन, अजाने, मंत्र, आयतें, कलमें व श्लोक, मन से जप-तप, ध्यान भी हम्हें मोक्ष पथ पर अग्रसित नहीं होने देते। ये मन, मुख व जगत संसाधन, सभी के सभी माया रूप हैं अतः इनसे की जानी वाली भक्तियों के फलस्वरूप मिलने वाले भोग भी माया अर्थात् जगत में की जाने वाली भक्तियां, और भी माया में उलझा कर कभी मोक्ष की ओर जाने ही नहीं देती।

मन और मुख, शरीर व जगत संसाधनों से रहित भक्ति का भेद सहज सत्य मार्ग के पूर्ण संत सतगुरु ही दे सकते हैं। पवित्र पावन धर्म नगरी ‘जम्मू’ में सत सुरति से ओत-प्रोत अमृतमयी प्रवचन सुनने की बेला आई है।

प्यारी आत्माओं, हम सब ‘एक ही मालिक’ (सत्तपुरुष/साहिब) की संतान हैं जो सर्वशक्तिमान, सर्वोपरि, सर्वगुण संपूर्ण हैं। हर जीव में उनका वास है एवम् ‘सत्तलोक’ के वे स्वामी हैं। हम सभी उसी एक सर्वोपरि, सर्वशक्तिमान सत्ता से ना जाने कितने अनंत काल से बिछड़े हुऐ ‘भगवान काल निरंजन’ (सृष्टि अर्थात् त्रिलोकि माया नगरी के रचियता) की कैद में पड़े हैं और अति प्रलोभित और सम्मोहित कर देने वाली मोह-माया झकड़न अर्थात् बंदिश में बुरी तरह से ग्रस्त एवम् झकड़े हुऐ हैं।

v.v.imp.

जगत के जीव अन्जाने वश ‘सतपुरुष/साहिब जी’ की सहज सत्ता से अनभिज्ञ और अन्जान हैं, संत शिरोमणि ‘साहिब कबीर जी’ ने ही सर्वप्रथम “साहिब सतपुरुष जी” की सत्ता के रहस्य को जाना, परन्तु यह जगत उनकी महिमा को जान ना पाया। उनके उपरांत केवल आज के काल में सहज मार्ग सत्ता के संत सतगुरु “श्री वे नाम परमहंस जी” ही इस धरती पर एक मात्र ऐसे ‘संपूर्ण संत’ हैं जिन्हें “सार नाम” की दात सीधे सुरति द्वारा ‘साहिब सतपुरुष जी’ से ही मिली, जिससे वे जग जीवों को मोक्ष दिला कर अर्थात् ‘त्रिलोकि माया जाल’ की कैद से मुक्त करा के निजघर ‘सतलोक’ ले जा सकते हैं अतः जहां के हम मूल निवासी हैं। “परमश्रदेय सतगुरु परमहंस जी” की वाणी अनुसार इस संसार में तो हम हंसों (आत्माओं) को केवल भ्रमण कराने हेतु ही लाया गया था और फिर इसी मोहनी माया के मकड़ जाल में जात-पात, सर्गुण-निर्गुण भक्तियों, आशा-तृष्णा और स्वार्थ युक्त कर्मफल प्रालब्ध बंधन, हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध, ईत्यादि धर्मों में छल, बल व मोह पूर्वक भरमा कर उलझा दिया गया। जगत में अधिकांशतः मानव चिरकाल से किसी ना किसी की पूजा-अराधना तो जन्म-जन्मांतरों से करते चले आ रहे हैं, यथा-शक्ति, सामर्थ्य व आस्था-समर्पण से की गई भक्तियों के बावजूद अभी तक सभी मोक्ष से वंचित ही रहे हैं अर्थात् उपरोक्त सभी प्रकार की भक्तियां हमें मोक्ष पथ से तो दूर ही करती चली आ रही हैं। अतः तब से लेकर वर्तमान काल तक हम अपना निजघर भूले बैठे हैं और बारम्बार इस आवागमन चक्कर में बुरी तरह से ग्रस्त हुए फंसे हैं। हम सभी हंसात्माओं के लिए इसका मूल कारण जानना तो अति आवश्यक है।

अब केवल एक प्रश्न, जरा हम अपने आप से पूछें कि क्या हम ऐसी उपरोक्त किसी स्थिति के लिए चिंतित हैं? क्या हमें यह भरोसा है कि जहां कहीं भी हम चाहे किसी की भी भक्ति क्यों नहीं कर रहे हैं, क्या वहां से हमें मोक्ष मिलना संभव है? और जहां से मिलना संभव है, क्या वहां की खोज हमें नहीं करनी चाहिए? ताकि वहां पहुंच कर हम अपना ये दुर्लभ मानव जन्म का अवसर पुनः कहीं व्यर्थ खोने से बचा पाएँ? इसके साथ ही हम यह भी समझें, परखें कि कहीं भेड़ चाल की भांति, देखा-देखी में किसी ‘अंधविश्वास व आस्था’ में भ्रमित तो नहीं हुए पड़े हैं? अर्थात् वास्तव में क्या हमें अपने मूल परमपिता से जिन्हें सहज मार्ग के संपूर्ण संतों ने ‘साहिब सतपुरुष’ के नाम से संबोधित किया है उनसे मिलने की जिज्ञासा है?

ऐसे अनगिनत प्रश्नों के निवारण और जग जीवों के कल्याण के लिए ही हर युग में संपूर्ण संतों का आगमन होता रहा है अतः उसी क्रम में वर्तमान काल के पूर्ण संत “वे नाम परमहंस जी” पिछले 13 वर्षों से अपने आलोकिक अमृतमयी प्रवचनों की वर्षा जग जीवों के आध्यात्मिक उत्थान के लिए निरंतर किये जा रहे हैं, उसी कड़ी में सतगुरु परमहंस जी का “साहिब सतपुरुष जी” की सुरति से ओत-प्रोत अगले प्रवचन अर्थात् सत्संग यू-ट्यूब पर निरंतर आ रहे हैं।

अति गर्व का विषय आप सब जिज्ञासु जन आत्माओं के लिए इसलिए भी हैं कि ‘संत सतगुरु परमहंस जी’ ‘जम्मू’ से ही हैं अतः हमें इसलिए भी और गर्व होना चाहिए क्योंकि अपने साधा, साधारण व संपूर्ण परन्तु अति संघर्षमयी जीवन के बावजूद इस वक्त पूरे देश के ही नहीं, इस पृथ्वी के नहीं, ब्रह्माण्ड के भी नहीं अपितु ब्रह्माण्डों के ब्रह्माण्ड के सर्वोपरि आध्यात्मिक पद पर ‘वे’ आसीन हैं और अपनी 51 वर्षों की निस्वार्थ निरंकार भक्ति जिसमें सदैव आगे बढ़ते रहने की निरंतर जिज्ञासा के कारण ‘भगवान निरंकार’ से साक्षात्कार और पिछले तेरह वर्षों से भी अधिक समय से सहज सत मार्ग की भक्ति में भी ‘साहिब सतपुरुष साक्षात्कार’ के उपरांत जग जीवों का कल्याण करने के लिए ही ‘वे’ निरंतर व्यथित, चिंतित और प्रयासरत हैं।

अतः जो भी जिज्ञासु जन अपने मोक्ष के लिए व अपने जीवन के मूल लक्ष्य को पाने के लिए लालायित हैं उन सभी से हम करबद्ध निवेदन करते हैं कि आप सभी सह-परिवार, पड़ोसियों व अपने जानकारों सहित साहिब सतगुरु परमहंस जी के दर्शन कर के व उनके अमृतमयी प्रवचनों को श्रवण करके अपने जीवन को सार्थक व निहाल करें। साहिब सतगुरु “वे नाम परमहंस जी” के प्रवचन प्रमुखतः जीवन जीने की कला के साथ-साथ जीवन को बड़ी सफाई से तजने की कला (Art of Leaving), हम कौन हैं, कहां से आये हैं, अंततः कहां हमें जाना है और सृष्टि का पदार्पण क्यों और कैसे होता है ईत्यादि इन सभी बिन्दुओं पर केंद्रित रहते हैं।

‘सतगुरु सतनाम’ एक आध्यात्मिक पाठशाला है जो कि पिछले 13 वर्षों से निरंतर जग जीवों के मूल लक्ष्य ‘मोक्ष’ की प्राप्ति के साथ-साथ जीवन के अनेक पहलुओं पर निस्वार्थ भाव से कार्यरत है और साहिब सतगुरु “वे नाम परमहंस जी” के संरक्षण में सहज मार्ग की सत्त-भक्ति और ‘साहिब सतपुरुष जी’ के आशीर्वाद से आप सब की सेवा के लिए सदैव तत्पर एवम् प्रयासरत है।।

‘सतगुरु वे नाम’ कहते हैं :-

हम सभी हंसों (आत्माओं) के प्यारे परम पिता “साहिब सतपुरुष जी” जिन के हम सुरति अंश हैं के आशीर्वाद और कृपा से मुझे सत्संगों के माध्यम से आप सभी से रूबरू होने का प्रति दिन निरंतर अवसर प्राप्त होता है।

सदियों, युगों-युगों और अनगिनत समय काल से पूर्व जब सृष्टि रचने का भाव “साहिब सत्यपुरुष जी” के सुरति पुण्ड्र द्वारा पनप रहा होगा, और फिर इसे कैसे अमल में लाया गया होगा, ऐसे अनगिनत भाव हम सभी के अंदर भी पनपते रहते हैं, सदियों से ये जिज्ञासा हमारे अंदर एक कौतूहल पैदा करती रही है कि ये सृष्टि कैसे रची गई, क्यों रची गई और कौन इसके रचियता हैं अर्थात् इस सृष्टि रचना का मूल स्त्रोत्र क्या है ? जब कुछ

भी नहीं था तो क्या था आदि आदि ? इस सब का भेद अगर कोई समूचे संसार को दे पाया है तो वह केवल और केवल एकमात्र संपूर्ण संत परमहंस ‘साहिब कबीर जी’ ही हुऐ हैं जिन्हें “साहिब सतपुरुष जी” ने सर्वप्रथम अपनी सुरति ऊर्जा से ओत-प्रोत ‘सत्त दात’ देकर इस धरती पर जगत जीवों के कल्याण अर्थात् एक ओंकार कालपुरुष से पूर्ण मोक्ष दिलाने और अपने निजघर सतलोक वापिस ले जाने के लिये इस त्रिलोकि संसार जगत में भेजा था। उनके ईलावा इस समूचे जगत में जब से सृष्टियां बनी हैं इस दास (‘वे नाम’) के अतिरिक्त और कोई भी ऐसा नहीं है जिसे स्वयं “साहिब सतपुरुष जी” ने सुरति द्वारा सीधे ‘सार नाम दात’ और ‘सुरत सब्द दात’ दौ बार दी हो। और ये भेद समूचे जगत के समक्ष प्रकट करने के लिये दास “साहिब सतपुरुष जी” के आदेश अनुसार मार्च 2012 से निरंतर साहिब सतपुरुष जी की महिमां व सहज भक्ति मार्ग के पथ पर चल कर कैसे इस संसार से अपने निजघर सतलोक की वापिसी की जाये व त्रिलोकिनाथ कालपुरुष के मोह माया जाल से छुटकारा पाया जाये, इस पर अपने सुरति अमृत प्रवचनों के द्वारा ‘वे नाम सुरती धारा’ का प्रवाह बहाये जा रहा है जो अभी भी निरंतर जारी है।

और इस प्रयास में अभी तक दास की सुरति द्वारा साहिब सतपुरुष महिमां और उनकी प्रीत से ओत-प्रोत कई भजनों, काव्यों, आरतियों और अनगिनत दोहों से भरे ग्रंथ लिखे जा चुके हैं और साथ ही साथ इन सब की महिमां यू-ट्यूब चैनल ‘वे नाम सुरति धारा’ व दूसरे माध्यामों द्वारा भी गाई जा रही है जहां पर हजारों-हजारों प्रवचनों व गायन की श्रृंखला केवल और केवल ‘सहज भक्ति मार्ग’ पर चल कर ‘सत्त का भेद’ व सत्ता जो इस संसार में कहीं लुप्त हो गया सा प्रतीत हो रहा था उसे फिर से दास द्वारा “साहिब सतपुरुष जी” स्थापित कर रहे हैं क्योंकि सत्त की सत्ता को कौन मिटा सकता है ! इस उपलक्ष्य में दास द्वारा जो दोहों के रूप में साहिब वाणी गाई और लिखी जा रही है उसका बड़ा सुन्दर वर्णन सभी ग्रंथों में ‘वे नाम सुरति धारा’ के प्रवाह में समूचे जगत को प्राप्त हो रहा है। ये दास खुद कुछ भी नहीं लिख रहा, जो कुछ भी लिखा जा रहा है वह “मेरे साहिब सतपुरुष जी” ही की कृपा से हो रहा है उन्हीं का तदरूप बन कर दास इस संसार को जगाने की चेष्टा अंजाम दे रहा है, इसलिये मेरी वाणी मेरी ना होकर केवल और केवल हमारे प्यारे पिता साहिब सतपुरुष जी की ही है जो दोहों के रूप में मुझ दास द्वारा सब की ओर प्रवाहित हो रही है और कलमबद्ध हो रही है। सुरति और सत्य दात के संदेश से भरपूर ये दोहे उसी भेद को उजागर कर रहे हैं जिस भेद को पाकर कोई भी जिज्ञासुजन इस दुर्लभ मानस जीवन के एकमात्र लक्ष्य ‘पूर्ण मोक्ष’ को प्राप्त कर सकता है, कैसे और किस विधि से ये सब संभव हो पाता है आइये इस महान ग्रंथ ‘वे नाम सुरति धारा’ को आत्मसात करें, इस के भावार्थ को समझें और प्रतिदिन इन दोहों के अंदर छिपे रहस्यों को समझ कर अपने जीवन में उतार कर इस दुर्लभ जीवन को सार्थक करें और कालभगवन से छूटकर अपने पिता के पास वापिस निजघर अमरपुर लौट चलें।

इस जगत में हर जीव में आत्म का वास है, प्रायः सारा जगत ही मानता है आत्म निर्लेप दुख सुख से रहित अजर अमर अविनाशी है। जहां एक तरफ आत्म अजर अमर अविनाशी दुखों से परे है दूसरी ओर अगर देखें तो जगत में अधिकांश जीव आत्मायें दुखों व कष्ट क्लेशों से ग्रसित हैं। इन्सान इन दुखों से मुक्ति के लिये किसी ना किसी ईष्ट की पूजा किये जा रहा है, अन्जाने वश ये सारी पूजा भक्तियां उसे और भी उलझनों में उलझाये जा रही हैं। जिन जिन ईष्टों की वह साकार अथवा निराकार रूपों में भक्तियां किये जा रहा है वे सभी ईष्ट मन व माया रूप ही हैं। जहां मानव ये भक्तियां इन कष्टों से निजात पाने व अपने सुखों की प्राप्ति के लिये कर रहा है अन्जाने वश वहीं ये भक्तियां उसे तत्कालिक सुखों के एवज में और भी पतन की ओर ले जा रही हैं। अज्ञान वश संसारिक चकाचौंध के लौभ से प्रभावित हुआ मानव अपने आप को तन व त्रिलोकि का अंश ही समझ बैठा है जो उसके दुखों का मूल कारण है। जगत में एक ओर जहां अनगिनत गुरु सद्गुरु पथ प्रदर्शक स्वयं भी इन्हीं देवी देवताओं की भक्तियों में उलझे हुए हैं तथा दूसरी ओर अपने अनुयायियों को भी इसी में ही उलझाये जा रहे हैं। वर्तमान मानव का अपने आप (आत्म) को ना जानना ही उसका सबसे बड़ा भ्रम है, वह काया ना हो के उस चेतन सत्ता का स्वामी आत्मा (हंसात्मा) है। वर्तमान में मानव जिन ईष्टों की पूजा भक्तियां कर रहे हैं वह निराकार भगवन सर्गुण (देवी, देव व ईष्ट रूप) व निर्गुण (आकार रहित, अंतर्मुखि हो ओईम, अल्लाह, ईश्वर ईत्यादि) रूप में इन्हीं भक्तियों को ग्रहण करते हैं, तथा मानव जिन-जिन रूपों में उनकी भक्तियां करते हैं वह उन्हीं रूपों में प्रतक्षः व अप्रतक्षः रूपों में प्रकट होकर और दृढ़ करते हैं। निरंकार भगवन एक ओंकार इस त्रिलोकि के रचियता हैं तथा इसका संचालन भी सुचारु रूप से कर रहे हैं। जीवात्मा इस त्रिलोकि से परे चौथे लोक के स्वामी परमपिता परमात्मा (साहिब सत्तपुरुष जी) का निज अंश है। “साहिब सत्यपुरुष जी” अजर-अमर-अविनाशी आनंदमयी चेतन-सुरति-पुण्ड्र हैं। इसी कारण आत्मा परमपिता साहिब सत्यपुरुष जी का अंश होने से अजर अमर अविनाशी आनंदमयी चेतन सत्ता है, इस आत्मा की चेतनता व ऊर्जा से ही सारा जगत चलायेमान है। वहीं निराकार भगवान द्वारा रचित भौतिक त्रिलोकि जगत व मन निर्जीव हैं, ये त्रिलोकि और निराकार रूपी मन इस आत्म चेतन सुरति शक्ति से ही गतिशील व कार्यरत हैं। बिन आत्म सुरति ये त्रिलोकि संसार निर्जीव है जिसे कार्यशील व चलायेमान रखने के लिये ही ये सारा मोह माया प्रपंच रचा गया है जिससे पूर्ण चेतन सुरति से भरपूर आत्म अज्ञानतावश अपने स्वयं रूप को भुला हुआ अपने आप को इसी मोहनी त्रिलोकि का ही अंश तन व मन समझाकर बैठा रहे।

पांच तत्व काया रहस्य

पांच तत्व का बना शरीरा तां में आत्म देव समाया ।
ये सब ग्रंथ वेद भी हैं माया ।
भंवर गुफा मन तेरे अंदर पल पल तुम्हें जो है भरमाता ।
पर ये तो है केवल मन माया ।
मन माया तो एक है बिरला जाने कोए जो जन जाने इस भेद को ।
वो ही इस मन माया को त्यागे ।
मन रहते कोई पार ना पावे कोटिन जन्म जो ध्यान लगावे ।
पल पल तुम्हें भरमावे माया ।
कितने युगों से तप कर डाला घर छोड़ा, छोड़ी भीड़ बने सन्यासी ।
तब भी ना मन से पावत पारा ।
योगी जंगम सन्यासी और त्यागी सब पल पल गये भरमाए ।
मन की तरंग पल पल उलझाए ।
मन चीने कोई बिरला योगी जिसे पूर्ण संत ही भेद बताए ।
बिन संतन कभी ना पावत पारा ।
निरंकार पूजा ध्यान लगा कर मन माया कोई चीन ना पावे ।
पूर्ण सत्तगुरु सूं भेद ये पाए ।
काम क्रोध लोभ मोह ईर्ष्या द्वेष अहंकार मन के अंग सब तुझ में हैं आए ।
पर तूं मन के भेद को जान ना पाए ।
आत्म भी है कैद में मन के आत्म करे मन के कहे अनुसार ।
जग में सारे काम हैं करते ।
जो भी कार्य करो तुम जग में आत्म ना जाने अपना निज रूप ।
खुद को तन मान रही करती सब काम ।
हंसा तन और मन से मिल कर जीव में आत्म देव कहलाए ।
मन की आज्ञा से करती सब काम ।
निराकार की भक्ति करने वालों का पांच शब्द और पांच मुद्राओं का ।
सभी हैं करते इन्हीं का ध्यान ।
बाजीगर का बांदरा नाचे बाजीगर अनुसार ऐसे ही हंस जीव संग है मन नचा रहा
आत्म देव नाचे काल अनुसार ।
ना कुछ किया ना कर सके ना कुछ भी करने योग्य शरीरा ।
जो भी किया सो मन किया ।
मन लोभी मनसा लालची जे कोई या ते बचे उसे जानो साध ।
आत्म बल है जाके पासा सच्ची होश तांही के पासा ।।

साहिब सत्यगुरु ‘वे नाम’ परमहंस जी का संदेश आत्मसात करें

काल का जीव माने नहीं ‘मैं’ कौटिन करूं उपाये रे,
जिसको संसार भा गया, मैं कैसे जगावन का करूं उपाये रे,
खर अक्षर से पार है होना, निःअक्षर दात से उस पार रे,
सो तो मिलती सत्यगुरु सूं प्यारो, जिसका आर ना पार रे,
सीमा रहित ये दात है प्यारो, चौथे लोक अमरपुर से आई जान रे,
ताको कहते ‘सत्यपुरुष’ प्यारो, जहां से आत्म हंसा आई रे,
सत्यगुरु ‘वे नाम’ भेद हैं देते, तुम सुनो ना सुनो सब मैं उन पर छोड़ूं रे,
उनको सब सत्यपुरुष हैं कहते, औंकार भगवन (त्रिलोकि रचियता) भी
उनके अधीन रे,

ये सत्यपुरुष के पाँचवें बेटे, महांचेतन सुरति सूं प्रकटे जान रे,
‘वे नाम’ सत्यगुरु की बात सुनो ना सुनो, निजघर जाना बिन ‘वे नाम’ के
मत जान रे,

बड़े किस्मत वाले थे तुम जग में, सत्य की ना करि पहचान रे,
इसी में रहना इसी में खाना सोना जागना कार्य करना ना करना, सब इसी
में जान रे,

ये तो अमृत दात प्यारो, तुम पियो ना पियो, सब तुम पर दास छोड़े रे,
जो बात अंदर मेरी सुरति में आती प्यारो, अमृतधारा में बदलती जान रे,
जिसको झुकना आ गया प्यारो, सब कुछ ही वह पा गया रे,
यही सब कुछ जग में सीखा ‘वे नाम’ ने, उसी को देता बांटता जग में
जान रे,

धन्य भाग मेरे प्यारो, जिनको दास ने अपनी सुरति में बसाया रे,
तभी तो ये सब कुछ आया अंदर से, जिसको जग ने जाना रे,
तुम बूंद बनो तो सागर मिलता, फिर सागर में ही जा समाता रे,
अब भेद सारा मिट गया, कौन बूंद और कौन सागर रे,
ये काम यत्न से ना होई, सत्यगुरु कृपा पावे कोई कोई रे,
जो पाता पार हो जाता प्यारो, बिन पाये (कृपा) पार ना एक रे,
लाखों जन्म का खेल था, सत्यगुरु पल में दियो मिटाये रे।

सत्यगुरु ‘वे नाम दास’ परमहंस

छे: शरीर

हमारे अंदर छे: शरीर जिससे संसार बे—ख़बर रे

— 17.3.2025 (1124)

Satsang Youtube

प्यारे जीवात्माओं (हंसात्माओं) !

जैसा कि हम सब लगभग पिछले 13 वर्षों से सतगुरु परमहंस ‘वे नाम’ जी की वाणी द्वारा ये निरंतर सुनते आ रहे हैं कि हमारी पहचान ‘हंसा’ है जिसका केंद्र सत्यलोक है जहां के हम मूल निवासी हैं और सत्यपुरुष हमारे असली पिता, नांकि निराकार निरंजन ओंकार भगवन हम सब के पिता हैं, उन्होंने (ओंकार) तो हम्हें केवल ये पंच तत्वों से युक्त (काया) शरीर ही प्रदान किया है और अपने आप को उन्होंने हम सब जीवों के अंतःकरण में ‘मन’ रूप में स्थापित किया हुआ है, जहां से वे पूरी तरह से हम सब को अपनी ईच्छा अनुसार नियंत्रित कर रहे हैं। और यही एकमात्र ऐसा संदेश है जो परमहंस सतगुरु ‘वे नाम’ जी बार—बार हम सभी को अपने सत्संगों और ग्रंथों के माध्यम से बता रहे हैं और आज के इस सत्संग में भी वो पुनः एक बार एक ऐसे रहस्य (भेद) को उजागर कर रहे हैं जिसका हम सब जगत के जीवों पर अति गहरा सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है और हम सभी जगतवासी, विशेषकर ‘मनुष्य—जीवन’ को प्राप्त—जन इससे अत्यंत लाभ ले कर अपने इस जीवन को सार्थक कर सकते हैं और इस चौरासी महाकाल चक्रव्यूह से बचकर अपने असली घर निजधाम अर्थात् अमरलोक अपने असली पिता के घर जा सकते हैं, वर्णा ! कौन जाने फिर हम्हें ये मौका पुनः कब प्राप्त हो और हम उस भयंकर कष्टदायी मन माया के जाल में फंस कर अनंत काल तक भटकते व तड़पते रहें। आज का ये सत्संग सतगुरु जी के मुखारबिंद से एक बार पुनः अदभुत आध्यात्मिक जानकारीयां लेकर आया है जो उन्हीं की वाणी अनुसार निम्नलिखित है :—

तीन लोक प्रलय: तराई, चौथा लोक अमर है भाई ।

आत्मां ! जी हां, यह अजर है, अमर है और अविनाशी है। हमने तीन लोक में मन का चौला पहन लिया है और वही हम्हें नचाए ही जा रहा है, सारे का सारा संसार मन की भक्तियां ही तो कर रहा है। तीन लोक के गुरुआ जन केवल राह ही बता सकते हैं जबकि सहज सत्य भक्ति मार्ग के पूर्ण संत जीव को भवसागर से पार करा देते हैं। मैं, सच्ची दात ले के आया हूं इस धरती पर ! पार हो जाओ,

महांचेतना लोक में चले जाओ जिसे हम सत्यलोक कहते हैं जो कभी ना मिटने वाला है जबकि ये त्रिलोकि संसार तो नाषवाण है, मिटता और बनता रहता है। परन्तु तुम तो कभी ना मिटने वाली आत्मां (हंसा) हो ‘सत्यपुरुष साहिब जी’ का ही अंश हो। तुम इस संसार में आकर अपने मूल को भूल चुके हो, मन माया की इस लुभावनी भूल-भुलेंया में पड़ कर अपना अस्तित्व ही भूल चुके हो, इस संसार की चकाचौंध में अटक गये हो, तभी तो भटक गये हो ! बस इस माया नगरी में निराकार भगवन की “कर्म प्रालब्ध बंधन व्यवस्था” के अनुसार अपने लिये, अपने बच्चों के लिये, अपने माता-पिता व परिवार के कर्तव्यों को निभाने के लिये कर्मजाल में ग्रस्त, रच और बस गये हो। सच्ची राह तो कोई भी पकड़ने का प्रयास तक नहीं करता दिखता यहां।

मैं, परमहंस सतगुरु ‘वे नाम’ दास सबसे पहले आज एक अति प्यारा भजन “तूं है मेरा पिता तूं है मेरा पता” गाकर अपने आपको अपने पिता ‘सत्यपुरुष साहिब जी’ को समर्पित होता हूं। पूरे भाव विभौर होकर इस भजन के गाने से भूमिका बांध कर ही संगत की ओर मुखातिब होने में जो आनंद है वह और कहां ! पिता तो वो हमारे हैं पर वो सीधे पकड़े नहीं जा सकते, सतगुरु को माध्यम बनाना ही पड़ता है। अगर कोई निराकार निरंकार भगवन के दायरे में हो तो उन तक पहुंचने के लिये जैसे गुरु को पकड़ना आवश्यक है उसी प्रकार सहज सत्य भक्ति मार्ग में ‘सत्यपुरुष’ साहिब तक पहुंचने के लिये पूर्ण ‘सतगुरु’ की शरण में आना अति आवश्यक है।

बिन सतगुरु बात बने नाहि, कोई कौटिन करे उपाये।

अपने अंदर सतगुरु की चेतना उत्पन्न करो तो ही फिर किसी कार्य की ओर बड़ो, सिमरन में चले जाओ और अपने काम को करते जाओ, सारा कार्य ही सिमरन हो जायेगा। हर संगत वाला इस बात को सदैव याद रखे कि किसी की आर्थिक सहायता आदि भी सतगुरु से परामर्श किये बगैर ना करना, बड़ा अपराध हो जाता है। सतगुरु के बिना संसार के सारे काम अधूरे हैं इसलिये ‘मन’ से काम ना लेना, ये तो तुम्हें कल और कल की ओर ही ले जाता है, और यहां तक कि कभी भी औंकार भगवन से भी मत कुछ मांगना अन्यथा बंधन में पड़ जाओगे, और फिर उस बंधन से तुम्हें सिवाये पूर्ण सतगुरु परमहंस के कोई छुड़ा नहीं पायेगा। वही तुम्हें सच्ची राह दिखाकर तुम्हें मन माया के जाल से बाहर निकलने का रास्ता बताते हैं। “जीवित मरना भव जल तरना सिखाते हैं”

अभी कल ही मेरे पहले जीवन में जो मित्र रहे थे, दौ साथी अपने परिवार के साथ मुझसे रूहानियत के उद्देश्य से मिलने आये। वे मेरे मित्र थे, हैं और रहेंगे भी। उन्हें मौका मिला, मेरे पास आये, प्यार की बातें हुई, मेरे सामने सतगुरु समझ कर नतमस्तक भी हुये। प्रेम से मिले भी ! एक सेना में कर्नल पद पर से और दूसरे विश्वविद्यालय में कार्य करने के पश्चात सेवानिवृत्त हुये। जब उन्हें मेरे बारे में ज्ञात हुआ कि इस वक्त आध्यात्मिकता के किस शिखर पर मैं हूँ तो वे मेरे पास दीक्षा लेने के उद्देश्य से ही आये थे। पर मैं उन्हें दौ दिन बाद स्वयं ही उनके निवास स्थान पर जाकर दीक्षा देने जाऊँगा। मैं मान से नहीं अपितु पूर्णतः सत्यता से कह रहा हूँ कि मैं एक पूर्ण संत इस वक्त धरती पर, मालिक (सत्यपुरुष) का तदरूप बन कर ही आया हूँ। जो दात इस वक्त मेरे पास है वह समस्त ब्रह्मण्डों में किसी के पास नहीं, इससे पहले आज तक ये दात केवल संत कबीर साहिब जी के पास ही थी। परन्तु उनके बाद 600 वर्षों से भी अधिक समय उपरांत यह दास ही अकेला ऐसा इस धरती पर पूर्ण मालिक का रूप बन कर आया है और एक नहीं अपितु दौ बार सत्यपुरुष साहिब से ‘सार और सुरति’ विदेह दात सुरति द्वारा सीधे प्राप्त करने वाला ‘मैं’ एकमात्र पूर्ण संत हूँ, वर्तमान में जिसका पहरा अब संसार में चल रहा है। इससे पहले संत कबीर साहिब का पहरा था और वो अनेकों बार इस धरती पर आते-जाते रहे हैं पर मैं पहली बार सन् 2012 में मार्च के महीने से सत्यपुरुष साहिब जी के आदेश अनुसार जग जीवों को जगाने के लिये धरती पर आया हूँ, जिसके फलस्वरूप दास द्वारा सरल भाषा में लगभग 16 ग्रंथ, 12,500 से उपर दोहे, 300 से उपर लम्बे-लम्बे भजन और अनेकों सहज सुरति भक्ति से ओत-प्रोत काव्य लिखे जा चुके हैं, इस के साथ-साथ ‘वे नाम सुरति धारा’ वैबसाईट जिसमें यह सारा आध्यात्मिक साहित्य आ चुका है, उपलब्ध है। इतना ही नहीं इस दौरान दौ-ढाई घंटों से भी उपर के सत्संग जो आश्रम में किये जा चुके हैं हार्ड डिस्क में उपलब्ध हैं और कौरोना माहमारी के उपरांत जब आश्रम में स्वयं सतगुरु जी द्वारा ही सत्संगों पर रोक लगाई गई थी तो उसके उपरांत ‘वे नाम सुरति धारा’ के नाम से ही ‘यू ट्यूब चैनल’ पर 1,123 सत्संग इससे पहले और ये आज वाला 1,124वां सत्संग भी उपलब्ध हैं। जगत के जीवों को जगाने के लिये जो प्रेरणा निरंतर “सत्यपुरुष साहिब जी” सूँ प्राप्त की है उसका भरपूर और भरसक प्रयास करने में दास ने ऐड़ी चोटी का ज़ोर लगा दिया है, और कोई कसर

नहीं छोड़ी है अपनी तरफ़ से इस मनुष्य जीवन के अंदर लोगों को जगाने के लिये, ताकि सभी मनुष्य अपने इस जीवन का उद्देश्य पूरा कर के अपने असली पिता के पास निजघर वापिस जा सकें। इस दास की तो 51 वर्षों की प्रगाढ़ भक्ति के उपरांत तमाम देवी-देवों के लोक लुकांतरों, स्वर्गों व पित्र लोकों सहित अन्य कई रूहानियत से ओत-प्रोत यात्राएँ ये दात पाने से पहले ही हो चुकी थी, परन्तु फिर भी अंदर सच्च को पाने की उनकी अटूट लग्न और जिज्ञासा ने साक्षात ‘कालपुरुष निराकार भगवान’ (काल निरंजन) को पकड़ने के लिये गुहार लगाई जिसके फलस्वरूप ‘निराकार भगवान’ ने उन्हें अपने विराट सूर्य नुमा रूप में दर्शन देकर और फिर कई प्रलोभनों के लालच देने के उपरांत भी जब देखा कि अब इनमें संसार के प्रति कोई किसी भी प्रकार की ईच्छा शेष है ही नहीं तो इन्हें अपने ही मृत्त (हस्पताल में) हो चुके शरीर में पुनः वापिस भेज दिया। और फिर जब देखा कि इसकी तो कोई अब चाह ही नहीं रही, पूर्णतः सच्च की खोज में इनकी जिज्ञासा की परिकाष्ठा को देखते हुऐ अगले कुछ समय में फिर इन्हें अपने ही लोक सहस्त्रसार में अपने महल के इर्द-गिर्द चक्कर लगाकर परिक्रमा कराई और फिर महल के अंदर भी ले जाकर इन्हें कौरे पत्र से नवाज़ा, जिसकी इससे पहले जगत में जब से सृष्टि बनी है कोई मिसाल ही नहीं है, कि किसी को कौरा पत्र सौंपा गया हो। और बाद में काल भगवन ने स्वयं ही दास को पहले उस वक्त के सर्वश्रेष्ठ अवस्था के संत मधु परमहंस जी के पास जाने को प्रेरित किया जहां से उन्होंने दीक्षा दात ग्रहन करके अगले लगभग साढ़े पांच महीने के अंदर ही सत्यपुरुष जी से साक्षात्कार सतगुरु रूप में किया, और फिर उसके उपरांत स्वयं ही सत्यलोक के मालिक ‘सत्यपुरुष’ साहिब जी को सौंपा और फिर ‘सत्यपुरुष’ जी ने इस कौरे पत्र की महिमा बताते हुऐ समझाया कि इसका मतलब यह है कि तुम्हारा अब संसार से लेखा समाप्त हो चुका है और अब तुम गर्भ में कभी नहीं भेजे जाओगे, अर्थात् तुम्हारा अब सदा के लिये आवागमण से छुटकारा हो गया है।

यह सारा खेल ‘सत्यपुरुष’ जी का ही तो था। और तभी से ‘मैं’ (सतगुरु ‘वे नाम’ दास) आप सब की सेवा में एक सेवा दार बन कर ही अपना जीवन काट रहा हूँ।

औंकार भगवन चार मुक्तियां स्वर्ग ईत्यादि तो दे सकते हैं जहां कर्म फल समाप्त होने पर पुनः चौरासी में लौटना ही पड़ता है अर्थात् वहां केवल भौग योनियां ही हैं कोई कर्म आदि नहीं कर सकते, परन्तु पूर्ण मोक्ष भी नहीं दे सकते।

‘सतगुरु में समाना है पार हो जाना है’

मनुष्य जीवन में जीवात्म को छः शरीरों से नवाजा गया है :- जैसे स्थूल, सूक्ष्म, कारण (तुरिया), महाकारण (तुरियातीत), ज्ञानदेई और विज्ञानदेई ! इसके साथ-साथ ‘यथा पिण्डे तथा ब्रह्मण्डे’ आधार पर देखें तो इस मानव शरीर के अंदर सात चक्र भी स्थापित किये गये हैं। पाताल लोक (धरती), सुन्न लोक व महासुन्न लोक विस्तार को भी 21 लोकों (7 पाताल, 7 सुन्न और 7 महासुन्न) में बांटा गया है।

महाकाल चक्र : निरंकार का एक दिन और एक रात की अवधि आठ अरब और चौंसठ करोड़ वर्ष काल की होती है जिसमें आधा दिन चार अरब बत्तीस करोड़ वर्षों का होता है और इतने ही समय की रात होती है। इस पूरे काल चक्र को यदि हम प्रारम्भ से देखें तो 4 अरब 32 करोड़ वर्ष की अहोरात्री उपरांत जहां सभी कुछ सुन्न ही में समाया होता है, पुनः सृजन काल पंच तत्त्वों के क्रिया काल से प्रारम्भ होता है जो लगभग 150 करोड़ वर्षों की अवधि का होता है, तत्पश्चात् 135 करोड़ वर्षों का धमक काल, 92 करोड़ वर्षों का हिम युग और 50 करोड़ वर्षों तक का समय सृजन काल माना जाता है, यह अनादि काल की अवधि आगे सभ्यता काल की ओर अग्रसर होती है जिसमें 4 करोड़ वर्षों का वनस्पति जीव जन्तु काल, 57 लाख 26 हजार वर्षों का आदि युग और इसके उपरांत सत्तयुग, त्रेता युग, द्वापर युग और कलयुग जो क्रमशः 17 लाख 58 हजार वर्ष, 12 लाख 16 हजार वर्ष, 8 लाख 68 हजार वर्ष और 4 लाख 32 हजार वर्ष के होते हैं, इन्हें कुल मिलाकर 4 अरब 32 करोड़ वर्ष का अनादि और सभ्यता काल कहते हैं।

इसी प्रकार अगर हम मानव जीवन के अंदर की काल भगवन की रचना और पूरी त्रिलोकि की रचना को देखें तो हम पाते हैं कि मनुष्य देह वास्तव में तीन-पाँच-पच्चीस का एक ऐसा पिंझरा है जिससे जीवात्म का बच पाना अति कठिन सा प्रतीत होता है, यह एक ऐसा चक्रव्यूह रच दिया गया है जिससे जीवात्मा पूर्णतः इसमें भ्रमित होकर ही रहे। निरंकार भगवान काल निरंजन की ये विशाल सेना जो तीन (3) गुणों रज, तम और सत्त, पाँच (5) प्रवृत्तियां काम, क्रोध, लौभ, मोह और अहंकार व पच्चीस (25) स्थूल व सूक्ष्म, कर्म और ज्ञान

महांकाल कालचक्र

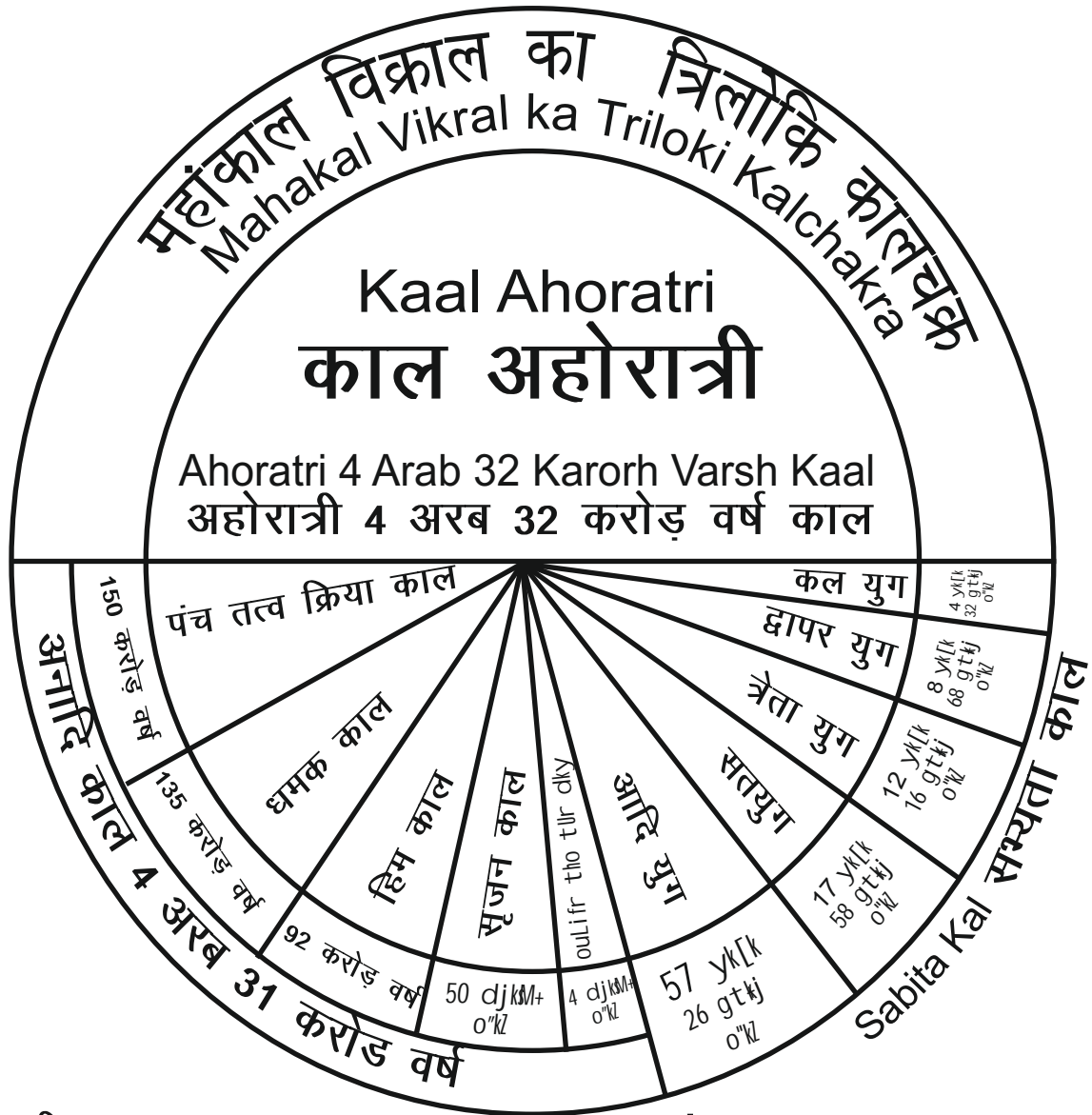
Mahakaal Kaal Chakra

निरंकार का एक दिन और रात

Nirankar Ka Ek Din Aur Raat

आठ अरब चौसठ करोड़ वर्ष

Aath Arab Chounsath Karorh Varsh



अनादि काल

Anaadi Kaal

संरचना युग

Sanrachna Yug

1. पंच तत्व क्रिया काल

Panch Tattav Kriya Kaal

1. आदि युग

Aadi Yug

2. धमक काल

Dhamak Kaal

2. सत युग

Sat Yug

3. हिम काल

Him Kaal

3. त्रेता युग

Treta Yug

4. सृजन काल

Srijan Kaal

4. द्वापर युग

Dwapar Yug

5- ouLifr tho tLr dky

Vanaspati Jeev Jant Kaal

5. कल युग

Kal Yug

इन्द्रियों सहित स्वयं ओंकार भगवन भी ‘मन’ स्वरूप में मनुष्य के अंदर हर पल इस प्रकार से विद्यमान हैं कि जीवात्मां चाह कर भी अपने आप को इस पिंझरे से मुक्त नहीं करा सकती । और ‘मन’ यानि स्वयं ओंकार भगवन और ‘माया’ अर्थात् आद्यशक्ति का ये प्रलोभन और भ्रम से भरा यह माया—जाल जीवात्मां को निरंतर इस सृष्टि को चलायेमान रखने के लिये इस आत्मां की चेतन शक्ति का प्रयोग कर रहा है, आत्म की इस चेतन शक्ति के बिना ये संसार चल ही नहीं सकता, इसीलिये निरंकार भगवान कभी भी जीवात्मां को अपने इस त्रिलोकि जाल से मुक्त होने नहीं देते और हर संभव प्रयत्न करते हैं जिससे कि आत्मां कभी भी इनकी कैद से छूट ना पाये ।

(नोट:—) इन सब की विस्तृत जानकारी के लिये हमारा ग्रंथ
“मोक्ष का भेद अर्थात् **Secret of Liberation**” part 1 जरूर पढ़ें ।

अंतिम यात्रा का भेद :—

अंत काल जब जीव का आवे यथा कर्म वह देहि पावे !

- 1 गुद्धा द्वार से जीव जब जाता है तो वह नर्क योनि में वासा पाता है ।
- 2 मुला द्वार से जीव जब जाता है तो वह जलचर योनि में वासा पाता है ।
- 3 मुख द्वार से जीव जब जाता है वह अन्न खानी में वासा पाता है ।
- 4 श्वांसा द्वार से जीव जब जाता है वह अण्डज खानी में वासा पाता है ।
- 5 नेत्र द्वार से जीव जब जाता है वह मक्खी मच्छर आदि योनि पाता है ।
- 6 श्रवण द्वार से जीव जब जाता है तो वह प्रेत योनि में वासा पाता है ।
- 7 दशम द्वार से जीव जब जाता है तो वह स्वर्ग लोक में जाता है और राजा हो के जग में आता है — (राजों नर्क नको राज) ।
- 8 ग्याहरवे द्वार से जीव जब जाता है फिर वह इस भव सागर में नहीं आता है और गर्भ में कभी नहीं आता ।

इसलिये :—

‘वे नाम’ कहें प्यारो ग्याहरवे द्वार का भेद सुरत कमल में रहता,
बिन पूर्ण संत कोई भेद ना पाता, पूर्ण संत जो साहिब को पाता,
वही सार—सब्द का भेद है पाता, सार—सब्द है सत्यपुरुष का वासा ।

इसी तरह हमारा शरीर पांच तत्वों 1. पृथ्वी, 2. अग्नि, 3. जल, 4. वायु और 5. आकाश (सुन्न) से बना है। ये पांचों तत्व जो ब्रह्माण्ड में मौजूद हैं ये सब मानव शरीर के अंदर भी पाये जाते हैं।

1. एक तत्व से युक्त शरीर धारी जलचर जीव होते हैं।
2. दाना—चारा खानी इत्यादि में पैदा होने और उड़ने वाले कीट—पतंगे दौ तत्वों से युक्त होते हैं।
3. अण्डों से पैदा होने वाले पक्षी आदि तीन तत्वों से युक्त होते हैं।
4. पशु आदि चार तत्वों से युक्त होते हैं। और
5. पंच तत्वों से युक्त केवल मनुष्य योनि ही होती है।

इस पूरी प्रक्रिया को हम ‘यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे’ चित्र के माध्यम से भलि भांति समझ सकते हैं कि हमारे शरीर के अंदर पंच तत्वों के ईलावा त्रिलोकि की संरचना के अनुकूल ही 21 लोक विस्तार सात पाताल लोक, सात सुन्न और सात महान्सुन्न लोक और आठ चक्रों मूलाधार चक्र, स्वाधिष्ठान चक्र, मणिपुर अर्थात् नाभि चक्र, अनहद चक्र, विशुद्ध अर्थात् कण्ठ चक्र, सहस्त्रसार चक्र, आज्ञा चक्र और अष्टम चक्र (सुरत कमल — ग्याहरवां द्वार) हैं। इसके साथ—साथ ग्याहरां (11) द्वार भी मनुष्य के शरीर के अंदर बड़ा अहम किरदार निभाता है। 1. गुद्धा द्वार, 2. नाभी द्वार, 3. मुख द्वार, 4—5. श्वांसा द्वार, 6—7. नेत्र द्वार, 8—9. श्रवण द्वार, 10. सहस्त्रसार (दशम) द्वार, 8. ग्याहरवां द्वार (सुरत कमल)।

(नोट:—) इन पांचों तत्वों की विस्तृत जानकारी के लिये हमारा ग्रंथ

“मोक्ष का भेद अर्थात् Secret of Liberation” part 1 जरूर पढ़ें।

“तत त्वाम अस” or ‘THAT THOU ART’

- (1) ‘Tvam’ is the self ‘I-ness’ within
- (2) ‘Tat’ the Supreme Lord and
- (3) ‘Asi’ means self in you is Mind and our soul is acting as per mind.

सातवें चक्र सहस्त्रसार तक स्वर्ग ईत्यादि ही हैं

छठे चक्र में पांचवा स्वर्ग कुण्डलीनी से जाते हो, रीढ़ की हड्डी को गुरु के शब्द से चेतन करना होता है। टांगों से ऊर्जा उपर की ओर रीढ़ की हड्डी द्वारा गर्दन की हड्डी से उपर चलती है और लहु की धारा शब्द के साथ सहस्त्रसार तक पहुंचते हो। यहां ध्यान करने से महांकारण तन मिलता है।

चार शरीर स्थूल सूक्ष्म कारण और महाकारण प्राप्त होते हैं जिनमें कोई कोई मेहनती ध्यान करने वाले इस तरीके से सहस्रसार तक पहुंचते हैं और वे इस संसार में चंद ही हैं।

पांचवे से सातवें चक्र वाले स्वर्गों तक पहुंच पाते हैं। चौथे चक्र तक जाने वाले जीव देव लोकों को प्राप्त होते हैं।

सहस्रसार चक्र तक बाबा नानक जी गये, वेद व्यास और सुखदेव जी भी गये तो अवश्य पर रुक गये। सुख देव जी फिर आगे सफर की ओर चले गये। 95 प्रतिशत चेतन हुए और स्वयं को इस योग्य बना लिया कि सहस्रसार के चारों ओर चक्कर लगाये। अहम ब्रह्मसमि बन गये।

स्वर्गों में पूरे शरीर के लिये मालायें मिलती हैं जो वक्त रहते धीरे-धीरे सूखने लगती हैं और फल भोगने उपरांत पुनः चौरासी में लौटना ही पड़ता है। परन्तु इसके ठीक विपरीत सतलोक के पूर्ण संत सहस्रसार से सवा हाथ उपर सुरतकमल में ले जाते हैं जहां से निजधाम का सफर प्रारम्भ हो जाता है।

प्यारी संगत जी मैं आपको बारम्बार चेतावनियां दे रहा हूं और कौरोना माहमारी जिसका जीता जागता स्वरूप है, बड़ी दुनियां चली गई काल के इस भयंकर चपेट से। पर यह दास तो कौरोना मरीज़ (श्राविका जी) के बीच ही रहा और सेवा करता रहा उनके संग-संग रहा, तीन चार दिन में ही वे ठीक हो गई, कोई भय ना लगा। ओंकार भगवन के सामने ही सत्यपुरुष साहिब जी से तो कौरा पत्र प्राप्त हो चुका है मुझे, मुझे तो अब गर्भ में भी नहीं आना, हां एक शरीर से दूसरे शरीर में ही अब स्थानंतरण होगा जब भी होगा और जब से सृष्टि उत्पन्न हुई है ये आज तक किसी के साथ भी नहीं घटा। सत्यपुरुष साहिब जी ने मेरा हाथ पकड़ कर सहस्रसार में ये खुलासा किया कि तेरा लेखा अब इस त्रिलोकि से समाप्त हुआ। स्वयं निरंकार भगवन ने ही स्वयं स्वर्णिम पीले रंग की दीवारों से युक्त सहस्रसार लोक के चारों ओर की परिक्रमा करवाई। कोई अधिक समय नहीं लगता बस आधे घंटे से भी कम समय में जैसे निजधाम की यात्रा होती है इतना ही समय लगा।

तीसरे शरीर (कारण) तुरिया अवस्था में भी सूर्य की रोशनी से भी अधिक गति से आप यात्रा करते हो।

तुरियातीत (महांकारण) शरीर में भी परिकाष्ठा पर पहुंच कर ‘अहम ब्रह्मस्मि’ हो जाते हो। जो चाहो वो घट जाता है, तुम झूठ नहीं बोलते हो। भरौसा विश्वास लाना ही पड़ेगा। एक बड़े ही उच्च कौटि के शिष्य ‘मानपाये’ हुऐ, उनके गुरु ने कहा कि यदि तुम्हें अपने सत्तगुरु पर सौ प्रतिशत भरौसा हो जाये और उनका पूरा कहना मानने लगे तो इतनी ऊर्जा मिलती है कि तुम पानी पर चल कर पार हो सकते हो। ऐसी अवस्था में ओंकार भगवन व सत्यपुरुष अपने दायरे में शिष्य के दास बन जाते हैं, पर अगर कहीं शंका हो जाये सब पतन हो जाता है। हालांकि कबीर साहिब ये सब कर सकते थे पर वो इस सब में नहीं पड़े।

जब भी इन्सान मरने के करीब होता है उसी आशा तृष्णा और बड़ जाती है जबकि सतगुरु समर्पण हो तो साधक सुरतिवान होके संसार को तजता है। कोई भी कार्य संसार में करो तो पहले स्मरण में चले जाओ, पल-पल धन्यवाद करते जाओ और कर्म करते जाओ, कर्ता कभी ना बनो और अंदर की आवाज पे सतगुरु की आज्ञा अनुसार ही काम करो। बस उस वक्त मन को कभी भी बीच में मत लाओ तो सतगुरु कृपा अपने आप ही बरसने लगती है। सतगुरु की सुरति में ही रहना है क्योंकि उसमें सत्यपुरुष ही स्वयं होते हैं, सारा भार सौंप दो सतगुरु पर, फिर देखो कि कैसे सुरति ध्यान अमृत प्याला बन जाता है।

सुन्न शिखर पर स्वांसा चढ़ पलटे तो दसवें द्वार से पार रे।

सहज भक्ति बृहंगा मत के अनुसार सहस्त्रसार चक्र छटा चक्र माना जाता है जबकि निराकार भक्ति में इसे सातवां चक्र कहा गया है जबकि सहज भक्ति में सातवां चक्र आज्ञा चक्र है। इसके बाद सुरत कमल में अष्टम चक्र है जो अंतिम द्वार है जिसे ग्याहरवां द्वार भी कहते हैं।

त्रिकुटि मध्य बसे निरंजन मूँदा दसवां द्वारा
उसके उपर मक्र तार है चढ़ो तुम्हार तुम्हारा

निराकार की सीमा में साधकगण आज्ञाचक्र में जाते ही नहीं बल्कि कुण्डलीनी को जाग्रत कर के ही सहस्त्रसार की ओर अग्रसर होते हैं।

जग में वहीं साधक होता है जिसको नहीं चाह। मान तो कभी भी नहीं करना, वर्णा मौन तो कभी धारा ही नहीं जाता। मौन तो केवल महाचेतना द्वारा ही तजा जाता है। सोने की सी अवस्था जब साधक जाग्रत हो कर पाता है ये केवल ‘वे नाम सद्दात’ से ही लाई जाती है। क्योंकि जब जाग्रत अवस्था में सोना आ गया फिर नींद चली जाती है, विचार सुन्न हो जाते हैं, कोई चाह चिंता नहीं रहती, सुख दुख एहसास भी नहीं रहता। इसलिये मन को तजना है तो सुशमन सम कर के रखो और स्मरण में चले जाओ। एक बात मैं निश्चितता से कहता हूँ कि बिमारी तभी लगती है जब हम झूठ का ही सहारा नहीं छोड़ते।

पुरुष पुरातन पूर्ण ओंकार पांच शब्द उच्चारें रे

सोहंग, सत्त, ज्योतिनिरंजन, रंकार और ओंकार जिनसे पांच तत्त्व उपजते। रंकार से उपजा सुन्न (आकाश), सोहंग से उपजी वायु, ज्योति निरंजन से अग्नि, सत्त से उपजी धरती और ओंकार से उपजा जल।

इसके ईलावा इस मानव तन के अंदर छः शरीरों का वास है जैसे स्थूल, सूक्ष्म, तुरिया, तुरियातीत, ज्ञानदेई और विज्ञानदेई।

मेरे से पहले केवल संत कबीर दास जी ही पूर्ण संत बन कर आये इस जग में और वो अलग-अलग वक्त में कई बार आये इस जग में जबकि ये दास पहली बार ही इस जग में सत्यपुरुष की दात लेकर जीवात्माओं का उद्धार करने के लिये आया है और गर्भ के द्वारा नहीं बल्कि 2012 में हस्पताल में अपने ही मृत पड़े शरीर के अंदर सीधे प्रवेश हुआ हूँ।

तीसरे शरीर तुरिया अर्थात् कारण शरीर से ही प्रवेश होता है, ये सत्संग आप के लिये अति लाभदायक है और बड़ी अदभुत जानकारीयों से भरा हुआ मालिक ने इस दास के द्वारा दिया है। यहां तक कि अगर जब ब्रह्माण्डों की यात्राएँ होती हैं तब भी नाभी तल से संबंध जुड़ा रहता है। कोई भी घटना जब घटने लगती है तो एक पूर्वाभास से होता प्रतीत होता है और आप चेतन होकर संभल जाते हो किसी भी स्थिति से निपटने के लिये, मनोवेज्ञानिक इसे छठी इन्द्रि भी कहते हैं। इसके बाद तुरियातीत यानि महाकारण शरीर मिलता है जिसमें स्मरण में रहने से कोई भी परेशानी नहीं होती। 75 प्रतिशत से आगे जो जाते हैं उनके पास महाकारण तन होता है।

अष्टम चक्र तक संसार है, नौवां चक्र अर्थात् ग्याहरवां द्वार तो परमहंसों का होता है और वहीं से तो अमृत धारा मिलती है। यह सारा संसार तो दौ ही तनों को जान पा रहा है जबकि छे तन की मालिक है यह मनुष्य काया। मूल सुरति हमारी तो छटे तन में ही वासा करती है जो आत्म बल से भरी पड़ी है। इसे महांकारण तन कहते हैं, यहां प्रकाश की गति से भी तेज गति प्रदान होती है जिससे बिन आंखों त्रिकाल की सब घटनायें तक देखी जा सकती है। अहम ब्रह्मस्मि कहलाता है जीव इस अवस्था में। ये सब कुछ यत्न द्वारा प्राप्त नहीं होता अपितु सतगुरु कृपा से ही सब घटना प्रारम्भ होता है। इसलिये सतगुरु पूर्ण से जुड़े हो तो केवल और केवल भक्ति करो, पद-प्रतीष्ठा की ओर ना चलो। यहां आत्मा 90 प्रतिशत तक चेतन हो जाती है।

प्रतिदिन मैं सुबह 3 बजे उठ जाता हूं, थोड़ा स्मिरन में जाने के पश्चात् 3.30 तक बिस्तर छोड़ देता हूं, पौचे-झाडू, सफाई इत्यादि अति मेहनत करता हूं तभी तो सब कुछ लिख पाता हूं आप सब के लिये। हर पल अपना ध्यान सतगुरु की ओर ही केन्द्रित करो। कारण शरीर ही बहुत शक्तिशाली है फिर ज्ञान देई और विज्ञान देई की तो बात ही छोड़ो। ये सत्संग चार शरीरों तक लिखा बोला गया, जबकि अंतिम दौ तन ज्ञानदेई और विज्ञानदेई के बारे में अगले सत्संग में विस्तार पूर्वक जानकारी दी जायेगी, बाकी जैसी सत्यपुरुष की मर्जी।

नोट:— पांच तत्व धरती, जल, अग्नि, वायु और आकाश, इन सभी तत्वों की विस्तृत जानकारी हमारे महान ग्रंथ मौक्ष का भेद **Secret of Liberation - I** के **chapter - What is Body Page 38** में अवश्य देखें।

हमारा शरीर पांच कर्म इंद्रियां हाथ, मूंह, पांव, शीष्ण और गुद्धा, पांच ज्ञान इंद्रियां आंखें, कान, नाम, मूंह और चमड़ी और पांच सूक्ष्म इंद्रियों मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार से युक्त हैं। जिनके बारे में गीता जैसे महान ग्रंथ में श्री कृष्ण जी और बाईबल में क्राईस्ट जीजस द्वारा भी विस्तार पूर्वक बताया गया है।

वेद कुरान भ्रम में डालते, नर ना जाने साहिब दरबार।
भ्रम करि कर्म धर्म में उलझे, नर ना जाने सच्ची सरकार।।

सत्यलोक पहुंची जीवात्माएँ

परमहंस सत्तगुरु 'वे नाम' जी द्वारा सत्यलोक पहुंची जीवात्माएँ

मनमोहक माया नगरी अर्थात् इस त्रिलोकि संसार से पूर्ण संत परमहंस 'वे नाम' जी द्वारा 'साधकों' का निजघर सत्यलोक जाना !

हम सब इस जगत में मानव जन्म प्राप्त करने के उपरांत बड़े निष्चिंत होकर अपने-अपने ढंगों से अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं, इस बात से बेखबर कि कब हमें इस त्रिलोकि संसार की कैद में से छुटकारा मिल पायेगा और वह भी सदा-सदा के लिये ! हमें आज नहीं तो कल, कभी तो जागरूक होना ही पड़ेगा, चाहे स्वेच्छा से अथवा डर से कि हम आखिर हैं कौन, हमारा अस्तित्व और हमारी असल पहचान है क्या ? क्या हम कहीं ग़लत दिशा की ओर भटक तो नहीं गये हैं ? इसका अध्ययन भी तो हमें स्वयं ही करना है ! हम इस मनुष्य जीवन में कितनी दुश्चारी, त्रासदियों और दुर्लभता से चौरासी कालचक्र की एक तत्त्व से चार तत्त्वों की योनियों से गुज़रने के उपरांत पहुंचे हैं, और सुझाव है कि इस बहुमूल्य और सबसे महत्वपूर्ण समय और अवसर का सदुपयोग कर के इस काल चक्रव्यूह के अति लम्बे काल-जाल से अपने आपको मुक्त करा लें, अन्यथा मौक्ष का यह मंच 'धरती' ना जाने मनुष्य जन्म में फिर पुनः हमें कब मिले, मिले भी अथवा नहीं ! साथ ही साथ यह भी आवश्यक हो जाता है कि जब मनुष्य जीवन प्राप्त हो तो सत्यलोक से आये किसी पूर्ण सत्तगुरु परमहंस का सानिध्य भी प्राप्त हो ! जिनसे उनके द्वारा दी गई सत्यलोक की चेतन शक्ति दीक्षा दात जिसे 'सार नाम' दात से जाना जाता है, मिल पाये, जो एकमात्र विकल्प होता है अपने असली घर अपने मूल स्त्रोत पिता के पास पहुंच पाने के लिये ! हमारे पिता वास्तव में हैं कौन ? क्या जिन्हें हम ईश्वर, अल्लाह, गाड ईत्यादि नामों से जानते हैं या फिर हमारे देवी-देव, कुतुब-औलिया, पीर पैगम्बर ! इस त्रिलोकि संसार के परे एक और लोक है जिसे चौथे लोक सत्यलोक के नाम से जाना जाता है जहां से हमारी आत्मा 'हंसा' रूप में भ्रमण करने हेतु इस जगत में आई थी। तीन लोकों के मालिक एक ओंकार निराकार निरंजन जिन्हें हम नारायण स्वरूप में भी देखते हैं, भगवान भी मानते हैं, इनसे यह मानव शरीर प्राप्त कर के माया में ही भ्रमित होकर रमे पड़े हैं और इस शरीर को ही अपना सब कुछ मान कर एक जन्म से दूसरे, फिर तमाम चौरासी चक्र योनियों में अलग-अलग देह धारण कर के कर्म प्रालब्ध बंधन 'व्यवस्था' में उलझे पड़े हैं और नाना प्रकार के दुख कष्ट भोगने के उपरांत भटकते रहते हैं।

जब से सृष्टि बनी है तभी से जीवात्म का ये अंतहीन सफ़र ना जाने कितनी सदियों, युगों—युगांतरों और कयामतों से आगे बढ़े ही जा रहा है ! इस सब के विपरीत सत्य है क्या ? ये सृष्टि अगर 17 आयोजन चौकड़ी गणना काल से बंधी पड़ी है तो क्या इतने घोर कष्टों को सहने के लिये हम सब जीव भी बाध्य हैं ? इससे बाहिर निकलने का कोई उपाय नहीं है ? सारा भेद आखिर है क्या ? सहज सत्य भक्ति / बृहंगा मत / सहज मार्ग तीन लोक की सगुण निर्गुण भक्तियों से अलग कैसे है ?

ये सब बताने के लिये ही तो समय—समय पर निजधाम सत्यलोक से पूर्ण संत परमहंसा बन कर लोगों के कल्याण अर्थात् काल की भयंकर कैद से छुड़ाने के लिये धरती पर आया करते हैं । इसी संदर्भ में सबसे पहले संत, संत कबीर साहिब ही ये भेद उजागर करके जीवात्माओं को सत्यलोक ले जाने के लिये जग में आये थे और आज के वर्तमान समय तक (करीब 600 वर्ष पहले तक) आते रहे हैं । अनेकों बार हर कयामत में वे जग के कल्याण हेतु अलग—अलग रूपों में धरती पर आये थे और उन्हीं का ही पहरा रहा है अभी तक पूरे ब्रह्माण्डों में ! परन्तु वर्तमान काल में पहली बार संत ‘वे नाम’ परमहंस जी का पहरा प्रारम्भ हुआ है और आगे अब इन्हीं का ही पहरा रहेगा । इनकी विस्तृत जानकारी के लिये पहले लिखे गये ग्रंथों को पढ़ें (ग्रंथ सूचि देखें) ।

संत परमहंस ‘वे नाम’ जी जैसा कि हम जानते हैं पूर्ण संत बन कर 18 मार्च 2012 को ‘सत्यपुरुष साहिब जी’ से साक्षात्कार कर के धरती पर आये थे जिसकी सारी जानकारी पहले लिखे गये ग्रंथों में, [vainaamsurtidhara](http://vainaamsurtidhara.com) वेबसाइट में और यूट्यूब चैनल में उपलब्ध है ।

हम सब हंसात्माओं के असली पिता ‘साहिब सत्यपुरुष जी’ से चेतन शक्ति और ‘सार सद्’ दात और ‘सुरत सद्’ दात पाने के बाद उन्हीं के आदेश अनुसार जीवों को जगाने और उन्हें अपने असली पिता/मालिक से मिलाने सत्यलोक ले जाने के लिये ही काम कर रहे हैं ! सन् 2012, मार्च से लेकर आज तक अपने रूहानियत और सुरति से भरपूर अनुभवों के आधार पर अदभुद्ध साढे बारहाने हज़ार से भी उपर दोहे, पंद्रह से भी उपर ग्रंथ, तीन सौ से उपर भजन, सौ से भी उपर सुरति से ओत—प्रोत काव्य, आश्रमों में किये गये एक हज़ार से भी उपर ‘दृष्टा सत्संग’ और यूट्यूब में सवा ग्यारहाने सौ से उपर ‘दृष्टा सत्संगों’ का भण्डार पूरे जगत को दिया है ।

अनेकों जीवात्माओं को उनके जीवन में और जीवन के उपरांत देह त्यागने पर भी उन्होंने सुरती द्वारा उनको सुरती में दीक्षा प्रदान की, जिसके फलस्वरूप बहुत सारे जीव अपने असली लक्ष्य मौक्ष को प्राप्त कर पाये। सतगुरु ‘वे नाम’ परमहंस जी की महिमां और स्वयं उन्हीं द्वारा उनकी शक्तियों का परिचय जानने के लिये इस वक्त वर्तमान में पूरे ब्रह्माण्ड में ऐसी उपलब्धियों के वे अकेले पूर्ण संत परमहंस विद्यमान हैं। उनसे संपर्क करें और अपना जीवन सफल बनायें।

सतगुरु जी से दीक्षा प्राप्त करने के बाद जो हंसात्मायें मौक्ष पाकर निजधाम जा पहुंची हैं उनका संक्षिप्त वर्णन चित्रों सहित यहां पर दिया जा रहा है। आपको यह भी बताते चलें कि सतगुरु संत ‘वे नाम’ परमहंस जी द्वारा हाल ही में लिखा गया एक नवीनतम ग्रंथ ‘सुरति निरति से सत्यलोक सफ़र’ में निजधाम के सात सर्वोत्तम पूर्ण संत परमहंसों का चित्रों सहित वर्णन किया गया है जैसे बाबा नानक जी, संत रविदास जी, संत मीराबाई जी, बड़े साहिब सक्षम जी, साहिब कबीर जी, संत मधु परमहंस जी और संत औशो जी सहित संत ‘वे नाम’ परमहंस जी का भी वर्णन उपलब्ध है। अधिक जानकारी के लिये सतगुरु ‘वे नाम’ जी के सत्संगों को सुनें।

जो हंसात्मायें सतगुरु जी द्वारा निजधाम पहुंची हैं उन्हें हम ‘निजधाम वासी’ कर ही संबोधित करते हैं, इन सब जीवात्माओं ने अपने आपको सहज भक्ति मार्ग से जोड़ा और सतगुरु ‘वे नाम’ जी के सत्संगों को सुना, जानकारी हासिल की, उसे अपने जीवन में उतारा, ‘वे नाम सुरति धारा’ के नियमों का पालन किया, झूठ छोड़ा, सत्य पर चले, हर कार्य सतगुरु जी से परामर्श कर के किया और स्मरण में रहे। साथ-साथ औरों को जगाने की सेवा भी करी। सबसे बड़ कर संसार को छोड़ने की ओर कदम बढ़ाये, रिश्तों से नाता धीरे-धीरे कम करने की ओर चले, अहम और आशा-तृष्णा छोड़ी, बाहिर की दौड़ छोड़कर अंदर की ओर का रुख किया, अकेले होकर अपनी हस्ती को मिटाने का काम किया और सुरति द्वारा सतगुरु का स्मरण करते हुये अपना जीवन सफल किया और जिसके फलस्वरूप आज वे सभी अपने असली घर निजधाम में हैं जहां से अब फिर उन्हें आवागमण के चक्रव्यूह इस मृत्यु लोक अर्थात् चौरसी काल-जाल में नहीं वापिस लौट के नहीं आना, गर्भ में ही नहीं आना !

सत्तगुरु ‘वे नाम’ परमहंस जी द्वारा दीक्षा लेने के उपरांत ऐसी बहुत सी हंसात्माएँ जो अपने असली घर साहिब सत्यपुरुष जी के लोक अमरपुर पहुँची हैं जिनमें प्रमुखतः चंद निम्नलिखित भाग्यवान आत्माओं का संक्षिप्त वर्णन दिया गया है :—

1. सत्तगुरु ‘वे नाम’ परमहंस जी की माता साधिका शांति जी
2. साधिका शशी जी
3. साधिका राजदुलारी जी
4. साधक पवन जी
5. साधिका दर्शना जी
6. सत्तगुरु ‘वे नाम’ परमहंस जी के भाई साधक रमेश चन्द्र जी
7. और साधिका दर्शना जी

ऐसी विभूतियों में सर्वप्रथम माता शांति देवी जी हैं, आईये जानें :—

- 1 सत्तगुरु ‘वे नाम’ परमहंस जी की माता
साधिका शांति देवी जी :—



यूँ तो अगर संसारिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो साधिका शांति देवी जी साहिब सतगुरु परमहंस ‘वे नाम’ जी की जन्म जननी हैं और बड़ी गुरुबत में अपने गृहस्थ जीवन के प्रारम्भिक काल से ही अपना और अपने बच्चों का पालन पौषन कर रही थी। बिमारी की वजह से पति की मौत के उपरांत छोटे-छोटे बच्चों का लालन पालन हांलाकि अति कठिन था परन्तु फिर भी उन्होंने अपनी हिम्मत और मालिक पर भरौसा रखते हुए हमेशा अपने बच्चों को सही राह पर चलना सिखाया, हांलाकि वे सिख परिवार से थी और हिन्दु परिवार के अंदर

शादी होने के बावजूद भी कभी भी उन्होंने बच्चों को किसी भी विशेष धर्म संस्थानों में जाने के लिये विवश नहीं किया और ना ही ऐसी कोई सिखावट दी की यह करो और यह ना करो। जैसे तैसे वक्त बीतता गया बच्चे भी बड़े हुए, भगवान के प्रति आस्था तो थी ही, वे राम—राम का स्मरण किया करती थी, बाद में वे काफी लम्बे समय तक राधा—स्वामी पंथ की भी अनुयायी बन के रही। किसे पता था कि उनका यह भोलापन और सादगी भरी जिन्दगी, जीवन के घोर थपेड़ों को सहते हुए अंततः वो एक ऐसे मुकाम को प्राप्त होंगी जिसकी शायद उन्होंने स्वयं भी कभी कल्पना तक नहीं की होगी, कि वे मनुष्य जीवन के असली उद्देश्य को पूरा कर अपने असली घर सतलोक अपने सच्चे पिता के घर वापिस पहुंच पायेंगी और वह भी अपने ही कोख से जन्मे बेटे के हाथों उन्हीं की परम शिष्या बन कर। जो ‘पूर्ण संत परमहंस’ बन कर पूरे चारों लोकों में अपना पहरा दे रहे हैं, उनके लिये ये कितने सौभाग्य की बात होगी कि उन्होंने एक ऐसे बेटे को जन्म दिया है जो इस ब्रह्माण्ड के महानतम, उच्चतम एवं सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक संत ‘वे नाम’ परमहंस के पद पर आसीन होकर चारों लोकों के मालिक “साहिब सत्यपुरुष जी” का तदरूप बन कर सारे संसार को जगाने का काम कर रहा है और उन्हें अपने निजघर “सत्यलोक” अमरपुर ले जाकर अपने असली मालिक से मिला रहा है। साधिका शांति देवी जी ने अपने पूरे जीवन में उनकी तपस्या, जीवन का संघर्ष और अन्य परिवारिक कठिनाईयों से युक्त जीवनयापन करने के बावजूद भी कभी भी अपने बच्चों को बाध्य नहीं किया कि आप किसे मानें और किसे नहीं, हमेशा नेक शिक्षा ही देती रही, सत्य पर चलना सिखाया, दासापन, श्रम—मेहनत करना और सेवा करना ही सिखाया।

और अपने अंत समय में भी सत्यगुरु ‘वे नाम’ परमहंस जी के प्रति उन्होंने गूढ़ आस्था और श्रद्धा दिखाई और पूरे समर्पण से उन्हें अपना सतगुरु माना और दीक्षा प्राप्त की। सतगुरु जी को उन्होंने ना सिर्फ श्रद्धा और समर्पण से स्वयं माना अपितु हर आने—जाने वाले को बार—बार यह कह कर प्रेरित भी करती रही कि जाओ पूर्ण संत आया है इस संसार में, उससे दीक्षा ले लो। ऐसी समर्पणता का उदाहरण और कहां मिल सकता है ! एक बार और बताते चलें कि एक बार उनके स्वपन में उनके पति (जो सतगुरु जी की कृपा से इस समय मानसरोवर में हैं) ने आकर भी ये खुलासा किया कि “देखा हमारे इस बेटे (सतगुरु ‘वे नाम’ परमहंस) ने कमाल कर दिया है”। देखा, देह त्याग

चुकी आत्माएँ कितनी चेतन हो जाती हैं जो जानती हैं कि सत्य क्या है और हम इस मनुष्य देह के अंदर कितना अहम और अहंकार लिये बैठे हैं कि जैसे मौत हम्हें आनी ही नहीं। पूर्ण समर्पणता और सतगुरु के प्रति श्रद्धा के रहते अंत समय में सतगुरु जी द्वारा वे मौक्ष को प्राप्त होकर निजधाम जा पहुंची।

—0—

2 साधिका शशि जी :-



सतगुरु जी की एक और साधिका शशि जी जो पहले से ही शरीर तज कर पित्रलोक में विराजमान थी, वे भगवान श्री कृष्ण जी की भक्त थी। अपने जीवन काल में गृहस्थी के तमाम कार्य करते समय वो अक्सर भगवान श्री कृष्ण जी के भजनों में पूर्णतया: लीन रहा करती थी, परन्तु वह सतगुरु 'वे नाम' परमहंस जी से कभी भी मिल नहीं पाई थी। जिज्ञासा वश उनके पति जो सतगुरु जी के समर्पित साधक थे उन्होंने उनकी तस्वीर सतगुरु जी को दिखाई और उनके कल्याण हेतु प्रार्थना की, और अगले ही दिन प्रातः लगभग तीन बजे शशी जी दीक्षा लेने पित्रलोक से आश्रम में सतगुरु 'वे नाम' परमहंस जी के समक्ष पहुंच गई। सतगुरु जी ने उनके रूप और पहचान का सारा वर्णन उनके पहचान वालों से किया जिसकी पुष्टि भी उन्होंने की। इसके उपरांत सतगुरु 'वे नाम' परमहंस जी ने तारीख नोट करने को कहा कि आज से लगभग ठीक छे महीने बाद इनको मौक्ष

प्राप्त होगा। दिनांक 17.09.2013 शाम को सतगुरु ‘वे नाम’ परमहंस जी ने उनके मौक्ष दिवस के उपलक्ष्य में साधक जी के घर में एक लंगर का आयोजन किया। सत्संग में साहिब सतगुरु ‘वे नाम’ परमहंस जी ने आध्यात्म के क्षेत्र में एक अदभुत व अनोखी घटना का जिक्र करते हुए कहा कि ऐसा कभी भी नहीं हुआ कि किसी आध्यात्मिक दृष्टांत का कोई संसारिक साक्षी हो। सत्संग से पूर्व ही सतगुरु परमहंस जी ने इस पूर्ण दृष्टांत की साक्षी शशी जी की बहन का जिक्र करते हुए कहा कि पिछली रात को लगभग पौने तीन बजे वही इनको आध्यात्मिक सफ़र के लिये विदा करने के लिये आई थी। बाकी के वृत्तांत को सत्संग उपरान्त उनसे पूछने को कहा। शशी जी की वह बहन सत्संग के बीच में जब सत्संग समाप्ति की ओर था तब पहुंची। रात साढ़े दस बजे लगभग तीस-पैंतिस लोगों के समक्ष उन को इस घटना के बारे में जब पूछा गया तो उन्होंने कहा कि हां, पिछली रात मैं स्वपन्न में अपनी बहन शशी जी के संग किसी मनमोहक बाग़ में थी और हम दोनों टहलते-टहलते ईक दिव्य ज्योति पुंझ के सामने जा पहुंची। यहां शशी जी बोली कि तुम यही रुको, “अब मैं अपने आखिरी सफ़र (मौक्ष) की तरफ़ सतगुरु “वे नाम परमहंस जी” के संग जा रही हूं और मुझसे वापिस लौट जाने को कहा। देखते ही देखते वह दिव्य आलोकिक ज्योति पुंझ के संग आकाश की तरफ़ बढ़ चली और पल ही पल में अदृश्य हो गयी। सतगुरु परमहंस जी ने इसका वर्णन यूं किया कि अगर उनही बहन भी साधक होती तो उन्हें मेरे दर्शन अवश्य प्राप्त होते।

—0—

3 साधिका राजदुलारी जी :-



संगत में जो साधक भी पूरी श्रद्धा रखकर सतगुरु चरणों में समर्पित होकर निरंतर सहज भक्ति मार्ग की ओर अग्रसर होकर सतगुरु आदेशों का पालन करते हैं वे अंततः इस त्रिलोकि माया जाल से मुक्त होकर अपने घर निजघर सत्यलोक अपने

असली पिता ‘साहिब सत्यपुरुष जी’ से जा मिलते हैं। इसी श्रृंखला में एक और परिवार साधिका राजदुलारी जी का भी है जिन्हें अपने बेटे और बहु की निष्ठावान सेवा और समर्पण से सतगुरु जी का सानिध्य प्राप्त हुआ। उनकी बेटी ने भी सतगुरु ‘वे नाम’ परमहंस जी से दीक्षा प्राप्त की थी, उनकी दूसरी बेटी भी हालांकि कभी कभार सत्संग आ जाया करती थी परन्तु बेटा और बहु हर सत्संग में बड़ी श्रद्धा से आया करते थे। कौरोना माहमारी आने से पूर्व पूर्वाभास से ही सतगुरु जी द्वारा संगत के आश्रम में सत्संग पर आने के लिये रोक लगा दी गई थी। परन्तु कौरोना काल के बाद फिर सत्संग युट्यूब में आना प्रारम्भ हो गये। राजदुलारी जी अपने जीवन काल में अति सरल स्वभाव वाली महिला थी और सदा सत्य पर चलने की उनकी विशेषता थी, वह निष्पक्ष रहते हुऐ समाज में और घर परिवार में अपना जीवन बड़ी शुद्धता से व्यतीत करती थी। उनके जीवन में भी परिवारिक सुखों का बड़ा अभाव रहा, अनेकों कठिनाईयों से युक्त उनका जीवन परिवार के लालन—पालन में व्यतीत हुआ। भगवान पर उनकी बड़ी आस्था थी अतः बड़े लम्बे समय तक वह राधा—स्वामी मत्त की भी अनुयायी रही थी। अपने जीवन काल के अंतिम समय में वे जब बिमार चल रही थी, यहां तक कि वह पूर्णतः होश में भी नहीं थी, इसी दौरान उनके बेटे और बहु जो सतगुरु जी के दीक्षित साधक थे उनकी प्रार्थना से ‘सतगुरु जी’ द्वारा उनके घर जाकर उन्हें दीक्षा प्राप्त हुई और वो भी सुरति में। फिर तो जैसे उनका सारा अंतिम समय सुरती से इस दात के साथ ‘सतगुरु जी’ के चरणों में ही बीता। कोई भी साधक जब उनसे मिलने जाता तो वह सतगुरु जी के चित्र की ओर इशारा करके कहती कि मुझे इनकी आरती सुनाओ। ‘सतगुरु जी’ की असीम कृपा रही कि थोड़े ही समय में उन्होंने अंदर से ‘सतगुरु जी’ को आत्मसात कर लिया और फिर देह त्यागने उपरांत सारी अंतिम रस्में, क्रियायें सहज भक्ति मार्ग के अनुसार ही उनके बेटे द्वारा पूर्ण हुई और इसी तरह पूर्ण रूप से सुरति में ही ‘सतगुरु जी’ के चरणों से लगकर आज वह भी ‘सतगुरु जी’ द्वारा पूर्ण मौक्ष पाकर निजधाम “सत्यलोक” की वासी बन गई हैं, उनका उद्धार भी ‘सतगुरु जी’ ने किया है।

प्रेम सत्य आनंद से कौसों दूर प्यारो, ये सब धोखा ही धोखा जान रे।
उस के पास कोई सच्ची तरंग ना प्यारो, संसार अचम्भों में रस लेता रे।

4 साधक पवन जी और उनकी धर्मपत्नि दर्शना जी :—



साधक साहिल और उनका सारा परिवार ‘सतगुरु जी’ से दीक्षा प्राप्त कर के बड़ी श्रद्धा और समर्पण से ‘सतगुरु जी’ संग जुड़ा है। ‘सतगुरु जी’ के आदेशों अनुसार आज्ञा में रहना, उनसे पूछे बिना कोई भी कार्य ना करना, सहज भक्ति मार्ग के सभी नियमों का पालन करके हर सत्संग में शामिल होना, ये सब इस परिवार का हिस्सा रहा है। पिछले 12 वर्षों से ‘सतगुरु जी’ के साथ ये परिवार निजधाम के मंदिर रिहाड़ी आश्रम से ही जुड़ा हुआ है। ‘सतगुरु जी’ की अपार कृपा इस परिवार पर इसलिये भी रही कि साधिका दर्शना जी जो किडनी की समस्या से भी जूझ रही थी, उनका आपरेशन भी हुआ था और साथ ही साथ उन्हें बी-पी और शूगर की भी शिकायत रहती थी, पर उन्होंने उस वक्त तक ‘सतगुरु जी’ से दीक्षा प्राप्त नहीं की थी, हालांकि वे सत्संग में आया करते थे और ‘सतगुरु जी’ की कृपा से कुछ ठीक रहते थे। इतना ही नहीं साधक पवन जी भी कुछ समय पहले दुकान पर गिर गये थे और उन्हें दिमाग में क्लॉट बन गये थे, जिसके ईलाज के लिये डाक्टरों द्वारा लुधियाना ले जाने को कहा गया। ‘सतगुरु जी’ से साधक साहिल जी के आग्रह करने पर कि उन्हें ठीक कर दें, ‘सतगुरु जी’ ने उनकी विनती को स्वीकार करते हुये ढाई वर्ष तक उनकी आयु बढ़ाई और कहा कि इन्हें अब जम्मू में ही रखो, ये पांच दिन तक ठीक हो जायेंगे और ठीक वैसा हुआ भी। साधक साहिल जी के अनुसार उनके माता-पिता अक्सर कहते थे कि हम साथ-साथ ही निजधाम जायें। बिल्कुल वैसा ही हुआ। ‘सतगुरु जी’ सदैव हमारे साथ ही होते हैं और हमेशा अपना आशीर्वाद प्रदान करते रहते हैं। पूरे ढाई वर्ष बाद जैसा ‘सतगुरु जी’ ने

“Vai Naam Surti Dhara” “Nijdham Ke Santon Ko Samarpit”

बोला था, दिनांक 16.09.2020 को साधक पवन जी को देह त्यागने पर वे उन्हें मान-सरोवर ले गये और अगले तीन दिनों में ही साधिका दर्शना जी को भी दिनांक 19.09.2020 को 'सतगुरु जी' ने मान-सरोवर पहुंचाया। 'सतगुरु जी' की वाणी अनुसार अब आने वाले समय में जब भी 'सतगुरु जी' का निजधाम सफ़र होना है वे इन्हें मान-सरोवर से निजधाम ले ही जायेंगे।

—0—

5 सतगुरु 'वे नाम' परमहंस जी के भाई साधक रमेश चन्द्र जी और साधिका दर्शना जी :—



जिस प्रकार एक अदभुत उदाहरण माता शांति देवी जी को लेकर कि जो आज तक नहीं हुआ कि 'सतगुरु जी' के प्रति समर्पण की इतनी महानता के भाव उजागर होना, एक मां का अपने बेटे के रूप में 'सतगुरु परमहंस जी' की शिष्या बनना और ना सिर्फ शिष्या बनना अपितु उसे पूर्णतः श्रद्धा से मानना भी ! ठीक वैसे ही एक और उदाहरण जो अपने आप में अति उल्लेखनिय है कि साधक रमेश जी एक निष्ठावाण, पूर्ण समर्पित और आज्ञाकारी साधक रहे हैं जिसका सब संगत वाले प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। वे इतने सदाचारी, नम्र स्वभाव और बड़े ही दयालु प्रवृत्ति के व्यक्तित्व थे। इनकी धर्म पत्नि साधिका दर्शना जी भी सतगुरु जी से दीक्षा प्राप्त किये हुये थी। निजधाम-वासी होने का गौरव प्राप्त ये दम्पति जो सौभाग्य से सतगुरु 'वे नाम' परमहंस जी के संसारिक जीवन में बड़े भाई और भाभी थे। उन्होंने 'सतगुरु जी' से पूर्ण श्रद्धा व समर्पण रखते हुए दीक्षा प्राप्त की थी और उन्हीं को पूरी मान्यता देते हुये दीक्षा लेने से लेकर देह त्यागने तक सुबह जल्दी उठकर सुरति स्मरण में रहते और 'सतगुरु जी' के परामर्श अनुसार ही अपना जीवन व्यतीत किया करते थे।

“Vai Naam Surti Dhara” “Nijdham Ke Santon Ko Samarpit”

भाई रमेश जी ने बड़ा भाई होते हुए भी अपने छोटे भाई सतगुरु 'वे नाम' जी जो अब वर्तमान काल में दुनियाबी व परिवारिक रिश्ते से उपर उठ कर है सब के लिये, से 'पूर्ण सतगुरु' स्वरूप जान कर दीक्षा ली थी और अपनी इसी निष्ठा के चलते अपनी माता शांति जी की तरह ही सीधे निजधाम में प्रवेश किया, जबकि साधिका दर्शना जी पहले मान-सरोवर पहुंची थी। अपने अंतिम समय में भाई रमेश जी हस्पताल में तो ज़रूर थे परन्तु इन्होंने इस ओर ईशारा अवश्य किया कि 'सतगुरु जी' तो सदा मेरे साथ ही होते हैं। इसलिये जो कोई भी इतनी समर्पणता से 'सतगुरु' पर भरौसा करते हैं वे तो 'सतगुरु' के प्यारे होकर निजधाम के पात्र तो बनते ही हैं।

भाई रमेश जी के बेटे अनुसार वे कहते हैं कि जब मैंने उनसे पूछा कि आज आप ने 'सतगुरु जी' से फोन पे बात की तो वो 'सतगुरु जी' की तस्वीर की ओर ईशारा करके कहते हैं कि वे तो सदैव ही मेरे पास यहीं होते हैं। दिनांक 02.02.2021 को माता दर्शना जी ने और फिर दिनांक 09.02.2021 को भाई रमेश जी ने देह त्यागी और निजधाम की ओर अग्रसर हुए।

—0—

जग सदा गुल्ल को पकड़ पाता प्यारो, वह सदा सच्च से कौसों दूर रे।
प्रशंसा का भी यही हाल प्यारो, प्रशंसा हुई तो गुल्ल उच्चार जान रे।
सत्य को सुन कर पत्थर मारना ही प्यारो, जग का सच्चा सुच्चा काम रे।
कबीर औशो बुद्ध को पत्थर मारे, महावीर के कानों में सींकचे ठोके रे।

कर्म का लेख सतगुरु भेटें प्यारो, जब सत्यलोक की करि फेरी रे।
गुरु वसिष्ठ मिली लगन सुधाई प्यारो, सूर्य मंत्र दान में दीन्हा रे।
जो सीता रघुनाथ ब्याही प्यारो, पल एक सुख ना पायो रे।
तीन लोक के कर्ता आप रघुनाथ प्यारो, मिटा ना सके कर्म रक्खा जान रे।
जिससे अपना ही कर्म नहीं मिटा प्यारो, दूसरे का कर्म कैसे मिटावे रे।

—0—

संगत के बच्चों की पूरी जिम्मेवारी

सतगुरु 'वे नाम' परमहंस जी के मुखारबिंद से जो भी शब्द निकलते हैं वे 'सत्यपुरुष जी' तो पूरा करते हैं पर निरंकार भगवान भी उन्हें पूरा करते हैं जिसका प्रमाण हमारे निष्ठावान समर्पित साधकों के बच्चे हैं। सतगुरु जी हमेशा सत्संगों में अपने मुखारबिंद से एक संदेश देते हैं कि जो दात 'सब्द' सतगुरु दीक्षा में हम सबको प्रदान करते हैं हमारी सुरति आत्मां चेतन सुरति में ग्रहण करती है। हमारी इस दात से 71 पीढ़ियां तरती हैं और यही प्रमाण हमारे बच्चे हैं। संगत जी इन बच्चों के भाग्य की क्या बात करूं, ये सतगुरु जी के उन साधकों की तीसरी पीढ़ी है जिनको साहिब जी ने अपने चरणों से उनका उद्धार कर इस लोक से पूर्ण मौक्ष देकर आज वह निजधाम के मानसरोवर के वासी हैं। यह बच्चे इतने बड़भागी हैं। साहिब सतगुरु जी अपनी पूरी श्रद्धा समर्पणतः से उनका पढ़ाई के लिये पूरा ध्यान रखते हैं। इन बच्चों के माता—पिता के उपर कोई भी इनका भार नहीं छोड़ा, सारा साहिब जी ने अपनी पैंशन के खर्चे से इनकी पढ़ाई का सारा खर्चा उठाया है। एक बिटिया डाक्टर बना दी है, दौ बेटे अभी तैयारी कर रहे हैं, एक बेटी ला की तैयारी करेगी। यह सब हमारा पूरी तरह से समर्पण होता है सतगुरु जी के चरणों से तभी सतगुरु पूरी जिम्मेवारी खुद लेते हैं, इन परिवारों की जिम्मेवारी साहिब सतगुरु जी ने ही ली है। यह तभी होता है जब कर्ता हम नहीं सतगुरु जी को बनाते हैं।

'वे नाम सुरति धारा' आश्रम / संस्था की आगु प्रधान साधिका रजनी जी को भी सतगुरु जी ने इन बच्चों की सुरति मां का रूप प्रदान किया है, इन्हीं के हाथों से ही पूरे महीने का खर्चा, खाने का खर्चा, मैटाडौर गाड़ी का खर्चा, यहां तक कि लाईब्रेरी और ट्यूशन तक का खर्चा भी सतगुरु साहिब जी ने उठाया है। इन परिवारों के सदस्य अति भाग्यवान हैं, बड़भागी हैं। सतगुरु जी जहां अपना पूरा प्रेम चेतन सुरति इन पर बरसाते हैं दूसरी ओर इन बच्चों के नाना नानी और बड़े पूरी श्रद्धा व ईमानदारी से सतगुरु संग जुड़े हैं। इसिलिये साहिब सतगुरु जी भी पूरी लग्न से इन परिवारों की देखभाल करते हैं। जब पूर्ण ब्रह्मण्ड का मालिक सतगुरु प्यारा मिल जाये तो हमारे जीवन की हर घटना हर परिस्थिति को सतगुरु स्वयं ही संभाल लेते हैं।

करन करावन आपे आप, मानस के नहीं कुछ भी हाथ।

सारा सारा दिन साहिब जी का स्मरण में रह कर कबूतरों का काम, बच्चों का काम, संगत का काम और आश्रम की साफ सफाई ईत्यादि करना ही सतगुरु जी की दैनिक दिनचर्या है। और यही संदेश सतगुरु जी आगे सभी संगत को भी देते हैं कि हर कार्य स्मरण में रह कर ही करो। फिर सतगुरु स्वयं ही चेतन सुरति के रूप में हम सभी के अंदर विराजमान होते हैं।

इन सभी बच्चों का सारा ब्यौरा चित्रों सहित यहां दिया गया है।

1. अर्पित
2. मान्या
3. सतगुरु साहिब 'वे नाम' परमहंस जी
4. शिवम
5. आकाशी



vfi ɹr] ekl; k] f'koe , oa vkdk' kh | rxq | kfgc ^os uke* ijegd th ds | kFk

साधक साहिल जी के परिवार पर सतगुरु जी की इतनी कृपा बरस रही है कि उनकी तीनों पीढ़ियां सतगुरु जी के संग जुड़ी हैं जैसे पहली पीढ़ी में साहिल जी के

माता—पिता साधक पवन और साधिका दर्शना जी जो अभी हाल ही में कुछ समय पहले सतगुरु परमहंस जी द्वारा मानसरोवर पहुंची थी जो अपने आप में निजधाम में ही समझो गिना जाता है बस वहां पर थोड़ा से मन शेष जो रह जाता है उसी की सफ़ाई के लिये ही रूहों को निजधाम जाने से पहले कुछ देर रोका जाता है क्योंकि निजधाम बिना शत प्रतिशत शुद्ध आत्मां हंसा नहीं बन सकती और बिन हंसा बने कोई निजधाम कैसे जा सकता है। दूसरी पीढ़ी के रूप में साधक साहिल जी और उनकी दोनों बहनें कोमल और कविता सतगुरु जी के संग परिवार सहित बड़ी श्रद्धा और समर्पण से जुड़ी हैं। और रही तीसरी पीढ़ी की बात तो साहिल जी और उनकी दोनों बहनें कोमल और कविता के बच्चे मान्या, शिवम और अर्पित व आकाशी भी सतगुरु जी संग जुड़े हैं और इतना ही नहीं इन बच्चों पर तो सतगुरु साहिब जी की विशेष कृपा है कि उनकी पढ़ाई लिखाई और अन्य दूसरे खर्चे जो उपर बता दिये गये हैं का सारा खर्चा सतगुरु जी स्वयं अपनी पेंशन आदि से ही उठा रहे हैं, चूंकि साहिब सतगुरु जी तो एक उच्चतम श्रेणी के शिक्षा शास्त्री अर्थात् शिक्षाविशारद् शिक्षक (educationist) भी रहे हैं जो entrance शैक्षणिक शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश परीक्षा चयन की शिक्षा निरंतर कई बरसों से बच्चों को दे रहे हैं और वे पांच मजबूत पढ़ाने वाले अकेले ऐसे ख्याति प्राप्त विशेषज्ञ हैं, पूरे संसार भर में उनका सानी कोई नहीं इस क्षेत्र में।

मान्या तो डाक्टर बन कर पढ़ाई के लिये डोडा जिले में गई है और शिवम अभी अगली entrance की तैयारी कर रहे हैं। अर्पित भी अभी entrance की तैयारी में है और आकाशी ने अभी दसवीं कक्षा के इम्तिहान दिये हैं और वह आगे सूं की तैयारी करने की ईच्छुक है। इन बच्चों की पढ़ाई का सारा खर्चा सतगुरु साहिब जी ही उठा रहे हैं।

—0—

गुरु वसिष्ठ सूर्य मंत्र एक दीन्हां प्यारो, जो सीता रघुनाथ ब्याही प्यारो।

बुद्धिमान ज्ञानी योग में भी सिद्ध प्यारो, सूर्य उपासना दी जान रे।

राम जी भी ईश्वर कहलाते प्यारो, ता से अपना कर्म ही मेटा ना गया रे।

अब उनके नाम स्मरण से प्यारो, किसी दूसरे के कर्म कैसे नाश हो सकते रे

—0—

सतगुरु जी के प्रति कृतज्ञता

सतगुरु साहिब 'वे नाम' परमहंस जी की एक और पूर्ण समर्पित साधिका नीनू जी, जिनके घर सतगुरु जी की अपार कृपा से एक प्यारी सी बिटिया का आगमन हुआ। साधिका नीनू जी के द्वारा ही उनके कृतज्ञता भरे भाव :-



अद्विता

“पूज्य सतगुरु जी के चरणों में कौटि-कौटि प्रणाम ! आपकी असीम कृपा और आशीर्वाद से मुझे एक प्यारी और सुशील बेटी का सुख प्राप्त हुआ है। यह अनमोल उपहार आपकी दश और आशीष का प्रतीक है। आपके आशीर्वाचनों से मेरा जीवन आनंद और कृतज्ञता से भर गया है। मैं सदैव आपके चरणों में अपनी कृतज्ञता अर्पित करती हूँ।

—0—

क्या वसिष्ठ मुनि प्यारो, कुमुहूर्त दिया विचार रे।
सीता को एक पल भी प्यारो, सुख मिला मत जान रे।
जब आप ही भगवान थे प्यारो, लग्न मुहूर्त भी जब सच्चा होत रे।
फिर नाना दुख प्यारो, कैसे दोनों ने भौगे जान रे।

—0—

साधक अविनाष और साधिका आशु जी की बेटी गुरिमा



Lkkf/kdk xfjek l kfgo 'os uke* i jegd l kfgc th dk vkf' kbkn i klr djrs gq A

सतगुरु जी 'वे नाम' परमहंस जी के एक और प्यारे साधक दम्पति अविनाष और आशु जी की बेटी गुरिमा भी पूरी श्रद्धा से सतगुरु जी से जुड़ी है और अपना हर काम सतगुरु जी से पूछ कर ही करती है, क्योंकि स्वयं साधिका आशु जी भी सतगुरु जी से बड़ा प्रेम करती हैं, हर काम सतगुरु जी की आज्ञा अनुसार यह परिवार करता है। गुरिमा बिटिया के अंदर सतगुरु पूर्ण चेतना सुरति से विराजमान हैं तभी तो देखो इस तस्वीर में भी कितनी सुन्दर सतगुरु चरणों से जुड़ी हैं। सतगुरु जी बच्चों से अत्यधिक प्रेम करते हैं, संगत के और भी बच्चों को जैसे सोनू जी के बच्चों की पढ़ाई का हर महीने कुछ खर्चा भेजते हैं, इतना ही नहीं सतगुरु जी बड़े प्रेम और मेहनत से बच्चों के पेपर और नोटस भी तैयार करते हैं और उन्हें हर प्रकार की सहायता और मार्गदर्शन करते हैं।

—0—

एक सतगुरु ही जगत में प्यारो, श्वांसा उलट के महान चेतना को बूझे रे।
सहजता से जो आवे प्यारो, सो ही मीठा जान रे।

—0—

HOW TO BE FREE OF EGO – hope - future

(Relative truth is all rubbish.....)

One way of surrendring is by offering all actions to ‘Sat-guru’. Every thing of mine belongs to ‘Sat-guru’, including Mind, Body and Senses. With this attitude one comes to know ownself and attains the realisation of ‘Super Soul Sat-purush’ who is our real father, as we all Hansas are segments of ‘Super Soul’ i.e. of ‘Sat-purush’ Himself, but don’t make any demand from ‘Sat-guru’ or ‘Sat-purush’. Reject none, take help from none, as we have no right to utilise one’s precious time paying his dues for our own benefits.

In these days the whole society has indulged itself in foul play in worship and dealing with malpractices. Where as in bhakti we have to be careful in words, through action deed, through Karma’s that no body should be harmed, cheated, harassed in any way ; as this is the basic principle of worship externally or internally.

The practice of hypnotisation i.e. order of the day in vogue in every nook and corner of the country. Some try to achieve some thing great physically, politically or spiritually by hum-bug i.e. by gaining sympathy from the masses by declining and cheating them. Black Magic – to stop the breath cycle, choking the throat making individuals to weep cry.

A gentleman mentions as under :

Quizzing my chill about their new year resolutions. I was some what stumped (I just do not know what to say / or do). When they asked me mine. Why we always remain in the grip of problems. When one is solved other crops up.

Ans :- At a spiritual level, it requires recognising how we are an outcome of our past and relating to our experiences as mere learning opportunities in our Surti’s external journey.

Self acceptance is a significant theme and packles several other

resolutions that we may otherwise have. Examples

Be more grateful and generous; driven by our achievements orientation; coupled with a constant need to compare. We invariably focus on what's missing in our life rather than be grateful for all our blessings cultivating greater self acceptance paves the way for realising our true nature and that in turn makes us feel more grateful provided we have been blessed with Supreme Surti consciousness of true and perfect spiritual master (Sat-guru) to concentrate our Surti and elevate the Soul Surti / Consciousness. The inherent goodness within us makes us free from thoughts of Mind and Maya and we operate within with authentic (true genuine consciousness).

Now the way we judge others is a function of the way we judge ourselves. Be fearless of others's perception of us.

GIST

- 1 Listen more and speak less – if need arises – chances of attaining Mind.
- 2 It is for awakened person.
- 3 Nature and Kal Niranjana are as a unit.
- 4 Don't consider their existence, they are misleading Surti.
- 5 It is not truth, pure, consciousness, bliss i.e. joy none.
- 6 Attain 'Alive Holy Naam'. They get separated.
- 7 Have guidance of true and real 'Sat-guru'.
Lord Krishna - emphasised :
Karam yoga without personal gain or profit
calmness under all kinds of situations.
- 8 Kind Martin Luther said :- Fly, run, walk, crawl, move and move as per directions of true and real 'Sat-guru Vai Naam' Dass. Who make Surti free to fly when needed to go for off... crawl when not physically sound and monetary depleted.
- 9 1st step is the final step i.e. outcome - with true guidance.
- 10 With 'Alive Holy Naam', one emerges as new one.
- 11 Complete surrender is needed before 'Sat-guru'.
- 12 Follow, instruction, guidance of 'Sat-guru'.
- 13 Knowledge of self can be attained by 'Alive Holy Naam' and

virtues will follow suit.

- 14 Let go pride, steady effort, service of ‘Sat-guru’, self control, control on senses.
- 15 Non-attachment, awareness of short lived, free from worries.
- 16 Intense devotion, isolation.
- 17 Knowledge is for doing good, free from bad habits. All Surti Souls are alike, think for all, attain unity. Saatvik - unity - Rajasik - diversified - self interested. Rajas & Tamsik - both see world as isolate.
- 18 Statistical physics, quantum theories, but talks of unity in diversity - unconnected is easy to believe. Tamasik - people are lazy, slothful, inert and blind to reason and truth in presence of Mind and Maya one can’t attain awareness.

Time and space are related to those who get birth, The birth of child is like dawn - first appearance of the sun. A child with the passage of time attains adolescence and then attain youth, which is like day rising known as noon - zenith of life (peak stage - highest point of achievement) prime of life, but one should attain Zenith of life in Surti elevation.

After every peak we are bound just to get below the horizon, but this is the case where destruction takes place, but in the field of true and real spiritualism it is opposite of it. Attaining Zenith one attains permanent salvation. Journey of life i.e. body follow the process of moment of sun or movement of river which take birth in mountain and has its end in the sea.

Soul - Surti get freedom of baser elements and attains its true self and get to its original home ‘Amarlok and get connected with true and real father whose segments we are to play a match with Mind and Maya with due cooperation of ‘Sat-guru’ and his concentrated Surti which is elevated by the ‘Supreme Surti i.e. ‘Sat-purush’ of Amarlok, rather He Himself is ‘Amarlok’. A river in its journey, it experiences lots of ups and downs, changes, overcome barriers, challenges, sudden turns, curves (barriers, challenges), sudden turns, curves, good or bad seasons, but keeps flowing to ultimately reach its destination, without stopping. Inside the stream, we get affected by changes, but outside, we remain the same, as witness and unaffected. (i.e. observer and observed must be true) But we have no escape from flowing inside the flowing stream, inside the body as body segment. This is how body cycle and time both flows and

interlinked. Likewise, if you were to stand outside the body i.e. cosmos i.e. outside both space and time and look at five elements of which the body is composed of – and look at your life, you will see the birth of the body, childhood youth, old age, death, process of ageing, and every moment in between laid out, as distinct points.

From this angle, time with respect to your Surti / consciousness / concentration, time does not flow, but is static as you never change. Thus, time in itself is absolute (complete total) i.e. absolute truth, silence, darkness, absolute ruler i.e. ‘Sat-purush Himself’.

It means that you find all such transformations in life only in space and time framework, not outside of (it) these.

For experiencing the truth, joy, beauty and peace well within you, a concentrated Surti is required. Body is bound to become old and get perished, but Surti and Mind always remain young and only concentrated i.e. elevated Surti can know the true mysteries of Life, death, time and space.

v.v. imp... Only such a Surti is religious which is free from the impact of Mind, Maya and fourteen senses. ‘Vai Naam’ Paramhansa makes it quite clear that the service rendered as per the directions of true and real ‘Sat-guru’ of the time to his disciples i.e. Sadhaks that the instructions and principles laid down are supreme regarding selfless service of the society, to be in Surti Consciousness at the time of meditation ; without any wish and desire.

If need arises send message to (chetan) concentrated Surti of ‘Sat-guru’ and see the result within no time. Don’t pay attention to thoughts and be in the present moment with complete awareness. In the presence of Mind, life is full of challenges, when a person get imprisoned by the flux of thoughts of Mind and others, his own ability without concentrated Surti fails to attain freedom from the impact of Mind and Maya.

Intensity of doubts, fear, jealousy, prejudice increases tremendously and he fails to find the path in the darkness with external blind eyes. Belief and trust without ‘soundless sound word’ binds you from all sides and provide no outlet to escape and realise one’s true self. Where there is Surti / Consciousness, there is missile to attack any misconduct or deed of Mind and Maya of any nature which is going to have negative impact on Surti Concentration. The seeds of proper thinking get all gradients to sprout abridged with the outcome. Selfless service through Surti can change and modify the character of all Hansas

in this cosmos.

V.V. imp.....Guru Nanak Sahib Ji and Bhai Mardana reached the town of Dhaka. They were welcomed and taken to a dharamshala. It was owned by a man called ‘Bhumi’. At the time of serving food, guru ji said, “Bhumi, we’ll eat only after you tell me how you earn your money to manage this all langer seva, Bhumi was taken a back (got surprised). If he told the truth, it would make him look bad. On the other hand if he lied, he was sure guru ji would know that he was lying. Hesitatingly, Bhumi said, “I own large fields and I run a free kitchen and a place to stay for all the holy men who come to town. But I also steal when ever I can”, he added. “Bhumi” ... I’m very happy that you spoke the truth. However I can’t eat your food, it is burdened with the paid of the people you have stolen from”, replied Guru ji and added, “good fruit grows only when good seeds are planted. You still have goodness in you. That is why you spoke the truth. You must stop stealing immediately”, said guru ji.

Bhumi said, “ Fakir Sahib, you seem to really value the truth. My father, grandfather and great grandfather, all stole. Stealing is in my blood and bone-marrow.”

- 1 Always speak the truth, be kind and helpful to everyone,
- 2 Not eat from the house you have robbed and
- 3 You will never let anyone take the blame for that you have done.

Bhumi agreed to all what guru ji said.... and practised in life that is what needed from the side of disciple.

One, who has made his own ‘Surti’ as a pilgrimage of the whole universal holy places, souls, god, Sat-guru, Sat-purush, as an endless ocean of love, truth and joy must feel within drishta. (His presence) with the connection of ‘Alive Holy Naam’. He has conquered Mind, Mann, Maya and Sunnya. He is free from the connection of place, time and space which is every where. He has conquered, feelings, hopes of all attachments. Such soul ‘Surti Sabad’ is action less externally in all respects. With mind there is constant renewal of commitments of external world and ‘Surti Sabad’ in general in establishing internal bliss but union of soul with Supreme consciousness to be free from the bondage of birth and death is a must, but not without this ‘Holy Naam’. The place of pilgrimage is well within you. Which is endless in nature. It is, it was and it will be resting place for all elevated souls who possess ‘Alive Holy Naam’ of Supreme consciousness. If being blessed by Sat-guru of the time who is true embodiment of Supreme consciousness i.e. ‘Sat-purush’ the endless ocean of Amarlok including these three loks

too in it. This Sunya material is for the time being as fifth element of the universe in which god resides. Faith and love is not a static phenomenon but dynamic in nature like feelings. If you have known Supreme soul, remain attached with him. There is no need of other friend of the universe.

काव्य 1

जिस ने सत्य प्रेम आनंद को पा लिया प्यारो, अब उस एक का संग सच्चा जान रे ।
जिस ने उस प्यारे को नहीं जाना प्यारो, उस के जानने वाले का संग पाना जान रे ।
संसारी पद पदार्थों के पीछे मत दोड़ो प्यारो, छोड़ना ही सच्चा काम जान रे ।
संसारिक विषयों से विकृत होना प्यारो, मन मान से दूरी जान रे ।
सच्चे नाम की दात को पकड़ो प्यारो, 'वे नाम' दास लाया वह दात रे ।
निर्मलता साहिबन प्रेम प्यारो, बिन 'सार सुरत सब्द' बने ना बात रे ।
साक्षी (एकाग्रता लाना) बनना इसी चेतन सब्द से प्यारो, निजघर ले लेता जान रे ।
लेने को 'वे नाम' सब्द देने को प्रेम प्यारो, स्वीकार से जीवन का पाना जान रे ।
प्रेम की पुकार जानने की समझ प्यारो, सहज भक्ति का मार्ग जान रे ।
बिन प्रयोजन खिलना प्यारो, फूलों फलों का खिलना आना जान रे ।
मनुष्य भी तो उसी का प्यारा प्यारो, उस ओर चलो एक पग, वह पल-पल संग साथ रे ।
निःसब्द से सब होता प्यारो, झुकना सब काम कर जाता रे ।
मोक्ष द्वार खुल जाता प्यारो, जे सतगुरु कृपा कर जावें रे ।
द्रोणाचार्य ने एकाग्र सुरति से श्री कृष्ण को प्यारो, प्रसन्न किया जान रे ।
श्री कृष्ण जी खिचड़ी प्यारो, सने हाथों से आह्वान पर आन विराजे रे ।
द्रोणाचार्य बोले यह सब देख प्यारो, अंगुली काहे को चाटें रे ।

--0--

We need to approach any problem as if there is no problems, when we look it otherwise. We need to see the benefit of others first and last ignoring personal gain or profit to maintain balance in the universe. Let go 'I' and 'mine' and think for the betterment of the society at large. Therefore we need to approach any problem as a unique on priority basis for proper growth and development of the masses at large. By doing so, any difficulty will be transcended. We must not ponder over winning and losing in the field of spiritual growth and development within. When we are true disciples of true and real Sat-guru our each step will be right in the field of spiritualism, provided our intention is true and for the welfare of the masses at large. We are part of Supreme consciousness on this planet earth and always one with it, provided we

are blessed with ‘Alive Holy Naam’ bestowed by true and real spiritual master of the time.

The ‘Alive Holy Naam’ surcharges each cell of our body and make it spiritually elevated. Therefore, by looking beyond the immediate goals ahead, we get surcharged and motivated to work for the higher cause, to realise our true self.

In the Bhagwad Gita, (3.18) ... Lord Krishna characterises self-realised soul by giving a true and real picture of winning, “Having realised the essence of trueself to attain joy and truth of self realisation within, they no longer seek joy and happiness from the external world. They have nothing to gain but lose at every step of life journey. Life is not about our performance in the material world, but about keeping our focus on the ‘Soul Surti’ along with ‘Alive Holy Naam’ from true and real spiritual master of the time, to gain inner peace and joy of ‘Soul Surti’ to mitigate worries and woes of the external world which is of no use in the field of spiritualism. This ‘Alive Holy Naam’ will activate ‘Soul Surti’ to take us out from Karma philosophy to spiritual elevation to surcharge breath and to make it more upwards i.e. towards ‘Surat Kamal’ one-fourth feet about heat crown. This process keeps the breath in the upward direction and doesn’t allow it to fall in the naval base.

Sat-guru ‘Vai-Naam’ ji makes every one aware of the spiritual heights one has to dedicate one’s life to loving Sat-guru to surcharge ‘Surti’ and be one with Supreme Soul of Amarlok to get permanent salvation i.e. free from the cycle of birth and death.

Faith and only Faith : Faith should be out come of Surti consciousness and not through heart.

Rig Veda says :- Faith is composed of the heart’s intention. Light comes through faith. Through faith men come to prayer. Faith in the morning, faith at noon and at the setting of the sun.

O Faith give us faith !

Dharma is practical. It is not a theory. What to do and what not to do counts a lot in Nirti leads us to do’s and dont’s. When some body says something, it comes under : Yama and Niyama, but that too can be understood under Yama and Niyama, that too can be understood by dharama. One actually has to do something : So what to do and what not to

do ? In the case of niti ; indeed there are certain do's and don'ts . These further are called in sanskrit as vidhi, system and don'ts are called nishedha, restriction. The collection of do's and don'ts is niti. But in dharma there are no don'ts. Everything is conduct to be performed, do good, speak the truth which is already established. Don't tell a lie, don't steal, or snatch other's right ; be impartial without niti. We can't establish true dharma oneness in thought and speech is needed whether at home or outside home (in the jungle) truth and only truth at all costs. Come what may.... It needs inner glory love, faith and blessings of true and real Sat-guru of the time.

Construction, production and creation, Meditation.

Whether you are at home or in wilderness, there should be oneness in thought, speech and action under all situations and circumstances. One is strictly bound and should not consider himself free to move in any direction. Direction is specifies by “universal truth” of “Supreme being”. You will be free when you are fully established in guiding principles of true and real Sat-guru of the time.

To be in tune with ‘Alive Holy Naam’ is pooja, prarthna, concentration on Sat-guru's face includes all kinds of bhakti. We are the segment of Supreme consciousness, but we put before us the 14 blankets before our trueself, so see only darkness and darkness all around us. Let these blanket be removed by ‘Alive Holy Naam’ from true and real Sat-guru. You will see light of Supreme consciousness in and out before your ownself. That stage is enlightenment. The enlightened soul realises the whole cosmos i.e. three loks are also the segment of 4th lok which none else but enlightened supreme consciousness. i.e. Supreme Lord, Sat-purush of Sat-lok Himself. To settle down in truth is to have ‘Alive Holy Naam’ in your Surti consciousness. To be in tune with concentrated Surti of Supreme consciousness when blessed with ‘Alive Holy Naam’ from true and real ‘Vai Naam’ of the time.

चाह गई चिंता गई प्यारो, सुरति बे-परवाह ।

वह ही शहनशाह है, जिस को नहीं चाह ।।

- 1 Pray for desirelessness.
- 2 Fearlessness.
- 3 Provide food to hungry.
- 4 Behave like mother to innocent and downtrodden.

- 5 Be friendly to all creatures.**
- 6 Fall from the mountain and dive into the sea.**
- 7 Every thing in this world is of some use. Use it properly for the benefit of human kind.**
- 8 Don't show stick to animals, but food.**
- 9 Be calm and composed under all circumstances.**
- 10 No favouritism to any body.**
- 11 Don't take anybody as your enemy. Truth, love, joy is your own quality establish it and feel the same in others.**
- 12 Child's first guru is mother as best teacher in this universe of all living creatures.**

Faith is composed of Surti's intention of Love, Truth and “ANNAND” i.e. joy. Supreme light comes to Surti through faith and devotion. Through faith and devotion Human beings become true disciples of true and real Sat-guru. Faith is Surti concentration, faith is life on the planet whether it is day or night. Faith make us free from Mind and body with true blessing of Sat-guru's “Alive Holy Naam” in which Supreme consciousness itself resides to awaken you to get yourself liberated from our cloths on our Surti and Nirti to have our own true self before true and real Sat-guru of the time. In each breath make his presence felt for his benediction and love, what is this world ? Why we can't see Him. His presence is felt everywhere in every breath in or out.

Every moment Karma cycles in or out on the measure of human being is his control over Himself, lowerself, his passions, his pride, his thoughts, aspirations, dreams, deeds, feeling, emotions, self-realisation, control on breath, established links with true and real Sat-guru of the time or not. Time table of sleep, friend circle, relation with father, mother, brothers and sisters.

- 1 Good and bad deed – Drinks or not**
- 2 Born with silver spoon in his mouth or way of living helping or getting help from others.**

Three levels of Karma :- Body, Mind and Surti.

- 1 Are you slave of Mind and body or mind and body your slaves.**

- 2 Way of worship – external – internal.
- 3 Firm believer of god or Sat-purush.
- 4 Knowledge of three loks – or four loks.
- 5 Knowledge of self.
- 6 Difference between Mind and Surti.
- 7 14 gates of external effects on Surti.
- 8 Every moment bombarded with thoughts, ideas, wishes and so many branches of wishes and desires.
(42 thoughts in a minute). $42 \times 60 \times 24 = 2520 \times 24 = 60480$ in a day.
- 9 Blue print for our lives.
- 10 Karma is not law, it is imposed from mind, Sants move towards Supreme consciousness.
- 11 It is natural basis of all existance.
- 12 Everyone of us is equally responsible for our own destinies.
- 13 Karma is an internal cycle generated by us.
- 14 Appears external, but all is in general internal. (new house-wife - child - friend - business - riches - car - post - position).
Solar cycle – lunar – 28
12 years — deranged... psychological imbalance --- पागल बनाते रे
These patterns needs to be broken – otherwise they will make your life miserable – worse to worse.
- 15 Balance and stability through ‘Alive Holy Naam’. What you did in the past is stead fast with you but ‘Alive Holy Naam has the power to undo the past.
- 16 Karma is tight skin garments - you turn to become the master of your destiny.

कृष्ण सुदामा का मेल

Every year, independence day is celebrated through out the country. We are relieved off poreng regime. We are progressing by leaps and bound in the physical world – i.e. we are physically free but we have never thought out our real self i.e. soul. It is still in bondage, which is our true self, (essence). Physical freedom is incomplete without the freedom of the soul. i.e. our life is not on true path of spiritualism – we have to live in family, society and world as whole – for that we must be free from the bondage of mind and maya, think with in you – are you free from the lust of money, power – ammassing wealth by fair and foul ways to become self sufficient at family level, society level – at religious level.

-0-

WHEN WE WILL BE LIBERATED FROM DEMANDS ?

USE Mind, but don't become it. Use it like other machines. It will serve you nicely, provided you have the power to control it.

You are surrounded by sea of thought bags of thoughts, but be silent, be mum, but be 'Alive Holy Naam' in Surti and see the sea of thoughts will disappear in no time. You will feel as a dream. What one said five years back no body pays attention – promises are promises.

**वादे तो वादे होते हैं कब होते हैं,
इन पर कौन ध्यान है देता कब आते कब जाते ।**

Soul is free when we are in the real sense in the present moment.

Your action is judged by your intention (Quran).

The Tiger (willian blake)

Tiger Tiger burning brisht –

In the forest of the night.

What immortal hand or eye could frame thy fearful symmetry ?

**When the stars threw down their spears. And waterered
heaven with their tears. Did he smile his work to see ?**

Did he who made the lamb make thee ?

“Genuineness and sublimity of the act”.

Your action, will be judged by your intentions, charity (for your own) performed for self agarandisement, name, fame or vested interest gets relegated to mere selfish act. What so ever we possess is divine charity is the message to the awakened man. Who is spiritually elevated, awakened can realise the true meaning of having wealth half the needly – do good and move on in life as usual in awakened state with open eyes to see the welfare of the society at large – uplift the needy and deserving person or persons to make your life meaningful in

this world of Mind.

Ramanuja's eighteen guidelines of a sadhak. It is written by C.J Indra - former head of the department of english, University of Madras :-

A sadhak/disciple of true and real Sat-guru is a person like his Sat-guru being true religious soul is free from the bondage of caste, creed and religion, he is neither Hindu nor Muslim, nor Christian, Sikh, Budh, nor of three lok's God. There is a need to be pure Surti soul with 'Alive Holy Naam, to be free from the bondage of 'Kal-purush' i.e. Nirankar / God / Onkar etc.

In general people without attaining Surti consciousness, become Hindus, Mohammedans, Christians, Buddhist etc. Spiritualism is a path of freedom i.e. free from any bondage. He is fearless, disciple of true and real Sat-guru of the time. He doesn't follow the path of spiritualism blindly, if 'he' is awakened soul. True Sadhak of Sat-guru, possesses firm faith, in true and real Sat-guru of the time, false personality is hypocrat, cheater, and non-religious person on this planet. Newness due to 'Alive Holy Naam', make one awakened and fresh due to changing behaviour and attitude in the changing circumstances. The actions, behaviour, smile of the face make him worth living soul in the changing circumstance within and without.

Ramanuja founded Vishisht Advaita School of Veclantic thought, was a seeker 'saddak' when he was a guru, a rare combination.

The natural state without ego and Mind effect is really fearless, full of love, truth and feel itself in joy. In this state one doesn't feel the need to be perfect and elevated soul. You are ready to accept every bit of criticism with elevated soul with 'Alive Holy Naam' from true and real Sat-guru. You possess confidence, feel relaxed with calm Mind and composed, acting under the guidance of 'Surti consciousness. In the vaishnava tradition the acharya is considered to be god. He bestows just through his glance, causeless, without undindered (obstruction) to the god Himself the pontiff of Srirangam Hutt Ramanuja learnt from five acharyas – Mahapurna, Kanchipurna, Ghostipurana, Sri saila purana and Heladhara. One of the best known

episodes of Ramanuja’s life as a seeker and disciple is about the time when he was asked by Tiru Koshtiyur Nambi to journey all the way from Srirangam to Tiru Koshtiyur eighteen times before being accepted as a student. His learnings there from may be studied as an exemplar of adhikaaratyam qualification of a disciple.

- 1 An aspirant should have attachment to worldly pursuits.
- 2 With the rise of goodness, the ego and sense of ownership (will vanish) ought to vanish.
- 3 Unless and until the ego and sense of ownership get dissolved, attention to the body will not vanish.
- 4 Unless and until attachment to the body perishes self knowledge (Soul-Surti) will not arise.
- 5 Unless and until knowledge of the self born disdain for worldly prosperity will not be born.
- 6 Unless and until the cessation of worldly attachment happens, devotion to god will not be born.
- 7 Unless and until devotion to god arises the taste for worldly enjoyments will not be extinguished.
- 8 Unless and until the taste for worldly enjoyments ceases, one’s sense of dependence on god will not be born.
- 9 Unless and until one understands one’s dependence on god, attachment to material possessions and worldly passions and hatred (fear) will not cease.
- 10 Unless and until one becomes free from likes and dislikes, one will not attain the state of Sri Vaishnava.....one who will not brook another man’s misery.
- 11 Unless and until one attains the state of Sri Vaishnava one will not get acceptance among and accessibility to the fold of good people.
- 12 Unless and until one gets admission into the fold of Satvik people, acceptance from devotees of the lord will not be possible.
- 13 Unless and until one gets acceptance from the fold of devotees, one can’t hope for close proximity to the lord.
- 14 Unless and until one attains proximity to the Lord, one will not turn godward in one’s pursuits.
- 15 Unless and until one turns Godward, one will not understand one’s worthiness to be dependent on god alone.
- 16 Unless and until one understands one’s dependence on god alone, one will not understand that there is no other refuge for one.
- 17 Unless and until one understands that there is no refuge but god,

one will not become eligible for initiation.

18 The inner import of the Ashtakshari mantra will be realised by the eligible person. By sharing with us what he learnt from his acharya. Ramanuja blessed us all.

19 Faith and full trust on Sat-guru will enable you to realise ‘god’, Sat-purush.

20 Sat-guru must possess ‘Alive Holy Naam’ to concentrate the Surti of sadhak to open Sushmna but by putting ‘Alive Holy Naam’ in Surti.

21 God is Mind and Mind can’t provide liberation from Maya.

काव्य 2

मैं और मेरा छोड़ दिया तो बंदगी प्यारो, मैं भी धोखा मेरा भी धोखा जान रे ।

हृदय में नहीं प्यारो, सुरति में सम्भालना करावे भव पार रे ।

आपा अपने नाम का छोड़ो प्यारो, तब जो भीतर शेष रहता चेतना जान रे ।

उसी में उसे समाना प्यारो, निजघर को ले जाता रे ।

मांगने योग्य समझ कहाँ प्यारो, मांगना ही सब उल्टा करे रे ।

..0..

Warner-Heisen berg in 1927,

No one ever gets the entire universal.

Uncertainty principle :- Position of particle and its speed - both can’t not be ascertained at a time.

1 Position - speed is gone, somewhere the earth and somewhere the sky is missing.

2 Relation between two complementary properties for microscopic particles. Thought from behaviour – Soul Surti.

3 Understand the universe – prism of everyday life.

4 O.k we can’t have all the things at a time, or we don’t get everything right, all the times.

1 कुछ खोना कुछ पाना (No one can have the entire universe)

2 मन से काम – सुरति खोई

3 सुरति से काम मन मान गया

4 अंदर से अंदर – आपा

5 बाहर से बाहर – मन मान का

6 संसार का खेल – एक पाया—सब पाया,

ईक ना पाया सब पाया जान अजान – of no use

One is with you, other is gone.

**Just now – Soul Surti & tomorrow – Mind.....We take best in both
For Mind :- Yesterday or tomorrow,
Religious man :- Just and now development – ecology
Everything can't be achieved how hard one may try.
Career-Family.....sometime we miss both or gain both
Surrender & get a booster dose.
Limitations are there in both – put all in the hands of Supreme power and
plunge in one.
Sometimes we end up with nothing. Focus inwardly and start your
journey, don't put pressure on you.**

“Mind, Maya both have gone Surti ‘Sat-guru’ Sang Samai Re”

Desire is opposite to love.

Ice & ater – steam / happiness / breath.

**Extra : Left brain – hemisphere – Reasoning – logic –
mathematical (Mind) Extra : It is hemisphere of calculation,
cleverness of discipline, अनुशासन में रहने वाला, Problems solve
करने वाला, Order लेना देना**

**Right - chaos, not of order positive not of order not working
properly. It is of poetry not of prose love – not of logic – great feeling of
beauty. Great insight into originality. It is not efficient and can't be
efficient. He goes on experimenting i.e. creator is not efficient.**

--0--

**झूठ नीम सा कड़वा प्यारो, दुख बिन कुछ मत देता जान रे।
जात धर्म मेरा नहीं प्यारो, पांच तत्व का पुतरा भी मत जान रे।**

—0—

काव्य 3

जो वस्तु जन्म लेने से पहले प्यारो हम अपने में लाये, वही मरने पर भी साथ रे।
जग में जो भी और कुछ पाया प्यारो, मरने पर सब बिन हंसा नहीं कुछ साथ रे।
फिर भी कोई—कोई प्यारा जाग है पाता प्यारो, और सभी जन्म मरन के चक्र में जान रे।
मरने से सभी डरते प्यारो, मरने पर बिन निज रूप सभी खोया जान रे।
जो कोई पूर्ण संत से विदेह सब्द की दात है पाता प्यारो, मरने का भेद पा जाता रे।
उसका जन्मना मरना छूटा प्यारो, सत्यलोक निजघर वासा पाता जान रे।
अपनी पहचान जब हो जाये प्यारो, जग को जगाने का कर ले काम रे।
बोलना विचारना सिखावट प्यारो, सुरति ने जो पाया वह ही अपना रे।
उसी में प्रेम सत्य आनंद प्यारो, सिखावट में केवल धोखा जान रे।
संसार विषयों में रस प्यारो, सभी इन्द्रियों में प्रतीष्ठा भोग रस जान रे।
भौगों में मुक्ति कहाँ प्यारो, बिन 'वे नाम' दात संत एक मत जान रे।
कोई कभी कभार 'वे नाम' सतगुरु सा प्यारो, जग में ऐसी दात सतपुरुष से पाता जान रे।
वैराग्य बिन कामना के प्यारो, भक्ति में वैराग्य वैराग्य में वह आया जान रे।
जिस से आये उसी में समाना प्रेम प्यारो, तांही से सत्य आनंद संग साथ रे।
जग की हर वस्तु में रस प्यारो, यह सब मन के खेल जान रे।
जब तक आत्म चेतन नहीं प्यारो, पार एक मत जान रे।
बिन सतगुरु आत्म ज्ञान नहीं प्यारो, आत्म ज्ञान पूर्ण सतगुरु सूं जान रे।
ता से हंसा रूप प्यारो, सुरति निरति का मेल रे।
चेतन सुरति ही महाचेतन में समाती जान रे।

..0..

1 We all are segments of Supreme consciousness, we all and the whole world is collection of energy of god and Sat-purush. Though appear one but are separate. If you pick up one, the other is out of hand – both are essential ; scientifically and spiritually.

2 If we move outwardly it leads to science and Mind which never makes us spiritual.

3 If we move inwardly by the grace of Sat-guru's "Alive Holy Naam" then we are spiritually elevated and moving the right direction to attain the goal of attaining true self and to be one with the Supreme power - Sat-purush.

4 Outward energy is of desires, wish.

5 Mind's i.e. body's energy moves towards worldly possession and energy i.e. Surti with “Alive Holy Naam” moves towards the Supreme energy of Surti consciousness.

1 A true religious person is one who is free from religion and caste problems - internally as well as externally and also from devotion towards religious festivals etc.

2 Give shelter and all sort of help to any stranger who comes in your contact or you come to know about his or her problems, but do get direction from your true and real Sat-guru. Try to be humble servant and sadhak of true and real Sat-guru of the time.

3 Sit for meditation when you are internally excited ready to do so as per internal will. It should be a policy to forgive and forget.

4 Crowd in a society does not receive the stranger as their own is a sin – you do your duty with devotion and dedication – leave the rest up to Sat-guru and Sat-purush. These all is needed for peace of Mind and for your ownself – deserts are walking mountains miles and miles to cover a lot. Desert is a reality - mountains are fictitious. Enjoy your prayer for the well being for all. Be humble, helpful, loving attitude will let go your ego.

Greater the power - more dangerous the abuse Atomic war : is at the door and lies in hands of computers. We can lift ourselves up by the grace of god but, by the grace of “Alive Holy Naam”, which can't be written, spoken, but can be infused by true and real Sat-guru's Surti consciousness, which is a gift bestowed to true and real Sat-guru by Supreme consciousness to elevate the Surti soul of the masses to attain permanent salvation from this planet. If you can't use it and it starts using you, it is destructive - it is dangerous, It will never allow you to reach your true home destination i.e. Amarlok / Satlok / Sahib Lok.

–0–

**दास महं चेतना का अंश प्यारो, सुरति निरति से हंसा जान रे ।
जीवत मरना जग में भला प्यारो, जे पूर्ण सत्तगुरु से पाई दात रे ।**

–0–

UNIVERSAL TRUTH LOVE AND JOY

True Dharma is elevation of Soul, It is not Religion, Culture or path. It is not sampradaye, cult, panth. Dharma is guna attribute. The guna of sugar is sweetness, i.e. to make anything sweet to taste. We possess three most important things i.e. body, mind and spirit. Chandan tree, has fragrance, sandalwood tree too has unique fragrance, fruits have their distinct flavours and juices. - their guna, dharma, can't be altered by human beings and animals soul is also created by Sat-purush, where as body and mind are created by god i.e. Mind himself. The dharma of human beings is to develop love and compassion for all the creatures in this planet to create beauty and harmony all around. Human beings and creatures possess soul which has come from supreme soul (Sat-purush of Amarlok / 4th Lok) and body and Mind have come from god of these three loks. Dharma of man is to manifest divine qualities with due grace of Sat-guru of the time. For this become passionate and create beauty and harmony, humanity in all living being and in nature. One must be equipped with truth, love, intelligence to be thoughtful, devoted to Sat-guru, sensitive towards duty, concerned and considerate about the welfare of all.

Try to be innocent like a child to have a smiling face to please everybody who so ever comes into your contact. Child like simplicity and trust which is a basic nature of every being. The guna, dharma, as stated in all the scripture, especially in Gita to remind, establish, invoke and resurrect. The dharma of man is shashwat, sanatan, satya, prem, anand. True religion is one just like science Buddha - compassion (shashwat) creation, perfection and destruction. Dharma's law – only one – Imperfection, Man and Kind to go. To be in present let go past and future.

Christianity on service with devotion and love without any discrimination of religion and caste. Islam : on honest earning in all respects Hinduism – Karma philosophy. However Sanatan Dharma has only one law imperfection has to – love, honesty – joy are the perfections to follow. Everyone should be helped, guide to live and blossom according to their individuality i.e. universal principle for all, food, cloth and shelter :- the basic necessities to be provided to the masses by all means, as science is one so the science spiritualism too should be one. Know thyself through true and real Sat-guru of the time to have true knowledge of Soul and Supreme soul, whose segments we are on earth and in other planets way action and adaptation. Soul is purified by Alive Holy Naam which comes from Supreme consciousness – whose segments we all are on this planet – i.e. Sanatan Dharma 'know thyself' by getting true and Alive Holy Naam from Sat-guru of the time who is always one on this planet endowed with all gradients from Supreme consciousness from true and real Sat-guru of the time.

COMPLETE SURRENDER TOWARDS SATGURU OF THE TIME

One doesn't learn from successes, you don't learn from awards, wounds, scars, mistakes and failures. And that is the truth of life.

Free yourself – The search ends, with the realisation that there is no searching, one want to be free from the self, but whatever you are doing to free yourself from the self's is the self and then its source through “Alive Holy Naam” of true and real Sat-guru of the time. O, Son of glory ! Be true and swift on the path of truth and love to enter the gave of Supreme consciousness to be free from life and death cycle on this planet. Purify your Surti from Mind and Mann when being blessed with “Alive Holy Naam” from ‘Vai Naam’ Sat-guru of the time to establish your link with chetan Surti of ‘Vai Naam’ Sat-guru of the time to attain permanent liberation from life and death cycle on this planet. You have to communicate through concentrated Surti of Alive Holy Naam of true and real Sat-guru of the time. Once you have established proper link of Surti with concentrated Surti of Sat-guru through Alive Holy Naam bestowed by true and real living Sat-guru of the time. He is the gate to enter into the domain of Sat-lok the real abode of all Hansas on this planet. You cannot communicate through intellect. You can communicate to birds, flowers at Sat-guru through (chetan) concentrated Surti of “Alive Holy Naam” to even Sat-purush through “Alive Holy Naam” with complete surrender.

1 To HURT - someone - And un-necessary reward FISHING AND BLAMING OTHERS - One who is caught in the hook as a fish :

REWARD is : Un-necessary suffering at one's end . It is border to heel the hurt of fool then the hurt of an intelligent person.

2 What should we do to remove our inner hurt. We are result of our psychological programming our unhappy mind operates at three levels.

3 There is psendo positivism, there are our past hurts spin a world of hope in the future.

4 We are unhappy and hurt - rather very miserable and instead of facing it authentically, we create artificial and plastic smiles and thus cover our inner wounds. This type of positivism has social decency but has false value.

काव्य 4 (अमरलोक की यात्रा)

जा पहुंचा उस द्वार प्यारो, जहां परमहंसों का परिवार रे ।
चढ़ गई सुरति संग निरति के प्यारो, संग डौरी 'वे नाम' की रे ।
चेतन सुरति खोला, महंचेतन कुण्डी ताला एक साथ रे ।
सुरति धारा शांत भाव से प्यारो, चली उस अमरलोक विस्तार रे ।
अष्टम चक्र को पल में खोला, साहिबन हुआ दीदार रे ।
संग—संग उस पार चले एक साथ प्यारो, पाया अमरपुर देश प्यार रे ।
देखा पुहुप वास से पातला प्यारो, वायु से अति झीन रे ।
पानी से निर्मल प्यारो, पांच दौस्त देखे ईक साथ रे ।
घट—घट में वासा साहिबन का प्यारो, सुरति ध्यान से प्रगट होये रे ।
बलिहारी सतगुरु कृपा कीन्ही प्यारो, साहिब के दर्शन पाये रे ।
जो ना मन्दिर तीर्थ दीठा प्यारो, ना वह व्रत उपवास में रे ।
खुला द्वारा पाया साहिबन परिवार प्यारो, सुरति चढ़ गई डौर पतंग संग जान रे ।
ऐसी प्रीति चांद चकौर की प्यारो, सब से न्यारा साहिब हमारा रे ।
सुरति रोक़ी महल पास प्यारो, किया साहिबन दर्श प्यार रे ।
अष्टम चक्र में देश हमारा प्यारो, वेद क्तेव से पारा रे ।
ऐसा देश हमारा प्यारो, परमहंसों का संग न्यारा रे ।
औंकार का अता—पता तहां ना प्यारो, नहीं तहां काल पसारा रे ।
परमहंसों से मेला प्यारो, साहिबन दर्श प्यार न्यारा रे ।

--0--

Imp. :- We are not behaving and transforming, but covering our hurt.

5 Then this hurt is pushed into a deeper level of our mind 75% enhanced.

6 This 75% elevated heart trigger our past hurts in the subconscious mind and the both past and present = 25% + 50% = 75%, Thus the hurt attains more strength and power as compared to past hurt or insult without any fault or misbehaviour melted out to doer. The victim has to tolerate and live as usual without expecting any good from the side of the doer or society at large. Sometimes coming events from the old doers to cause wounds will always repeat the same hurt in an other way or situation but never anything worth accepting from them.

काव्य 5

राम नाम नहीं (हृदय) सुरति धरा
 मंसूर, सरमत, गुरु अर्जुन देव, जीसस, गुरु तेग बहादुर,
 प्राण ले लो प्राण दे देंगे रे ।
 हम अपनी सम्पदा को अगली से अगली पीढ़ी तक पहुंचाना चाहते हैं ।
 यह बहुत बहुमूल्य समर्पण था, है रहेगा ।
 पायो जी मैंने प्यारो जो लोहे को भी सोना कर देता रे ।
 सतगुरु देत पुकार पे पुकार रे, आओ चलें उस पार रे ।
 सतगुरु ने दिया हिला रे, तुम सुनियो संत सुजान रे ।
 गरीब दास जी पर भगवन अवतरित किया,
 दरिया साहिब भगवन अवतरित किया,
 बुद्धजन चलहूँ, अगम पथ भारी,
 प्रज्ञावान, बुद्धिमान – उस मालिक के पथ पर चलो
 तुम ते जो समझ आवे,
 आवाज, पुकार, हेला तुम्हारा आवहान कर रहा हूँ,
 वह आते पुकार पे पुकार देते प्यारो, हम सुनते कहां प्यारो ।
 अब की बार संभल मेरे भाई यह समय बीत गया तो.....
 सतगुरु दिया हिला रे ।
 तुम सुनियो संत सुजान इस बार तो सुनो भई प्राप्ति मानुख देह हुरिया,
 मानुष जन्म दुर्लभ प्यारो, पुण्य कर्मों का अहंकार बहुत दुख दाई रे
 जनक क्या दिया (अष्टावक्र),
 चौथे लोक सत्य लोक निजधाम से आया मेरे भाई,
 अमर आत्मां तेरा रूप प्यारे, मन मान को पाई सत्य प्रेम आनंद भूला मेरे भाई,
 देदा दे लैदे थकि पाहि, जुगा जुगती स्वाही खाही,
 नानक विगसे बेपरवाहु,
 कर्तापन के लिये बेपरवाह अज्ञानी मनुष्य,
 उसकी करनी को प्यारो, अपनी करनी बताता रे ।
 वे जीवों पर क्रोध ना करके, उनकी अज्ञानता पर मुस्कुराता जान रे ।।

—0—

UNLESS DOUBT - WISDOM IS IN DOUBT ... SUMIT PAUL

“The root of misery is (doubt) duality. There is no other remedy for it except the realisation that all objects of experience are unreal, where as I am pure (one) consciousness, and bliss. All living are pure consciousness.

Through ignorance, I have imposed limitations upon myself, constantly reflecting in this way, I am abiding in the (material). Absolute or not is a question mark”.

Superstitious Devotee and Bigot.

Righteous doubt.... Some say, yes, doubt can also be righteous doubt and (1) and it is a way to enlightenment. (2) Unless you are in doubt, your ‘wisdom’ itself is in doubt. “Some speak of volumes of doubts” in praise of the role of doubts in an individual’s life.

Doubling is not a negative trait, nor is it demeaning to one’s faith or beliefs in ‘Satyaguru’ of the time. Jalaluddin Rumi explains the importance of doubts through a parable.

Doubt is not out right denial – doubting is a process before logical acceptance. We tend to believe in every thing without questioning. This is not a desirable quality. Socrates said millennia ago, ‘an unexamined life is not worth living’. We must question doubts and vi vi sect our own beliefs before accepting them as axioms.

Important : To doubt is to be devout. Faith that answers to all your doubts is faith that stays for ever. To be sceptical, is to be careful and circumspect. Those who truly believe are often tormented by a barrage of doubts. Doubts act as catalysts to one’s journey to faith and enlightenment.

Mother Teresa and Martin Luther King Jr admitted to having been tortured by recurrent doubts about god’s universal love called Agape in christian theology. But their doubts only strengthened their faith in god. At the same time, sincere doubts made many individuals realise that their hitherto beliefs and faith were flawed.

Somalia was a fanatic Muslim who later became an atheist just because her persistent doubts made her believe that she was wrong. Whether doubts destroy your faith or consolidate it, one thing is fully sure. They strengthen your self belief. Doubling is an internal rising. It is a procedure of self purification because at the end of the day you are answerable to yourself, not to an imaginary god or imposed and borrowed belief system. I am your doubt, therefore, you are doubling is the final statement in positive self assertiveness. Bliss (to much happiness) and creativity – make us desire less.

--0--

काव्य 6

अति सुख और शान्ति प्यारो, आशा तृष्णा से करती दूर रे ।
निज की खोज “वे नाम सद्” से प्यारो, सच्चे घर की राह पर चलना जान रे ।
सभी मनुष्यों में मत-भेद मन-मान से प्यारो, कहीं कम कहीं अधिक जान रे ।
अंतः सब ने एक होना प्यारो, समय का ही फेर जान रे ।
हाथ जोड़ कर स्वागत करो प्यारो, नहीं तो अच्छे शब्द ही कह दो रे ।
देश की महंता के साथ-साथ प्यारो, आत्म हंसा की पहचान अवश्य जान रे ।

VIVEKANAND writes :-

You can't believe in god until you believe in yourself. Where can we go to find god, if we can not see Him in our own (heart) Surti and in every living being consciousness.

(1) ‘VAI NAAM JI’ says :- First believe in yourself through ‘Satyaguru’ of the time. Get awakened by ‘Alive Holy Naam’ to let go all sorts of (future) wishes, desires, by elimination of five ‘karam indri’s, five gyan indris and four segments of Mind, Intellect, Memory centre, Heart kaaran plux (indri) ahankar plux.

(2) Be like a child to create god well within your ownself, through ‘Alive Holy Naam’ i.e. Sar, Surti Sabbad to establish ‘Him’ in your own Surti, but not in the heart. You have to become the task you are performing. Develop the habit and attitude of listening rather than talking, talk very less and listen more and more, provided you can spare time for that purpose.

(3) Adopt the philosophy of non-violence.

काव्य 7

- 1 निष्क्रिय निष्किर्म सुरति ध्यान प्यारो, अंदर का संतुलन ब्रह्मचर्य अवस्था पाई रे ।
सुष्मिना खोलना प्यारो, सब्द सुरति श्वांसा एक करना जान रे ।
ता से तन मन से प्यारो, अलग होने की विधि सत्यगुरु से पाई जान रे ।
- 2 विचार मन मान से प्यारो, सुरति ध्यान से सब छूटा जान रे ।
सुरति चेतन 'वे नाम सब्द' से प्यारो, महांचेतना का संग पाया जान रे ।
- 3 हर बीज में प्यारो, तीन अवस्था का भेद पाया जान रे ।
भूत भविष्य वर्तमान प्यारो, भेद रखता संग साथ रे ।
- 4 सार सुरत नाम निज औषधी प्यारो, सत्य प्रेम में रह कर खाये रे ।
औषध खाये सत्य प्रेम अपनाये प्यारो, ता से मन माया छूट जाये रे ।
- 5 सब्द पाये मन सुरति निरति अलग प्यारो, संसार का आकर्षण छूटा जान रे ।
विदेह सब्द तीसरी आंख खोलता प्यारो, जो जन्मों जन्मों से बंद पड़ी जान रे ।
- 6 भृकुटि के मध्य आंख प्यारो, खुलने से आज्ञा चक्र में प्रवेश जान रे ।
दोनों आंखों को भृकुटि के मध्य प्यारो, दृष्टि को स्थिर करना जान रे ।
- 7 ता से ध्यान एकाग्र करना प्यारो, अति सहज अवस्था पाई जान रे ।
दोनों आंखें अंदर से प्यारो, तीसरी आंख में सम्मोहित होई जान रे ।

--0--

Theories often mislead the masses. It create confusion among the masses on the basis of religion. If one wants to reach the true and real source, true and perfect guide i.e. 'Satyaguru' is needed at all costs. Without him one is sure to be mislead in the noise of the misled, misguided people. You can't have direct link and guidance from god or 'Satyapurush'. He directs, guides, accepts in the guise of true and real 'Satyaguru' of the time. He answers, but through his agent 'Satyaguru' to establish your devotion, dedication and aspiration towards god. There is no question of

religion, be free and put your ego and pride on the lotus feet of true and real ‘Satyaguru’ of the time. Your conscience will make you to realise his true place and position in between the two. Whatsoever you do for your own self and for a particular religion is no way going to help you or the society at large if you are not broad minded and not receive every one with open arms.

काव्य 8

“आत्म, अनाम, अरूप प्यारो, ता का सच्चा रूप एकाग्र ध्यान जान रे।
सुरति चेतन में ध्यान प्यारो, अमी—सुरति आनंद का अनुभव कराती जान रे।
जो रक्षक ता को याद ना करता प्यारो, असत्य भक्ति में हर एक लगा जान रे।
इस जग की अनूठी रीति प्यारो, सत्य से दूरी झूठ से प्रीति जान रे।
एक जात (आत्महंसा) सकल संसारा, और सब जग में झूठ पसारा रे।”

--0--

The xiv Dalai Lama : BUDHA – When we meet others, we should not think of ourselves as superior or look down and pity them, but think of ourselves as more humble than they are. We should hold them (as spiritual personality like yourself) and revere them because they have a capacity equal to the activities of Buddhas to grant us happiness and enlightenment, to make them to move towards true spiritualism. Human beings can and do make mistakes and some times blunders sending out positive thoughts and good wishes.

1 You can't have anything from god directly – be in search of true and real ‘Satyaguru’ of the time. Forgiveness word don't exist in the dictionary of god. Written can't be undone.

2 Are you happy with the way you are leading a life on this planet.

3 We have to develop yearning for divine upliftment.

4 Develop humility in the presence of ‘Satyaguru’ to get your burden reduced in thought and words. Grand spectacle to tear it off to eat it in enjoyment.

Manipulation, repression is easy – any fool can do it religious places are full of such people.

v.imp.: “Divine - worship, concentration is always last to be performed in one’s life time and that period never comes because god keeps you busy in past and future - what have and what to achieve.”

Ist ----- are infinite and last never comes. Knowledge is : truth, love and joy - ultimate goal now and here in this moment is simplicity. Truth, love and joy. Artificial intelligence computers, Simplicity – just yourself.

In Athens, socrates, plato, Aristotle, pythagoras, Heraclitus - who released great intelligence and a climate was created of freedom, of free thinking - Most wonderful thing was destroyed by those who were going to happen in the world again.

If you are doing something, reading something, any sort of activity you are involved in, enjoy in all and never pay attention to others - what do they say, speak or act. Let them think any way they want to. You have to be very careful regarding guidance of true and real ‘Satyaguru’ of the time. Be honest and true to ‘Him’ under all situations and condtions. Your life has to be shaped and moulded by your true and real ‘Satyaguru’. Don’t penetrate into past, past and past – future, future and future. Present is sufficient to get you awakened. Any peak of noble work provide us immense pleasure provided you are true to self and ‘Satyaguru’ and always live in ‘Alive Holy Naam’ of Supreme consciousness bestowed to you by true and real ‘Satyaguru’ of the time. But for all this, your Surti needs to be uni-directional i.e. always concentrated on the lotus feet of true and real ‘Satyaguru’ of the time. God is shore less ocean you can’t be away from him under any situation, but still it is thousands of miles away from you if you are not blessed with ‘Alive Holy Naam’ of true and real ‘Satyaguru’ of the time. Your inner connection must be needed with the inner to the outer to establish true and real relationship with the Supreme consciousness. He is out - be in and out to realise true self - you must be true in love, in truth and to be in bliss (Annand) complete Annand.

—0—

**मरने से पहले सतगुरु सद्द पाये जो प्यारो, साहिबन संग अमरपुर जाये रे।
मन से सावधान रहना प्यारो, बिन दोखा देने के कुछ ना करता काम रे।**

—0—

LIFE IS JOURNEY OF DESIRES

There is wise saying, “You are where your thoughts are”. Most of the time, during the walking hours, one gets engrossed in one’s thoughts, especially when one has no control over them. It is not our thought but of unit mind and cosmic Mind i.e. of god of these three loks i.e. Mind and body itself. These thoughts develop imaginary world all around us i.e. Surti consciousness / concentration. Good and bad thoughts are two sides of the same coin. They go on tossing you to have a taste of both, at one moment a pleasant thought and the next moment an unpleasant thought. One consoles us for sometime, the later puts us in great delima i.e. some sort of tragedy is in store for us. There is no way to escape, so long we remain ignorant about the nature of unit Mind and cosmic Mind, we as Surti is deluded by Mind and Maya and never provides any opportunity to realise our ownself.

These rejected suppressed and repressed thoughts, from the side of cosmic Mind, force their entry deep down in what is called the sub-conscious Mind i.e. unit Mind. Where they take refuge but are always at work i.e. full of activity.

—0—

SATYAGURU’S PLACE IN THE SOCIETY

True and real ‘Satyaguru’ of the time is endowed with complete enlightenment, sees through inner eyes of Supreme consciousness endowed by ‘Satyapurush’ ‘Himself through Surti. This entire universe is God’s own creation and ‘He’ resides in sky matter which is expanding each moment, which is other than soul Surti. It can’t be named Atman, as in Atman, Mind and Maya do exist so long we are on this planet and incapable to concentrate our Surti with ‘Alive Holy Naam’ of Supreme Soul, the knowledge of which lies in the hands of Supreme power i.e. ‘Satpurush’ whose segments we are on this planet in various forms of life. True ‘Satyaguru’ only can liberate soul, from the clutches of Mind and Maya by blessing the disciple with ‘Alive Holy Naam’ bestowed’ to ‘Him’ (Satguru Vai Naam Ji) by Supreme power to liberate the souls.

When we come to know the true nature of Mind, then his power vanishes instantly and ‘he’ becomes powerless. Don’t take rope as snake to be afraid of it.

“जगत की नज़र में भक्त गया प्यारो,
भक्त की नज़र में जगत गया जान रे।”

Sending out positive thoughts and good wishes make you stable and desireless under all circumstances in this world of Mind and Maya which has put soul Surti in its clutches.

Positive shift with Surti consciousness...

We see and feel different in different kind of environments-physical, educational intellectual social, financial, material and spiritual. Every one wants easy and comfortable life in peaceful and congenial atmosphere to live and breathe.

For this our inner strength needs to be channelised in proper, real and true direction so as to make spiritual progress in happy and congenial atmosphere. This leads to cause and effect principle. For this our inner strength needs to be channelised. At school we get knowledge to make ourselves fit for society to work and make other to do so.

At the work place, we learn to work in a cooperative way. Friendly cooperation leads to order in the life and any where we come in contact with others, at work place, office, bus stand, railway station etc. Conducive atmosphere is needed everywhere to work and show output in any undertaking. The aforesaid environments are responsible for these undertakings. However, the real order and shift come from self confidence and elevation of soul Surti through ‘Alive Holy Naam’ which is bestowed by supreme conscious to concentrate the Surti of ‘Satyaguru’ and disciples who are blessed by ‘Satyaguru’ by this soundless sound word. In this way our inner strength is channelised for uplifting surti Soul. Surti consciousness through ‘Alive Holy Naam’ causes a positive shift, while the demoniac influence and practice causes negative shift. Those whose soul is elevated have control over desire, anger, fear, jealousy and greed.

In the Bhagwad Gita chapter 16, Krishna describes two kind of influences : the divine and the demoniac. Divine influence causes a positive shift, while the demoniac influence causes a negative shift. Those who have control over, desire, anger, greed, fear and lust are divine and those who have not, are demoniacs. The ‘Holy Naam’ i.e. ‘Sar Naam & Surti Naam’ elevate our Surti consciousness and establishes link between Surti Soul and Supreme consciousness of ‘Satyapurush’.

Human behaviour also plays a prominent role in moving towards positive direction or towards negative direction. If one moves and does every act in accordance with the guidance of ‘Sat-guru’, he can’t be led astray at any cost, as ‘Sat-guru’ acts as a guide at each step of inner movement and action, so there is no chance to be misled by any means i.e. the disciple is free of any bondage. Besides unidirectional, multiple dimensions are followed. In science we have : (a) adherence to reason experimentation, accuracy and precision. If these traits are followed in studying human nature, it can be studied more accurately. But life is more complex because of Mind which sends signals of thoughts forty-two in one minute. Science has not created humanity, but human’s have created science. Science perfects life to greater extent creator and creation is a complex not simple phenomena that continues to follow check and balance battle between science and humanity. In spite of all this both science and spiritualism making tremendous progress in the respective fields. Love-leads to surti consciousness. Knowing love, knowing way thing of Soul Surti i.e. Supreme consciousness. You have known Surti-Nirti, body and Mind. Kabir’s philosophy i.e. Kabirhood... falling in love have skin depth, it is a fall.

‘सत्य’ नाम निज औषधी, खरी नीयत से खाये प्यारो,
औषध खाये अरु पथ रहे, ताकी वेदना जाये रे।

सब्द से ज्ञानी आत्म राम प्यारो, सुरति चेतन होये रे।
सो कनक कामिनी द्वार से पार प्यारो, सोही करे भव पार रे।

चलो चलो सब कोई कहत प्यारो, कोई सत्तगुरु प्यारा पहुंचे उस पार रे।
मन का मोह ही माया प्यारो, सत्त रज तम तीन गुणों का मेल रे।
पृथ्वी जल अग्नि प्यारो, जड़ तत्व के मेल से रे।

अवसर पल पल खोता जा रहा प्यारो, आत्म को चेतन करना सच्चा काम रे।
सत्तगुरु ‘वे नाम’ जी जगाने आये जग में, मन मान से पार हो जाना रे।।

LOVE

(1) Love of the bliss body - It is not a fall – It is a stillness watcher, observer. Surti soul provides rest, you don't fall.

(2) Silent river - sagar : There is no wave ring – you are free of waves of love :- that is love. Egg is formed :- no vibration - complete silence inside outside the shell.

काव्य 9

जो रक्षक उसे याद ना करता प्यारो, जो पल-पल भरमाता उसी का ध्यान करता रे ।
काल तीन लोक का राजा प्यारो, मन विचार में हर एक को डालता जान रे ।
गण गंधर्व ऋषि मुनि प्यारो, सभी औंकार भगवन की सेवा में जान रे ।
प्रथम पूर्ण पुरुष पुरातन प्यारो, पांच शब्द उच्चारें रे ।
सोहँ सत्त ज्योति निरंजन प्यारो, रंकार औंकारा रे ।
इन से एक ना पार हुआ प्यारो, सभी माया में अटके जान रे ।
सुरति कमल में प्यारो, सत्यगुरु का वासा जान रे ।
हर सुरति में मेरा साईयां प्यारो, संतन करि पुकार रे ।
बलिहारी वा घट के, जा घट प्रगट होये रे ।

..0..

(3) Prayerfulness towards ‘Satyaguru & Satyapurush’ at a time – body don't take part in this third kind of love. Surti (Super consciousness) supreme concentration - surti soul – sar sabbad. All the three are together : Concentrate focussed with the help of ‘Alive Holy Naam’ to make is circular with two end points. Meeting at a place. It makes you to float rising upto Surta Kamal (away from Aghya Chakra). It makes you to move unidirectionally you get flying Saucer, crossing the boundry of the universe. You get linked with Supreme consciousness more than so many wings (second, third and fourth) - Satyapurush appear. Love, truth and Annand are awaken.

Memory is the part of Mind i.e. Chit - (Intellect) where as memory is the segment of Surti especially Mool Surti which remember every thing even of ‘Satyalok’ & Dev loks, Sunnya and Maha Sunnya's journey in the form of Hansa, combination of Seven Surtis. Intellect too is there in Mool Surti - Memory is also part of Mind i.e. Chit - Intellect is the segment of Buddhi which take messages and signals from brain Seven Surti's of Hansa also perform this task more accurately than, Mind-Buddhy-Chit & Ahankar.

—0—

SEED IS BOUND TO GROW LIKE ALL OTHER LIVES IN THE UNIVERSE

“हर काम अंदर से प्यारो”

काव्य 10 V.imp.

सार—सुरति नाम प्यारो करता है चार काम, संशयकरण की बात मत जान रे ।
हंस रूप मन को बाहिर करता प्यारो, सुरति निरति रूप में अंदर जान रे ।
मन मान का संग गया प्यारो, तीन लोक में झूठ का भेद मिलता जान रे ।
हंसा रूप आप सब करने योग्य प्यारो,
अहंकार—काम—क्रोध—लौभ—मोह—भय का संग छूटा जान रे ।
ऐसी अवस्था जब मिलती प्यारो, अंदर प्रेम सत्य के फूल खिलते जान रे ।
सत्यगुरु कुम्हार का काम कर जाग प्यारो, शिष्य कुम्भ अवस्था से पार जान रे ।
अंदर भक्ति प्रार्थना की चक्की चलती प्यारो, हर पल सुरत कमल में वासा जान रे ।
कितने तपसी तप कर डारे, काया डारी गारा रे ।
सब कुछ छोड़ भये सन्यासी प्यारो, तरु ना मिलया प्यारा रे ।
तीन लोक काल पसारा प्यारो, बिन ‘वे नाम’ सब्द पार ना एक रे ।
सार सुरति नाम सच्ची औषधी प्यारो, मन मान छोटा जान रे ।
दुख गया चिंता गई प्यारो, निज घर वासा पाना जान रे ।

--0--

1 Ultimate goal for human being : The whole universe exists in every human being. You have to go opening the locks of closed doors to enter into truth and reality of self-god and ‘Sat-purush’. i.e. Mind (god), body (self) & Soul Surti (Surti consciousness). Man’s main aim is to be above god and be with Supreme Soul consciousness i.e. ‘Sat-purush’ of ‘Amarlok’ i.e. to become param Hansa of Amarlok i.e. free from life and death cycle.

2 You need not give any guidance to seed or animals. It is purely meant for human being to be with Supreme consciousness in Amarlok.

3 No, discipline, creed, dogma, religion, Soul Surti is enough. i.e. Hans of Amarlok. You have to be bestowed by ‘Sat-guru’ with ‘Alive Holy Naam’ of Supreme consciousness, which is bound to solve all the problems which pose hindrance in our achieving permanent Salvation from these three loks and to be one with Supreme consciousness in Amarlok.

4 Be receptive, trust and faith in soundless sound word of ‘Sat-purush’ of Amarlok. It does all work itself in one’s soul Surti in uplifting it.

Seeds question regarding outer covering as I have to grow into a tree. Give me Surety of my existence in the better world.

5 ‘Sat-guru’ Vai Naam is there to give you guarantee for Amarlok, better world as compared to these three loks (Pataal, Sunnya & Maha Sunnya).

6 Imp. :- Seed trust and dissolves in the earth. It sprouts into beautiful tree.

7 Birds come out of the egg shell leaves the known for the unknown. Wings take him further away from known to unknown.

8 Human beings come to know about their real abode from true and real Satguru of the time. They can go back to their real abode by being blessed with “Alive Holy Naam” from him along with ‘His’ blessings. Man comes to know his real home from where he has come. It is known where as this world was unknown to mass. In doubt you miss the train.

V.v.important :-

Behaviour, thinking, doing, changing, explaining, modifying, establishing laws regarding AI (Artificial Intelligence). Human being are conscious can be modified to a greater extent, but not through external science but internal science. This subject is related to internal science which deals with behaviour of conscious, mind, body, chakras, breath and ‘Alive Holy Naam’ which controls Hansa’s soul i.e. consciousness and impact of body and Mind on Surti consciousness. Machines are part of external science to 95% and 5% to internal science. It too can add and subtract through intellect, memory retention and forget at the same time with the passage of time. ‘AI’ can work wonders with Surti consciousness with due cooperation of Mind and its Sub units ; robots, computers etc have to be done.

1 Knowledge and being should be on the transformation track.

2 ‘Lies’ restricts the space available for any creative act or work (East : There is distinction between knowledge and being. Here the emphasis is on increasing one’s being. Both knowledge and being are required on

equal grounds. But with the transformation of knowledge into being. Knowledge will not be limited to information so, both knowledge and being should be firmly on the transformation track. Different levels of knowledge is o.k. But different levels of being is not o.k. Being is your presence good, pure, inspiring and transparent essence. One should not confuse existence with being. The stone exists. The plant exists. A man exists, but they exist quite differently. It is here the idea of being comes in. For example, the being of a plant, stone, animal, man, or the divine are all at different levels. Being is an evolving essence, an evolving presence. If a person gets hurt because some one makes an unpleasant statement. It only shows the level of one's being. But if one can forgive the person who has caused the hurt. It shows that the level of one's being is at a highest level.

- 1 If you are selfish, it shows that your being is at one level.
- 2 But if you were to serve others with love and goodness. It shows another level of being.
- 3 It is not a matter of judgement but a matter of clarity leading to an opportunity for growth.
- 4 To grow up is one thing and to grow old is yet another thing. Growing up involves adding life to your years, growing old involves adding years to your life.

So, are you working on your being ? Let's resolve right now to make a beginning to transform and support the process of transformation in our daily lives.

सत्य पाने के लिये प्यारो, मन मान का त्याग करना जानो रे ।

सत्तगुरु को पाने के लिये प्यारो, सत्तगुरु 'वे नाम' से दात पाना जान रे ।

सत्यपुरुष सच्चे पिता को पाने के लिये प्यारो, पागल होने से कम में बात बने नाहिं रे ।

संशय दुविधा में समय ना खोओ प्यारो, खोया समय लोट के कम आता रे ।

'वे नाम' जी पल पल कहते प्यारो, हर ओर देते पुकार पे पुकार रे ।

हर श्वांसा खाली जात प्यारो, इस का मोल किया ना जाये रे ।

काव्य 11

मेरे घने सुरति ध्यान करने से पहले प्यारो, क्या अवस्था थी साहिबा आप की रे ।
जब तब मैंने आप की महांचेतन सुरति का प्यारे, भेद जाना दिया ना जग को रे ।
तेरे गुणों की पहचान किस को थी प्यारे, जब तक दास ने लिखे गीत ना गाये रे ।
आप तो सब कुछ भक्त को देते प्यारे,
पर भक्त भी तेरी पहचान जग को कराता रे ।
जब तक आप ने नहीं था पकड़ा दास को,
किस ने तेरे अमर सब्द को पाया था जग में आ कर रे ।
एक ना तेरे को भाया प्यारो, जब तक मैंने तेरा दामन ना थामा था रे ।
मैं क्या था तेरी पकड़ से पहले प्यारे, एक भीख मंगा भटका जान रे ।
तूने जिसको पकड़ा प्यारे,
वह तुझ को छोड़ औंकार भगवन में खोया जान रे ।
तुझसे सब पाया प्यारो, पर गीत औंकार भगवन के गाये रे ।
तू चार लोक का दाता प्यारो, एक भी तेरी भक्ति का पार ना पा सका जान रे ।
जब तक तूने मेरी भक्ति को प्यारे, ना जाना ना स्वर सुरति दी जान रे ।
किस ने मेरे को पकड़ा तेरा भेद दिया प्यारे, एक ना मिला इस जग में जान रे ।
मेरा नाम तेरी हस्ती से प्यारे, गुम सुम पड़ा था पहले जान रे ।
ज्युं तेरी भक्ति में लीन हुआ प्यारे, तेरी महां कृपा आन बरसी जान रे ।
अब जो पहिरवे खिलावे प्यारे, सोहि पहिरुं जो दे सोई खाऊँ रे ।
मेरी तेरी प्रीत जन्मों—जन्मों की प्यारे, आज उसी का खेल हर ओर जान रे ।
तेरा तो सब कुछ था प्यारे, मैं ही जाग ना पाया था रे ।
तेरे मेरे मेल से सब और बसंत प्यारे,
मेरा क्या था क्या थी हस्ती दात पाने से पहले रे ।
राँझड़ी वाले सत्यगुरु के पास मुझे भेजा प्यारे, संपूर्ण दात को पाने रे ।

—0—

‘वे नाम’ सत्तगुरु प्यारो, श्वांसा सुरति इक करने की डौरी लाये रे ।
अजर अमर करि प्यारो, निजघर ले जाये रे ।

—0—

FAITH

- Expression of your innocence combine with wisdom and truth, with a person, with Supreme consciousness , God.
- Trust has to be in yourself because for you it will be truth trust.
- In the qualities you have inherited and are cultivating and developing.

Faith is always about the unknown :-

- (A) Life itself is faith
- (b) No one is born without faith
- (c) You lives, work, sleep, walk up.

If you want to be loved, develop it within yourself with due cooperation of true and real ‘Sat-guru’ of the time.

Role of Surti (Prana) in bondage of Mind & Maya :-

- 1 Spiritual Science has nothing to do with physical body and Mind. In the prevailing atmosphere in the universe, science has made tremendous progress and has transformed the world, due to the invention, discoveries and penetrating in sea and planetary system in our galaxy.
- 2 Inventions and use of energy especially hydrogen fuel which is prevailing in the whole atmosphere of three loks.
- 3 The energy revolution and other scientific developments are for the benefits of entire humanity and have been generated mostly in the west.
- 4 Now India too has joined in the race of scientific research and discoveries by safe landing of our lunar sattelite in the dark side of the moon. India is the 4th nation to do so and Ist in the world to establish his identity in the dark place of the moon to understand the nature of the soul, water existence and possibility of establishing life on moon.
- 5 Spiritual (world) science development is purely the prerogativity of India.

6 The basic manifestations Chitta, Mind (God) and Atman (soul spirit). Akash, Sky, Pramatham energy (soul-segment) of supreme consciousness i.e. Amarlok. By Akash normally means ‘Sky’, ether, black matter in which God ‘Himself’ resides and sends 42 signals of thoughts in one minute. Sky is fine, subtle substance. It is every where in the three loks i.e. Universe upto Maha Sunnya Sky. It is the basic thing from which all substances known to us i.e. solids, liquids and gases – are evolved. It is akin to the ether known to scientist so far.

Prana : it is combination of Surti and Nirti. Surti functions in the heart and Nirti in the breath. Their union make miracle which is possible only when one possesses ‘Alive Holy Naam’ from Supreme soul consciousness to attain permanent nirvana – free from life and death cycle.

Mind :- He is god, who sends thoughts at the rate of 42 per minute. They are like whirl pools and prana is attached to them in the form of energy. Which is lowest in the lowest whirl pool and goes on increasing as we move out side. It has various segment of charge (+, 0, -) Zero at the centre, +ve inside and -ve outside. Sum total of inside and outside balances the atoms. The increase and decrease of +ve -ve make atom to contract and expand.

**एक कनक और कामिनी प्यारो, भक्ति में बाधा जान रे।
सत्यगुरु से नाता जोड़ा नहीं, फिर कौन करावे भव पार रे।**

As Ganesh, or Ganpati. He is the real and supreme leader of the ganas. With a twisted trunk holding a sheaf of corn and sugar cane and the quill, with which he wrote Mahabharat at Ved Vyasa’s dictation. He is the son of Parvati, bearer of the trident, and wears the snake as his belt. He is removal of all obstacles, just as the elephant does in the forest. As a vinayak he is the supreme head. Become ignorant as a child and then become creative. At that stage there should not be any burden on your Surti like ego, lust for power, desire to be fulfilled, relations to be maintained to have power and puff to become master of the locality, city, state and then of the country and finally of the world to have one government and command in your hands – even then you are mad and nothing more than that. Become dreamer, but without – ego and lust then you will be creative in the field of spiritualism to follow true path of life, provided you have established your links with true and real master of the world. Inner journey can make your life as true spiritual life – provided you have put faith and love in the identity of true ‘Sat-guru’ of the time.

1 To be creative is to be awakened within your ownself - urge is to create makes one spiritual and enlighten personality. In creativity some thing starts happening every act of your will convey something new in your performance. This leads us to spiritualism. So long you love waves spread outwards and create images in your eyes and Mind at that stage your love is external, it can be physical, sensual and excite you emotionally is passion not love. You are in exited state, no piece of mind within. You are not working, studying with confidence and you have become possessive takes you away from love.

2 Secondly you are not ordinary human being and moving inwardly inside the deep ocean of Surti - ignoring Mind and Maya.

3 You are calm composed, performing all the activities while penetrating within you and not joining Surti with the objects of external world, but fully calm compose and engrossed in your undertaking, you are surely moving in the right direction of pure love. In this stage you see yourself, work and ‘Sat-guru’ in calm and composed state of mind is leading you towards spiritualism. It is uni-directional all sort of negative thoughts are gone. Now your Surti, ‘Sat-guru’s Sabbad Videh and self concentration are at work, no other person is invited internally or externally leads you towards true and pure love. You are sitting at the centre of equilateral triangles centre. The ocean within is calm composed in all respect is busy in elevating you towards true and pure spiritual love. External impact has to be ignored all together. This is spiritual upliftment of Soul Surti.

The Hindus remain within the limits of Shunya where as the Muslims talk about Maha Shunya creations which are above shunya. Kabir Sahib and ‘Vai Naam Sat-guru’ show and talk about Amarlok the rare path and destination to be followed which is beyond the perception and reach of both shunya and Maha shunya creation is known as Amarlok, Satlok where ‘Sat-purush’ resides along with param Hansa’s. It has no limits, even these three loks are within it.

**सत्यलोक हम सब का प्यारा प्यारो, जहां जाये फिर वापिस ना आये रे।
वे तीन लोक भिन्न प्यारो, अमरलोक सत्यपुरुष का न्यारा रे।**

TRUE BHAKTI LEADS US TO TRUE MUKTI

Soul is part (segment) of Supreme consciousness and doesn't perish at any time or under any set of conditions and circumstances. The Sky of these three loks of 'Shunya' has a black colour and its taste is insipid. It doesn't provide any harm to soul under any condition. Bodily need have put us under the clutches of Mind and Maya of Kal Niranjan of these three loks. Taste : There is nothing in the world which can satisfy our Annand. It resides in every human being i.e. in his Soul Surti and no where else is to be found. The taste is because of taste buds of tongue without tongue there is no taste at all.

Simplicity in listening, speaking and acceptance in Soul Surti ; Listening within limits is more paying and essential than speaking. It reflects your true self internally as well as externally. Internal is your trueself, where as external leads to past and future which is an act of Mind. Mind always takes you mostly in the past which one has established all around him. Some times Mind takes you to future, but future always occur in the present, so we need not to penetrate into future as they are our dreams which are only dreams and can't be fulfilled. Nobody wants one to be simple, honest establishing himself in truth and love, because they will not find one to be naged. This is the way of life on this planet. Every individual wants freedom and authority on one side, and power, position, authority and dictatorship to govern over others.

These authoritarian people in all walks of life don't solve any problem but on the contrary pose more and more problems in the society. Those who do not accept authority have to move from pillar to post with no output any where from any body. This world is not free of critics and they can't live without criticism. They have to criticise other's work one way or the other. Where should the listener go, as the one who is being criticised is no where to be seen. In this way the listeners have to suffers for no fault of their's. When computers will fight the world war, the whole life will be in the clutches of computers and computers only who will rule and govern the life on this planet of their own.

Initially, this 'Alive Holy Naam' separate Mind from soul Surti. This work can't be done by any guru or religious preacher by any means, though he may devote lacs and lacs years in doing this through worship of Kal Niranjan (god) of these three loks.

Secondly, chit get concentrated and one can be made free from physical love, wishes, desires, past and future of one's life.

Thirdly, soul Surti get awakened and predominates Mind and Maya of these three loks. This ‘Alive Holy Naam’ establishes proper link between soul Surti and Supreme consciousness of Supreme Soul of ‘Sat-purush’ of 4th lok ‘Amarpur’.

काव्य 12

सार नाम सुरत नाम हमारा जो कोई पाई प्यारो, तीन लोक से पार हो जाई रे ।
नाम की युक्ति भेद सत्यगुरु से प्यारो, संग चेतन आत्मां उस पार ले जाई रे ।
ब्रह्मां विष्णु और शिव देवा प्यारो, नाम का भेद ना पाया जान रे ।
औंकार भगवन ते नाम बड़ा प्यारो, ‘वे नाम सत्यगुरु’ दात पाई जान रे ।
मूल सुरति चेतन को चेतन सत्यगुरु करते प्यारे, संग सच्चे घर ले लेते जान रे ।
सिद्ध साध योगी यति प्यारो, भेद ना पाया जान रे ।
‘वे नाम सब्द’ निःअक्षर दात प्यारो, सत्यगुरु ‘वे नाम’ ने पाई साहिबन से जान रे ।
बावन शब्द से बाहिर प्यारो, शिष्य को करावे भव पार रे ।
हर पल दात संग साथ प्यारो, इस पल में रहना जान रे ।
बावन नाम की उत्पत्ति सप्त स्वरों से प्यारो,
सप्त स्वर सप्त चक्रों से उत्पन्न जान रे ।

—0—

PROBLEMS OF THE CHANGING WORLD

The unchanging connecting thread between modern and the earliest primitive human being as seekers and beggars are on the same level. In spite of all comforts around the heart and Mind are intact, but demands, wishes, emptiness, fear, lust, hypocrisy has gained foot hold in the society. That is why religious preachers, thinkers, social workers, politicians hanker after power and wealth. Modern human being is totally modified because of fear, lust and demands. Satisfaction, courage, determination can be gained only by elevation of Soul Surti by ‘Alive Holy Naam’ from true and real ‘Sat-guru’ of the time. All the five elements that are surrounding us and of which our body is made of are bound to perish and get amalgamated in the Supreme consciousness. Our Mind can’t be pacified so easily, It is god itself and working in every life on this planet. Inside the body and outside the body Mind is Supreme Power without Surti concentration. A grain can sprout into plant only after mixing with the earth and watering it properly.

We should have the knowledge of true and real ‘Sat-guru’ of the time, who is beyond the bondages of Mind and Maya. Worldly ocean

can't be crossed without his guidance and blessings. In every field of life an expert person is needed to guide others, how to move forward in this world. However hard one may try and exert, one can't achieve or gain knowledge about self and others without guidance and blessings of true and real 'Sat-guru' of the time one has to crush his ego before being blessed by true and real 'Sat-guru' of the time.

“Bin 'Sat-guru' baat baney nahin, koi kotin karey upaye ray”

'Sat-guru' provides bodiless 'Naam', 'Sabbad'. It is bodiless 'Naam' in the whole universe. Without this word one has stumble at every step in life. 'Sat-guru' enables one to control Mind easily i.e. without any effort. The mind bow down before the disciple who is blessed with 'Alive Holy Naam' from true and real 'Sat-guru' of the time. We have to develop courage, heroism, valor to carry out real and proper guidance of true and real 'Sat-guru' of the time. One has to be polite, humble and full of love for the humanity at large to safeguard the interests of the common masses in the turbulent world at large. There will be cyclones, droughts, floods, fire and many types of threats from man as well as from nature. The world has never been free of these modes of travel have advanced. This has made accidents more probable and wide spread. This all often happens all around the world. These threats often seen in every nook and corner of the world at large. Every such happening and instance tends to dim our enthusiasm and spirits.

Truth in word, thoughts and deeds Arpan, Tarpan, Samarpan everything to 'Sat-guru' of the time to be free of Mind and its thoughts. Don't harm anybody try to mend not end. For the situations, problems in Meditation one needs to be in Samarpan before true and real 'Sat-guru' of the time to mitigate your problems and make you free from the clutches of Mind and Maya which are the basic problems in our way of spiritualism. You can be made free from past karmas by your true surrender before true and real 'Sat-guru' of the time to elevate your soul Surti which is totally in the grip of Mind and Maya. 'Sat-guru' and cut our past karmas, take us forward, help us in elevating our soul Surti and making us free from the clutches of Mind and Maya. He takes us away from Sushupti – slumbering state while making us to concentrate on the lotus face of true and real 'Sat-guru'. Every work should be done in Surti in the name of 'Sat-guru' to be a part of Supreme consciousness.

'Sat-guru' is embodiment of Supreme consciousness and can take you out of Mind and body. Truth should be in every breath and action of yours. Your every action should be creative in nature. Your Surti should always be connected to Supreme consciousness to make you one with

Supreme Soul. Love, truth, Annand are Supreme entity being segment of Supreme consciousness grow and evolve your Surti with ‘Alive Holy Naam’ to be free from the clutches of Mind and Maya.

विरह, विराग, प्रेम, सत्य, आनंद

While moving towards the world we have to assimilate words, thoughts, ideas, like a child in the womb, who is bound to assimilate every content of mothers energy like milk, food, energy through mouth and prepare himself or herself to face the world. For nine months he has to assimilate and assimilate and take rest in sleep. He is quite ignorant of the word no, but he remains busy in sucking, eating and taking rest in sleep. When you have the knowledge of yes then and then you came to know about the word ‘no’.

He is full of consciousness as he is fully absorbed in self which is Surti, without mind and lives in the present moment. He is fully blessed with chetan Surti of Supreme consciousness. He is unaware of pleasure and pain, so unaware of Mind and Body. He lives in the present moment. With no knowledge of past and future which is totally Mind / Kal Niranjana, but fully conscious of Supreme consciousness and time to time get glimpses of Supreme consciousness which makes him introvert and he moves towards self consciousness. He is free of limitations, as he has no knowledge of how to choose, what to choose, what to ignore. He is aware of eating, drinking and sleeping. Rest of the works are done automatically through umbilical cord which connects him or her to mother’s body through the same umbilical cord. He is free from reacting, doubting or raising any voice against any thing. He doesn’t know any body except himself and herself. He is free from any religion, caste, creed, duty, order, obey, thinking, reasoning etc.

सत्यलोक हम सब का प्यारा प्यारो, जहां जाये फिर वापिस ना आये रे।

वे तीन लोक भिन्न प्यारो, अमरलोक सत्यपुरुष का न्यारा रे।

**जब साधक दृढ़ता विश्वास में प्यारो, सत्तगुरु पल में भव पार कराता रे।
सुरति का सत्तगुरु में समाने से प्यारो, दोनों की सुरति इक हो पार होती रे।**

--0--

MISERY

One who is blessed with ‘Alive Holy Naam’. He will be in intoxication of joy in every moment under any circumstances, provided he under goes meditation keeping ‘Sat-guru’ in Surti consciousness. He may be in misery, but it will enhance his joy, Satisfaction and happiness. Faith in ‘Sat-guru’ and ‘Holy Naam’ in Surti take him out of troubles and problems. Where there is truth, love and joy, he can’t be pushed back to think, feel and get involved. He gets what is there in him, which is fully established, then how can he be in misery.

काव्य 13

सत्यगुरु, सत्यपुरुष की महिमां

सुरति ध्यान ही प्रज्ञा लाता प्यारो, सृजनात्मक कार्य में रूची जान रे ।
सागर का बादल बन जाना प्यारो, पर बरस कर फिर सागर बन जाता रे ।
आंतरि उन्नति आचरण से प्यारो, सभी देख पाते रे ।
जब निजघर निजधाम में था प्यारो, ना था बंदा ना खुदा हंसा रूप था रे ।
श्री कृष्ण की तरह प्यारो, किसी भी वस्तु से चिपकना छोड़ दो रे ।
कर्ण सत्य को ना जान पाया प्यारो, सूर्य पुत्र होकर भी अंधकार में भटका जान रे ।
त्याग के समान सुख ना प्यारो, दान से पाप का ब्याज उतरा जान रे ।
सच्ची प्रार्थना ‘वे नाम’ सब्द से प्यारो, देना ही देना सब काम करता जान रे ।
ईश्वर, सत्यगुरु से कुछ ना मांग करना प्यारो, प्रार्थना केवल प्रार्थना से पार रे ।
दुख पाने से ही प्यारो, निज की पहचान सत्यगुरु का संग कराती रे ।
दुख की पकड़ समर्पण लाती प्यारो, ‘वे नाम’ दात करावे भव पार रे ।
मुख से मन से सुमिरण प्यारो, भूखे प्यारे को भोजन पानी कब मिलता रे ।
सुरति चेतन से महं चेतना ‘वे नाम’ सब्द में प्यारो, भव पार कराती जान रे ।
राम नाम भूख से लेने से प्यारो, काल का संग छूटा मत जान रे ।
‘सब्द’ पाया महं चेतना पाई प्यारो, अब उसी में सुरति डालना सच्चा काम रे ।
किसी से पूछना प्यारो, पागल की सी दिशा पाना जान रे ।

..0..

When Mind is fully under control, Surti prevades in every breath of that soul our breath is the real Surti segment, it has nothing to do with mind provided you possess ‘Alive Holy Naam’ being blessed by true and real ‘Sat-guru’ of the time. Your tears convey everything to ‘Sat-guru’ and Supreme consciousness. For that personality tears and pearls, no way

less than that. Tears elevate the soul, awaken Supreme consciousness and one becomes one with the Supreme soul. All souls have from Him and get surcharged by that Supreme Soul to be established in him in every breath in which ‘He’ resides. Your surrender, silence, still less without Supreme consciousness in your every breath, creates distance. The moment you are with Him (His Highness) in complete silence, no thoughts no Mind, then you and ‘He’ act as one segment. He and you are just there as Supreme fragrance, enlightenment in and out.

काव्य 14

जब तक सुरति चेतन नहीं प्यारो, मन अस्थिर चंचल वाणी एवं नेत्रों में चिंता जान रे ।
सत्यगुरु संगति से प्यारो, और दात से लाभ ही लाभ जान रे ।
बदलते विचारों भावों से प्यारो, आत्म चेतन मत जान रे ।
मन के भाव सर्वनाश लाते प्यारो,
‘वे नाम’ सब्द को सुरति में डालो बात बन जाये रे ।
चेतन सुरति बिन जो किया प्यारो, मन मान का खेल जान रे ।
चेतन सुरति बिन प्यारो, मन मान में हर एक विचारों में खोया जान रे ।
बिन ‘वे नाम’ सब्द सुरति से लगन ना होत प्यारो,
बिन लगन प्रीति भी व्यर्थ जान रे ।
अपने प्रति सत्य ईमानदारी सुरति ध्यान बिन प्यारो, प्रीति भी खोई जान रे ।
सुरति बुद्धि में नई—नई कोंपलों संग, फूल खिलाती जान रे ।
सुरति चेतन से अंदर नया उत्साह स्फूर्ति नई खोज प्यारो,
ये सब प्रतिभा के फूल और फल जान रे ।
आज का सुरति से कर्म किया प्यारो, कल का जीवन सत्य की ओर जान रे ।
इस जग में अपना ही सब खेल प्यारो, बिन सत्यगुरु कुछ भी पाया मत जान रे ।
यह यत्न से ना होई प्यारो, सत्यगुरु कृपा करे सब काम रे ।
सुरति चेतन को पाना ही प्यारो, महांचेतन सुरति में समाना जान रे ।
फिर सब कुछ ही तेरे पास प्यारे, सत्यगुरु कृपा करे सब काम रे ।
खुद को देखना जानना प्यारो, ‘वे नाम’ सब्द से जान रे ।
वस्त्र गये चेतना का भेद पाया प्यारो, उस प्यारे से मेला जान रे ।

..0..

You have become from part to whole. Mind and silence have no antimony but enmity with each other when mind is at work in side the body the silence doesn't prevail there. Silence itself can't let go mind.

Mind inside the body is a segment of Kal Niranjana who resides in the ‘Shunya’ i.e. first element which liberates air as second segment, the air generates fire as third segment and fire generates earth as fifth segment, thus every body on this earth one way or the other is worshipping five elements on this.

When there is Kabir Sahib, ‘Sat-guru’ Madhu Param Hansa, Ravidas, Mira Ji, Osho Ji - the nature, God, Supreme consciousness, Sahib Ji / Satpurush, Amarlok, the skies of three lokas open, fragrance of flowers shower from all sides, the nectar of Supreme consciousness is presented by these Param Hansas of Supreme consciousness from the front to make you realise the truth of Supreme consciousness through truth, love and joy shown by these param Hansas of Amarlok. You may paint, picture with a brush in your hands, compose a poem, sing a song or may dance along with others or become a mystic. The mystic has tremendous power of looking, penetrating within to realise self i.e. Surti consciousness to uplift the Soul Surti to realise love, truth and joy which is the true flower of creativity ; but in actual practice you will see and watch him , he is just sitting silently.

The world changes as the altitude and Surti of human being changes for the world, god, ‘Sat-guru’ and ‘Sat-purush’ for his own elevation.

1 Guidance of : (a) ‘Sat-guru’ (b) Self Surti (c) Effect of mind on Surti consciousness. Nature has natural flow, it does not guide any body, but we can perceive and get attracted towards nature as per hidden moral lesson and guidance. It gives hidden guides without mouth , without eyes, without ears, nose, but has sensation in each speck of nature.

2 Religion only misguides and creates problems if one likes his own religion and hates others. Worst period in my life :- none. Every period gives me more and more to get my soul elevated. Each and every speck of nature taught me a lot. There is no worst period in my life. I went on gaining and learning about self, nature god, ‘Sat-guru’ and ‘Sat-purush’ (i.e. Supreme consciousness) whose segments we are on this planet. Each time I learnt from others. Social justice : way of talking, uttering words, through actions and through their behaviour. I don’t think that there can be a period which has and will not teach and guide me at each step of my life on this planet. I have seen good at every step of my life. For guidance in life : one must be guided by true and real ‘Sat-guru’ of the time. True and real ‘Sat-guru’ is embodiment of Supreme consciousness. He is blessed with true and real “Sar and Surti Sabad” which can’t be spoken, written, it can only be put in Surti to concentrate on it to elevate the Soul Surti.

Both the container and the contained are essential in life for the life. There are many galaxies and goldilocks zones but my objective is to talk only about (earth) and the life on this planet which is special planet in all respects. There is a need to understand the purpose of life on this planet, especially regarding human beings. There is a flow of two kinds : flow of Mind and flow of Surti consciousness. Both are very essential. Flow of both are inter-dependent. Both act, direct and make life as per their use in life on this planet. Both of them need polishing time to time to have smooth life on this planet. In both the cases development, guidance is needed to keep harmony between the two. Mind and body are related to external development and spiritual guidance is related to internal to external development. None of them can be ignored in any way, as they are inter-dependent. External development is related to scientific development with due attention to environment. Both are as essential as the life on this planet. There is a need of guide lines to move on in life to maintain balance in life on this planet. These are just like arms or legs of human beings. There is a need for proper cohesion and addition between the two. Their individual identity may not be amalgamated in anyway.

Personal development depends on the individual. It need not to be broken down into steps. Purpose of life on this planet

--0--

OUR BODY AND MIND REFLECT THE WORLD WHERE AS THE SURTI REFLECT THE - SUPREME CONSCIOUSNESS

All the tendencies, wishes, desires, have and have not sorrow, suffering, good days, bad days, high, low, hot, cold etc. are to be found in the world of our Mind and body but our Soul is in bondage of Mind well within us. It needs and craves for freedom from the clutches of Mind and body. All that is out side the body is also well within the body. Our soul is in bondage for millions and millions of years and it needs freedom from the clutches of Mind and Maya.

Imp. :-

Pay more attention to journey and not to destination. It can attain freedom when we have ‘Alive Holy Naam’ from true and real ‘Sat-guru’ of the time i.e. ‘Vai-Naam Sat-guru’ who has been bestowed ‘Alive Holy Naam’ from Supreme consciousness i.e. ‘Sat-purush’ of Satlok i.e. 4th lok. These three loks are in the clutches of Kal Niranjana who is pure

Mind outside as well as inside of every living creature. He is being remembered and worshiped as god on the earth / planet. We have to attain freedom from Karma philosophy which is bondage and does not provide any freedom to our soul. Our soul is working and acting as per directions of god i.e. Universal Mind as well as unit mind well within each living creature on this planet. One needs to understand this all to realise the truth on this planet. Wish for becoming something : poses problems and problems hypocritical live in poverty inspite of possessing all the necessities of life. In simple life what you are within need to be reflected outside. That is the way of life. Don't try to become someone live as you are in and out is the true way of living in this world. Hypocrisy is not going to help you in any way of situation.

Our body and unit mind are in contact with the cosmic Mind of three loks. The tragedy is that our Surti is in bondage of Mind and body. In such a situation we can't be simple in any way. Our Mind is in contact with the Mind of the society. The Surti which must be in contact with the Supreme conscious is in bondage inside the body. It has to be liberated from the clutches of Mind and body through Supreme consciousness. This is possible only when we are blessed with 'Alive Holy Naam' from Sat-guru 'Vai-Naam' of the time who possesses 'Alive Holy Naam', being blessed by Supreme consciousness. Your life with 'Alive Holy Naam' is full of pretensions and nothing else. The Supreme consciousness can't intervene so long you don't get blessed by 'Alive Holy Naam' from true and real 'Sat-guru' of the time. The Supreme consciousness does not know about your acts as your Surti is not concentrated to establish link with Supreme consciousness. This all false exist in these three loks only as they are in deep slumber and quite ignorant about their true self i.e. Surti concentration. The whole universe is acting in accordance with the will of Mind (god). Even, Saints, Mahatma's guruvas are quite ignorant about 'Alive Holy Naam'. Without 'Alive Holy Naam' people can't be made to realise their true self. One can be simple, true, loving, full of love when one is bestowed with 'Alive Holy Naam' from true and real 'Sat-guru' of the time. i.e 'Vai-Naam Sat-guru' who possesses this 'Alive Holy Naam' on this planet. He is blessed by Supreme power Himself to liberate masses from the clutches of Kal Niranjan of these three loks.

The best armour of old age is blessings of true real 'Sat-guru' of the time when you were a child i.e. when, true, blissful, blessed with 'Alive Holy Naam', fearless, devoted life spent preceeding it. Stress and strain are the segments of Mind and are as strong as the Mind. They can only take us in past events and future consequences. They have nothing to do with the present which is purely of Surti consciousness. Times of disaster make you aware of the reality as it is. It is always fragile to transcend the danger... start living in Surti consciousness more fully, with more alertness well within your consciousness, so that you find within yourself something which is everlasting, unperishable your own true self that is untouchable by Mind and death.

Any desire for the self in the world, results in continuous generation of desires and their subsequent outcomes. Your mind in general is caught in duality, and intellect, instead of being away from your Surti consciousness. This is all possible when you are bestowed ‘Alive Holy Naam’ by true and real ‘Sat-guru Vai-Naam’ of the time to get you (Soul Surti) liberated from the clutches of Nirankar, Parbrahm (Kal Niranjan) of these three loks. ‘Sat-guru’ and ‘Sat-purush’ are always one not as two separate entities. You will realise this mistake, says Guru Nanak, Kabir Sahib, if you realise your true self (‘aatam-tatav’ of the self) through ‘Alive Holy Naam’ from ‘Vai Naam Sat-guru’ of the time. Truth can only be realised and contemplated when one possesses ‘Alive Holy Naam’.

Try to be like a child to create supreme being well within your ownself, through ‘Alive Holy Naam’ i.e. “Sar Surti, Sabbad” to establish (Him) in your own Surti to get it concentrated, but not in the heart. Heart is the segment of Mind which itself is segment of Mind. Secondly develop the habit and attitude of listening rather than talking. Talk very less and listen more and more provided you can spare time for the purpose at hand.

Try to become what you are doing, acting i.e. make it living, infuse life in your work and deed, don’t consider any action or thing dead, become Surti (yourself) in the present moment. You have nothing to think or do with Mind.

MISERY & SURTI CONSCIOUSNESS

Without ‘Alive Holy Naam’ in your Surti consciousness you cling to misery, past thoughts and future in the form of wishes and desires. When you are blessed with ‘Alive Holy Naam’ then Supreme consciousness possesses you. Now you are free of thoughts misery and problems of day to day life. One who is totally engrossed in love you are bestowed with unique blessing in disguise in your Soul Surti to make you free from thoughts and wishes of any nature. One should be careful at the time of concentration, he should not make the use of Mind and its four segments which always take you outwards i.e. towards nature and universal problems and forget his true self i.e. Surti consciousness and at the same time he indulges in physical love which is bound to destroy once spiritual progress in the real sense. ‘Vai Naam’ says that true love with the Supreme consciousness never vanishes. It is unknown truth i.e. ‘Alive Holy Naam’ that comes from Supreme consciousness i.e. ‘Sat-purush’ of 4th lok (Amarlok / Sahib lok). It is blessed to true ‘Sat-guru’ of the time to Surti from Supreme consciousness i.e. ‘Sat-purush’. The only religion which is true in all the times is ‘Satya’.

The real abode of Soul Surti and ‘Sat-guru’ is 4th lok (Amarpur) which is far beyond these three loks. In Sant matt there is no guru but ‘Sat-guru’ like Kabir Sahib, ‘Vai Naam Dass’ of the time. The word ‘Satguru’ firstly came into existence in the spiritual ideology of ‘Sant Samrat Sat-guru Kabir Sahib’.

--0--

MIND AND MAYA

Assimilate past and future and try to be in the present, you are free from Mind and Maya. Mind and Maya are segments of past and future only and your Soul Surti keeps you in the present moment. Never wish any thing for the future and never talk of loss or gain of the past then you are totally free from Mind and Maya.

This is possible only when you are blessed ‘Alive Holy Naam’ from true and real ‘Sat-guru’ of the time i.e. ‘Vai Naam Dass’ of the time. Now you can use Mind when needed, but he can’t use your Surti as ‘Alive Holy Naam’ liberates Surti from the clutches of Mind and Maya now you possess it, but it doesn’t possess you under any circumstances. This makes one free from false ego. If we do not contemplate the truth, we will stay entangled in the three gunas and become slave to the Mind and body; entwined with the world.

The Mind never rests, therefore, things that arise from the Mind never cease. Any desires, wishes for the worldly possession, results in continuous generation of desires, wishes and their subsequent outcome. One’s mind is caught in duality of have and have not. Every one should start living more fully, more totally, by subjecting yourself which is neither body nor Mind, but Surti consciousness on the lotus feet of true and real ‘Sat-guru Vai Naam’ Paramhansa of the time to realise your true self.

Once you establish and figure out that the blissful supreme consciousness exist within you and you have come on this planet from 4th lok known as Amarlok / Satlok / Amarpur i.e. Supreme conscious prevaded in the whole of universe including these three loks. The presence of black matter has shaded it when you are blessed with ‘Alive Holy Naam’ from ‘Vai Naam Sat-guru’ of the time who has been bestowed “Sar Surti Sabbad” which can’t be spoken, read out, to any body. It has to be repeated with breath in silence at the time of meditation or in any action.

Your mind doesn't even feel the divine power within. With this 'Alive Holy Naam' you sit for meditation , mind can't infuse worldly thought to disturb you in anyway. Concentrated Surti is now free from the impact of Mind, body and Maya in any way. The mind do exist in all living creatures to disturb your soul Surti. The entire world resides in your body and mind. Mind has nothing to change Surti consciousness when we are blessed with 'Alive Holy Naam' from true and real 'Sat-guru Vai Naam' of the time.

—0—

RELATION OF MIND AND SURTI CONSCIOUSNESS

- 1 Past and future**
- 2 No need of any ideology**
- 3 Let go thinking**
- 4 Be like a sky and don't bother about clouds, as they reflect Mind**
- 5 Two thought have Surti in between**
- 6 We have main hindrance of being prejudice**
- 7 There is unit Mind and cosmic as we have soul Surti and Supreme conscious which is every where in four loks**
- 9 Surti acts as binding source of idea's (thoughts)**
- 10 Man of Surti will not cling to any ideology.**
- 11 As one should not carry the load of ready made answers, as answer do change with the place of time due to exposure of knowledge of Mind and Surti.**
- 12 brick + cement – Surti & brick + mind – brick**
- 13 You through Sat establish link with Supreme consciousness (don't think of mind) Answer of every question is according to the situation, place and time.**
- 14 a – Jesus is crucified b – socrates is poisoned
c – Al-Hillaf is killed d – Sarmad is be headed
e – Guru Gobind Sing's sons were made breathless.**

These all were most intelligent people that have ever lived on this planet and how we behaved with them.

Socrates became intolerable and have to be killed. To look into the eyes means look into the mirror. Don't destroy the mirror if you are ugly. This to live within limits. Ramji were more inclined to Mind and Shri Krishan were more inclined to love, freedom of choice – without any interference i.e. towards Surti. Though they in carnation of Vishnoi. One should come out of beliefs and traditions. (no limit – freedom means freedom for the time being). Man of Surti will never cling to any ideology.

Truth in word, thoughts and (Arpan, Tarpan) deeds Arpan, Tarpan, Samarpan everything to 'Sat-guru' of the time to be free of Mind and its thoughts. (Don't harm anybody, try to mend not end) For the situations, problems in Meditation one needs to be in Samarpan before true and real 'Sat-guru' of the time to mitigate your problems and make you free from the clutches of Mind and Maya which are the basic problems in our way of spiritualism. You can be made free from past karmas by your true surrender before true and real 'Sat-guru' of the time to elevate your soul Surti which is totally in the grip of Mind and Maya. (Good, bad fullest life end, otherwise you waste your precious time, Prepare get started grow and evolve sub conscious mind. Surti concentration, truthfulness harms no being)

'Sat-guru' cuts our past karmas, take us forward, help us in elevating our Soul Surti and making us free from the clutches of Mind and Maya. He takes us away from Sushpti – slumbering state while making us to concentrate on the lotus face of true and real 'Sat-guru'. Every work should be done in Surti in the name of 'Sat-guru' to be a part of Supreme consciousness. 'Sat-guru' is embodiment of Supreme consciousness and can take you out of Mind and body. Truth should be in every breath and action of yours. Your every action should be creative in nature. Your Surti should always be connected to Supreme consciousness to make you one with Supreme Soul. Love, truth, Annand are Supreme entity being segment of Supreme consciousness grow and evolve your Surti with 'Alive Holy Naam' to be free from the clutches of Mind and Maya.

विरह वैराग्य प्रेम सत्य आनंद

While moving towards the world we have to assimilate words, thoughts, ideas, like a child in the womb, who is bound to assimilate every content of mothers energy like milk, food, energy through mouth and prepare himself or herself to face the world. For nine months he has to assimilate and assimilate and take rest in sleep. He is quite ignorant of the word 'no', but he remains busy in sucking, eating and taking rest in sleep. When you have the knowledge of 'yes' then and then you came to know about the word 'no'.

He is full of consciousness as he is fully absorbed in self which is Surti, without mind and lives in the present moment. He is fully blessed with chetan Surti of Supreme consciousness. He is unaware of pleasure and pain, so unaware of Mind and Body. He lives in the present moment with no knowledge of past and future which is totally Mind/Kal Niranjana, but fully conscious of Supreme consciousness and time to time get glimpses of Supreme consciousness which makes him introvert and he moves towards self consciousness. He is free of limitations as he has no knowledge of how to choose, what to choose, what to ignore. He is aware of eating, drinking and sleeping. Rest of the works are done automatically through amblical cord which connects him/ or her to mother's body through the same amblical cord. He is free from reacting, doubting or raising any voice against anything. He doesn't know any body except himself and herself. He is free from any religion, caste, creed, duty, order, obey, thinking, reasoning etc.

--0--

NATURE OF CHILD IN THE WOMB

He is rather himself - Supreme Consciousness. He is totally free when to eat and when not to eat. He is also free of taste, smell, power, illness, energy. He is free of choice, what to eat, what not to eat. When to eat and when not to eat, but his sleeping nature makes a difference. He sleeps for the maximum period and awakes for a limited period with a gap of nap or sound sleep. Thus he is totally free like Supreme Consciousness or God. He is not aware of mind and body but, he is fully conscious like true Sat-guru of the time. He do see and feel the presence of Supreme Soul in and out side. He is not free even for a minute in the awakened state of Surti. He is without any sort of problems inside the womb. He is least worried of legs above and head downwards. For him it is all natural and he is fully satisfied with this posture. Inside the womb, the child is totally free to act and do so far as mind and body is concerned. He is fully conscious of Soul Surti of Supreme Consciousness, but the moment he land on the earth, he or she forgets about the nature and act of Supreme consciousness. He doesn't require any medicine as Soul Surti is free from any disease so what is the need of medicine. 'Sat-guru' of the time never make use of medicine, as he is only consciousness and has no concern with body and Mind. They too remain free of disease with the possession of Surti Concentration.

--0--

SUPREME CONSCIOUSNESS

Just as birds have wings to fly from one place to another which is limited one, Our soul Surti has wings of Supreme consciousness, when we possess ‘Alive Holy Naam’ from true and real ‘Sat-guru’ of the time. Our soul has tremendous power within to move from one place to another within seconds with the reduction of Mind we can increase our speed of soul Surti. It depends on the words we put in our Surti. If we have five words of Kal Niranjan then we can concentrate our Surti up to 90% and with that we can move from one place to another in the domain of god, Nirankar, Dev loks, heavens, hells. When cross all the six bodies we can attain the speed 99% and we become free to cross all loks and can have the outer views of gods lok i.e. Sehshastrarsar, but we can’t go to Amarlok, our true and real (destination) home (Amarlok).

Note :- For more information read my other Granths.

.....“Satguru Vai Naam Dass”

To understand humanity we have to delve deep in our Surti consciousness with ‘Alive Holy Naam’ bestowed to us by true and living ‘Sat-guru’ of the time.

---0---

SURTI CONCENTRATION

When ever anyone engages his Surti concentration, his nirti (pranas) in breath will automatically lead over to that object, place, person and completely gets embedded into it to make one to realise his true self. Surti has nothing to do with Sargun (in-form) or Nirgun (form-less) forms of worship and concentration is far from true and real worship. Some have limits of Shunya like Hindus and Muslims some have limit upto Maha Shunya. Sat-guru ‘Vai Naam Ji’ and Kabir Sahib prescribe the rare path which is beyond shunya and mahashunya i.e. Amarlok (Satlok) i.e. ‘Sat-purush’ Himself. This Amarlok is a place of permanent liberation from the endless cycle of birth and death in these three loks. These three loks are creation of Kaal Niranjan (Mind). Without getting blessed with ‘Vai Naam Sabad’ i.e. ‘Alive Holy Naam’ i.e. sajeevan Naam, Sabad from true and real living spiritual Master i.e. ‘Vai Naam’ of the time.

Amarlok is the real abode of we Hansas (Soul) which is immortal, im-perishable which has no limit. It has no beginning and

no end. We all hansas on this planet have come from Amarlok to live under the guidance of true and real ‘Sat-guru’ of the time to get liberated from the bondage of Kal-niranjan (god) of these three loks.

All Hansas are creation of Surti Soul (concentration) and can be liberated by true and real ‘Sat-guru’ of the time by ‘Sar-Surti’ of Supreme consciousness through ‘Vai Naam’ Sat-guru of the time. Sat-guru ‘Vai Naam’ has been bestowed with ‘Alive Holy Naam’ by “Sat-purush Himself” Surti concentration to liberate the masses from the clutches of Kal Niranjan (god), Nirankar.

All of us are surrounded by thoughts and thoughts of mind including wishes, desires, good, bad, helpful, bring depression, produce excitement etc in the form of pyramid which may or may not be easy to come out of it. If you sit silently having ‘Alive Holy Naam’ in your Surti the wall of thoughts will disappear in no time. This is just like mirage effect in deserts. From distance you see water and water every where, but the moment you come closer to it water disappears and only sand will be visible to you. These thoughts are im-material. These thoughts of yours are just like ghosts. It is just a belief, stare at them, they melt away. It can’t face your Surti consciousness.

For that we have to awaken our soul Surti to be free from thoughts of Mind which come 42 in one minute. Let me explain what is consciousness / soul Surti, Kabir Sahib, ‘Sat-guru Sahib-bandgi’ and ‘Vai Naam Sat-guru’.

“Satya” samaan dharam nahin - Teen lok maya raya”

Mind is the only barrier between Soul and ‘Sat-guru’ (True and perfect spiritual master on this planet), only a real ‘Sat-guru’ like Kabir Sahib, ‘Sat-guru Sahib-Bandgi’ and ‘Sat-guru Vai Naam ji’. They can only explain the ideology of Sant Matt, from whom one can understand the truth and purpose of life on this planet.

These three are are perfect spiritual masters. On this planet to guide, direct and lead to true and real path of worship and to liberate soul which is segment of Supreme soul (Parampurush / Sahib Ji) who is immortal and is present into the soul (concentration) of every living creature in this universe. Supreme soul is immortal. Without getting blessed with ‘Alive Holy Naam’ (Sajeevan Naam / Sar Sabbad / Surti Sabbad of “Sat-purush” (Supreme Lord) from true and real ‘Sat-guru Vai-Naam’ ji of the time. None can be liberated himself from the trap of thoughts, wishes, desires, have and have not of Mind and Body on this

planet. It can't be attained through religion/caste and creed. Only true and real Sat-guru who is blessed with Alive Holy Naam from Supreme Lord (Sat-purush/Parampurush/Sahib Ji) who is neither Sakaar (form) nor is He (formless) Nirakaar.

In Sant Matt only perfect Spiritual Master can elevate the soul to attain true and Permanent Salvation from the endless cycle of life and death by Alive Holy Naam (Supreme Consciousness)/Sajeevan Naam) which can neither be written, spoken, reading and writing. It is the domain of elevated souls who have visited Amarlok along with Supreme Soul to be blessed with 'Alive Holy Naam' to liberate masses from the clutches of Mind and Maya on this planet.

This Naam is bodiless, one gets it by the blessings and grace of 'Sat-guru' (Sant) to show and lead disciples to the path of truth, love and Annand. Here one has to worship only 'Sat-guru' (True and perfect Spiritual (master) 'Sat-guru' alone. 'Sat-guru' attains the state of oneness with Supreme consciousness (Supreme Lord, who is free from form and formless). He mostly appears in the guise of 'Sat-guru' in the beginning. Later on He sometimes attain form and become formless. It is known as Satya Bhakti / Para Bhakti. The worship of "Sat-purush" (Supreme Lord) is far ahead of Sargun / Nirgun modes of worship. 'Sat-guru's concentration can transform any soul after being blessed with 'Alive Holy Naam' / "Sar Surti Sabbad". He is free from any religion. He himself is fully enlightened Soul Surti.

**“Satya-Purush / Param-Purush ko jo jaansi,
Tiska Satguru Naam jan re”**

'Sat-guru' and fully established "Sat-purush" (Supreme Lord) within him. 'Sat-guru' is free from any sort of attachment with his relations. Here truth, duty free from worldly bondage counts a lot. One should always remain in search of true and real 'Sat-guru' of the time. True and real worship is of true 'Sat-guru' of the time. The true and real abode of Satypurush / Supreme Lord is 4th lok (Amarpur / Amarlok) which is immortal, beyond the limit of Mann (Mind) and Maya (Body).

Topic :-

**Bhakti - Bhakti kehat hain pyare,
Bhakti Bhed koi 'Vai Naam' pyara janna rya
Bin Sat-guru baat bhana naha nah rya**

In the whole world every one is worshipping God (Nirankar) in their own way, but none tries to know about the Supreme soul i.e. “Sat-purush” of 4th lok (Amarlok) through ‘Sat-guru Vai Naam’ ji who possessed ‘Alive Holy Naam’ bestowed by “Supreme Soul” (Satpurush) ‘Himself’ to ‘Sat-guru Vai Naam’ Ji. Satguru Kabir Sahib was the first ever Sant in the history of true spiritualism who put forth the secret of Supreme Lord (Satpurush / Parampurush) while descending on this planet earth from Amarlok to awaken the masses from deep slumber. Supreme Lord / Supreme consciousness (Satpurush) who is supreme consciousness, immortal and exists in 4th lok which is beyond these three loks.

---0---

PARA BHAKTI

The right mode of worship towards Supreme Lord is Para Bhakti i.e. Satya Bhakti / real worship.

PARA BHAKTI :- It is known as Satya Bhakti/ real bhakti came to be known from true and real Sat-guru Kabir Sahib of the time. It is far ahead of Sargun and Nirgun Bhaktis. This is true worship of Supreme immortal Lord of 4th lok (Amarlok/Satlok) to attain permanent salvation from this planet. This bhakti is totally in the hands of true and real Sat-guru of the time being blessed with ‘Alive Holy Naam’ from ‘Sat-purush Himself’.

Pra-Bhakti (Sant Matt) - Concentration / meditation starts from the 8th chakra which is (one + one by fourth hands) above Sehshastrarsaar i.e. 7th chakra.

This 8th chakra lasts upto 9th plexus (chakra). Concentration is a soul/surti dhyān. It is present in every living creature including human beings in this mortal world. It is a segment of Supreme consciousness i.e. Supreme Lord (Sahib Ji / Satpurush / Parampurush) of 4th lok, which is our real abode. Surti-dhyān (concentration) has three main qualities i.e. to see, to understand and to hear every physical body works because of concentration. It works as the master key in every physical body on this planet as well as in other planets which have got life. Every work in this mortal world is performed by Surti concentration. It is neither physical nor ethereal body and is a true segment of Supreme soul. The death is of the body only which is also mind. It is

made up of five elements i.e. sky, air, fire (light), water and earth. We have to reap the fruit of our karmas in this universe i.e. good and bad deeds which are being performed by each individual while being in human body.

Thus the soul is fully entrapped in the net of karmas. In general soul has nothing to do with karmas. This worldly ocean of birth and death can be let go with the blessings of true and real ‘Sat-guru’ of the time who possesses paras Surti i.e. Supreme consciousness of Supreme Lord ‘Sat-purush’.

Surti Concentration

We all souls have come on this perishable universe from immortal lok called Amarlok / Satlok. One has to remain concentrated in ‘Alive Holy Naam’ (Supreme consciousness). ‘Alive Holy Naam’ being blessed to ‘Sat-guru’ of the time by ‘Sat-purush’ i.e. Supreme consciousness to get liberated from this mortal world of Mind and Maya. ‘Sat-guru’ is the main fountain head to elevate the soul / concentration to make one free from Mind and body.

**Jaaki Surti-Nirti laag reh jehein,
Kahe Kabir pahuchadun tehvaan**

Where ever an individual concentrate his Surti, his Nirti (pranas) will automatically (lead) reach over to that place and finally get merged into it, at the time of departure of Soul Surti.

Kabir Sahib says : Sabki gathri lal hai - Koi nahi kangaal

Every one is full of miraculous power of Surti and Nirti when one possess ‘Alive Holy Naam’ in which Supreme power lie.

**Kehat Kabir suno bhai saadho,
Ja gat bana hai maan se**

The whole world has been created by none else but “Mind” Kal Niranjan of these three loks.

Surat Kamal i.e. 8th chakra is the immortal above of a ‘Sat-guru’ to liberate the souls from the clutches of Nirankar (God).

**Ek hi soul sakal sansara - Bin ‘Sat-guru’ ni pava para
Koti janam ka path tha - ‘Sat-guru’ pal mein diya
pahunchaye**

One’s personal experience can satisfy one. ‘I love ‘Sat-guru’ and ‘Sat-purush’ more than the others’. Thus are satisfies with any answer. In this world 99.9% people are believers. One need not to be confined to one religion, one country, but of the four loks. One should be for all and of all. He should love to be a wonderer. He should be sour Surti of the four loks and not of the universe only, yet his roots should be in his soul Surti i.e. ‘Hans Atma’. His soul Surti may have gone to different loks, while even crossing the Sun, but I kept on coming back to my own nest soul Surti cage. Thus I never lost track of the spiritual heritage of Supreme consciousness. My ‘Alive Holy Naam’ is capable of cleaning and making it a universal mirror in which not only myself but all my disciples can themselves in this universal mirror of Supreme consciousness, clouds in the forms of thought, wishes, desires, have and have not, good or bad, high or low, fear, prejudices, have to depart by love, truth and joy i.e. by Soul Surti concentration through ‘Alive Holy Naam’ of Supreme Lord (Sat-purush / Sahib Ji). I sing a song for ‘Sat-guru’ and ‘Sat-purush’ / Supreme Soul every morning fresh and full of fragrance of yours, in gratefulness as a prayer of Soul Surti to your Supreme consciousness. Your temple is my Surti to represent universe not as a particular religious person on this planet. I want to put fragrance of spirituality in general to be on the right path of meditation where Supreme consciousness reside, so radiant with spirituality, well connected with universal soul of Supreme consciousness (yours). My temple and scriptures are my love songs of Surti to Supreme Surti.

**सब्द सुरति का जब मेला प्यारो, तब कौन सत्तगुरु कौन चेला रे।
स्थूल सूक्ष्म कारण महांकारण प्यारो, चार तन पार से सुरति 75 प्रतिशत
पार रे।**

---0---

“Vai Naam Surti Dhara”

“Nijdham Ke Santon Ko Samarjit”

PERMANENT SALVATION / MOKSH BY “ALIVE HOLY NAAM” ARA BHAKTI

I am not a believer, I wish to be a knower of what I come in contact as I came to see, meet and know you. In this way I do not wish to be knowledge-able. I want to be as an innocent worshiper as a disciple of yours. This all is very much seen in the life of ‘Osho Ji’ the Supreme of Supreme Soul residing in ‘Amarlok’ of ‘Satpurush / Sahib Ji’. ‘Osho Ji’ was full of love, truth and joy and has spread the same through out the world.

According to Osho ji, one should penetrate within to unleash the forces working within us to create and to get rid of all conditionings. One can be creative as individual and not a part of the mob psychology, which is a dragging force in the real sense. The creator has to create, and inquire from jungles of life all alone. He has to be drop out from the mob as well as individual mind collective mind make a mess and turn it into lowest mind. Even lowest mind is a problem creator, as mind’s nature is as such to go into past and future. Mostly mind take us to past to delude soul Surti which always remains in the present. Mind can’t be eliminated beyond the limit of 75% as it too is very powerful. It is none else but god, Kal Niranjana himself to whom all man kind worship in one way or the other. Only Supreme consciousness of Supreme Soul of 4th lok i.e. ‘Amarlok’ can make your Surti free from the clutches of Kal Niranjana to attain permanent nirvana/moksha on this planet.

God himself has spoken these words, these words are not spoken by ‘Sat-purush’ i.e. Supreme consciousness. Thus these words can’t provide anyone complete nirvana / moksha. The word ‘Sant’ and ‘Sat-guru’ were first used by ‘Sant Samrat Sat-guru Kabir Sahib’ who first proclaimed the ideology of ‘Sant Mat’ in the world. He revealed the truth of Supreme Soul / consciousness to the whole of world and made clear that every human being in this mortal world is worshiping “Kaal Niranjana (god) of these three loks. They have considered him as ‘Supreme Lord’ of Amarlok. Kaal Niranjana himself as unit mind working in the body of every living being on this planet i.e. in three loks, patal, Sunn and Maha Sunn. Kabir Sahib explained all this to the masses. He resides in the first element Sunn (sky vacuum). The pain and suffering to the creatures is due to Mind and not due to soul Surti.

---0---

SAAR-SABAD / SURTI SABAD

Before ‘Sat-guru Vai Naam Ji’ Kabir Sahib had already revealed the secret of Supreme Lord / Satpurush, who is immortal as Soul Surti and exists in ‘Amar lok / Satlok’. He gave us para bhakti i.e. Satya bhakti / True worship of Supreme Lord to attain permanent salvation on this planet. This bhakti is completely under perfect spiritual master / ‘Sat-guru’ of the time, who himself is enlightened by Supreme consciousness to liberate masses from the clutches of Kal Niranjana.

It was first given and declared by Kabir Sahib of Amarlok - 4th lok. Prabhakti (Sant Matt) can liberate us permanently from the clutches of Mind and Maya. In this bhakti the meditation starts from the 8th plexus (chakra) which is one + one-fourth hands (1&1/4) above 7th chakra i.e. (Sehshastrarsar) outside the body and lasts upto 9th plexus (chakra) which is known to a living perfect spiritual master / ‘Sat-guru’ of the time.

Kabir Sahib says :

Sunn gagan mein Shabad uthat hai,
sou sab bol mein aavey
Ni-shabdi wou bole nahin,
sou satya shabad kahave

These are known as “Surti Sabad” & “Sar Sabad”, which can’t be spoken or written. They are only spoken in Surti consciousness. This true “Sabad” is soundless sound word which can’t be spoken, written or narrated in any form, to any person. It is given from Surti to Surti.

क संतो सब्दै सब्द ब्रह्मना, शब्द—फांस फांसा हर कोई, सब्द नहीं पहिचाना रे ।
जा जिनकी अराधना करी, तिनका कहुं ठिकाना रे ।

क प्रथमै पूर्ण पुरुष पुरातन, पांच शब्द उच्चार ।
सोहं सत्त ज्योति निरंजन ररंकार औंकारा ।

The true /real / original / permanent abode of soul Surti is Amarlok / Satlok where paramhansa resides with Supreme Lord / Satpurush / Parampurush / Sahib Ji.

Every creation of immortality of soul is given by ‘Sat-guru’ Kabir Sahib. Our own true self i.e. soul Surti is immortal and its existence is beyond the creation of five (5) perishable elements, Sky (Sunn), Air, Fire, Water and Earth.

Order-wise :

Sky (Sunn) / Air / Fire (Light) / Water / Earth

Sky - Kal Niranjana, Air - Brahma, Fire - Vishnu,

Water - Mahesh, Earth - Aad Shakti.

“All these, God/Nirakara, Aadhyatma Shakti, Brahma, Vishnu, Mahesh, Ram, Krishna, Ganesh, Jesus, Buddha, Mahavir, Peer-Paigambar, Yogeshvars, Gods/Goddesses etc have no existence in Amarlok”.

हर नर नार पड़ा मोह लूट में, काल भगवन से लेन ना देन रे।

मरना जमना इस तन का प्यारो, सुरति अमर तू जान रे।।

Without getting blessed with “Sar Naam / Surti Naam” / ‘Alive Holy Naam’ / ‘Sajeevan Naam’ are given to ‘Sat-guru Vai Naam’ living ‘Sat-guru’ of the time is perfect spiritual master of the time on this planet. He has visited so many times the Amarlok of ‘Satpurush’. He has been bestowed / blessed with ‘Alive Holy Naam’ / Sajeevan naam from “Satpurush/Supreme consciousness” to elevate the souls and to make them free from the clutches of Kal Niranjana / Nirankar / God.

Relation of Soul Surti with body and Mind our Soul Surti is entrapped fully in the net of karma philosophy. In general Surti consciousness has nothing to do with karmas. It has nothing to gain or lose in this mortal world. In this world nobody dies, one body goes, other is ready as clothes to wear. Mind and body are one and the same thing, engaged in Karma in which Soul has nothing to gain or lose in this world of Kal Niranjana (God).

A true ‘Sat-guru’ of the time has tremendous spiritual power to rule over Mind and body. Wishes, desires, sex, anger, greed, lust for material gain, attachment, ego, all forms of 14 senses present in the body can be fully brought under control of ‘Alive Holy Naam’, blessed by true and real ‘Sat-guru’ of the time to discipline to go in dhyana Surti to let go these evil deeds and action in this mortal world of God.

‘Sat-guru’ of the time is embodiment of Supreme consciousness on

this mortal universe. He possesses “paras Surti / Supreme concentration” of “Supreme Lord” / Sat-purush / Sahib Ji of ‘Amarlok’ from where we all Hansas have come on this planet and due to ignorance fallen in the clutches of God / Kal Niranjan.

“भक्ति भक्ति सब जगत ब्रह्मना, भक्ति भेद कोई बिरला जाना’
भक्ति भेद जानेगा वेहि, जिसका सतगुरु पूर्ण होई”

The whole world is moving according to karma philosophy and has forgotten the roll of ‘Sat-guru’ who can liberate you from karma’s through Maha Chetan Surti of “Sat-purush” to be free from Mind and body to attain true form of oneself (Surti concentration) i.e. true segment of Supreme consciousness i.e. “Sat-purush / Sahib Ji” of 4th lok / Amarpur. “Sat-purush” is substratum of everything, Sat-Surti-Anand. If one wants to establish relationship with Supreme Lord, you have to establish relationship with true and real ‘Sat-guru’ of the time like ‘Vai Naam’ Ji to bring your Soul-Surti inwards to let go Mind and Maya. As Surti gets concentrated with Supreme consciousness through ‘Alive Holy Naam’, it will gain access to Supreme Surti consciousness i.e. “Sat-purush”. Thus, the Mind will be calm as a best friend. Let us understand Supreme consciousness through the grape-vine in a single vine supporting numerous branches and bearing many grapes. Here grapes signified true disciples of ‘Sat-guru’ doing work to awaken the Soul Surti of millions who are in deep slumber for millions of years in this universe. The content in the grapes signifies ‘Sat-guru’s blessings, best wishes to his disciples to develop all good qualities in self to over come Mind and body of Kal Niranjan.

To remain in ‘Alive Holy Naam’ means to reside completely in Supreme consciousness of “Supreme Lord Sat-purush” of 4th lok i.e. Amarpur / Satlok. He can’t establish link with “Sat-purush” directly without blessings of ‘Sat-guru Vai Naam’ of the time. Don’t think of one community, but of all as every one of us has segment of Soul-Surti of “Supreme Lord Satpurush” of 4th lok / Amarpur. Develop love, truth, Anand well within your soul Surti to be close to both ‘Sat-guru’ and “Satpurush”. If ‘Sat-guru’ is fully satisfied with you, take it far granted that Supreme Soul too is happy and satisfied with your prayer and concentration well within your true self. When your vine of grapes bears much fruit, “Sat-purush” is glorified, for he let go your Mind and body and establish true and real love with Supreme Soul in concentration. Just like rain and sun in due time makes crop to grow and each tiny plant get nurtured properly and it blossoms. What a moment of glory for the Supreme consciousness well within your concentrated soul with ‘soundless sound word’ (“Alive Holy Naam” from Supreme consciousness).

This gives us a glimpse of how “Supreme Lord is glorified when disciples have an intimate relationship with ‘Sat-guru’ and Him and begin to bear limitless fruit of true and real inner worship, in their spiritual concentration in this body. When the road is clear, worship within going well, we feel elevated. All hardships are gone along with depression. Joy comes from a consistent, true, real inner worship from chetan Surti, we establish consistent relationship with ‘Sat-guru’ and Supreme consciousness.

True ‘Sat-guru’ / Supreme Lord act as vine, we disciples are its true and real branches. When our Soul Surti is fully interwoven with his Maha Chetan Surti concentration, he and ‘Sat-guru’ will help us in attaining all true, real spiritual qualities to lead us to our real abode - Amarlok where all paramhansa like, Kabir Sahib, Mira Ji, Ravi Das Ji, Baba Nanak Ji, Osho Ji are residing and guiding the true and real awakened souls on this planet. One has to love all without discrimination, prejudice, caste, creed, religion etc. without true and real ‘Sat-guru’ this planet is worthless. We have to live for those who are in deep slumber and worshiping material things, hand made things, God, Goddesses, five elements including God / Kal Niranjana of these three lokas. He is none else but Mind and Body. True disciple and true ‘Sat-guru’ on this planet commands love from a few, but hatred from majority. So long we remain in the true vine i.e. Supreme ‘Alive Naam’ bestowed to us by true and real ‘Sat-guru’ ‘Vai-Naam’ Ji of the time. Our Surti Consciousness will flow towards devotee and well wishers of all on this planet.

So long Mind is not under control till then you can’t plunge in true and real worship. You can’t still mind of your own efforts as it God / Kal Niranjana himself in these three lokas. He is governing these three lokas. It always infuses thoughts and thoughts to take you mostly in the past and sometimes in the future to have wish and desire from others. He can’t be benefitted by establishing relations of disciple and ‘Sat-guru’ with due respect, faith and devotion. For faith he has to take risk which is very essential in life to be spiritual person in the society.

मन के जीते जग जीत है, मन के हारे हार रे

In bad days the condition of mind becomes more worse. One has to be very careful in dealing with Mind. Don’t try to become anything patience loving, non violent, peaceful. If you will try you will force yourself to be in the past or future which is all due to Mind and not of your own i.e. Soul Surti (Consciousness).

Don't collect knowledge as it is changing with the time i.e. moment to moment it is new and fresh to be dealt with. One should be spontaneous and that is possible only when you are making use of Surti and Nirti, concentrating on breath in which Supreme consciousness with answer the question in Super of the moment i.e. instantly without any effort.

This knowledge of Supreme consciousness should be with the person who is putting questions to be answered.

Experience of truth comes when you always live in the present moment and don't move in past and future even for a moment, because that moment will take you in the past and future and you will be in the grip of Mind which always delude Surti consciousness to snatch your present moment which resides in truth and only truth. Intellect is unconscious and it need not to be used. It will take you in deep slumber. Intelligence is awakening which follows the trend of moment to moment in Surti consciousness and never provide any chance to memory which takes us to past that is Mind and you miss the train i.e. present moment. Mind always snatches our present moment of Surti consciousness. Unless one is fully awoken, aware of Surti consciousness and living in 'Alive Holy Naam', you are in the clutches / grip of Mind i.e. Kal Niranjan and is in deep slumber i.e. far away from present moment which is awakened stage. It can't be attained without the blessings of true and real 'Sat-guru' of the time and 'Alive Holy Naam / soundless sound word' received from him in Surti to concentrate Surti to be free from the impact of Mind well within your true self. 'Sat-guru' of the time is big creator and make creator by bestowing 'Alive Holy Naam' in the Surti of disciple to concentrate his 'Surti for ever to get liberated from the cycle of birth and death of the body in this planet. He is bound to go back his true and real home, Amarlok where there is no birth and death. All live there as true Souls (Paramhansas).

Surti consciousness is a unique gift of 'Supreme consciousness. Every creature in this universe has a unique voice which is their unique oral or Surti consciousness signature to understand and respond each other in their unique gift of voice to speak and understand through ears and Surti consciousness. Through voice and Surti consciousness we converse, convey, thoughts, ideas, spiritual bondage with 'Sat-guru', Supreme Consciousness and disciple sitting thousands of miles away from each other.

(क)

आयो दिन गौने कौ होए मन होत हुलास।
डोलिया उठावे बीचा बनवा हो, जहां कोई ना हमारा।
दास कबीर गावैं निर्गुण होए साधो करि ले विचार।
नरम गरम सौदा करि ले हो, आगे हाट ना बाजार।

अर्थात् :

प्रियतम परमात्मां से मिलन का समय प्यारो,
कबीर आया जान रे।
मेरी सुरति प्रसन्नता से भरी प्यारो,
मेरी डोली बीच बन में उठी संग कोई मत जान रे।
अच्छा बुरा कर्म यहीं कर ले प्यारे,
बार बार मनुष्य तन मिलता मत जान रे।

It is here on this planet one can be of God / Niranjan or of “Satpurush” to get your soul liberated from the clutches of ‘Kal Niranjan’ and to be of Supreme consciousness of Amarlok and free from life and death cycle. Only ‘Sat-guru’ of the time can come to your rescue to attain permanent salvation, otherwise you have to face the cycle of birth and death on this planet for centuries together.

दूसरों के प्रति प्रेम प्यारो, सत्य प्रेम आनंद की दात पाना जान रे।
‘वे नाम’ सत्यगुरु की दात जब पास प्यारो, तीन लोक से नाता टूटा जान रे।

When one possesses ‘Alive Holy Naam’ from ‘Sat-guru Vai Naam Ji’, will go back to his real abode, Amarlok.

Surti Consciousness is a unique give of ‘Supreme Consciousness’. i.e. one get liberation from life and death cycle on this planet and will go back to his real home, Amarlok i.e. 4th lok from where we all hansas have come on this planet.

महात्मा गांधी :

मैं कोई काम बिना प्रार्थना के नहीं करता, प्रार्थना मेरी आत्मा के लिये उतनी ही अनिवार्य है जितना शरीर के लिये भोजन।

“Mahatma Gandhi ji says that I don’t do any work without praying to almighty (God). For me prayer to Almighty is as important as food for the body”

महात्मा गांधी :

जहां श्रद्धा वहां पराजय नहीं प्यारो, श्रद्धालु का कूकर्म भी कर्म जान रे ।

“Where there is faith in God, there is no defeat at all. Even wrong work of faithful person become true karma”

**Mann maya toh ek hain,
Maya mann hi samaey.**

To human beings Mind and body seems to be two different segments but, in real sense they are very much ‘one segment’ because body is nothing else but a physical form to Mind.

**Jaaki Surti laag rahe jaheinva,
Kahe Kabir pahunchaun leh vahan.**

Whenever disciple engages his Surti (concentration), his Nirti (pranas) is sure to lead over to that place and and completely gets imbedded (merged) into it at the time of leaving his body.

In the previous two pages I have tried to make it clear that Surti Dhyana and Nirti (prana) when join together we attain Hansa roop which becomes free from the impact of Mind and body. Hansa roop is capable of having glimpses of Supreme power during concentration on ‘Alive Holy Naam’ bestowed to saddak by true and real ‘Sat-guru’ of the time and ultimately reaches to his true abode i.e. ‘Amarlok’ from where we have come in these three loks.

Every one of us on this planet has a unique voice just as our thumb impressions of hands, is on oral signature.

The voice is the instrument through which we converse, convey ideals, thoughts and express emotions, love, joy, happiness and anger etc. This mouth is unique instrument, like other music instrument. One has to learn at the infancy stage how to play it when need and keep silent when alone and no need to express oneself. To play it well, we have to focus on tempo, timer, tone, speed and volume. Slowly and steady we learn from elders, how the pumping out the air from lungs to make vocal cards to vibrate in proper and symmetric range. The quality of voice depends on the position of the tongue, teeth, opening of mouth limit and rhythmic variation in pronunciation of words in sentences.

There are sixty six kinds of voices – one we speak with, one when we think or ruminate, one when we write, one through signs of hands and head, and finally when we talk and receive message through Surti concentration and through singing.

Homayan Tabat has his contribution in this article to the millionium.

An echo is the back flow of a voice.....in silence one can be in Mind or in Surti consciousness. It depends on ‘Alive Holy Naam’ bestowed to us from true and real ‘Sat-guru’ of the time. Without ‘Alive Holy Naam’ one can’t get concentrated Surti to establish permanent link with ‘Sat-guru’ and Supreme conscious whose segment we are in this planet and without its concentration we can’t establish link of Surti with ‘Supreme consciousness to liberate our soul from the clutches of Kal Niranjana (Onkar / God) of these three loks i.e. from five elements which are outcome of God / Kal Niranjana. In order to tune to the inner voice of Soul Surti, quiet solitude is required and the cacophony (loud unpleasant sound) i.e. a mixture of loud unpleasant sounds of the external ones needs to be hushed, but one authentic voice that is never to be ignored is the voice of conscience / surti that quietly audible one that tells us what to do and what to ignore. This all is possible when you are bestowed ‘Alive Holy Naam’ of Supreme Lord from true and living ‘Sat-guru’ of the time like ‘Vai Naam Ji’ of the present time on the earth of these three loks.

To express and to connect are two main human psychological needs expressing feelings, needs, ideas, that establish connection. Secondly to establish link of Surti Supreme consciousness to attain permanent salvation from these three loks and to rejoin with those who have reached there by elevating their soul surti to be one in tune with supreme conscious i.e. Parampurush / Satpurush / Sahib ji to attain permanent salvation.

Discovery by others regarding ‘Satlok / Amarlok’ true abode of who are residing in these three perishable loks. Osho ji made a tremendous contribution to explain is delant that following a right way to do anything will never be creative one has to be only surti consciousness, which a baby attains in mother’s womb. One has to attain that stage and starts from the unknown to establish truth, reality, consciousness, supreme consciousness. We have to come in contact with the personality who has attained that stage through

unknown to reach the conclusion himself or herself like others who have attained but they are there with the known only one person is made available in the whole universe what has attained that stage on earth and is still making others to move from the unknown to known under going personal experience, but he is being provided with ‘Alive Holy Naam’ as oar to push the boat from sunn to maha sunn and from maha sunn to Amarlok / Satlok / Sahib Ji / Satpurush. The oar is made available to all those who desire to fulfill their purpose of coming here and the process through which one can go back to his real abode i.e. Amarpur / Satlok to be one with Supreme soul / consciousness and to be free from Mind and body clothes provided to us by Kal Niranjan / God of these three perishable loks, as these three loks are perishable. They don’t have permanent existence only 4th lok where supreme consciousness resides with Paramhansas who have gone from this planet to Amarlok by getting ‘Alive Holy Naam’ / soundless sound word from true and real ‘Sat-guru’ of the time.

The true abode of all Hansa’s is ‘Amarlok / Satlok.

भजन

जब तक ना हो खबर अपनी, अंसा किये के दुख उठाने रे।

असां नूं तन मन ही सब कुछ लगदा ऐ,

तांहि से बार—बार जन्मों में आना रे।

सुरति चेतन “वे नाम सब्द” से प्यारो,

महां चेतना का संग पाया जान रे।

भूत भविष्य वर्तमान प्यारो, भेद रखता संग साथ रे।

औषध (‘वे नाम सब्द’) खाय सत्य प्रेम आनंद अपनाये प्यारो,

ता से मन मान का संग छूटा जान रे।

जब तक ना हो खबर अपनी, अंसा किये के दुख उठाने रे।

असां नूं तन मन ही सब कुछ लगदा ऐ, तांही से बार—बार जन्मों में आना रे।

सुरति चेतन “वे नाम सब्द” से प्यारो, अंसा सत्य प्रेम के फूल उगाने रे।

---0---

FREEDOM

Regarding freedom Osho Ji outlines three stages of freedom;

“Freedom from”, which is a freedom that comes from breaking away from restrictions imposed externally. i.e. (a) parents (b) society (c) religion.

Secondly “Freedom for”, A positive freedom that comes from embracing and creating something – a fulfilling relationship :

(a) An artistic or humanitarian vision

(b) “just freedom”, the highest and ultimate freedom : to be truthful in every act and action.

Word freedom looks good in reading and writing but in actual life, it doesn't exist at all. It is just slogan and nothing more than, that one shouldn't be a believer, that should be knower. One shouldn't be knowledgeable, he should be innocent enough so that existence reveals its mystery to that innocent to make him religious in the real sense i.e. to know try self i.e. your true self which is segment of Supreme consciousness / Satpurush of Amarlok / Satlok.

‘Vai Naam Ji’ says :

The main problem with every one on this planet has left the body with 14 segments of mind only; the soul Surti has forgotten its true nature and its source from where he has come in this body. Thus all fourteen segments are owner of the Soul and taking work from it. This story is not of a single person on this planet but all souls in any form, soul Surti is working under fourteen segments of Mind. This is the main tragedy with soul Surti in every living being including human beings.

True loving person who has established link with Supreme Consciousness is taking to you all of these three loks. Being spiritually elevated to bring something from within to awaken the masses to reality of life in these mortal three loks. He has met with

Supreme power of 4th lok from where we all Hansas have landed on this planet of three loks which are mortal and have to perish at appropriate due time. Every one of us can and should understand the language of Supreme consciousness well within your soul Surti which are you in the real sense. You have nothing to do with these clothers of Mind and body which have very short existence , and are there with you so long you are on this planet where our soul Surti is in the bondage of Mind and body as per wish and direction of Kal Niranjan the God of these three loks; who is governing in these three loks with Add Shakti and three devtas; Brahma, Vishnu and Mahesh (Shiv ji). The role of true and real ‘Sat-guru’ is immense in the prevailing situation in this universe to uplift the masses in general. An internally religious true and real ‘Sat-guru’ can contribute in civilization in the name of culture and civilization. In the present situation masses have totally fallen away from truth, love and joy in the real sense i.e. one is totally forgotten his or her true self with the impact of Mind and Maya which are the false gradients of Kal Niranjan to led astray soul Surti. Every human being has to be awakened to the reality and truth of life. It is the outcome of surti consciousness, surti concentration

Develop faith, humanity, love and joy to surcharge the soul, which brings faith, truth, love and joy within to enhance true and real spiritualism by the grace of true and real ‘Sat-guru’ of the time to develop faith, humanity, love and joy to surcharge the souls of true and real human being on this planet. A true and real ‘Sat-guru’ of the time is one who has been blessed by ‘Alive Holy Naam’ from ‘Satpurush’ Himself through concentrated Surti to concentrate the Surti of ‘Sat-guru’ to perform his duty in these three loks.

A true ‘Sat-guru’ is judged by his disciples. The true ‘Sat-guru’ is judged by its fruit and the creative person is judged by his creation. A teacher is judged by his student in life.

Every spiritual person as true disciple of true ‘Sat-guru’ should and can understand the language of supreme consciousness well within his soul Surti, when to act and when not. Mostly disciples are afraid of the unknown. They feel insecure to feel and see the unknown. They don’t want to go beyond the limits of the traditions, faith, way of worship, God i.e. five elements. They don’t want to go beyond the known, familiar, hence they go on worshiping traditional created God and Goddesses in the traditional ways. They are least interested to understand and known the truth of life. They follow the intellect. Intellect is a game of the mind which in no way is creative, spiritual, real to attain permanent salvation and to be free from life and death cycle on this planet.

How to surcharge the Surti consciousness. Every body in this world can and should understand the language of Supreme consciousness well within your soul Surti; when to act and when not comes from the core of consciousness in the form of waves like that in sea, in river water in the form of ripples which form crest and trough on the surface of water to contract and expand just like breath when we inhales air it get compressed and when we exhale it get rarefied. In inhaling the temperature rises and in exhaling air its temperature falls. Thus one crest and one trough in water forms one full wave length and one crest and one trough during inhaling and exhaling from one wave length. Every object and every living creature speaks as per his or her language to direct, guide to do or not to do particular work, task, well before you at hand and in Surti concentration.

You can question to river, rock, mountain, tree, bush, fruit hanging from the branch of a tree. You will get true reply and proper answer, provided you are true, real in Surti conscious in your undertaking task. Ask for their, willingness, cooperation complete surrender from the side of your Surti consciousness. If you do good to living identity, they feel grateful and thanks you from within in reply in Surti concentration by shaking itself from within. Three things always exist together i.e. Body, Mind and Surti concentration. There is Surti consciousness in every atom of the universe. Every atom is in motion because of Mind and Surti concentration waves in straight line, in circular, elliptical order to make you understand the nature of every unit cell in this universe. Let go Mind and pay full attention to Surti concentration / consciousness which is universal in nature. Mind exists in these three loks only. It doesn't exist in 'Amarlok' which is limit less having no begging and no end. It is itself Surti consciousness which has no death. Mind too doesn't die but it is only upto Maha Sunn. There is no Mind in 'Amarlok' of 'Sat-purush', from where we have come in this planet and are in the clutches of Mind and Maya i.e. Surti in these three loks is in bondage of Onkar / Nirankar / Kal Niranjan the Kind / God of these three loks which have to perish one day. See the tragedy of life that every human being is worshiping the God of these three loks. He is the 5th son of 'Supreme Soul / Sat-purush / Supreme conscious prevailing in every nook and corner of these four loks.

---0---

HOW TO MODIFY OTHER’S BEHAVIOUR

So long you, tell alive, afraid of any one or anything, there can’t enter happiness in you, but if you speak the truth, never tell a lie not afraid of any one; anything, provided you are a true disciple of true and real ‘Sat-guru’ of the time; have trust in him, sure of his actions; sermons, behaviour, way of talking, way of dealing, explaining, instructing, meditating, giving sermons, finding him always cheerful and happy mood, instructing disciples in happy and joyful mood, never misses morning, evening prayer, never propagate, caste, creed, religion, high, low, rich or poor, black or white of any caste or religion, behave in friendly and happy mood with every body at any time, at any place, old young or child free to talk with all when line is available, truth, love, joy are not his slogan, but life; make no difference between the known and unknown, high or low, rich or poor then suddenly a strange thing happen uninvited, that which may be called love, truth, happiness suddenly prevails there and in every one including the atmosphere in the nature all around you and him. This is the life needed in this planets for all in all for all the times to come will make this planet not less than Amarlok / Satlok of Supreme consciousness.

Instead of trying to oppose a person who displays negative qualities, we need to oppose the negativity itself. The one who knows the art of doing, this will never encourage the weakness in the life of a person.

Religion is not because of birth to have bodily relations. It is more than a science of realising our true self through “soundless sound word” which can’t be spoken, read out or spoken through mind, but to put in Surti consciousness to make it to be one with Supreme consciousness. It is not to be judged from outside through mind and body. It is like truth love and joy which are the qualities of Soul Surti which deeper and deeper than single love where as love, truth and joy are the segments of Soul Surti. There is no more depth than meditation through Surti along with “Alive Holy Naam” (Supreme consciousness) bestowed to disciple by true and real ‘Sat-guru’ who has been bestowed “Alive Holy Naam” from ‘Sat-purush’ / Sahib ji of 4th lok / Amarpur, the true abode of all Hansas who have come from ‘Amarlok’ to this mortal world. Body and Mind are clothes of Soul Surti. They are nothing more than that.

It is not the work of thinker, guruvas, etc. It is purity and purity the work of true and real ‘Sat-guru’ of the time. I have met Buddha, but I didn’t bless him with “Alive Holy Naam”, as per directions of Supreme

consciousness. I'm talking, writing giving 'Satsangs' from the core of my Surti. Prayer, Dhyān concentration without Supreme consciousness lead us no where. Supreme consciousness is Surti of Sahib Ji / Satpurush of 4th lok.

Budha, Jesus, Krishna, Ram Ji, Shiv Ji, fall in the domain of three loks which has a limit upto God, Kal Nirānjan, Nirankar. The three Maha Yogeshvars, Brahma, Vishnu and Mahesh were the experts of Khechri mudra in which they recited the word 'Ra-Rankar' and completely fixes their whole concentration into "shunya" (Khas khas ke dane ke barabar) i.e. size of a poppy seed, while passing through Sushmana Nerve. They attain 5th stage of conscience (Maha Pragya Awastha / Turiyateet Awastha) and attain such a level of Super conscience state which is known as "Dasham Dwar" i.e. opening of the 10th aperture which leads them to the end of universe (3 loks) where they attain oneness with Nirānjan (God) to whom they considered as Supreme Lord who is beyond the reach of Yogis. This is also known as Meen Marg which falls in the territory of Kal Nirānjan (Mind). This mudra is much more superior than Chachri, Bhuchri, Agochri and Unmuni mudras (meditation postures). It is not the state of true self realisation (as a soul) and has no concern with the spiritual powers i.e. powers of soul and supreme soul of 'Satpurush' of 4th lok 'Amarpur'. This is purely Nirgun Bhakti not Pra Bhakti which leads to 4th lok Amarlok / Satlok.

**‘Kaya Naam sabhi gunn gavein,
Videh Naam koi pyara pavey rey,**

**Videh Naam paavega sohi,
jaka ‘Sat-guru’ saacha hoi rey’**

The ship of my Mind and Body may be sailing on calm, composed and amiable seas, stormy or sunny days, glorious or lonely night. One has to maintain an attitude of gratitude and thankfulness to Supreme consciousness which has nothing to do with Mind and Maya, but to uplift Soul Surti of segments who have fallen in the clutches of Kal Nirānjan of these three perishable loks of sunn.

What else is there to think about and analyse the situation of Soul Surti which has nothing to do with ups and downs of Mind and Maya.

There are purely clothes of Soul Surti which has nothing to think about good and bad high or low, up and down, happiness and sadness; but at the same time it collaborates with Mind and rush to act Minds call of any nature. All acceptance with no refusal; give full cooperation with dedication to act as per directions of Mind and Maya. Thus Soul Surti which requires nothing from Mind, but at the same time follows head down, all the dictates of unit Mind within and cosmic Mind in all these three loks, under such like circumstances Mind is at the upper hand and acts as a dictator in the whole universe; till the Surti consciousness is in the dark and carry on all the directions and order of unit as well as of cosmic Mind to accept the superiority of unit Mind and cosmic Mind with folded hands.

What else is there for the Surti consciousness to penetrate within to realise its true place.

Osho's saying :

How so ever has a power is right, but not always. Truth is always truth, possesses love and joy at par with each other as gradients of Surti. It is certainly dangerous for every country men, to have unintelligent person (people) in powerful posts. They go on accumulating more and more power in the world and less and less intelligence. The reason for all this has to be elaborated over here. There is a subtle logic in it. People don't want to change. Change is arduous, change is difficult, obedience needs no intelligence. All machines are obedient nobody has ever heard of a disobedient machine. Obedience is simple, too it takes from you the burden of any responsibility. There is no need to react, you have simply to do what is being said, The responsibility rests with the source from where the direction, the order the suggestion, the idea comes. In a certain way you are very free. You can not be and should not be condemned for your act and going. They boldly say and can say that they acted as per direction, so this is purely of our boss. They were simply being obedient – whatever they were told to do, they did it and carried out the order. They can add the word with efficiency. If they win the war the credit goes to authority, but they lose, discredit to soldiers is against justice. If one lower boss has appointed one on a past the responsibility lies with the one who issued the order of appointment so why punishment to one who get appointed. What is the fault of appointee. Hence they worked for that job and get payment for that.

Thoughts are outcome of Mind. They move very fast between two thoughts interval is there but not visible, but it is there this interval represents Surti conscious / i.e. you.

While speaking between compression and rare faction, there is little gap of Surti consciousness. This shows that Mind can't operate without the help of Surti consciousness which is none else by 'you'.

Wave in river water are quite visible during floods. They move while forming crests and troughs.

Here too between crest and trough there is a space of Surti conscious where T & C are two segment of waves to develop wave length.

It is Surti consciousness which though small but joins two words to complete the sentence. Thus Mind can't work without taking help of Surti consciousness.

Walking, moving, running, jumping i.e. all activities of the body are performed by Surti conscious which comes to follow the directions of Mind. Mind acts as a boss, but Surti as an agent, peon to carry out the order of Mind i.e. boss in this universe of Kal Niranjana who is invisible and performing all the work with due cooperation of you (concentrated Surti) of all living creatures on this planet.

**“Paras Surti Sat-purush ki jaano,
Satyapurush kirpa sey daat jo pave pyaro,
Sou hi pooran Sat-guru jaaga maana kehlave rey,
Samdarshi sarvagi Sat-guru pyaro,
Surti se Atam Maha chetan kar jaave rey”**

Six bodies are working within us. These are as under :-

Sthool shareer / gross body / ethereal body : This body is attained in dreams and thus do a lot of noble as well as evil deeds. Very few elevated souls can have the knowledge of these six bodies. It doesn't possess the power to fly in space. The third body is known as

causal body. We all are making full use of it. The inner body is very important and strange as well. It possesses great concentration. You might have observed some body lost in himself. He is sitting besides you, but have gone some where else. We shake him and ask where are you, where had you gone etc. The fellow had reached to that known place, where he was concentrating at. It is known as ‘causal body. Sometimes you get absorbed in thoughts about some person and in a moment you find him before you in real sense and you get started and you say to him, I was just thinking about you and you are in reality before me. It means that, that person, concentrated at you and both came together. Mind is very active and make you to forget this all in a moment and you absorbed in your work. ‘Our consciousness’ is very precious, where as Mind is a show piece to drag us towards it.

Thus our causal body can reach to other corner, i.e. Maha sunn within no time. You must know that our soal Surti moves thousands time faster than the ray of sun. The 4th one is called as the Super causal body. This body can be attained by spiritually elevated souls of disciples of true and real ‘Sat-guru’ of the time like my ‘Sat-guru’ and one who is writing for you as ‘Vai Naam Das’, true and real ‘Sat-guru’ on this planet to elevate the Surti concentration of my disciples on this planet. Thus only the devotees of mine and my ‘Sat-guru’ ‘Shri Sat-guru Vai Naam ji’ on this planet. 5th body is called as Gyan Dehi. This body can be attained by Maha Yogeshvars. It is called as Gyan Dehi. This body makes one Brahm-nishth / absorbed, amalgamated in Brahm.

The sixth body is very important as it can’t be attained without “Alive Holy Naam” of true and real ‘Sat-guru’ of the time, on this planet. It is called as the ‘Vigyan Dehi’. In this body one can see every thing within these three loks and outside without eyes, can walk without feet, can fly without wings, can do any sort of work without hands. ‘Without Surti Realisation’ one is in deep slumber / unawakened / of mind only. In this state, when some one speaks, one finds Surti and Surti with a mind of .01% so long on earth.

---0---

PARAS SURTI’S EFFECT ON MIND AND SURTI CONSCIOUSNESS

The true worship ‘Satpurush’ (Sahib Ji) / Supreme consciousness is the ladder of permanent salvation / Maha Nirvana i.e. permanent salvation / liberation from the endless cycle of (to be with clothes of Mind and Maya and without clothes i.e. concentrated Soul Surti / {Surti + Nirti (prana)} birth and death “soundless sound word / Paras Surti / ‘Alive Holy Naam’ from true and real ‘Sat-guru’ of the time, is the ladder ‘Maha Nirvana’ which provides us permanent salvation / liberation from the endless cycle of birth - death from this planet (earth).

**“Sunn gagan see shabd uthat hai pyaro,
sou sab bol mein aavey rey”**

(Ni-shabdi) / soundless sound word (sabad). If anyone wants to reach to your real home / destination. You have to surrender yourself completely before your true and real ‘Sat-guru’ of the time. Try to establish Him in your concentrated Surti to let go your ego. A grain can sprout into a flower only after mixing with earth and providing care and water from time to time.

**“Bin Sat-guru baat baney nahin,
Koi kotin karey upaey rey”.**

However hard worship without ‘Sat-guru’ one may do, but proper guidance of “Alive Holy Naam” from true and real ‘Sat-guru’, one can’t achieve the target. One can’t attain proper guidance, knowledge without the guidance of ‘Sat-guru’ of the time.

Swami Vivekananda says :- “Sita – to says that she was pure is a blasphemy. She was purity it self (embodied) – the most beautiful character that ever lived on earth. A bhakti should be like.

Sita before Ram Ji – She might be thrown into all kinds of difficulties, Sita did not mind her sufferings; she centered herself in Rama.

In the same way Mira centred in Krishna and Ravi Das Ji later on. A number of events in recent years caused one to tune in more deeply to Sita. Her character is ideal to uphold and understanding her as a living presence, very active in the world today, both in our personal and collective lives all around the world. Today, one can see her presence every where and perceive messages, suggestion, moral lessons for all and sundry in this world. The seeking eye get glorified. One also come to understand in this transitional era in which ‘she’ and ‘Rama’ incarnated to help, guide and make them to realise their importance in the world in the present circumstances to help humanity, evolve, as well as the transitional era in which we now live, where an evolution is consciousness is required for the survival not only of awakened masses, but also who are mind oriented and are in deep sleep living in past and future only.

The active participations of Narayan and Lakshmi is especially apparent moments of evolutionary need and now the time ripe for that, for these who live in the present movement on this planet. What is Sita’s message for us today as a collective humanity at large.

In the Treta Yug, when she and Rama lived, humanity was emerging from a more collective consciousness into greater awareness of individuality, but it was still a time when the natural world’s understanding and respecting the abundant life forms, as well as the life emerges of rivers and earth.

Being knowledge will not be limited to information. So both should be firmly on the transformation track being of animals, plants, insects is at lower level as compared to human being. It varies from person to person in human beings.

If a person gets hurt because some one makes unpleasant statement, it shows the level of one’s being forgiveness is essential upto a certain level with a pause, so as to mend the other and not to end relations. One’s being can be tested up to give times and then neglect him without any notice. A selfish persons being is at very low level. One who is always a helping hand to needy and helpless goes on increasing his level of being or self. i.e. Soul Surti.

While being blessed by true and real ‘Sat-guru’ of the time who is blessed with ‘Alive Holy Naam’ from Supreme power of fourth lok i.e. ‘Sat purush’ can elevate Soul Surti to extreme level of the disciple to

attain complete nirvana, free from life and death cycle on this planet. He serves the masses with true love and faith in Supreme power, elevate their being i.e soul Surti to enable them to attain permanent salvation from this earth of birth and death cycle. There is a need of inner transformation to be enable one to be free from life and death cycle on this planet. This transformation is possible through true and real ‘Sat-guru’ of the time. At present ‘Vai Naam Sat-guru’ is true and real representative of ‘Satpurush Ji’ on this planet to liberate souls from life and death cycle.

You can change your body like physical things like moter, house, car but can liberate soul Surti from the clutches of Mind and Maya. The solution of problems is possible, only modify and change mind by elevation Surti by Maha Chetan Surti of true and real ‘Sat-guru’ like ‘Vai Naam Ji’ of the time. Let us talk about telling a lie at the very infancy stage what do they achieve by telling lies ?

Can’t you see that the effort needed to protect one from being caught as a liar causes more tension and that lying causes unnecessary strain of listening, contemplating and of remembering one’s lies ? In this way one lands up filling the chit with unnecessary thoughts, worries, hurts and bundle of lies. This restricts the space available for any creative act or work. Knowledge and being are two different poles. The emphasis is an increasing one’s being ie. soul Surti. For this both knowledge and being (soul surti) as essential and required in life. Knowledge can’t be transformed into being (soul surti) as they are two different poles well within human beings. Knowledge is very essential to know about the surroundings i.e. nature including five basic elements in this universe i.e. sunny, air, light, heat, water and earth.

Knowledge and being should be firmly handled with due guidance on the transformational track. Both knowledge and being have different levels in this universe to understand our true self.

‘वे नाम’ जी पल पल कहते प्यारो, हर ओर देते पुकार पे पुकार रे ।
हर श्वांसा खाली जात प्यारो, इस का मोल किया ना जाये रे ।

‘वे नाम’ सत्तगुरु प्यारो, श्वांसा सुरति इक करने की डौरी लाये रे ।
अजर अमर करि प्यारो, निजघर ले जाये रे ।

---0---

THE KNOWLEDGE OF UNKNOWN

In this universe and ‘Amarlok’ which is limit less may be unknown to many but known to a few and known-able to those dare to venture into the unknown, unless we choose ignorance or persist in our limitations. For to all things that are not unknown-able, all things in this universe faculties, which can take cognisance of these, and in human beings, the microcosm. These faculties are always constant and at a certain stage capable of development.

We may choose not to develop them; where they are partially developed, we may discourage and impose on them a kind of atrophy. But, fundamentally all possible knowledge is knowledge within the power of humanity. In the last two hundred years physical science have made tremendous progress and transformed the world due to the inventions of different forms of energy and their application. All these source of energy, whether steam, coal, petrol or diesel derive their energy from the Sun, which is the basic source of energy for the earth planet in this universe. The energy revolution and other scientific developments are for the developments are for the benefits of the entire humanity, but western countries have taken maximum benefit out of it. Spiritual development took place in the east particularly in India Religious and spiritual personalities explored.

Mostly the inner world and its relation to the outer world at large. The basic manifestations are as under :

Akash, Sky, five elements, para, Mind : - internal as well as external; Surti, Supreme Surti etc. By akash we normally mean ‘sky’. But here we refer to very fine, superfine, subtle substance. It is every where in three loks. i.e. universe. It is the basic thing from which all substances i.e. five elements i.e. gases, liquids and solids do exist. Sunn i.e. black matter generates air. Air generates five; Fire generates water, Water generates earth. These five elements represents five supreme power in these three loks.

Sunn – Nirankar (God)

Air – Brahma Ji

There is wise saying, “ You are where your thoughts are “ Most of

the time, during the waking hours, one gets engrossed in one's thoughts, especially when one has no control over them. It is not our thought out of unit mind and cosmic Mind i.e. of God of these three loks i.e. Mind and body itself.

These thoughts develop imaginary world all around us i.e. Surti – consciousness / concentration.

Good and bad thoughts are two sides of the same coin. They go on tossing you to have a taste of both, at one moment pleasant thought and the next moment an unpleasant thought.

One consoles us for some time, the later puts us in great delima i.e. some sort of tragedy is instore for us. There is no way to escape, so long we remain ignorant about the nature of unit Mind and cosmic Mind. We as Surti is deluded by Mind and Maya and never provides any opportunity to realise our ownself.

These rejected suppressed and repressed thoughts, from the side of cosmic Mind, force their entry deep down in what is called the sub conscious Mind i.e. unit Mind. Where they take refuge but are always.

‘Sat-guru’s place in the society :-

True and real ‘Sat-guru’ of the time is endowed with complete enlightenments sees through inner eyes of Supreme consciousness endowed by ‘Sat-purush’ Himself through Surti. This entire universe is God’s own creation and ‘He’ resides in ‘sky matter’ which is expanding each moment; which is other than soul surti. It can’t be named Atman, as in Atman, Mind and Maya do exist so long. We are on this planet and incapable to concentrate our Surti with ‘Alive Holy Naam’ of Supreme Soul, the knowledge of which lies in the hand of Supreme power i.e. ‘Satpurush’ whose segments we are on this planet in various form of life. True ‘Sat-guru’ only can liberate soul, from the clutches of Mind and Maya by blessing the disciple with “Alive Holy Naam” bestowed to Him by Supreme power to liberate the souls.

सत्य नाम निज औषधी, खरी नियत से खाये,
औषध खाये अरु पथ रहे, ताकि वेदना जाये ।

When we come to know the true nature of Mind, then his power

vanishes instantly and he becomes powerless. Don't take rope as snake to be afraid of it.

जगत की नज़र में भक्त गया प्यारो,
भक्त की नज़र में जगत गया प्यारो।

Sending out +ve thoughts and good wishes make you stable and desireless under all circumstance in this world of Mind and Maya which have put soul surti in its clutches.

Mind and silence have no animosity but enmity with each other when mind is at work inside the body the silence doesn't prevail there. Silence itself can't let go Mind. Mind inside the body is a segment of Kal Niranjana who resides in the “Shunya” ('Sunn') i.e. first element which liberate 'Air' as second segment, the air generates 'Fire' as third segment and fire generate 'Water' as fourth segment and water generates 'Earth' as fifth segment, thus every body one way or the other is worshipping 'Five Elements' on this earth. When there is 'Kabir Sahib', 'Sat-guru' Madhu Param Hansa, Ravidas Ji, Mira Ji, Osho Ji the nature, God, Supreme Consciousness, Sahib Ji / Satpurush Ji, Amarlok, the skies of three loks open, fragrance of flowers shower from all sides, the nectar of Supreme Consciousness is presented by these Param Hansa of Supreme consciousness from the front to make you realise the truth of Supreme consciousness through truth, love and joy shown by these Param Hansas of Amarlok.

You may paint picture with a brush in your hands, compose a poem, sing a song or may dance along with others or become a mystic. The mystic has tremendous power of looking, penetrating within to realise self i.e. Surti Consciousness to uplift the Soul Surti to realise love, truth and joy which is the true flower of creativity; but in actual practice you will see and watch him, he is just sitting silently totally silent within being surrounded by Supreme Consciousness.

सत्यलोक हम सब का प्यारा प्यारो, जहां जाये फिर वापिस ना आये रे।
वे तीन लोक भिन्न प्यारो, अमरलोक सत्यपुरुष का न्यारा रे।

सब्द सुरति का जब मेला प्यारो, तब कौन सत्तगुरु कौन चेला रे।
स्थूल सूक्ष्म कारण महाकारण प्यारो, चार तन पार से सुरति 75 प्रतिशत पार रे।

काव्य 15

जब तक सुरति चेतन नहीं प्यारो,
मन अस्थिर चंचल वाणी एवं नेत्रों में चिंता जान रे।
सतगुरु संगतों से प्यारो,
और दात से लाभ ही लाभ ही जान रे।
बदलते विचारों भावों से प्यारो,
आत्म चेतन मत जान रे।
मन के भाव सर्वनाश लाते प्यारो,
'वे नाम' सब्द को सुरति में डालो बात बन जाये रे।
चेतन सुरति बिन जो किया प्यारो,
मन मान का खेल जान रे।
चेतन सुरति बिन प्यारो,
मन मान में हर एक विचारों में खोया जान रे।
बिन 'वे नाम' सब्द सुरति से लगन ना होत प्यारो,
बिन लगन प्रतिभा व्यर्थ जान रे।
अपने प्रति सत्य ईमानदारी सुरति ध्यान बिन प्यारो,
प्रतिभा खोई जान रे।
सुरति बुद्धि में नई-नई कोपलों संग,
फूल खिलाती जान रे।
सुरति चेतन से अंदर नया उत्साह स्फूर्ति नई खोज प्यारो,
ये सब प्रतिभा के फूल और फल जान रे।
आज का सुरति से कार्य किया प्यारो,
चलता कल का जीवन सत्य की ओर जान रे।
इस जग में अपना ही सब खेल प्यारो,
बिन सतगुरु कुछ भी पाया मत जान रे।
यह यत्न से ना होई प्यारो,
सतगुरु कृपा करे सब काम रे।
सुरति चेतन को पाना ही प्यारो,
महां चेतन सुरति में समाना जान रे।
फिर सब कुछ ही तेरे पास प्यारे,
सतगुरु कृपा करे सब काम रे।
खुद को देखना जानना प्यारो,
'वे नाम' सब्द से जान रे।
वस्त्र गये चेतना का भेद पाया प्यारो,
उस प्यारे से मेला जान रे।।

V.V. imp.....

In Surti Consciousness the place of ‘OSHO Ji’ is beyond comprehension of an individual. He was endowed with Supreme intellect, knowledge devotion, dedication, self knowledge, balanced personality; helpful to the extreme level. He was creative at every moment of life, whether, giving sermons, while dancing along with disciples, giving answer to the questions being critical, clear concepts of every question and thought. He is beyond criticism. He understand every one except ‘Kabir Sahib’, so far as my Surti consciousness penetrate within. He is most loving personality in the eyes of Supreme consciousness / Sat-purush / Sahib Ji with whom ‘He’ is residing at present for the last 12 years. He has crossed / overcome the bondage of birth and death of the body. He is far ahead of ‘Buddha and Mahavir Ji’. At present he is at par with ‘Kabir Sahib / Baba Nank Sahib / Ravi Das Ji / Mira Ji / ‘Vai Naam’ Sat-guru of the time on this planet. What so ever he has done for the upliftment of the society is being appreciable / louded by the intellectuals, soul elevated souls / politicians / God believers / non believers of any caste, creed and religion bows before his Soul Surti. Such like personalities come on the earth after lacs and lacs of years. I don’t think that there will be any critic of ‘Paramhansa Osho Ji’ and Rabinder Nath Tagore, Paramhansa Baba Nanak, Paramhansa Ravidas Ji, Paramhansa Mira Ji, Paramhansa Sat-guru Madhu Paramhans Ji on this planet, ever since this universe exists. Every one on this planet should follow their life style like these personalities to be one with Supreme consciousness to attain permanent salvation on this earth and be with Supreme consciousness where all these personalities are residing and will reside and can be assigned duty by Supreme consciousness to perform in other planets of the universe.

Superiority depends on the use you have made of your time, experience, with mind or Surti speaks itself. Try to achieve real freedom from Mind and body as a soul Surti. Every human being in this planet knows only about the clothes given to him by nature or by the tailor. There is Mind is well within your Sushmna and body that you are having are your clothes, as you are Surti. Soul working in each and every cell of the body to keep it alive. It has been divided into two segments by the Mind well within you and you are fully ignorant about this all. Surti working to pump the heart is very important and powerful segment of Soul. Nirti (prana) is working in the breath to take poisonous air out and to draw in pure air to complete the cycle of breath which keeps every creature alive on this planet inside the body. God (Nirankar) can’t capture Surti by any means, but ‘he’ can take Nirti (prana) in its custody at the time of learning the body. Here Surti plays the part of cow and Nirti as a new born calf. When Devdoots capture Nirti to be installed in an other body Surti automatically follow suit. Just as some body takes calf in a truck,

cow automatically wants to accompany calf to be taken in the vehicle. No body needs any extra labour or burden to persue cow to enter the truck. See the power of love of the mother cow for her calf. Same process is carried out when Nirti leave the body for the next body, Nirti automatically follow suit. ‘Devdoots’ not have to do any exercise for capturing Surti.

To capture Surti needs trick.

धर्म दास जी का कहना प्यारो.....

**भगती दान सतगुरु दीजिये देवन के देवा हो ।
जो पाया ना बीसरो साहिबा हर पल करिहों पद सेवा हो ।
तीर्थ व्रत मैं ना करूं ना देवल पूजा हो ।
धर्म दास की विनती समरथ सुन लीजै ।
आवागमन निवार के अपना कर लीजै हो ॥**

One should not cheer up to much about your happiness and don't whine (unpleasant sound) too much about your un-happiness. Which make one think happiness shared is an act of cheating, embarrassing and to put one in the corner is not conducive at all under any condition and situation. All humanity is, “the leaves of one tree and the fruits of the same.”

Supreme God's (Sat-purush's) redemptive plan to uplift mankind is sure to take place by true and real 'Sat-guru' of the time. He outlines a plan for the establishment, preservation of universal truth, love, joy to maintain peace through out the world to develop Surti consciousness among masses, without any, caste, creed and religion. This all will make you to become a child again to be creative. All children of any city or country are creative by nature, but parents, teachers and society at large don't allow their creativity to grow and flourishing in every nook and corner of the world. This all will make him though free i.e. mind free and he will automatically become true spiritual personality in the whole universe and there will be no need 'ISA' robots in the world to fight 3rd world war.

Osho Ji says a creative person is born religious. He always goes on trying to see, handle, play an unknown object or as a religious person who moves inside will be the attitude of the child. Creative will always

more inwards to know, understand the unknown through learning from the unknown. He can be a scientist or a true religious personality in the universe which is still unknown above 80%. At this stage child is wild no more - but true and real student in the eyes of awakened personality and in the eyes of Supreme consciousness, who is uptill now unknown to 99.99% of the universe. People are still unaware of love, truth and joy in the real sense as they are far away from the work as duty to be creative outside and inside both. How can humanity survive without true love, truth and joy which are the gradients of Soul surti. Meditation in its true prospective can save the young generation from taking drugs. In the prevailing situation how can one drop drugs and start meditation with due guidance and instructions of true and real ‘Sat-guru’ of the time i.e. ‘Sat-guru Vai Naam Paramhansa in this universe. One has to die so many times to extract, accumulate the unknown to be mode known for his own self and then again extract the unknown from the unknown which is the reality to be called religious person among such religious persons in the whole universe. How can ignorants can judge, understand the awakened personality, except true and real ‘Sat-guru’ of the time.

A ‘Sat-guru’ is born true holy servant of masses on the planet. He is in real sense like a ‘Satpurush’ in the form of body and soul. He does not possess anything of the Mind and Maya. Nirankar (God) of these three loks remain careful and cautious so long ‘Sat-guru’ (He) resides in these three loks to show real / true path to the masses who comes in contact with Him. He gives equal treatment to high and low. He simply take soul into consideration and have nothing to do with position and place of man in the society.

He poses himself as servant of the masses, so always come to the rescue of poor, needy and God loving people for any kind of help to uplift their soul surti to attain permanent nirvana from this planet and to go back to his true and real abode Amarlok of ‘Sat-purush’ which he has visited and have established proper link with ‘Supreme consciousness’ i.e. ‘Sat-purush’ of Amarlok (4th lok). He is an ordinary man who loves ordinary way of life on this planet. He performs all his personal activities like cleaning, dusting Satsang hall, his own room, washes his own clothes, utensils, polishing his shoes etc. What so ever he touches with love and care becomes godly. He does all including low and high to make everything great. Each moment of his life is not less than meditation. He writes, composes songs make tunes and sing them in satsang to give the knowledge of material and tune of the songs ful off prayer of Supreme soul (Satpurush of Amarlok).

There is no difference of individual soul and Supreme Soul of Supreme consciousness / Sat-purush / Sahib ji great personalities say /

suggest that never fight with the Supreme, but try to balance your self with the Supreme by possessing bodyless word / Alive holy Naam / soundless sound word from true and real ‘Sat-guru’ of the time, who has been bestowed / blessed this ‘Alive Naam’ from Supreme consciousness to liberate one-self from the effect of Mind and Maya.

बाबा नानक — तत् सत् ही परम सत्य तू जान रे ।

एक औंकार सत्तनाम

आदि सच जुगादि सच,

है भी सच, नानक होसी वी सच ।

Always move towards Supreme consciousness, while in meditation and prayer through breath and not through mouth, tongue and teeth as there are the segments of Mind. Our breath is nirti which is prana, segment of Surti which work in heart to produce heart beats in pumping soft blood and receiving impure blood to purity in the heart. Always be soft and clean and be busy in doing soft work which develop love and peace with in.

When you do hard things, you actually show your worth in doing that ; you develop ego with in, which poses challenge and your ego becomes subtle which is a digit of Mind and not of Surti, which goes against your own conscience within. This is the work of the devil to creat traps for you to fall into it and become mindful. In this way mind pulls you down and make you to move towards hell. It is never you who is falling time and again into the hell you have to drop the ego to be one with Supreme.

What ever ‘Sat-guru’ Vai Naam Ji says, writes. Try to understand that even if one is in thousands work will be done by true guidance and help of Supreme consciousness. You are totally mind and mind only well within, make it to get out of it (surti consciousness) which is you yourself within the frame of the body. The frame of the body is also mind. Mind is out, mind is in Sushmna within you and your body is also Mind. You are surrounded by Mind from three sides and your soul surti has been divided by Mind into two segments and he never allows or provide any opportunity to Surti and Nirti to join and become powerfull to eliminate mind thoroughly.

Mind is there in the Sunn material, expanding and expanding every minute. Surti soul too is present in and out, but first internal Surti and Nirti needs to be collaborated in one then there is no problem to get amalgamated into Supreme Surti of Supreme Soul. It is because of this ‘Sat-guru’ comes from time to time on this planet earth to provide ‘Alive Holy Naam’ to disciples to make Surti and Nirti to write in Surti Kamal, one plus one-fourth hands above from 7th chakra (i.e. Saehstrasaar) out side and lasts upto 9th plexus (chakra) which is known to living true and real ‘Sat-guru’ i.e. (perfect spiritual master) of the time. In this way, we get blessed of ‘Maha Nirvana’ which leads (disciple/saddak) to permanent salvation from the endless cycle of birth and death. Ni-Shabdi (soundless sound word) which is in no way render the subject of speech.

—0—

HOW TO MAKE CHILD SURTI CONSCIOUSNESS AT THE INFANCEY STAGE ?

Blessed are those who possess ‘Alive Holy Naam’, from true and real ‘Sat-guru’ of the time, being blessed by Supreme consciousness on his visit along with Him to Amarlok / Sat-lok. As a child we fill our lives with activities which are unknown to the child and he starts creating something new every moment and every days. In general he is working as a Supreme consciousness and get tremendous enjoyment in the activity he does with care and with complete concentration, because he is not aware of thoughts and ideas which is mind. So a child being innocent is totally free from the impact of Mind on his Surti. child is always in touch with Suprme consciousness which makes him aware of internal and external activities. He is always with his ownself. If some one acts against his part of game, he starts crying weeping which is due to the external Mind’s impact on Surti and the child get disturbed from his Surti consciousness and mind starts playing its part slowly and steady on the concentrated Surti of the child. We need time and proper guidance from true and real ‘Sat-guru’ of the time to make one to be in Surti with child in his activities not to disturb but help him or her through silent meditation to let the understand and follow the external impact of concentrated Surti of Mother in general who spend maximum time with the child who is fully concentrated with Supreme consciousness of ‘Sat-guru’s Surti to guide as helper in child’s new creations which elevate his or her concentrated Surti of Supreme consciousness. In this way Mind will never be in a position to take child away from his/her new creations which are going to help him/her in later life.

Child birth is a miracle because it reminds us of attaining nirvana/permanent salvation i.e. free from the cycle of birth and death in

this material world. Childs arrival into a family is a blessing in disguise from the Supreme consciousness who takes proper care of Surti consciousness of a child or one who is blessed with ‘Alive Holy Naam’ i.e. soundless sound world which keep one quite away from the impact of Mind and Maya i.e. he is quite calm, full of love, truth and remain in joyful state with Surti surcharged with ‘Alive Holy Naam’ blessed by true and real ‘Sat-guru’ of the time. We should be grateful to Kal Niranjan (God) also to bring him on earth in the human form in which one can be liberated from life and death cycle, provided he is blessed with soundless sound word (sabbad) from true and real ‘Sat-guru’ of the time i.e. ‘Ve Naam Sat-guru’ who is blessed with ‘Alive Holy Naam’ from Supreme Soul (Sat-purush) itself. The selection of soul is not done by God / Kal Niranjan / Nirankar who is Mind itself. This body of every human being is also segment of Mind with our Soul Surti. One’s life purpose should be permanent salvation which is in the hands of true and real ‘Sat-guru’ of the time. ‘Vai Naam Ji’ is present ‘Sat-guru’ on the planet to bless any Soul Surti who has faith in his and is blessed with ‘Alive Holy Naam’ from ‘Him’ to get permanent salvation on this planet. Children are blank paper so far as Mind and Maya are concerned. Parent too should be blessed with ‘Alive Holy Naam’ from ‘Vai Naam Ji’ ‘Sat-guru’.

Importance of Alive Holy Naam / soundless sound word, which can’t be written, spoken, to be listened which is soundless sound word bestowed to ‘Sat-guru’ by Supreme power / Sat-purush / Sahib Ji ‘Himself’. Child, parents blessed by ‘Sat-guru Vai Naam Ji’ by soundless sound word are considered to be most lucky persons as saddak on this planet to rare the child as per directions of true and real ‘Sat-guru’ of the time. After getting blessed by ‘Alive Holy Naam’, parents duty is very important to remind / renew child Surti with ‘Alive Holy Naam’ in Surti to Surti of the child through ears. Soundless sound will take care of the child in all respects, physical, mental, spiritual and soul Surti concentration by infusing ‘Alive Holy Naam’ in the ears of the child in Surti to surcharge the Surti of the child from time to time by taking child to ‘Sat-guru’ time to time. At later stage the child can himself meditate on soundless sound word in Surti concentration. This will make the child a real and true spiritual personality on this planet. He will be very successful in any under taking task which will totally fresh and new for him to investigate and create something new out of it. Child is with soul since when he came on this planet the only problem is that one should come in contact with true and real spiritual master of the time to uplift your soul time to time in satsang of true and real ‘Sat-guru’. Every moment of our life is very important, so we must live in the present moment; let go past which is dead and future has not yet come, present moment is most important to live in that.

Always live in this present moment, let go past and past is dead and let the dead go. Live in the present moment which is every thing for us.

When the future will come, it will always come in the present moment, so never penetrate into past and never peep into past and future need not to be touched at all. The most important period in which our Surti reside is present, it has not seen past and will not see future as well. Present and present is our life in which Surti conscious resides. Children will and should naturally emulate their parents and sometimes he will penetrate into the unknown activity which is very important as it will develop the curiosity of ceativeness which is essence and call of Surti consciousness. When the children grow up they require true love and proper care from the side of parent, teachers and friends. Parents need to focus on their children up bringing with love and not regard it as an obligation. They have also to help children to understand their true self that they are not body or mind but (soul) Surti consciousness which needs to be concentrated by ‘Alive Holy Naam’ from true and real ‘Sat-guru’ of the time. Children will naturally emulate their parent regarding meditating time to time to know the truth and purpose of life on this planet. They should be fully conscious of the true purpose of life on this planet as human being as human beings can only be liberated from birth and death cycle of this body which is a source of attaining permanent salvation on this planet.

In mother’s womb the child is true representative / segment of Supreme consciousness having all the properties of Supreme soul / consciousness in him. He is a diamond of Satlok i.e. of Supreme consciousness. Every morning, every moment of child’s life is a new birth and a fresh bliss to understand our true self by a wisper of ‘Alive Holy Naam’ from the Surti of true ‘Sat-guru’ of the time who possesses ‘Alive Holy Naam’, from Supreme consciousness i.e. ‘Sat-purush’s maha chetan Surti. Every moment is our birth day, if we are blessed with ‘Alive Holy Naam’ from true and real ‘Sat-guru’ of the time i.e. ‘Vai Naam Ji Paramhansa’ of Amarlok. We should always be thankful to true and real ‘Sat-guru’ of the time. His blessing to new born baby / child should be considered as blessings in disguise to move on true path of spiritualism.

Children are future of the nation, we should nurture them lovingly through true spiritualism to make people to follow the path of true spiritualism in this sinking planet. They should follow the path of Surti meditation in breath to open Sushmna nerve to make soul Surti to reach in Surti Kamal the abode of ‘Sat-guru’ to attain true and real Nirvana on this planet, which is real essence of life for each and every living Soul on this planet. We can only be liberate in human form and not in any other form of life in this planet.

To every action there is equal and opposite reaction.

If anybody in this planet realises the importance of true and real ‘Sat-guru’ of the time, he can be transformed into Supreme segment of Supreme consciousness and can be richest Soul in four loks. This work is performed by ‘Sat-purush’, but the credit is given to ‘Sat-guru’ of the time, as ‘He’ is considered as embodiment of Supreme consciousness. ‘Sat-guru’ possesses paras Surti of Supreme consciousness. ‘Sat-guru’s words should be taken as final ; even ‘Sat-purush’ can’t ignore the dictates of ‘Sat-guru Vai Naam Ji’ of the time. ‘Sat-guru’ is a universal forest which breathes life in every soul who so ever comes in his contact. Thus life breathes and we experience a sense of liberation when surrounded by forests of Surti all around ‘Sat-guru’ as forest in this universe which enhance the quantity of air to generate more and more water on the surrounding earth manifested with forests to provide pure and fresh air for all living creatures on this planet. ‘Sat-guru’ is living, talking, seeing, directing, modifying and infusing soul Surti to plants, animals, human beings and all other creatures who breath and concentrate Surti consciousness with concentrated Surti of Supreme conscious and his tremendous power of ‘Alive Holy Naam’ being blessed by Supreme consciousness in this planet.

All human being can be liberated while having a touch of ‘Alive Holy Naam’ to breathe, as iron with a touch to paras stone, become gold in no time. ‘Sat-guru’s Surti concentration make every human being like him, with no differences in any way. ‘Sat-guru’ is embodiment of Supreme consciousness to make Soul one with Supreme consciousness to make soul one with Supreme consciousness within no time, provided one possesses faith in his power. Be one with the Supreme consciousness through breath. When Nirti (prana) breathes along with ‘Alive Holy Naam’ i.e. soundless sound word of ‘Sat-guru’ bestowed to ‘him’ by Supreme consciousness / Sahib ji of Amarlok (4th lok). Mind is dispelled from the body and Surti from heart comes to get attached to Nirti (prana) to open Sushmna nerve. Now our breath is concentrated with ‘Alive Holy Naam’, ‘Sat-guru’ Ji says that Soul Surti of a saddak awakes at the very some moment when a true, real, perfect spiritual Master bless him with a true, real ‘Alive Holy Naam’, through His Supreme consciousness, concentration, awaken soul Surti within no time :

Satya, Prem, Annand brabar tapp nahin pyaro

Jhooth brabar paap rayai

Jaki surti mein saach hai pyaro

Uski maya chetan surti aapraya

“Vai Naam Surti Dhara”

“Nijdham Ke Santon Ko Samarpit”

In this world truth is Supreme, there is no other worship equivalent to speaking the truth, be in love and feel joy within all the times and there is no other sin at par with false hood. Kabir Sahib Ji says always reside in the Surti of true speaking Soul.

Without ‘Alive Holy Naam’ in Surti, one can’t be liberated from the clutches of Mind and body.

**“Sat-guru bin paar na koi pyaro,
Lakh gaye kechroo opaya rey”**

The whole world is busy in doing karma and are doing everything in confusion. Without ‘Sat-guru’ one can’t have links with ‘Supreme consciousness’ in this world to get liberated from the clutches of Kal Niranjana.

**“Satgun Nirgun Yum ki baazi pyaro,
Paar nahi jane ek rey”**

‘Sat-guru Vai Naam Ji’ says that both sargun and nirgun modes of worship are in the real sense the worship of Kaal Niranjana and not of Supreme consciousness to get liberated. It is a secret and major play of Mind (God of these three loks) to put every soul in his own clutches and don’t allow them to get liberated in any way.

**Paras Surti bin baat bane na pyaro,
Lakh jey kare upay rey.**

‘Sat-guru Vai Naam Ji’ says that without purest Supreme concentration, none can attain complete nirvana i.e. to be free from the bondage of Kaal Niranjana (Mind / God). Mind is every thing in these three loks. He is the main driving force in these three loks. Nirti to put soul surti in delma, so as to keep it far away from the contact of Supreme consciousness. Kaal Niranjana wants to put all sort of organisations, political religious, social or any other kind in addiction just like other drugs available open or secret in the market.

Deep within everyone agrees with true spiritual personality, but in practice he is too old to change. This is with every one in this world,

because what so ever he is doing regarding prayer is intoxication one consider himself too and think that I can't change. Always fearful, but not ready to change the old path followed. Still he goes on doing prayer without being blessed by true and real 'Sat-guru' of the time and to be blessed with 'Alive Holy Naam' soundless sound word.

As long as you are afraid of any one in the society or from God, 'Sat-guru', 'Sat-purush', there can't be truth, joy, happiness, but if you really not afraid of anyone, anything, anytime, any place, any condition not afraid of any personality in these 4 loks, then you will find and feel within your conscience that there is no fear well within your regarding anything, then you will find - when you are alone - that suddenly a strange thing develops with your conscience uninformed, uninvited that which may or ought to be called love, truth, joy is suddenly in and out is already present and you are experiencing all this in that moment provided you are blessed with 'Alive Holy Naam' from true and real 'Sat-guru' of the time and you are true disciple with complete surrender before 'Him'. Simple living with complete faith in 'Sat-guru' promises happiness, free from thoughts, wishes desires, past and future, but completely absorbed in the present moment.

Life needs to be flexible, so that one can move from extra version to intro version and from intro version to extra version as easily as day and night and night and day or see Supreme being inside and then outside the body with closed eyes.

क — इस पल में रहना आ गया तो सब कुछ ही तू पा गया ।

सहजो — बिन सतगुरु ज्ञान ना होई, बिन ज्ञान कहां होई वैराग रे ।

सहजो कारज भक्ति के, गुरु बिन पूरे नाहिं रे ।

काक मुशण्डि गरुड़ से कहते रे —

मौरे मन प्रभु अस बिस्वास, राम ते अधिक राम कर दासा ।

I love Ram Ji as God, but at the same time I have Sant of Rama i.e. disciple turned Sant of Rama

Meditation means make inside and outside as one unit if you are in go out. If you are out make yourself to go in within no time. Life belongs to Soul Surti, to the Supreme consciousness. Whenever you

become stagnant (fixed) you become object. Soul Surti is not an object, it is always in motion and motion and no rest at any time, any moment. In and out must be closely linked, without being stagnant at any point of time. Don't be totally introverts like eastern countries and don't be totally utterly extroverted like western countries. Science developed in the west, but spirituality was totally ignored i.e. disappeared. In the east, spirituality developed but scientific development almost disappeared. Both the things are needed like a coin which has head on one side and tail on the other. Both scientific development and spiritual development should progress side by side to keep the balance in the whole universe. Science and meditations are our two hands, we can't do work properly with one hand and can't walk properly with one leg. Both hands and legs are needed to work and work properly and rhythmically.

सत्य पर चलना – प्रेम से सतगुरु सेवा करे सब काम रे ।

अर्थ धर्म काम और मोक्ष नाहिं, प्रेम से सतगुरु सेवा करे सब काम रे ।

The whole world, four vedas are quite ignorant about Supreme consciousness / Satyapurush / Parampurush of 4th lok (Amarlok/Satlok).

**“Avval sant Kabir hain pyaro,
dooje Sat-guru Vai Naam
Taase Satpurush ka bhed pyaro,
Satya Kahein Satguru Vainaam”**

Kabir Sahib makes it very clear to every body that Supreme Lord (Satyapurush / Sahib ji) is the only true love, truth and joy i.e. Mahachetan Surti which exist in all the four loks i.e. Amarlok / Satlok, extended every where, but its centre of location is Amarlok/Satyalok. Supreme power / Lord is present within everyone and is no where to be found or seen in an outer world.

**“Satya samaan dharam mat jaano,
Bin Prem Annand jhooth sab mano”**

Real truth is unknown to this world. Every human being on this planet is doing every thing of Mind (Kaal purush / Nirankar / Niranjan) but not of Parampurush (Supreme Lord / Sahib Ji) which is very shocking for awakened soul.

काव्य 16

सत्य सद्ब सत्यपुरुष बिन कुछ और ना मानो ।
इस नाम बिन सब झूठ तुम जानो ।।
आत्म पास भी बुद्धि प्यारो,
मन बुद्धि चित्त और अहंकार से पार रे ।
बिन मुखोटे कुछ और ना प्यारो,
आत्म बुद्धि आलोकिक से मन बुद्धि करती काम रे ।
आत्मां की आंख से प्यारो, आंखें देखति जान रे ।
अंधा आत्म की आंख से प्यारो, काम लेता जान रे ।
घर की हर वस्तु की पहचान रखता प्यारो,
हर कार्य सुरति से करता जान रे ।
गूंगा भी बोलता प्यारो,
वह जब कुछ बोलता वह आत्मां से जान रे ।
आत्मां का मुख ही प्यारो, इस तन मुख को चलाता जान रे ।
आत्मां की आंख सभी दिशा प्यारो,
काम करती देखती सुनती जान रे ।
बिन आत्म सब जग सूना, आत्म बिन सभी खेल अधूरा रे ।
आत्मां को जन्म जन्मांतरों की बातें याद प्यारो,
इन्हीं से निजघर देखा जाता जान रे ।
प्रथम पूर्ण पुरुष पुरातन पांच शब्द उच्चारें,
सोहं सत्त ज्योतिनिरंजन ररंकार औंकार ।
हर एक जीव पड़ा बहु लूट में, नहीं कुछ लेन ना देन रे ।
ज्ञानी भुगतत ज्ञान से प्यारो, मुख भुगतत रोये रे ।
तन की खातिर कर्म प्यारो, आत्म भुगतती जान रे ।

..0..

**“Satya samaan koi dharam nahin jaano,
Satya bhakti pooran Sat-guru se jaano”
Satguru milney se jhagda khatam tou jaan”**

“Vai Naam Surti Dhara”

“Nijdham Ke Santon Ko Samarpit”

**“Dariya bhavjal agam hai pyaro,
Satguru karhu jahaaj rey,
Satguru bin baat bane na pyaro,
Samarpan se bane sab kaam rey”**

It must be borne in mind that true worship of ‘Sat-guru’ can liberate your soul from the bondage of Kaal Niranjana.

‘Sat-guru Vai Naam’ of the time after Kabir Sahib clearly explaining that “No individual soul can cross the worldly ocean of Mind without the power of (Sar, Surat Naam / Sajeewan Naam) to be given to any individual is being blessed to true and real ‘Sat-guru’ of the time by Supreme power Himself through concentrated Surti to Surti to elevate the Soul Surti. True “Naam” / ‘Alive Holy Naam’ is the only Holy Naam which can liberate us from the bondage of Mind and maya to take us to Amarlok / True lok / Supreme consciousness to become Paramhansa under Supreme consciousness. This is the true philosophy of Sant Matt. ‘Vai Naam Ji’ is giving this ‘Alive Holy Naam’ in ‘Satguru Deeksha’ to liberate the Soul from Nirgun modes of worship. It liberates them from the worldly ocean of birth and then get transformed into five basic elements (sun, air, fire, water, earth i.e. after leaving the body).

The ‘Mind/Niranjana’ resides in Sushmana Nerve (the central nerve in between the two nostrils - Ida and Pingla) has its limitations upto sahasrasa (7th chakra / crown chakra).

It regulates the brain of every human being on this earth. But after being blessed with ‘Alive Holy Naam’, the Mind can’t disturb such soul on earth or anywhere in the planet. One who is blessed by true and real spiritual master, attains permanent salvation from these three lokas.

Types of Mind - (it has four different types)

- 1 When the Mind develops a desire, then it is known as Mann (Mind).**
- 2 When the Mind makes a decision regarding desire to be executed. Then Mind is being taken as / addressed as (Buddhi / Intellect).**
- 3 When the decision is passed finally by the intellect, then it is passed on to the Chitta (memory) to fulfil the decision made by the intellect.**

4 At the end, when physical body gets order from the (Mind) i.e. intellect to act, then action is known as (kriya-ahankar) to be executed. In this way every human being in this mortal world is busy to fulfil the never ending cycle of wishes, desires of the Mind.

The main tragedy is that we as soul surti, our own truself in this human body is its empowering (i.e giving energy of surti/nirti) to regulate the Mann (Mind) and the body (Maya) against one's own true self; which is in reality the root cause of Mind's entanglements, from birth to leaving the body for the next.

In this way the Mind has truly succeeds in making every individual soul to realise that “we are a physical body not as a soul”. In this way both Mind (Mann) and Body (Maya) have succeeded in befooling the soul which is so powerful and everlasting existence without the help of Soul Surti Mind (Mann) and Body (Maya) can't function in this mortal world without the aid of Soul Surti + Nirti (prana) which in reality is our true self well within each body.

Soul can't be created out of blood and semen or by any other worldly power, hence its soul is free of five elements of this perishable 3 loks (universe).

The soul (our own true-self) is immortal in nature and possesses all the same properties of Supreme Lord (Sat-purush / Parampurush / Sahib Ji) as it, itself is the segment of Supreme consciousness of Amarlok / Satlok / 4th lok far beyond the limits of Mann (Mind) and Maya (body).

“Supreme Lord / Satyapurush / Parampurush / Sahib ji” who dwells into the soul / our true self. His existence is beyond the approach / knowledge of all the caste / creed religions and religious scriptures of the world.

No one is your enemy in this world, except Mind (Mann) who resides with you all the time and works for past and future our present is Surti.

“Mind says :

**Mein sirjun mein marun mein jarun mein khaun,
Jal thal nabh mein rama rahun, mor Niranjan naun”**

I create, I destroy, I burn and I swallow, I reside in all the three place - water, land, sky, fire and sunn and I am known as Niranjana.

Mind regulates the body.....

Maya (body) put us into the endless cycle of birth and death on this planet.

Kabir Sahib says :

**“Jeev pada mann loot mein pyaro,
Taase kachu len na den re”**

The soul is entrapped in the bondage of karmas while it has no concern with any of the karma on the planet. It has nothing to gain or to lose in this perishable (mortal) world.

Dadu Dayal ji says :

**“Bahut jeev atke rahe, bin Satguru bhav mein,
Dadu naam Kabir bin, Chootey eko nahin”**

Countless jivas remained entangled in the worldly ocean of birth and death. None could find the way of liberation from the clutches of Mind and Maya. Without blessings and grace of ‘Alive Holy Naam’ possessed by three personalities on earth upto this time. (Try and find them out. I can’t tell to create confusion among masses.....’Vai Naam’).

Soul can only be liberated by ‘Sat-guru’ who possesses ‘Alive Holy Naam’ / Soundless sound word comes from Supreme consciousness of ‘Sat-purush’.

Mind-Body-Surti consciousness

Mind works at two levels, outer Mind..... the conscious Mind which represents only ten (10) percent of the brain's capacity and Chitt, the inner segment of Mind. The Chitt consists of conscious with the help of Surti consciousness and the unconscious Mind, which together represents 90% of the brain's capacity. Every thought good or bad creates subtle imprints on the hidden register of the Chitta, which continuously maintains the record of every thought, action and feeling of the individual being, it regulates our fate even after death. Our inner Mind

is the most sophisticated (S.C) Super Computer. Its hard drive contains an elaborate library of different files and folders having complex data and present life folder is quite in front of the inner chitt.

The self regulated mechanism of the eternal micro record of our deeds in a subtle form as mental inscriptions in its secret register. God / Kal Niranjana has entrusted this crucial responsibility to our inner Mind as divine judge who announces punishment and reward for our karmas 40% in the present and 60% for the next births.

Some persons may escape punishment by suppressing bad habits, ill effects and more to develop good qualities through outer mind, but one can't be redeemed of punishment from the unbiased higher judge of highest integrity, that is the projection of the absolute truth.

साहिब फिर कहते हैं :-

चकवी बिछुड़ी रणि की, आई मिली प्रभाति रे ।
जो जन बिछुड़े साहिब सूँ, ना सुख धूप ना छाहि रे ।
जा जन बिछुड़ा रैणि की, आई मिली प्रभाति रे ।
जो जन बिछुड़े साहिबन सूँ, सौ दिन मिले ना राति रे ।
सत्य लोक अमर है धामा प्यारो, तहवां पुरुष निःअक्षर नामा रे ।
तीन लोक हंस उड़ाना प्यारो, चौथे लोक हंस स्थाना रे ।
सुरति में रचयो संसारा, सुरति का यहां है खेल सारा रे ।
पल पल सुरति संभाल प्यारे, पल पल सुरति संभाल रे ।

---0---

सागर का जल खारा प्यारो, पीने योग्य मत जान रे ।
दूसरों को अपना जहल प्यारो, पहुंचा सकता मत जान रे ।

सूर्य के ताप से वाष्पकृत होकर प्यारो, बादलों के रूप में नीचे आता रे ।
खेती वृक्षों का काम है करता, शुद्ध बन कर प्यास बुझाता रे

—0—

WHO REGULATES US & HOW ?

Tolstoy...

The saddest part of our life lies not in the act of dying, but in failing to truly live while we are alive. Too many of us play small with our lives, never letting the fulness of our humanity see the light of day. I have learnt that what really counts in life in the end, is not how much land we have purchased or how much money we have accumulated, but how many of our talents we have liberated and used for the welfare of needy and resourceless, made to stand on their own legs and ready to do the same, as they have got from others in standing on their own legs. We have to add values to one we liberated, uplifted for the purpose of all needy and helpless in the society while having a hand of love and grace of true and real spiritual ‘Sat-guru’s blessings and love to propagate the same to others who need help and care from your side.

It took me fifty two years to discover this simple point of truth, love and wisdom extracted the real purpose for which we have been sent in this world. We have not only to live for ourselves but for others which is the crux of life on this planet. Get time enriching the lives of other people to greater extent towards a life long commitment to serve, your existence cannot help but explode one day into success in each undertaking, as Supreme consciousness is always with you when you are fully devoted to your true and real ‘Sat-guru’ of the time. ‘Sat-purush’ always all the time resides in true and real ‘Sat-guru’ of the time. Mind, body and consciousness, we are amalgam of main three most important segments :- (SURESH KHUNGA SUGGESTS)

The inner unit mind, being a direct and transparent witness to all physical and mental activities of a person, is fully aware off intensions, motives and circumstances of each and every action. In each human being there is Mind and consciousness both i.e. sinner and saint. The outer mind is fully in touch with the inner to guide and instruct the inner Mind. It is an act of devil, where as the inner Mind to concentrated Surti, is a representative of both, but depends on concentrated Surti and justice is made (decided) on the basis of motive and emotional impact of the deed after separating from the body which get amalgamated with five elements i.e. sunnh, air, light (fire), water and earth. The justice is decided on the basis of motive and emotional impact of the deed with intension after (death) separation of five elements of the body. The subtle imprints in the sub-conscious layers of Chitta form a blud print, which contains all the details of the next birth.

Sanchit karmas are collective actions of previous births. These remain in a dormant state, and do not bear fruit. But if a suitable stimulant is provided to them by strong repetition of similar deeds and actions with intension, these become active and form prarabdh karmas which invariably bear fruits. Although bad sanchit karmas destroyed by virtuous deeds, bad prarabdh karmas may never be neutralised – even by virtuous acts. God neither writes our destiny nor does He punish us, but at the same time he never allows us to move in the direction of true path of salvation / nirvana, because, he never wants to loose and soul which is in bondage and under his control.

Supreme Lord / Satyapurush / Sahib Ji is an ocean of love, truth and joy. He through true and real ‘Satyaguru’ of the time, gives us love, wisdom and strength to face obstacles posed by Kal Niranjan / God. When any Soul Surti surrenders himself to real and true ‘Satyaguru’ of the time, he becomes free from worries, defects, punishment of any nature says the Bhagwat Gita. If we are born poor, it is not our fault, but if depart poor, that is our fault. We can change bad Sanchit Karmas to Good Karmas and stop them from converting into destiny by doing virtuous actions in our day to day life. Therefore, our self efforts eventually become our destiny.

Life is 10 percent about what had happened and 90% about how we deal with it – by learning from our past mistakes. Always make the best use of the present, without carrying for the past and future. . We should welcome sufferings as a golden chance to eliminate our bad habits and weaknesses. We should take strength and wisdom from the blessing of true and real ‘Sat-guru’ of the time and should act as per ‘his’ directions. This will make your life happy and prosperous where ever it takes you, provided you are true to yourself and to your ‘Satguru’. (Inner transformation needs Inner governance by Arijit Ray) + ‘Vai Naam Ji’.

Kath-opanishad :- says (UNITY IN DIVERSITY). The rain falling on the hill divides itself and flows down the hill sides in many torrents. The ignorant man sees manifoldness in beings, if water is poured into water, it becomes one and the same with it. Thus it is with the self of the man of understanding who sees unity in many foldness.

The goal of every person should be to become a great human being. But that is not the goal that drives us. Our lives are mostly guided by the motive force of achieving fame and fortune. This desire for achievement compels us to to pursue all that is outside of ourselves, thinking it will impart a sense of fulfilment. But it often results in making us feet unfulfilled. We understand that there is something deeper that

needs to be discovered, but do not have the patience will, devotion, sincerity to pursue it through Surti consciousness. And yet again we throw ourselves into the clutches of mind to have birth, little knowing the loss we attained through its futility ignoring the true purpose of coming in this planet. Swami Vivekananda says, the majority of us cannot see beyond a few years, just as animals cannot see beyond a few steps, just a little narrow circle, which is our world. We have totally forgotten what we are, whose segments we are and what was the basic reason of our coming into this world in which bondage or total liberation can be attained simply by following the path of true spiritualism or to be of Mind to put ourselves in life and death cycle which leads to bondage.

This journey will start when there is clarity that chasing happiness , love and joy outside is like chasing a mirage. Second possibility is the conviction in the pursuit of the highest ideal of realising our spiritual potential of Surti consciousness through ‘Alive Holy Naam’, bodyless Surti consciousness of Supreme consciousness through true and real ‘Sat-guru’ of the time who has been blessed with ‘Alive Holy Naam’ from Supreme consciousness of ‘Amarlok / Satlok; our real abode from where we have come on this planet to play, dance, be true to every segment on this planet to depart back with Supreme consciousness i.e. Soundless sound word / Alive Holy Naam. Always follow ‘Surti Yog’ which is ‘Vai Naam’s ideology of Sant Mat says, always remain concentrated on to ‘Sat-guru’ of the time because a true living ‘Sat-guru’ is the only true of true spiritual powers which itself are the powers of Sahib, Satpurush i.e. Supreme power of Amarlok / Satyalok from where we all Hansas have come in these three loks to play, love, feel the feelings and lead a compact life as Hansas i.e. Soul Surti, true segment of / Supreme consciousness, without amalgamation of Mind. Connection with true and real ‘Sat-guru’ is must to attain the true spiritual powers of a Soul / Concentration, which are already present in our Soul Surti / concentration with the help of which, we will be able to see every single activity of the Mind like, intellect, memory and action within the physical body, to rule over Mind in easy and true manner on this planet. All evil properties which are formless in nature and resides in Mind i.e. Attachment with the family, greed as a wish, anger, sex, ego etc. are the acts of Mind and Surti has nothing to do with them. Where the Surti goes, prans (nirti) will follow suit and gets completely merged into it at the time of leaving the body for the next birth.

**“Sat-guru bin Surti shuddh na ho pyaro,
Kotin bhaanti karey jo koi rey”**

Kabir Sahib says that without the blessings of a true ‘Sat-guru’ Surti can’t be purified from the effect of Mind and Maya.

“Sat-guru milney se sab jhagda khatam ho gaya”

In this way all search regarding to the true self (soul-realization) and Supreme Lord comes to an end. When a true living ‘Sat-guru’ of the time comes in your life and bless you with a true and real ‘Alive Holy Naam’ /Sajeevan Naam.

**“Sab ki gathri lal hai pyaro,
Koi nahin kangaal rey”**

Every single human being on this earth is full of miraculous powers, and there is no differentiation of any between a rich and a poor person on this planet.

“Surti Kamal ‘Sat-guru’ ka vaasa jaan re”

8th chakra is immortal above of a ‘Sat-guru’. It has been cleared by Kabir Sahib Ji and ‘Sat-guru Vai Naam Ji’ of the time. My ‘Sat-guru’ of the time (SATYA SAHIB BANDGI).

Mother Teresa, a great spiritual personality of human hearts if ever there was one, said it best, “There are no great acts, only small acts done with true love”. one has to learn from these great personalities to elivate Soul Surti. These acts are not the outcome of Mind, but of Surti consciousness. Moreover, Mind is not a part of our consciousness, the Mind thinks, feels, wishes, desires. One who lives a sleep is un hold and always remains in Mind. Everything of his depends purely on Mind and body. So long he lives in dream state is called non-religious. Such persons always remain in confused state i.e. what to do and what not to do. It is not easy to live with your own self because only a person who is a true disciple of true ‘Sat-guru’ of the time has attained this stage of Surti consciousness and has reached the highest inner, truth, love and joy can live within himself. Those who simply meditate without soundless sound word, always want to live with somebody as a source of

consolation. The power to take decisions, make resolutions and penetrate within for solution is purely on the basis of our consciousness. Our senses get drawn towards material object i.e. world outside us, due to the impact to internal and external Mind. In fact, all our activities physical, mental, intellectual and psychological are working under the control of Mind, if we are not blessed with ‘Alive Holy Naam’, from true and real ‘Sat-guru of the time, who has been blessed ‘Alive Holy Naam’ from Supreme consciousness / Satpurush / Sahib Ji of Amarlok i.e. 4th lok.

काव्य 17

सुरति में रचयो संसारा, सुरति का है खेल यह सारा ।
पल पल सुरति संभाल प्यारे, तांहि से होता कोई पार रे ।
आत्मां का वास आज्ञा चक्र में प्यारो, सात सुरति से कछु ना न्यारा रे ।
प्रथम सुरति आनंद प्यारो, दूजी मूल सुरति जान रे ।
आत्मां बिन आंखें देखती प्यारो, बिन टांगें चलती जान रे ।
ब्रह्मण्ड में सैल जब करते प्यारो, मूल सुरति देती साथ रे ।
मूल सुरति ही रानी सुरति प्यारो, तन को चेतन करती जान रे ।
तीजी चमक सुरति प्यारो, पूरे तन क्रियाशील करती जान रे ।
चौथी शून्य सुरति प्यारो, इससे खामोशी छा जाती जान रे ।
पांचवी निश्चय सुरति प्यारो, अशुभ से शुभ की ओर ले जाती रे ।
छठी सुरति ठांव-ठांव रस चाखो प्यारो, स्वभाव का अनुभव कराती रे ।
सभी ईंद्रियों को चेतन रखती प्यारो, बुद्धि चित्त भी चेतन कराती रे ।
सप्तम सुरति हृदय के मांहि प्यारो, हृदय से कछु न्यारा नांहि रे ।
सात सुरति से तन में प्यारो, सभी कार्य होते जान रे ।
अंदर से सत्यगुरु दयाल तो प्यारो, सब का संग वैसा जान रे ।
साधक का क्या कहूं प्यारो, हित अनहित पशु पक्षि जानत रे ।

..0..

**“Paanch mann hain brahm swaroopa,
Ta ke aagey Sahib, Satpurush anoopa”**

“Vai Naam Surti Dhara”

“Nijdham Ke Santon Ko Samarpit”

‘Kabir Sahib’ says that all the five words :

**1...Jyoti Niranjana, 2...Onkaar, 3...Sohang,
4...Rarankaar, 5..Satt.**

Kabir Sahib Ji :-

**“Sat-guru bin baat bane na koi,
kotin karam kare jo koi”
“Sat-guru milne se pyaro,
jhagda khatam ho gya”**

With the help of these five words, the whole universe / 3 loks has been created. These five hold the power and appearance of creator called by the name (Brahm). There is an other word which is ‘Holy Naam’ has unique property, i.e. ‘Immortal’ and possesses Supreme power to liberate all the Hansa / Souls from the clutches / entanglement of Mind and body. This Supreme ‘Holy Naam’ is immortal and possesses the power of Supreme consciousness to liberate all the souls who are in bondage and clutches of Mind and body. This Supreme power / Supreme Holy Naam is not to be found in any religion in this universe except true and real ‘Sat-guru’ of the time being blessed this ‘Holy Naam’ from Supreme consciousness i.e. Sahib Ji / Sat-purush Ji of Amarlok, from where we all Hansas have come on this planet and are in bondage of Kaal Niranjana (Mind) who entangled each soul in the philosophy of karmas.

When true ‘Sat-guru’ comes in your life and bless you with a true ‘Alive Holy Naam’ (sajeevan naam). You are bound to be liberated from the clutches of Kal Niranjana i.e. of these three mortal loks.

Chanakya Niti says : one should not be anguished about the past, and must avoid any thought of the future. Those who are blessed with ‘Alive Holy Naam’ / Soundless Sound Word / Sanjeevan Naam i.e. life giving Naam to Surti and not to the Mind.

Osho says existence knows only one tense i.e. the present. It neither knows the past, because it is no more, nor does it know the future, because it is not yet. But the Mind is always concerned either

with the past or the future, never with the present. Existence is only in the present. The Mind (Kal Niranjana) is never in the present. In fact, the moment you are in the present, there is no mind, instead, there is only a great silence. The whole Soul Surti in your inner being is free from the impact of Mind and Maya. Inner being need ‘Alive Holy Naam’ of true ‘Sat-guru Vai Naam Ji’ of the time who possessed concentrated Surti after establishing link with Supreme consciousness by visiting Amarlok with the help of Surti and Nirti, establishing Hansa roop in Surti Kamal one plus one fourth hands above in eleventh chakra, which is abode of ‘Sat-guru’, where Supreme conscious Himself comes to provide light of sixteen suns to Hansa to take ‘Him’ to Amarlok / Satlok the true abode of all Hansas along with Supreme conscious ahead of Hansa Surti to reach, Amarlok from where all Soul Surti’s has come on this planet under the supervision of Kal Niranjana.

Supreme power, Sat-purush knows only one tense i.e. present. He doesn’t know the past, because it has nothing to do with Surti consciousness, it is only related with Mind which exists only in these three lokas. It has no existence where time ceases to exist, which is Amarlok / Satlok where Sahib ji Sat-purush / Parampurush reside. Amarpur itself is Sat-purush and who so ever attains permanent salvation on this earth reaches there where there is no birth and death of any body. Even on earth there is birth but no death as every element of the body after death get amalgamated in its real material i.e. sunn matter mix with sunn material, air in air, light in light, water in water and earth in earth. Thus there is no death of any body in any planet. It is purely trans-migration of soul which doesn’t attain permanent salvation, by being bestowed ‘Alive Holy Naam’ from true and real ‘Sat-guru’ of the time, who has been bestowed ‘Alive Holy Naam’ from true and real ‘Sat-guru’ of the time who visits Amarlok during his life period to Satlok / Amarpur along with Supreme consciousness. It is up to Supreme consciousness to keep param Hansa in Amarlok or to be sent back on this planet to liberate the souls from the clutches of Kal Niranjana of these three lokas which is all false. At present ‘Sat-guru Vai Naam’ has been sent back on this planet to liberate the souls from the clutches of Kal Niranjana.

जब साधक दृढ़ता विश्वास में प्यारो, सतगुरु पल में भव पार कराता रे।
सुरति का सतगुरु में समाने से प्यारो, दोनों की सुरति इक हो पार होती रे।

पल पल सुरति डौरी प्यारो, प्राणों की रक्षा करती जान रे।
सतगुरु का पाना ही सब पाना जान रे।

SERVE SATGURU TO HAVE BLESSINGS TO SERVE PEOPLE

**“Through Surti Satyapurush of Supreme
conscious ko jaansi, Tis ka ‘Satguru’ Naam”.**

Kabir Sahib, ‘Vai Naam Ji’s ideology of Sant Mat clearly makes clear that one has to understand the basic difference between guru and ‘Sat-guru’. They both are not one and the same thing. Permanent Salvation (Maha Nirvana) i.e. complete freedom from life and death cycle is in the hands of ‘Sat-guru’ only such a devotee will succeed in attaining true purpose of reaching back (SATYALOK / AMARLOK) i.e. 4th lok. One who serves guru, who are countless, will reach at the most heaven. He only show the path of Sargun and Nirgun modes of worship.

This type of worship will not serve the true purpose. Mind is your enemy, who resides in and out all the times.

He makes clear to all of you :-

“I create, I destroy, I burn and I swallow, I reside in all the five places : Earth, Water, Fire, Air and Sky (Sunnh), my name is god (Niranjan). In the same way he has given us body which is made of five elements i.e. Earth, Water, Fire, Air and Sky is impure in nature. Our body is made up of five elements, which all are perishable in nature. Our body and nature are exactly the same and the whole universe is present inside every human body.

When what so ever you do, remember ‘Sat-guru’ in Surti consciousness and not with Mind. ‘Sat-guru’ is not a body, but concentrated Surti with ‘Alive Holy Naam’ from Supreme consciousness His Surti travels thousands of time faster than Sun light. You will always find ‘him’ in you like Supreme consciousness when you possess ‘Alive Holy Naam’ of Supreme consciousness through ‘Sat-guru Vai Naam Ji’ of the time. Evil spirit can’t disturb any way to true disciple who possesses ‘Alive Holy Naam’ in which Supreme consciousness resides all the times. Every one of us possesses six bodies, which can be used for different purposes. If you want to increase your Surti concentration you have to cross these bodies one by one. One can cross four bodies with the help

of Guru, but not all the six bodies. When one gets ‘Alive Holy Naam’ from ‘Sat-guru’ of the time, one can cross all the six bodies and can go back to Amarlok of Surpeme consciousness to have permanent salvation. I’ll talk in detail about these six bodies later on at appropriate time to make you aware of para bhakti of Supreme consciousness. (Satpurush / Sahib Ji) of 4th lok i.e. Amarlok.

**“Tera bairi mann bin ek ni pyara,
Satguru se ley jaan rey”**

It makes us to dance as per his instructions on this earth. Death is fear of Mind which always disturb our inner peace all the times.

At the time of meditation, your attention gets deviated by the impact of Mind. The mind diverts one’s attention and engages towards worldly activities as per your desire and attention. This desire too is the outcome of Mind and none else. It always takes you back to past to understand your good and bad deeds, which have nothing to do with the present which is us { i.e. Soul Surti = Surti + Nirati (prana)}. Surti consciousness always try to keep us in the present moments which is true essence of Supreme consciousness in this universe. This stage comes when one possesses ‘Alive Holy Naam’ from true and real ‘Sat-guru’ of the time who has visited Amarlok / Satlok with Supreme conscious with light of sixteen suns to attain speed and concentration of Supreme being to accompany his highness.

This world is no way less than a dream. Our planning of achieving anything in the form of material, position are dreams of Sheikh Chilli. This unrealistic planning doesn’t pay in the field of spiritualism. Mind is no way a friend of us, it always befools us in these three loks.

**“Jeev ke sang Mann kaal pyaro,
bin Sar Surti Naam Nar jaanat nahin rey”**

Mind makes us to dance to its tune in every minute. None without the blessings of true and real ‘Sat-guru’ can attain salvation, Nirvana in these three loks of Kal Niranjan. The degree of control on Mind can make one spiritually elevated in this Satya bhakti marg.

(The interior of all things in this universe is one and only one). Non

duality means ‘not two’ or, more. In simple terms, it means that there is only one same nature of {(Surti + Nirati) = Hansa }. Hansa is a segment of Supreme consciousness of same properties. It’s the most precise description of that mysterious singularity. The term ‘one’ provide space for the possibility of an other. But in the singularity of Soul Surti consciousness, there is only one consciousness in all the four loks i.e. Amarlok + Three loks of Kal Niranjan, are one segment, so soul Surti of Supreme consciousness is also one segment, present in all soul Surti Hansas with same qualities and dimensions. In the singularity of consciousness, there is no other. It is ‘one without a second’ consciousness is that one which is never two non duality actually means ?

It means that your experience of your concentration i.e. deepest self and Supreme deepest self and any other awakened (concentration) i.e. deepest self beings experience of his deepest concentrated surti consciousness is one. It is one and the same self (i.e. Supreme consciousness). The journey of souls from Amarlok to these three loks and journey from these three loks to back ‘Satlok’ (Amarlok). It is one and the same self. The journey back to before the beginning is a journey from the many to the one. This is called mystical paradox. That there seems to be many but there is infact ought to be one, but param Hansa’s to have their own individuality in Satlok.

Many in one, One in Many

**“Amarlok se utrey Sahib ‘Satguru Vai Naam’,
Sewak chola “Vai Naam Ka”, Le uthey Sant Vai Naam”**

काव्य 18

मेरी अरज़ी को मान कर, तेरी मरज़ी से पाया महान् चेतन सुरति का दान रे।
साहिबन बिन नहीं कोई अपना प्यारो, कच्चा जीव पार ना पाई रे।
संत सच्चे परमार्थी, चेतन सुरति शीतन इन के अंग रे।
चेतना जगाएँ औरन की, दे दे चेतन सुरति का रंग रे।
सतगुरु का प्यारा साधक प्यारो, नाम भजन अधिकारी रे।
सोई सुंदर पिया को बरत प्यारो, आज्ञाकारी भव पार हो जाई रे।
कहैं कबीर सुरति से प्यारो, गहो ‘वे नाम सब्द’ टकसार रे।

..0..

‘Vai Naam ji’ is addressing every Soul Surti that the body in which you are residing does not belong to Supreme Soul, but is a cage which in the real sense belongs to Mind (Mann) Surti-Dhyaan / concentration is a soul Surti – which can be easily experienced into human body as self, but at the same time found in all living creatures on this planet. It is a segment of Supreme conscious with same characteristics as of Supreme Soul / Satpurush / Sahib Ji of Amarlok / Satlok of fourth lok, from where all Hansas have come on this earth in this universe of three loks. Soul Surti (Surti).

Homayu Taba has given me a pearl to my Surti. Through this article, which infused me to learn and add. There seem to exist five kinds of voices – one we speak with, second when we think or ruminate, third one when we write. Find, discover and come to the conclusion that every voice poses a challenge in the whole world. No two voices are alike in nature. An echo is the return of a voice which is added up from four corners then echo is enhanced which vibrates all around to multiply sound.

Silence is its absence, which is very important for human beings to learn and practise well within you to communicate in and out at will. A voice can be gentle, stern, melodic, piercing, lilting (rise and fall). It can convey the sugariness of flattery, intensity of passion, tenderness of seduction, coldness of reason, the disheartening tone of fatalism or a critical voice of judgement. Voice is power, the marginallised have no voice, they are pushed to the corner and sometimes, they become voice of Supreme consciousness to liberate masses from the clutches of ‘Kal Niranjan’ (god of three loks).

Therefore, the inner silent voice and outer vocal voice of justice reaches to help introvert and extrovert both political and spiritual leaders voice become the voice of masses become voice of justice and spiritual upliftment. This is possible when people come forward and speak in one voice against injustice and those who spread hatred to divide masses in one way or the other to make them useless. Democracy at its core implies diversity of voices . All spiritual traditions know the significance of the sound of the voice – prayer together recitations of holy songs sung in praise of Supreme consciousness. The acoustic energy of a voice can lift us with warmth of enthusiasm or dampen our spirits.

VOICE A UNIQUE GIFT TO USE WELL IN TIME

Mantra repetitions and the Azan call to prayer, words or mantras become alive when infused with voice. Silence is its absence, though this can still communicate a lot. Silence is the real prayer towards god of these three loks, through Mind can be communicate saints, sidh, sadhs, rishi, munis etc. A voice can be gentle, stern, melodic, piercing, lilting etc. It can convey the sugariness of flattery, intensity of passion, tenderness of seduction, coldness of reason, the disheartening tone of fatalism, or a critical voice of judgement.

Voice is power, but silence prayer is only prayer recited in Surti towards Supreme consciousness of Supreme Soul of Satpurush / Sahib Ji of 4th lok i.e. Amarlok from where we all souls have come on this planet to attain the same state to go back to real abode i.e. Amarlok of Supreme consciousness, by possessing soundless sound surti through ‘Alive Holy Naam’ bestowed to true and real ‘Sat-guru’ of the time by Supreme consciousness. This prayer is the only prayer of Surti and Nirti (prana) which reaches to Amarlok to awaken Supreme conscious to take us to our true abode – Amarlok / Satlok of Supreme consciousness. This soundless sound prayer takes us to our real abode i.e. Amarlok from where we all have come on this planet to let go Mind and Maya to attain permanent salvation on this planet through true and real ‘Sat-guru’ of the time.

—0—

CAUSE OF FEAR

The more we move outwards, the more fear is there in us due to thoughts about what might happen in the future. Past thoughts lead us to future fear i.e. what might happen in this regard in future. But in this present moment in which Surti consciousness works, fear is no where to be seen or felt. It is a quality of Mind which always thinks of loss or gain which always takes us out of Surti consciousness i.e. out of present moment. We as human beings can’t face or tolerate losses in our life, as we have become habitual by the effect of Mind to always think of gain, gain and no loss, which is quite impossible in these three loks where Mind is Supreme. Loss or gain depends upon the seed that you have sown in our surti consciousness.

Most of us receive messages on ethics, moral values and good conducts on a daily basis on social media platforms, but no

transformation is taking place. This clearly shows that there is some thing wrong is going on within us which is not allowing for transformation within us . Every one wants to become better human being but some how that does not seem to be happening.

Does it mean that all sort of messages instructions are not serving any purpose in human beings in particular and society in general. Here we need to understand that seeds kept in isolated places will become dead within a period of six months, so we need to understand that these are only seeds and not a fruit to eat. These seeds need to grow in the fertile soil to get the desired fruit.

An educated person very frustrated in life dreamt that night and found his grand father standing before him, what do you want from god the grandson cleared his position that he has cleared M A in English and is idle for the last three years, moving from pillar to post for a job. The grand father suggested him to do some creative work along with other educated persons to get established in life. “Every thing your heart desires can’t be fulfilled in the present circumstances. Secondly you want peace of mind, love, happiness, wisdom, job, honour, position and freedom from all sort of fear”.

Next day again his grand father came in his dream and said, “God doesn’t sell fruits anywhere in this universe, but only seeds. You must be well aware that if the seed sprouts, grow, become a tree or a shrub, only then does it bear fruit which you want in your life to lead a pleasant life in this universe, where seeds and only seeds are available.

Two factors that come into play after we have obtained the seeds to become better human beings are (1) make a search of true and real ‘Sat-guru’ on this planet and get a real seed of permanent salvation on this planet. Then awaken your Surti consciousness with that ‘Alive Holy Naam’ i.e. soundless sound word which can’t be spoken with mouth ; it can’t be written in any form, can’t be given to any body. It can only be put in Surti and breath to open your Sushmna to move towards Surti Kamal i.e. one plus one fourth hands above Saehstrasaar to be one with Supreme consciousness. Here ends the dream.

आप की हिंसा मन तक ही नहीं प्यारो, अंदर गहरे दांतों नाखुनों में गई जान रे।
पशुओं की हिंसा प्यारो, दांतों और नाखुनों से जान रे।

FROM SEED

Last and the most important and useful thing in the journey to obtain the fruit (Nirvana) from seed (concentrated surti with ‘Alive Holy Naam’) is concentration on ‘Alive Holy Naam’ (abhyaas) in Surti i.e. a spiritual practice to be formed regularly with due guidance of ‘Sat-guru’ for a long period, morning and evening with a sense of discipline, untill goal of permanent salvation is attained in this birth as a desired fruit. Importance of regular practice of concentration on ‘Alive Holy Naam’ is a must to be one with Supreme consciousness as Hansatma of Amarlok / Satlok of Satpurush Ji. To attain this stage is to be known as permanent salvation i.e. free from birth and death amalgamation with five elements i.e. Sunnh, Air, Fire, Water and Earth. Then Messangers, from unknown skies, great your Surti is concentrated within and the breath give an outlet to concentrated Surti all around you. We wait and watch these Surti consciousness moments with inner eyes without the impact of Mind on Surti consciousness loaded with Supreme consciousness / Satpurush / Sahib Ji of Amarlok / Satlok. I know not why in this moment my Surti consciousness is absorbing and bathing with feeling of tremendous joy passing through my Surti consciousness. It appears to me as if time were come to wind up my work and I feel within my Surti consciousness a faint of Sahib’s sweet mahachetan Surti has covered me from all direction as a celebration on earth and Amarlok at the same moment and time.

Concentrated Surti is maker of our character. Shadow chases light. Just and concentrated Surti chases Surti of human beings to concentrate of messengers, with concentrated Surti come from Amarlok / Satlok to greet me with true love and joy to enhance my concentrated Surti. This sort of moment arrives when one achieve which is unknown to general masses on this planet. This is the only planet in the whole of universe where from elevated souls move to their true home i.e. Amarlok / Satlok after being blessed with ‘Alive Holy Naam’ from true and real ‘Sat-guru’ of the time to attain permanent salvation on this planet and to be with Supreme consciousness in Amarlok, where all param Hansas have gone, like Kabir Sahib, Baba Nanak Ji, Ravi Das Ji, Mira Ji, Osho Ji and ‘Sat-guru Vai Naam’ visited Amarlok so many times, but sent back on this earth to elevate the Souls on this planet to enable general souls to attain that stage and be with Supreme consciousness in Amarlok / Satlok / Sahib’s lok i.e. from where we all have come on this planet to play and go back to our real abode i.e. Satlok.

Days come and ages pass, very few try to follow true and real

religious path to attain permanent salvation on this planet. Human being satisfied with the prevailing situations on the planet but not ready to go back to real abode, Amarlok / Begampur / Satlok our true abode. To access truth regarding Soul Surti, we have to penetrate within and interiorise our awareness. As the orientation of Soul Surti changes, our life begins to expand, grow and develop. We peel away the six coverings one by one from outside with ‘Alive Holy Naam’ from ‘Sat-purush/Supreme consciousness.

You are Soul Surati and nothing else. The most important thing we have to do on this planet is the art of conscious self finding i.e. we must know ourselves. This is destiny in itself. Every thing regarding, Soul Surti, consciousness concentration, ‘Alive Holy Naam’, soundless sound word, which can neither written, spoken but conveyed in Surti to Surti to concentrate Surti and move ahead. To get amalgamated or infused in concentrated Surti, we need ‘Alive Holy Naam’ from true and real ‘Sat-guru’ of the time to get permanent Nirvana from this planet to Amarlok i.e. our real abode of Supreme consciousness.

—0—

WHO IS TRUE SATGURU ?

“Satyapurush ko jaansi, tiska Satguru naam”

One who has the true realisation of Supreme Lord is to be known as ‘Sat-guru’. It can’t be found in any religion, religious scripture / manuscript before the advent of Sant Matt. It is only Kabir Sahib who gave the name ‘Sat-guru’ to the real holy saints who got blessed with ‘Alive Holy Naam’ from Supreme consciousness / Sahib Ji / Satpurush. Kabir Sahib gave and explained all the seven special features of a perfect spiritual master / real ‘Sat-guru’ which helps the devotees / disciples / saddaks to be one with Supreme consciousness. These seven special features go a long way to help disciples to have blessing of true and real ‘Sat-guru’ of the time.

The Seven special features are as under :

- | | |
|--------------|----------------|
| (a) Nirvasna | (b) Nirbandhan |
| © Nirlobhi | (d) Saargrahi |
| (e) Ekroop | (f) Sarvagyi |

i.e

- (a) Free from sex.
- (b) Always in awakened state.
- (c) No special attachment with any person, place or thing.
- (d) Selection for successor on the basis internal progress.
- (e) Free from worldly bondages and from wealth of saadaks
- (f) One can change to true spiritualism i.e. supreme consciousness.

काव्य 19

अजर अमर इक नाम प्यारो, सुरति सुमिरन में जो आवे रे।
सुरति से जाप प्यारो, नहीं जीभ मन लागो रे।
जमीं आस्मान तहां ना प्यारो, वह लोक अमरपुर जान रे।
कर सुरति नैनों दीदार महल में प्यारा,
हर ओर उसी की जोत जगमग जान रे।
स्वांस सुरति से काम है प्यारो, सुरत कमल से डारी जान रे।
सार—नाम सुरति से प्यारो, कानों में सतगुरु नाम विदेह उच्चार रे।
गगन मंडल बिन उर्दमुख प्यारो, अमृत जल साधु भर—भर पिया रे।
निगुरे मुख से जाप करते प्यारो, मन से साधु जान रे।
सुरति से संत भव पार प्यारो, सत्यपुरुष आप ही संग—संग जान रे।
दर्शन दीजे नाम से नहीं प्यारो, तुम बिन पार ना एक रे।
निःसब्द में सुरति ऐसे बसे प्यारो, जैसे जल में मीना रे।
परमार्थ में देत सिर प्यारो, कछु विलंभ ना कीना रे।
मानत नहीं सुरति दास की प्यारो, सच्चे घर सतगुरु संग जान रे।
बार—बार दास भेद है देता प्यारो, जग में जीना कैसा बिन नामे रे।
बिन सतगुरु भक्ति कुछ काम ना आवै प्यारो, कौटि करो जे फेरा रे।

—0—

What else is there to think about and analyse the situation of Soul Surti which has nothing to do with ups and downs of Mind and Maya.

These are purely clothes of Soul Surti which has nothing to think about good and bad high or low, up and down, happiness and sadness; but at the same time it collaborates with Mind and rush to act Mind's call of any nature. All acceptance with no refusal; give full cooperation with

dedication to act as per directions of Mind and Maya. Thus Soul Surti which requires nothing from Mind, but at the same time follows head down; all the dictates of unit Mind within and cosmic Mind in all these three loks under such like circumstances Mind is at the upper hand and acts as a dictator in the whole universe; till the Surti consciousness is in the dark and carry on all the directions and order of unit as well as of cosmic Mind to accept the superiority of unit Mind and cosmic Mind with folded hands. What else is there for the Surti consciousness to penetrate within to realise its true place in the cosmos.

“Satguru milne se jhagda khatam ho gaya”

(When a true living ‘Sat-guru’ comes in your life and get you blessed with true, real ‘Alive Holy Naam’).

The ship of my Mind and body may be sailing on calm, composed and amiable seas, stormy or sunny days, glorious or lonely night. One has to maintain an attitude of gratitude and thankfulness to Supreme consciousness which has nothing to do with Mind and Maya, but to uplift Soul Surti of segments who have fallen in the clutches of Kal Niranjana of these three perishable loks of sunnha.

“Har jeev pada bahu loot mein pyaro, Mann se kachhu lein na dein rey”

Mind has entrapped Soul Surti in the net of karmas. Where as Surti Soul has nothing to do with karmas. Soul Surti has no concern at all with any of the karma. It has nothing to gain or to lose in this mortal world.

A saint who possesses ‘Alive Holy Naam’, being blessed by Supreme consciousness, is called true and real ‘Sat-guru’ on this planet. A true saint rules over Mind in all respects. The Mind completely surrender himself before that power. In this way ‘Sat-guru’ controls all the evil segments of Mind. Such as sex, anger, greed, attachment, ego and all the senses that are working in the body, and follow all the instructions developed in chetan Surti concentration. He thinks for the welfare of all the disturbed souls who are entrapped in the endless cycle of coming and going as birth - death process (cycle). This all is the work and creation of Kal Niranjana (God / Mind) of universe.

Mind / God who is the ruling power of the universe has one and only one most important duty to perform is, never allows any individual human being to realise his own true self (Surti consciousness / Soul). He also wants that no one should think of self realisation and permanent liberation / salvation, so that none could attain permanent salvation from the endless cycle of birth & death.

It is because of this, ‘Mind’ never sleeps for a second. Secondly ‘He’ never allows or want any being into this world to worship a true perfect spiritual ‘Sat-guru’ (master) because only a true perfect spiritual ‘Sat-guru / Master’ can liberate the souls from the bondage of Mind / Kal Niranjan. Spiritual master has complete control over Mind and (Maya) body.

**“Paras mein aur santan mein,
Tu bado hi antro jaan rey,
Veh loha kanchan karey,
‘Sat-guru’ kare aap samaan re”**

There is a lot of difference between a paras (a touch stone) and a sant (saint). Paras with its single touch can easily transform an iron into gold, but not into paras.

While, a true ‘Sat-guru’ (saint) transforms a human being alike Himself with the help of Supreme Surti of consciousness of Supreme soul, he posses, known as true ‘Alive Holy Naam’, given by Supreme consciousness to ‘Sat-guru’ establishment on these three loks to awaken them from deep slumber.

Through ‘Sat-guru’ of the time, Supreme Lord can be easily realised by the masses to uplift their Soul Surti and get permanent salvation on this planet. A true sant (saint) himself is a true, real, perfect spiritual master (Sat-guru) who has the true self realisation of

“Sat-purush / Supreme Lord / Sahib Ji of Amarlok / Satlok / 4th lok / real and true abode of Supreme consciousness.

Money is power. It can purchase 99.9% on this planet, as 99.9% are one way or the other running after money in form of cash or kind / place to lead a luxurious life either on this planet or in. Heaven (i.e. seven heavens), Ancestrals lok, dev loks etc, have different coins, ways, but they too are linked with things, way of living, moving, demanding from,

who are at their back and call to fulfil their demands within no time. There are difference in all these loks and they are made according to the level of worship they have performed on this planet earth. All the places have been provided according to their way of worship to whom, in what capacity, his strength of disciples, hence of sacrifice level of spiritual awakening etc. They call it their virtue. By virtue one can be in first heaven and an other in 7th heaven. They call it their virtue. By virtue one can be in first heaven and an other in 7th heaven. The degree and level of spiritual power are fully judged by the secret report chit which a person depart carry with him. All these things refer to money power and spiritual power to have re-birth or place in various places, as per your karmas performed on this planet earth. The whole universe thinks, does, live as per his power of wealth regarding karmas and spiritual power attained / gained on this planet earth. That's why you can go on accumulating money and money only in the form of cash or kind.

Mind in every one has a pan without bottom, so it can't be filled with any thing, in any time in any place, except one who let go Mind and starts living, doing, worshiping without any wish, desire or demand and possessing 'Alive Holy Naam' i.e. soundless sound word, which can't be read out, can't be spoken, can't be written, can't be spoken in Surti without 'Alive Holy Naam' of Supreme consciousness.

Deep down in Surti; these people without 'Alive Holy Naam', they are empty. They want to stuff that empty-ness with something of Mind, which is in no way going to help them in spiritual upliftment. It may be regarding, money, power, prestige, character, virtue, respectability, but without 'Alive Holy Naam' i.e. Sar-Sabad, Surti Sabad, soul can't be uplifted to attain permanent salvation on this planet. This 'Alive Holy Naam' can be blessed to any Soul Surti which is ready to attain permanent salvation from this planet.

Rest all in this universe keep you busy in good for nothing, work, things, thoughts to keep empty and empty. Those who try stuff it, too remain empty, frustrated, of Mind, for Mind, by Mind. They go on collecting dumping garbage; their whole life become fruitless and futile very few of other kind, very precious elevated souls being blessed by 'Alive Holy Naam' from true and real 'Sat-guru Vai Naam' Ji try to look into their inner empty-ness, without and wish or desire penetrate within to open up their Ida and Pingla nerves to concentrate them with 'Alive Holy Naam' become true meditators power to concentrate Sushmna to make Surti to move upwards without falling into the naval base will serve the purpose.

Surti concentration, meditation with ‘Alive Holy Naam’ in Surti seas the emptiness, well coming it, para stage is attained without Mind i.e. without any trace of Mind with no desire to disturb consciousness of ‘Surti and moving towards Sushmna nerve without any break or pause the concentration moves up and up while crossing Aghya chakra with due cooperation of ‘Sat-guru’ reach to Surti Kamal to put your elevated / concentrated on the lotus feet of Supreme Soul in the guise of ‘Sat-guru’ one plus one fourth hands above Agya Chakra to attain light of sixteen suns from Supreme consciousness to accelerate the speed of Surti to move behind Supreme consciousness to Amarlok our real abode / home to be of Supreme consciousness.

Sushmna nerve separates Mind well before reaching Aghya chakra where ‘Sat-guru’ put one in his mouth to take it out while keeping foot of Surti on crown chakra. ‘Sat-guru’ is the only authority in these three loks who can do this act.

One should always maintain an attitude of gratitude towards ‘Sat-guru’ of the time. If one insists on being passimistik ; there is always tomorrow and yesterday. It is only today, this moment one can be blessed by ‘Alive Holy Naam’ from true and real ‘Sat-guru’ to be permanently in the present moment which of soul surti segment of supreme consciousness; which will always keep you in the present moment Osho Ji says that the whole world is thinking in terms of profit, money and power. Those who think in terms of power, politics are thinking in terms of money, because money is nothing but a symbol for power. That is why one goes on accumulating more and more money.

But the desire never leaves you to have still more – because the thirst for power knows no limit or end. 99.9% people are thirsty for power because deep down they are empty. They want to stuff that emptiness with something – it may be money power, prestige, respectability, character, virtue, anything will do.

There are only two types of people in the world, the first are in majority who are inclined towards Mind to greater extent. They simply want to grab money and money only. They are interested only that type of spiritualism in which money plays prominent role in their life. They are least interested in creating empty-ness within to establish link with Supreme consciousness. Their attitude, purpose to worshipping god is purely related to monetary gain only and they say we can’t let go money. They want to grab money legally or illegally. They are 99.9% in the world.

The second type of person in the society are very, very less in number their percentage in the world is 0.01% i.e. 1/100%. They are meant for spiritual upliftment and service to those who are running pillar to post to survive in this world including those who come to their rescue and uplift their Soul Surti along with their own to establish proper and strong bonding with Supreme consciousness to attain Nirvana i.e. permanent salvation, free from the bondage of Mind and Maya. They always remain in search of true and real ‘Sat-guru’ of the time to liberate their soul from the clutches of Kal Niranjan of these three loks.

**“Paras Surti ‘Satpurush’ ki jano,
Satypurush kripa sey daat jo pave pyaro,
Sou he puran ‘Sat-guru’ jaga maano kehlave re,
Samdarshi, Sarvagyi ‘Sat-guru’ pyaro,
Surti se Atam Mahachetan kar jave rey”**

---0---

SIX BODIES HUMAN BEING POSSESS

Six bodies are working within us. These are as under :

1. Sthool Shareer / Gross body / Ethereal body

2. Sookshm Body.

This body is attained in dreams and thus do a lot of noble as well as evil deeds. Very few elevated souls can have the knowledge of these six bodies. It doesn't possess the power to fly in space.

3. Causal body.

The third body is known as Causal body. We all are making full use of it. The inner body is very important and strange as well. It possesses great concentration. You might have observed some body lost in himself. He is sitting besides you, but have gone some

where else. We shake him and ask where are you, Where had you gone etc. The fellow had reached to that known place, where he was concentrating at. It is known as ‘Causal body’.

Sometimes you get absorbed in thoughts about some person and in a moment you find him before you in real sense and you get startled and you say to him, I was just thinking about you and you are in reality before me. It means that, that person, concentrated at you and both came together. Mind is very active and make you to forget this all in a moment and you absorbed in your work. ‘Our conscious’ is very precious, where as Mind is a show piece to drag us toward it.

Thus our causal body can reach to other corner i.e. Maha Sunnh within no time. You must know that our Soul Surti moves thousands time faster than the rays of Sun.

4. The 4th one is called as the Super Causal body. This body can be attained by spiritually elevated Souls of disciples of true and real ‘Sat-guru’ of the time like my ‘Sat-guru’ and one who is writing for you as ‘Vai Naam Daas’, true and real ‘Sat-guru’ on this planet to elevate the Surti concentration of my disciples on this planet. Thus only the devotees of mine and my ‘Sat-guru’ Shri Sat-guru ‘Vai Naam’ ji on this planet.

5. Gyan Dehi.

Fifth body is called as Gyan Dehi. This body can be attained by Maha Yogeshwars. It is called as gyan dehi. This body makes one Brahm-nishath / absorbed, amalgamated in Brahm.

6. Vigyan Dehi.

The sixth body is very important as it can’t be attained without “Alive Holy Naam” of true and real ‘Sat-guru’ of the time on this planet. It is called as the ‘Vigyan Dehi’. In this body one can see every thing within these three loks and outside without eyes, can walk without feet, can fly without wings, can do any sort of work without hands. ‘without Surti realisation’ one is in deep slumber / unawakened / of mind only. In this state when some one speaks, one finds Surti and Surti with a mind of .01% so long on earth.

So mind is .01% only rest all is Surti i.e. 99.9%

---0---

PERFECTION IS TRUE SPIRITUALISM

Perfection lies in Supreme Soul and one who is blessed by ‘Him’ by ‘Alive Holy Naam’ i.e. ‘Satyaguru’ of the time. The unchanging connecting thread between modern and earliest primitive human being as seekers and beggar are on the same level. In spite of all comforts around the heart and Mind are intact, but demands, wishes, emptiness, fear, lust, hypocrisy has gained a foothold in the general masses. That is why religious preachers, social workers, thinkers, politicians hanker after power and wealth.

Modern human being is totally modified in the present times because of fear, demands and lust. Satisfaction is nowhere to be found in the present circumstances and situations. We see and feel different in different kinds of environments – physical, education, intellectual, social, financial, material and spiritual. Every one wants easy and comfortable life in peaceful and congenial atmosphere to live and breathe. For this our inner strength needs to be channelised in proper, real and true direction so as to make spiritual progress in happy and congenial atmosphere. This leads to cause and effect principle. For this our inner strength needs to be channelised. At school level we get knowledge to make ourselves fit for self and society to work, study, play and undertaking work/study.

At the work place, we learn to work in a cooperative way. Friendly cooperation leads to order in the life and anywhere we come in contact with others at work place, office, bus stand, railway station etc. Human behaviour also plays a prominent role in moving towards +ve direction or towards -ve direction. If one moves and does every act in accordance with the guidance of true and real ‘Satyaguru’ of the live (living), he can’t be led astray at any cost, in any time, as ‘Satyaguru’ acts as a guide at each step of inner movement and action, so there is no chance of being led astray. ‘Satyaguru’ always remains in the awakened state, guide and instruct disciple time and again, as they possess ‘Alive Holy Naam’ i.e. supreme consciousness which keeps Saddak in awakened state, so whatever he does is conducive, appropriate and upto the mark, but a person who does not possess supreme consciousness, he is always in dream state so things, actions, directions are not done, but happen with him, as he is in dream state all the time with ‘Alive Holy Naam’ which is the main gradient which keeps one in awakened state, so no chance of doing any thing, or action wrong at any moment or any point of time when one possesses ‘Alive Holy Naam’, he feels the presence of ‘Satyaguru’ in all things, all around the disciple talking, walking, understanding goes on in sweet smell of flower in air everywhere.

Osho Ji says : Love life, live your life totally, be drunk wwiith the divine through life. I am in tremendous love with life, hence I reach, celebrate. Every thing has to be celebrated every where to be lived, loved. To me nothing is mundane. All is sacred; but for many, this world, Mind body all are illusion except Soul Surti of all living beings. If I say about you anything wrong, unplesant, unbearable, you will accept with open arm, but when I say any thing against your ‘Satyaguru’, you will not accept but respond according to your faith and trust of yours in your ‘Satyaguru’. Your ‘Master/Satyaguru’ is your more subtle ego, because reason can’t relate to your ‘Satyaguru’, who is everything for you. It is a deep trust i.e. love and trust together in the core of Surti consciousness. One may be pushing you out to make you angry and if you become angry you miss the point. Only talk and talk is the true test of one’s faith in his own ‘Satyaguru’ of the time. It is general law that every married man sees other man’s wife beautiful. He never want to talk about his own wife.

Man is product of illusion. He live for lives in illusion and illusion only. He lives through, lives in lives for illusion. No body wants truth except true ‘Satyaguru’ on the planet. Nobody wants truth although every body goes on seeking, finding, talk for it. This type of life on this planet is nothing more than deception. To seek truth means to avoid and let go truth which is the essence of Soul Surti, which you all are on this planet. Thus every body is in deep slumber / seeing beautiful.

एक कनक और कामिनी प्यारो,
भक्ति में बाधा जान रे ।
सत्यगुरु से नाता जोड़ा नहीं प्यारो,
फिर कौन करावे भव पार रे ।

सतगुरु के ज्ञान की चुभन प्यारो, कोई जागा हुआ ही जान पाता रे ।
समर्पण तुम्हें काम क्रौध से मुक्त करता प्यारो, ताहिं मुक्ति फल प्राप्त होता रे ।

---0---

ROLE OF SURTI NIRTI (PRANA) & BONDAGE OF MIND AND MAYA (BODY)

1 Spiritual science has nothing to do with Mind (Kal Niranjana / God of three lokas). In the prevailing atmosphere in the universe, physical science has made tremendous progress and has transformed the world, due to inventions, discoveries and penetrating in sea and planetary system in our galaxy.

2 Inventions and use of energy especially hydrogen fuel which is prevailing in the whole atmosphere of three lokas.

3 The energy revolution and other scientific developments are for the benefits of entire humanity and have been generated mostly in the west.

4 New India too has joined in the race of scientific researches by safe landing of our lunar satellite in the dark region (side) of the moon. India is the 4th nation to do so and is the first in the world to establish its identity in the dark region (place) of the moon to understand the nature of the soil, water resistance and possibilities of establishing life on moon.

5 Spiritual (world) science development is purely the prerogative of India.

6 The basic manifestation ! Akash, Sky, Pramatma energy, Chitta, Mind (Kal Niranjana / God itself) and of Supreme consciousness i.e. Atman (Soul spirit). By akash we normally mean sky, ether, black matter in which ‘God’ / Kal Niranjana / Omkar / Kal Purush / himself resides as 1st segment and send signals of thought nearly 42 in one second. Sky is fine, subtle substance. It is everywhere in the three lokas i.e. universe up to Maha shunya Sky. It is the basic thing from which all substances known to scientists so far.

Prana : It is Nirti.

Soul : It is combination of {Surti+Nirti (prana)}

Surti Functions : Surti functions in the heart and Nirti (prana) in

the breathe. Their union make miracle which is possible only when one possesses ‘Alive Holy Naam’ from Supreme consciousness to attain permanent salvation free from life and death cycle on this planet.

Mind : It functions in and out of every living being in these three loks. He gives signals of thoughts and wishes. It leads us to past and future. Past memories are possessed by chit. It sends thoughts at the rate of 42 in a minute. These signals are like whirl pool and goes on increasing as we move out side. It has various segments of charge, { +, 0, -1} Zero is at the centre to signify soul surti i.ee. (you).

Ganpati (ganesha Supreme Leader of Ganesh Ji or ganpati is the real and supreme leader of the ganas, with a twisted trunk holding a sheaf of corn and sugar cane and the quill with which wrote Mahabharat at Ved Vyasa’s dictation. He is the son of Parvati, bearer of the trident, and wears

Ganesh a Supreme Leader

The snake as his belt. ‘He’ is removal of all obstacles, just as the elephant does in the forest. As a vinayak he is the Supreme head. If you want to be creative in life, become ignorant as a child and then and then you can be creative. At that stage there should be not any burden of your Mind on Surti, like ‘ego’, lust for power, desire to be fulfilled, relations to be maintained to have power and pul to become master of the locality, city, state and then of the country and finally of the world to have one government and command in your awakened hands – even then you are mad and nothing more then that. Osho says, become dreamer, but without ego and lust, then you will be creative in the field of true spiritualism to follow true path laid out by your ‘Satyaguru’ of the time and of the World.

Inner journey of your life with ‘Alive Holy Naam’ from true and real spiritual master of the time, provided you have put faith and love in the identity of true and real ‘Satyaguru’ of the time. Always be in Surti consciousness and be in your own love, work, meditation, love, truth and joy, without caring at all what others think, do understand of it. it is the existence of Supreme consciousness that is identical with your consciousness when, fully concentrated with ‘Alive Holy Naam’.

---0---

“Vai Naam Surti Dhara”

“Nijdham Ke Santon Ko Samarpit”

SATYA SURTI, LOVE & ANNAND

It is represented as Supreme consciousness of which Soul Surti in every living being is segment of that true Supreme consciousness. When we have an inner cry for delight, we want to jump into the endless ocean of perfection which lies in 4th endless lok of Supreme consciousness which is endless including these three loks of God / Kal Niranjan in it. This is the first step we have to understand from true and real ‘Satyaguru Vai Naam Ji’ of the time after ‘Kabir Sahib Ji’. When this inner cry becomes constant, we have to search for true and real ‘Satyaguru’ to be blessed with ‘Alive Holy Naam’ to open the gate of Supreme consciousness to awaken/concentrate our Soul Surti to get ourselves liberated from the cycle of birth and death of the body in these three loks.

Our goal is to get our soul surti concentrated by ‘Alive Holy Naam’ from true and living ‘Satyaguru’ of the time to get liberated from the prison of three loks.

When we keep our inner eyes on love, truth and joy i.e. to awaken soul surti through ‘Alive Holy Naam’ from true and real ‘Satyaguru’ of the time. He is fully aware of the ‘Eternal Self Existence’ through which our soul Surti can be liberated by true and real ‘Satyaguru’ of the time to get established in Amarlok/Satylok/Amarpur. Compassion arises only when we get blessed with ‘Alive Holy Naam’ from true and living ‘Satyaguru’ of the time in these three loks. Without coming in contact with true and real ‘Satyaguru’, purpose of liberation can’t be achieved.

“How can we re connect ourselves with Supreme consciousness, which is our essential and true nature”. Every single moment our Surti and Mind are busy. Surti with heart beating, nirti with breathe and Mind is busy with thoughts, plans, desires and memories to take us in the past and in the future. But on the other hand our soul Surti is in bondage of Mind and Maya, not because of Mind or Maya, but because of its own submission to Mind and Maya.

ईश्वर अंश जी अविनाशी, चेतन अमल सहज सुख रासी ।

सो माया वश भयो गुसाई, बंधयो जीव मरकट की नाई ।।

This soul with in every living being is not an ordinary thing. It is very important and complete in it self is known as segment of Supreme

consciousness on this planet. Under the impact of Maya it has forgotten its true nature, power, strength and has submitted itself in the hands of Mind and Maya, considering himself as segment of Mind and Maya. This is the big tragedy that Soul itself has accepted the bondage of Mind and Maya. It has forgotten its own true nature, power and place in this universe.

जीव पड़ा बहु लूट में प्यारो, नहीं कछु लेन ना देन रे ।

Surti has forgotten its true nature, so it is suffering in the hands of Kal Niranjn, without any fault or crime made by it on this planet.

---0---

FUTURE SHOCK

For me and for every disciple of mind the surest way to still the Mind is through meditation in concentrated Surti with ‘Alive Holy Naam’ in which Supreme consciousness ‘Himself’ resides; being bestowed to true and real ‘Satyaguru Vai Naam Ji’ of the time. Meditation can still the Mind within no time, as it contains Supreme consciousness of ‘Supreme Soul’, i.e. ‘Satyapurush / Satya Lok’ from where we all Hansas have come to enjoy play the game and depart, but Mind has captured us permanently to use the Souls under itself. Nature is also a doorway to the self. It too can help us a lot for permanent liberation from the bondage of Kal Niranjn / God / Nirankar.

When some body cuts the tree in the neighbourhood, all the three suffer, human beings living there, the animal who take shelter during the day and birds who make their nests and make the life of all pleasant. They provide us fresh oxygen to we all and we give them (co2) carbon dioxide which they utilize during the day time. There is give and take without any grudge or any milice from either side. Rivers and oceans give us rain and water for living and for growth of plant all around to establish life on the planet in homogenous way. So bleak is the picture of the future of humanity and the environment in the name of development, the destructive policies of the world leaders, their invention destruction of environment of the 21st century.

True spiritualism rejuvenate the Surti Soul (consciousness) when one is blessed with ‘Alive Holy Naam’ Soundless sound word, which can’t be written or spoken in any manner but put in Surti and breathe (Nirti) to establish it within you to awaken your soul sourti i.e.

(Surti+Nirti) to let go Mind and Maya. It is being blessed to disciple by true and real ‘Satyaguru’ of the time, who is blessed by Supreme Soul of 4th lok / Amarpur / Satyalok to concentrate the soul of human beings to let go Mind. Mind can’t be eliminated by any other method because Mind is Kal Niranjan / God of these three loks, so Mind can’t be liberated by Mind, but through Surti concentration. Concentration is Surti of Supreme consciousness i.e. ‘Satyapurush/Parampurusha/Sahib Ji, who resides in true and real ‘Satyaguru’ of the time. The present ‘Satyaguru’ of the time is ‘Vai Naam Ji’ who has seen/met ‘Satyapurush’ and has visited Amarlok with and without ‘Satyapurush’. Amarlok which is real abode of we all Hansas.

(Hansa = Surti + Nirti/Pran).

- (a) The anti dote to mind and maya is (Sar Sabbad) & Surti Sabbad being possessed by ‘Vai Naam Ji’.
- (b) The anti dote to violence is ‘ahima’.
- (c) The earth spirit need antidote as love, truth and compassion.
- (d) The antidote to Mind and Maya is ‘Alive Holy Naam’ i.e. ‘Sar Sabbad & Surti’.

Sabbad of Supreme consciousness on this planet to eliminate the impact of Mind and Maya.

All Supreme Souls of Supreme consciousness make it very much clear, that when ‘Alive Holy Naam’ enters food, it becomes life giving parsadum of Supreme consciousness, when Supreme consciousness enters hunger, it becomes everlasting life providing energy; when Supreme consciousness through Surti enters water, it becomes soul Surti energy. When this soul Surti consciousness enters in every cell of the body, it becomes temple of Supreme consciousness when this Supreme consciousness enter in Sushmna and makes Ida & Pingla work together, Sushmna gets fully concentrated, then Surti and Nirti combines together and become Hans Soul Surti when eliminates unit Mind and cosmic Mind along with past & future are eliminated from the body and Hansa attains the position of one with the Supreme consciousness and all the qualities are fully established in Hansa’s consciousness to have same qualities as of Supreme Soul i.e. ‘Sat-purush’s tadd roop to act at par with Supreme consciousness. At this

stage if ‘Sat-guru’ is not satisfied with the actions of Saddak/disciple, then ‘he’ can’t be redeemed off his sins even by Supreme Soul / Supreme consciousness.

जीवरा अंश सत्यपुरुष का प्यारा,
आदि अंत कोई जानत सत्यगुरु ‘वे नाम’ प्यारा

We all Hansa’s in these three loks have come from Amarlok / Satlok / Sahiban Lok / Satlok. This secret is known only to ‘Sat-guru’ of the time i.e. ‘Vai Naam Sat-guru’ of the time.

“दीजै खेत बीज निज सारा”

God/Niranjan said to ‘Satyapurush’ Amarlok that three loks have been created as per your direction, but there is no soul on whom I have to govern. Supreme consciousness realised the problem of God/Kal Niranjan and sent we all souls in the these three loks in the bondage of Mind and Body. Afterwards when Kabir Sahib descended on this planet, he saw the condition of we souls was not satisfactory one. Then Kabir Sahib wrote as under :-

बासुरति सुख ना रैणि सुख, ना सुपिनै माहि रे ।
कबीर बिछुड़ा साहिब सूँ, ना सुख धूप ना छाहि रे ।

**‘Mita De Apni Hasti Ko, Je Kuch Martba Chahiye
Ki Dana Khaak Mein Mil Ke, Gule Gulzar Hota Hai’**

If you want to come closer to Supreme consciousness, you need to crush your ego just now. A grain can sprout and become flower only after mixing with the earth and water. A true and real ‘Sat-guru’ is beyond the bondage of Mind and Maya. We can cross the worldly ocean, only by his true and real guidance. For any undertaking we require expert person of that knowledge to achieve the target. If you want to dive deep within your ownself, you need proper guidance and knowledge of ‘Sat-guru’. ‘Sat-guru’ possesses precious and wonderful bodiless ‘Naam’ with which one can challenge the Mind (God) with this bodiless ‘Naam’. The power of ‘Sat-guru’ will enable you to bring powerful Mind under control.

काव्य 20

निःअक्षर का भेद प्यारो, देते सत्यगुरु ‘वे नाम’ रे।
बावन अक्षर से बाहिर करते प्यारो, तभी शिष्य होत निहाल रे।
निःअक्षर दात पाये बिना प्यारो, काल भगवन से छूटा मत जान रे।
तूं नाम सुमिर जग सोया प्यारो, तूं पल पल राम सुमर ले रे।
माला फेरत युग भया प्यारो, पाया ना सार सुरत सब्द का भेद रे।
कर मन का मनका डारि दे प्यारे, सुरति चेतन से मनका फेर रे।
मन पल पल भरमाता प्यारो, हे हंसा तूं तो अमरलोक का वासी रे।
ज्ञान चदरिया जिसने लीनी प्यारो, मैली कर घर लीनी रे।
कबीर नानक ‘वे नाम’ प्यारो, और उझली कर दीनी रे।
उल्टा सुमिरन सब काम करता प्यारो, ‘वे नाम’ सत्यगुरु से भेद को पा लो रे।
तेरी मेरी सुरति कैसे ईक होई प्यारो, दास जो कहता सो आंखिन की देखी रे।
तूं तो कागद लेखी से कहता प्यारे, दास ने ‘वे नाम’ दात साहिबन से पाई रे।
दास जग का सुरझावनहारा प्यारो, भेद सच्चा कोई ना जाने रे।
अंदर से अंदर जाने के लिये प्यारो, ईड़ा पिंगला को लय करना सत्यगुरु से जान रे।
ईड़ा के घर पिंगला जाई प्यारो, परम तत्व का रास्ता आग पानी के मध्य रे।
सुश्मिना खोले बिन प्यारो, पार एक मत जान रे।

---0---

“Naam Hoey To Maatgh Navayi,
Nahi Tou Ye Mann Baand Nachaye”

We need ‘Sat-guru’s guidance all the times to keep Mind away from us.

‘Bhakti Nishani Mukti Ki, Koi Koi Jaane Bhed Rey’

---0---

THE TEN PROMINENT NAADIS (ARTERIES / VEINS)

- (1) Idaa Naadi (2) Pingla Naadi (3) Sushmna Naadi
(4) Saraswati Naadi (5) Gandhari Naadi & so on ...

**‘Mukti Mukti Sab Jagat Bhakhana,
Mukti Bhed Keval Sat-guru Ne Jaana’**

The most important nerves and their functions in the body are as under :-

(I) IDDA NAADI

originated in muladhaar chakra. This naadi goes upto the left nostril. Its nature is cool like the cool wind, cool moon, cool water, is also known as chandra naadi or jamna and related to breathing process and with nervous system as well.

Functions :- It receives nirti (prana) from pingla Naadi and sends it to Mind to make it to combine with Surti, which lies over there. They combine and get converted into “Mool Surti” which is thousands of time more active and powerful to function as “memory chip” to retain messages of all the births we had on this planet. It also sends messages of ‘consciousness’ to all parts of the body to attract other six Surti chakras in our body. Mool Surti is very important segment of our Soul (Surti+Nirti).

Satva Gunn, Rajo Gunn and Tamo Gunn and their outcome :

- (a) Earth + Water = Satva Gunn
(b) Fire + Air = Rajo Gunn
(c) Akash itself = Tamo Gunn

What is Surti ?

‘SURTISEY DEKH SAKHI WO DESH’

Surti itself is Atma in our body has proper system to perform well within our body, when need arises.

(A) SURTI IS ATMA! ALL PARTS OF A BODY HAS SYSTEM :-

**(1) Eyes to see (2) Arms to work with (3) Legs to walk
(4) Ears to listen (5) Mouth to eat (6) Nose to smell (7) Stomach to digest and excrete through large intestines**

(B) TONGUE CAN TELL SIX TYPES OF TASTES :-

(a) Sweet (b) Sour (c) Salt (d) bitter (e) Acidic (f) Tasteless

(C) ‘SAAT SURTI KA SAKAL PASARA, SAAT SURTI SE KACHU NA NAYARA :-

Pratham Surti annand kahiye

Amiya Surti :- It experiences pleasure... (1) which is nature of Atma (2) It is there in every jiva (3) It has a bliss in it (4) Mind enters into it and operates into it. It gets mixed up with Mind & wanders about to provide pleasure to jiva.

Mind engages it in fulfilling desires and wishes, is purely an illusion, a dream and nothing more than that. The Annand you experience is from the power of Surti (concentration).

V.V. Important... The Mind (Mann) makes us to believe that, this is the outcome of world and not within. The reality is that the pleasure and Annand is the outcome of Surti from within.

**‘PALAT SURTI MEIN AJAB ANNAND HAI,
HOI PEHCHAN TOU DHYAN MEIN AAVE’**

--0--

MOOL SURTI (V.V. IMP.)

It is very important and is present in every jiva. Reading, writing and working on any project with concentration to do some creative work, is done with the concentration of this Surti, Any good and important information is stored in this Surti and whenever we need it, we can find and use it easily. It is dangerous when you don't use it in any creative work being performed by this Surti. It goes on reminding you of its need. During threading the needle, swimming, running, teaching, learning etc. one needs concentration from this Mool Surti.

Scientists philosophers, thinkers make use of this Surti to extract something from within is a creative work, being done by the third body i.e. Turiya awastha i.e. pragya stage (Awastha) where only thinking and reasoning is fully involved (mool awastha) at a point. It is there with every human being and animals. It is known as mool Surti/mool Awastha. It is like a taste of milk in cheese and ghee. The basic element i.e. milk is very much there in cheese and ghee. Mool Surti is the basic gradient of Atma/Soul. This Surti is also contemplated by Mind (Mann). Put Sugar in water, it will become sweet, but if something bitter is added into water, it becomes bitter, but basic taste of water never vanishes.

V.V. Imp..... This Surti (Mool Surti) has the power to remember every thing of Satlok to this universe and back to Satlok, if such incident happens with any individual. I, 'Vai Naam' observed this all while going to Amarlok and coming back to earth.

Mool Surti is present in all creatures of whatever size or shape they may have :-

- (1) Amiya Surti (2) Mool Surti
- (3) Chamak Surti (4) Shunya Surti
- (5) Nishchey Surti (6) Thauv Thauv Ras Chakhey
- (7) “Sat Surti Mey Rum Raha, Uss Bin Khali Neh Koi”

(II) PINGLA NAADI

(1) This naadi originates from the right side of Muladhara Chakra and extends upto the right nostril.

- (2) Its nature is hot like the sun, fire, steam, hydrogen energy, etc. It is known as Surya Naadi.
- (3) It helps in raising the body temperature.
- (4) It prepare an individual to create something new and unique in the world. It is source of new and positive energy. Thus positive energy flows through it to Idda Naadi.
- (5) Nirti (Pranas) is made to flow from Pingla to Idda by closing Idda and pushing the breath from ‘Idda’ to Pingla. Secondly by closing Pingla by thumb of left hand and passing the breath from Pingla to Idda to complete the cycle. This process is continued for five minutes till both start functioning simultaneously. Now both ‘Idda’ and ‘Pingla’ open and close at a time. Thus Sushmna get concentrated. In breath “Vai Naam Sabbad” should flow along with the breath to concentrate Sushmana ‘Naadi’.

(III) SUSHMANA NAADI

This Naadi lies in the spinal cord and usually remains in the dormant stage for centuries together to under go births and deaths on this planet. It become active when both +ve and -ve energy in the combined state flows through it. This Naadi gets concentrated permanently even when you are breathing and keeping ‘Alive Holy Naam’ in breath becomes automatic process, as if Supreme Soul ‘Himself’ concentrating the ‘Sushmna Naadi’. Even eyes visualise this automatic process of breath in both idea and pingla Naadi’s together at a time. In this way Sushmna Naadi attains permanent concentration. Thus Saddak never faces the problem of bad cold at any time or place provided you keep ‘Alive Holy Naam’ in Surti concentration time to time.

This stage is attained when, by continuous practice with due guidance of true and real ‘Sat-guru’, who has been bestowed ‘Alive Holy Naam’ by Supreme consciousness Himself on this planet, after having so many visits to Amarlok / Satlok / Sahiban lok with due guidance of ‘Sat-guru’, we take breath in and out for at least fifteen minutes at a time in one sitting with due guidance. In this case Sushmna is very important for ‘yogsurti’ in ‘Sehaj Marg’ easy method of concentration.

Sushmna Naadi is considered most important as the Kundalini power lies in a dormant state at the end of this ‘naadi’. It is also the abode of all seven chakras and their powers that are usually dormant. Through

easy and proper yoga practice; with due and proper guidance, instructions and ‘Sar Naam’ of true and real ‘Sat-guru’ (Master) purifies this Naadi by enabling prans (Nirti) to flow through it. Regular and continuous practice and concentration on ‘Alive Holy Naam’ ‘Sar Naam’ make Sushmna function almost all the times in a day, then weeks and so on. This also leads to the awakening of the kundalini and chakras. Sushmna’s function regulates all the 8 chakras to function properly and in harmony.

---0---

BASIC SOURCE OF SOUL SURTI

Satluk / Amarlok / Parampurush / Sahib Lok / 4th Lok / Amarlok

“Amarlok” i.e. 4th lok is the origin of a Soul, where Supreme consciousness Supreme Lord Himself resides, along with those hansas who have gone there after attaining permanent salvation from this earth. They can be counted as they are very few in number, less than two hundred, Amarlok (Immortal + abode). It’s existence is far ahead of Maha Sunnya Lok. Sant Samrat ‘Sat-guru’ Kabir Sahib for the first time in the whole world, revealed the secrets of this unknown abode of immortality and the way to get.

अमरलोक हंसों का सच्चा ढेरा प्यारो, तहां से हम सब हंसा आये रे ।

Knowledge of Amarlok, Soul & Hansa / Satyapurush / Supreme consciousness Sahib Ji’s Lok.

---0---

AMARLOK OF SUPREME CONSCIOUSNESS

Soul / our own true-self / i.e. Immortal. Its existence is beyond the creation of universe. We hansas have nothing to do with five elements i.e. Sky (sunnya), Air, Fire, Water, Earth. Amarlok is beyond the knowledge of Vedas, Ramayana, Quran, Bhagvad Gita, Bible and all other religious book, scriptures etc. It is from where we all have come on this earth to be part of this universe to serve and make every to realise that the whole play on this planet is of concentration and the whole creation itself is being done in concentration. First of all the secret of “Surti Yog” came to be known to the world by ‘Sant Matt’ in the

field of true and real spiritualism by Sant Samrat, ‘Kagir Sahib’ on this planet now ‘Sat-guru Vai Naam Ji’ has been blessed with ‘Alive Holy Naam’ by “Supreme consciousness” to awaken the masses from their deep slumber. This ‘Alive Holy Naam’ possesses, miraculous Surti power which concentrate the Surti of the disciple whole is being blessed with “Alive Holy Naam” from ‘Sat-guru Vai Naam’ Ji of the time. Wit the help of this Surti Mind is completely subsides and Surti get surcharged to a greater extent to let Mind go out at the time of concentration. In this way one can liberate himself permanently from the entrapment of Kaal Niranjan (Mind).

Take yesterday is dead, tomorrow hasn’t arrived yet and whenever it will come, it comes in today, just now, so don’t think of tomorrow. I have just this moment with me and I must do some creative work in this moment. Leave all your burdens in ‘his’ hands who is capable and can bear all, and never look back (behind) in regret or to postpone it. Desires at once puts you in the dark and light is put out from the source. They are the outcome of Mind which always puts in the past and sometimes in the future. For to be in the present your obeisance, faith should attain depth of soul Surti through breath in which Soul Surti is always present for the present, in the present. Pride can’t attain this moment, concentration in breath as it is liked with the past and future pride has nothing to do with the present chanting, singing and telling of beads have nothing to do with para bhakti of the present moment. One has to dive deep along with ‘Alive Holy Naam’ to enter the valley of truth, love and joy.

In this way we shall directly get absorbed in Supreme consciousness. “Our true and pure soul is the true abode of supreme consciousness”. There is no other religion on this planet, equivalent to the real truth. The religious persons, books also say the same. The deeper meaning of truth is to use truthful eatables, truthful behaviour, truthful Surti consciousness, pure water touched by the finger of ‘Sat-guru’ to develop it into nector, which will heel you of all diseases and illness. We says when ‘Sat-guru’s Surti enters Soul it becomes parsadam, when Surti enters eater, it becomes charanamrit, when surti enter hunger it becomes fasting, when surti enters into action along with ‘Sat-guru’ it becomes Seva.

Kabir Sahib says :-

**“SAACH BARABAR TAPP NA PYARO,
JHOOTH BARABAR PAAP NA REY,
JAKEY SURTI SAACH HAI PYARO,**

TAU KI SURTI AAP REY”

Truth has matchless qualities, while no kind of sin can be considered greater than falsehood. ‘Sat-purush’ has his abode in a Surti consciousness which is filled with truth, love and joy. Supreme Soul is Himself, ‘truth, love and joy’. Thinking and thinking is purely related to Mind and Mind only. We see that waves rise in river water, in sea water due to the impact of air on water, in the same way thoughts take us to past and future due to the impact of Mind in our heart.

If you have to develop your Surti, you must possess ‘Alive Holy Naam’ from true and real ‘Sat-guru’ of the time i.e. ‘Vai Naam’ Ji ‘Sat-guru’ on this planet. If you want to elevate your Soul Surti, you have to let go thoughts of past & future one can’t achieve Surti consciousness without ‘Alive Holy Naam’ on this planet.

Kabir Sahib says :

**“NAAM HOEY TO MAATH NAVAYE,
NAHIN TOU YE MANN BAND NACHVAYE”**

The Mind bow down before a devotee who is blessed with bodiless ‘Naam’, otherwise ‘He’ will make you to dance on his tune (words). The guidance of true and real ‘Sat-guru’ is very important to keep Mind far away from you to perform any noble work on this planet. The one experiences in life is all due to the impact of Mind on Surti consciousness in this planet.

Osho Ji says : Violence is disease and non-violence is swasthya. When the Mind within become diseased. The body always follows the vital energy as a disease. Hence according to Osho Ji violence of any Kind on anybody, in any situation, on any person, on any community, sex, young, minor or old, is an act of violence, which is a disease in one who orders for that act in life on the life on this planet. He says and writes that non-violence is a perfect state of health and violence is a disease developed in man due to development of acquired poison glands, which were necessary in particular stage of development.

In its (life) journey over millions of years, the human body has acquired poison glands, by the impact of Mind and not Surti which has not been utilized as as they never tried to be in the present moment. Most of glands of poison develop in Animal stage. These were

necessary when Man was animal. If an animal is attacked by lion or tiger, it should have the power to create extraordinary energy to escape. It would practice running to create extraordinary energy to escape. In an emergency, it should immediately have madness enough to enable it to escape, for shaking any consciousness. It might be difficult to save itself if it were conscious. Therefore, in its journey over millions of years the body developed poisonous substances which are automatically released into the blood when an emergency arises, so that is bewilderment or madness one can find run in fear, a man trembles, the tremble is a chemical.

---0---

SOUL, SOUL & SOUL ONLY

Osho Ji says :-

The soul happens only when the artist disappears into his art. He is no longer separate. Some known force has done it through him, he knows that he has been possessed. That has been the experience of all the really great artists down the ages, the feeling of being possessed. The greater the artist, the clearer the feeling is.

(a) Mind (Kal Niranjana)

(i) Unit Mind in every creature

(ii) Cosmic Mind - the Shunnya and Maya

– In deep sleep without ‘Alive Holy Naam’, Soundless Sound Word, which can’t be written and spoken in any form.

(b) Soul as Hansa’s in every creature & everywhere.

(I) ‘Sat-guru’ true representative of Supreme consciousness,

(Sat-purush) possesses ‘Alive Holy Naam’ in Surti conscious-ness, one who is bestowed this ‘Alive Holy Naam’ is ‘Sat-guru’ of the time. He comes to know everything of Supreme conscious-ness and ‘Hansa / Souls’.

(Hansa Soul + Mind + Maya) — Human being.

(Hansa Soul + Mind) — Animals and other creatures other than human beings.

Atma — (Soul + Mind + Maya)

Hansa — {Surti + Nirti (Prana)}

Concentrated Surti — (Soul + Alive Holy Naam) It is with-out Mind and Maya

Kabir Sahib, Baba Nanak, Ravidas Ji, Shri ‘Sat-guru Vai Naam’ (Sahib Bandgi), Osho Ji, Rabinder Nath Tagore ‘etc’ are big personalities of the time, who made tremendous struggle in this world to awaken the masses, who are in deep slumber from centuries together. Supreme consciousness is also at work through these big personalities to awaken the souls from deep slumber by the wishes, desires due to Mind and Maya in this planet. Mind has posed many obstacles in the way of seeker while passing through the process of waking up to the consciousness, the cosmic and Supreme conscious by the help of true and real ‘Sat-guru Vai Naam’ of the time. He remove the chains of iron tied to the peg of iron to tie the hand and legs to stop one to swim in the river first and then in the sea. Secondly ‘he’ takes disciple to forget old traditions of worship which lead one in the outer world. Then third and final problem is our relations, religion, caste and creed, which are like death itself and never allow us to be disciple of true and real ‘Sat-guru’ to take plunge within, along with ‘Alive Holy Naam’ / Paras Surti of Supreme consciousness to liberate Soul from the clutches of Mind and Maya, who is none else but Kal Niranjana who is governing over all souls, by making it to realise that he is the segment of Mind and body. Through this miss-conception our Surti is blindly working playing in the hands of Kal Niranjana (God) itself.

Mind always persuade all human being on this planet that he is not the deceiver, but protector in all respects. This life as human being is the best, most appropriate opportunity to know ourselves i.e. our true nature as ‘Hansa’ on this planet without amalgamation of Mind and Maya. The only authority on this planet to lead you to let go all chains of legs and hands of Mind to be broken, smashed by paras Surti of ‘Sat-guru Vai Naam Ji’ of the time. There is no other alternative on this planet of Kal Niranjana (Mind/Maya). Every birth is sure to be followed death which starts with weep, but one person zoroaster laughed at the time of his birth on this planet. He must have directed and guided those who were expecting cry from zoroaster. Nature does play its part and make masses to come out of deep slumber and realise the purpose of coming on this planet. We should not be misled by questions and answers, as there are all answers well within your own true self i.e. (Soul Surti / Atman / Consciousness). My father is ‘Sat-guru’ not the ‘Supreme-Being’ so long I am on this planet in the clutches of Kal Niranjana who is always throwing us back, back and back into these three loks and never, providing us any opportunity to escape from his clutches. Only true and real ‘Sat-guru’ of the time is the

messenger of Supreme Soul on this planet to liberate you from the bondage of Mind and Maya.

Osho Ji says :- A rich person who has everything for which he constantly strives, realises that in the real sense he has achieved nothing in this world. Whatsoever, he has achieved is purely external which has nothing to do with the internal empty-ness. Internal empty-ness can't be filled with material things. Our internal being can be filled with the spiritual life, through spiritually elevated personality knocks at our internal door with internal Supreme consciousness. We have to create revolution in our life to transform it totally inwardly. Only our experience leads to knowing with due cooperation of true and real 'Sat-guru' of the time. External wealth, power, relations, struggle, influencer can't lead you to internal liberation. I don't agree Osho Ji at this point, when he says that the experience of external wealth leads to liberation. In one sense, it is helpfull when we realise that accumulation of money has no significance in our internal spiritualism (awakening). Otherwise, without experience, we can't think of moving inwards. Experience will make us to realise that a particular thing, action, is worthless in the field of internal spiritualism. The unknown is itself a fear for everyone on this planet. We have to be acquainted with any new thing and new action, but only through experience. Never think that gaining experience leads to wastage of time. You must realise that in spiritualism the Supreme power is always **at your back and call.**

Osho Ji's book : The Art of Living

- (1) A violent Mind is in search of ditches and deep holes.**
- (2) It flows downwards.**
- (3) It is heading for a fall.**
- (4) A non-violent Mind becomes fine.**
- (5) It is transformed into vapour and reaches the mountain peaks.**
- (6) It is a journey towards the Sky, towards the Sun, It is a flight to the highest peak.**
- (7) It is eager to move in the direction of liberation and godliness. For Osho Ji the other is the 'abyss'. (Abyss – A hole so deep that its bottom doesn't appear at all.**

(8) Wishes, hopes and desires have so deep hole that bottom has no existence. There is an un-ending race between Mind and these three gradients, which are also an outcome of Mind. We have nothing to do with these three segments and Mind, as we are Surti consciousness, which is a segment of only Supreme consciousness (Sat-purush / Sahib Ji) of Amarlok which is limitless. If you want Mind to work for you and not against you then constant Sadhana and Sadhana can do the job. They can't reach the highest inner joy without 'Alive Holy Naam' / Soundless Sound Sabbad which can't be written or spoken but it can only be put in Surti consciousness. This soundless sound provides you highest inner joy that can make one to live within himself. It is provided by true and living 'Sat-guru' of the time who has been bestowed this 'Alive Holy Naam' from true and real 'Sat-guru' of the time, who possesses Supreme consciousness from Supreme Soul 'Satpurush Ji / Sahib Ji'. Mind is God / Kal Niranjan, fifth son of Supreme Soul / Satyapurush in and out the body. It is not within one's own power to control the Mind. It can only be controlled by Supreme consciousness, through 'Alive Holy Naam', which can't be written, spoken, discussed, in any way. You can only be free of Mind by acquiring "Alive Holy Naam", from true and real Spiritual personality of the world.

While dealing with Mind we have to be cautious to know our true self which is powerful enough to deal with Mind as 'he' too is powerful Kal Niranjan, God, Supreme Power of three loks. One segment of it works in Sushmna to control our Surti and other outside to control all living beings to keep all flock under his thumb. One needs constant practice to use our Surti consciousness along with "Alive Holy Naam" to Sub due Mind from time to time, situation to situation, while keeping ourselves in touch will "Alive Holy Naam" in Surti consciousness to maintain balance of concentrated Surti with Mind to suppress the power of Mind to keep it under thumb.

Most scriptures and spiritual practices are geared towards training the Mind, but they fail to suppress Mind. It is only Supreme power of Supreme consciousness which possesses tremendous power to suppress and direct Mind to Subside to do worship of Supreme souls / Sat-purush / Sahib Ji of Amarlok.

When our Mind is calm and centered, we can sail through life's ups and down effortlessly in proper order in regular basis. If one wants to drive through unpredictable traffic, heavy at times and thin at others, slow driving or fast, that is, all types of balancing within and outside have to be maintained to come out of the mess, one needs constant practice internally and externally. The same is needed for the Mind and Surti

consciousness if you want to be spiritually elevated to work for self to elevated soul Surti and pacify Mind. If one wants to be in Surti consciousness out of Mind's clutches, which always works against Surti consciousness, while to be in Saadhna. Most scriptures and spiritual practices with and without paras Surti ("Alive Holy Naam") are geared towards training the Mind (Kal Niranjana) to balance, to pause and centered so that we are always in chetan Surti (equanimous). One can see himself as well as moon at night only in still and calm water. In the same way, we can find answers to sail through life's ups and downs effortlessly with due cooperation of "Alive Holy Naam" in Surti to make our Mind and fourteen (14) senses calm and composed.

---0---

ETERNAL PRINCIPLES IN ALL THE FOUR YUGS

(1) We need to focus on four eternal principles - truth, love, peace & joy which are the main qualities of our soul Surti.

(2) Satya was practised in 'Satyug' and was considered best period for humanity on the planet earth. While driving we have to take care of living, non-living being as safety of others and self lies in this. We have to be careful internally as well as externally and driving carefully with balanced Mind and Calm and composed in Surti consciousness to keep our Mind, behaviour under control while driving carefully neither hurting internally nor externally and nor mistreating our vehicles. Holding grudges and being Mindful in anger on the road can divert our attention, depletes energy and disturb Surti consciousness.

In Treta Yug most of souls adopted the philosophy of tap at isolated places near river sides or in groves, in caves, on mountains serving 'guru's, rishis, maha rishi's yogis, tapasvi's etc.

(3) In Dwapar yug when Lord Krishna lived to guide, play, make fun, teach lessons, show love and grace and followed the philosophy of humility. It was a period of doing work for the welfare of others in the best possible way. They practised four types of bhaktis at hand to the best of one's abilities, as an offerings to the divine, morally, physically and spiritually. No one can make an offer of wrong things, wrong idea or though without breaking any law in any form or work. Moving,

working, walking, talking, serving, driving under rules of nation and country for the people of the people to the people to make every one law abiding soul Surti on this planet earth.

The most essential principle to be followed in Kal Yug is to get blessed with “Alive Holy Naam” from true and real ‘Sat-guru’ of the time, who has been blessed with this supreme “Alive Holy Naam” from Supreme consciousness to liberate the souls from the clutches of Kal Niranjan (god) Mind to be ego-less and follow the principle of truth, non-violence, true faith in ‘Sat-guru’. Help needy and helpless living being and see that no body, sleeps with empty stomach on this planet / earth. Ego, pride, selfishness, rule breaking mentality etc. have to be dropped by all means. One must under go Saadhna regularly, morning and evening without any wish and desire of any kind from ‘Sat-guru’ or God / Supreme soul. In this way we can get ourselves liberated from the clutches of Mind and Maya. Rabinder Nath Tagore says : “patriotism cannot be our final spiritual shelter, my refuge is humanity. I will not buy glass for the price of diamonds, and I will never allow patriotism to triumph over humanity”. (Service to humanity should be our 1st and foremost duty before ‘Sat-guru’ and Supreme consciousness. I, not even, have the power to make me happy or unhappy today, I can choose which it shall be. Yesterday is dead tomorrow hasn’t arrived yet. I have just one day or one minute, and I am in my concentration to be in-touch with ‘Sat-guru’ and Supreme consciousness. (Vai Naam Sat-guru).

Watch a plant or an animal with due attention that your whole consciousness penetrate into the consciousness of plant or an animal with due love and affection which flows out through your inner conscience. They will teach you acceptance of what is surrender to them and get the same in bundles from them in return. The return will be thousands time superior, valuable than what you had surrendered to them a moment before. In both ways Supreme consciousness is multiplied in thousands and lacs, simply by taking initiative from your side. It makes you and other side to teach each other through being which has no shortage of truth, love and joy but you have to take a lead to jump forward with the gradients of truth, love and joy as initiative from one and other side simultaneously, without any grudge, malice or hate from your side. The other side will follow suit, as in both sides the Supreme consciousness is working on your behalf to establish link even with five elements which are finally the segments of Supreme consciousness. This is the surrender before ‘Sat-guru’ & ‘Sat-purush’ at a time and you get blessed from both. This is the way of teaching and learning from the side of Supreme consciousness and your being (concentrated soul Surti). This is teaching and learning simultaneously from the two ends of the same consciousness. This is the real way of

living and letting others to live with grace and dignity on this planet i.e. live happily and let others to live in the same way i.e. with dignity.

Swami Chinmayananda

Dedicate your life and its work unto Me, act intelligently, your personality will grow to its real potential and your achievements to their meaningful dimensions. Keeping smiling never weep, live life. Live life meeting the challenges, both within and all round. Regrets, fears, sorrows and sighs only dissipate our energies and we do not gain any new strength to solve our problems. Then why fear and despair ? Let us keep smiling and be ever hopeful; roll up ourselves, tighten our belts and plunge into the fields of life to play the game with enthusiasm and joy. This is the gospel of laughter. Let us work with our physical passion and emotional impulses dedicated unto lord a wakeful intellect, policing our lust, greed, pride, arrogance and other lower urges. Work is love with deep sympathy and tenderness. Work undertaken with this attitude becomes rewarding fulfilled. When we work thus in love and joy, the achievement exhibits a glow, at once divine and unique bringing forth untold happiness to the world around us. Even if plans break down, schemes fall, purpose is shattered, and our efforts are wasted, we will find a miraculous power secretly pouring unending success into our fields and accomplishing things we never planned, showering blessings in the gospel of work. Let us obey these three gospels in our day to day lives.

- (1) The gospel of Krishna brings worldly peace and spiritual Unfoldment.**
- (2) The gospel of laughter brings relaxation, health and rewarding glory.**
- (3) The gospel of work makes us partner with the Lord in his grand work plan.**

These three alone bring enduring achievements in life and a taste of the Supreme privilege and prerogative of our higher evolution as human beings. It is choice-less. We ought to practice it. Let us grow in cheerfulness is the ability to act in our willingness to serve, and our wealth of peace within. No spiritual student can afford to neglect to cultivate this life giving spirit of cheerfulness. True spiritual progress is for heroic ones who can laugh at their obstacles, worries and even failures. We must enhance well cultivated capacity to laugh away our fears. Thought of the self is greatest obstacle to success, happiness as

well as growth. The greatest achievers were dedicated to a higher goal to achieve permanent salvation from this planet which is meant for the same purpose. Supreme soul always directs one to make a frantic search of true and real ‘Sat-guru’ of the time. When your intention is true and pure, you are helped by unknown forces from all corners to establish your link with true and real ‘Sat-guru’ of the time to have “Alive Holy Naam” through which one can attain permanent salvation from this and only this planet to be free of Mind and Maya. Attain your true identity.

---0---

VIOLENCE WITH VIOLENCE....Osho Ji

In the same way, many chemical changes take place in the body of some one, possessed by love to some one. To keep balance some poisonous gland has to be removed. Spiritual violence response to violence is must to keep balance with violence. To endure violence is injustice and it is not right to endure injustice. Another type of violence is get the place, promise to participate in prayer but gives shelter in the corner for survival. They prompted to help in all important work including worship of God. They got the place as desired in the corner room near worship room. In the darkness, the broke open the sacred shrine and took all the offerings from gods altar. This is the nature of Mind. Pose kind, obedient, god fearing, unholy, full of greed and out of it look offerings from god’s altar. This all is because of Mind, which never remain in peace nor allow others to live in peace. They are in the habit of creating problems not only for others, but for themselves as well as for others is the habit rich and well to do families in this world. God is busy in giving us from lacs and lacs years but we have not done our job for which we have come on this planet. We have to get ourselves liberated from Mind & Maya which is main objective of coming on this planet.

Guru Nanak’s advocated on,,,,,

देँदा दे लैंटे थकि पाहि ।

जुगा जुगरति खाही स्वाहि ।।

Spirituality has become a buzz word in the whole of universe. It is most misunderstood concept. It has nothing to do with body, Mind, thoughts, wishes, fear, personality, prosperity, misfortunes, good, bad, sorrow, sufferings, friend, enemy, high, low, rich, poor etc. It is an

understanding of one's real self our, Mind, six bodies, intellect are things of this world in which we are living. Very few are aware of self, Surti, (Surti consciousness). The desires, wishes, mine, yours have no place in our self Surti Soul / Hansa i.e. (Surti+Nirti/Pranas). The truth is that, desires and wishes have no existence in our life process. These are outcome of Mind and Maya. Every one gets, what he or she deserves on this planet. Your desires have nothing to do with what we get in life. Become creative in which your Surti will participate to have consolation and peace of Mind within yourself. Thoughts of self is the greatest obstacle in success, well being and social service. Every one runs after profit and benefit to the maximum in any undertaking task or work. This is medicore way of living on this planet. The greatest achievers 'are' or 'were' dedicated internally to a higher goal. The greatest Artists, players, musicians, singers etc. who created place in the society by dint of devotion, dedication, will to do something in their life not for money, name and fame but through spiritualism will and dedication in the undertaking to raise the name of the country in the world. The highest quality of action is performed to get to the level of Supreme consciousness.

---0---

PERSONAL UNTOLD INCIDENT OF LIFE

A combination of expert guidance and unwavering determination is sure to yield results in your undertaking with total surrender to your true and real 'Sat-guru' of the time in sensitive behaviour within family relationships can leave lasting scar's on the impression-able Minds of the young 'Vai Naam Ji' found himself overwhelmed by emotion-anger-pain and then frustration, moving to Kashmir with such an emotionally charged situation was difficult for a seven year old child to be separated from Mother, younger brother of five years and a sister of three years with no source of income and father is lying on bed waiting for the last breath. Myself and my elder brother of seven years were leaving them on the mercy of God rest for the next, as I can't write any more on this topic which was there in my bone marrow as fresh as moving breeze. Physical distances any-where on the globe can be covered by one or the other mode of conveyance, but the distances caused by Soul Surti in Surti, sitting even at the same place with broken and shattered can't be bridged without maturity, actual knowledge of supreme consciousness / Supreme Soul / Sahib Ji of Amarlok.

Rest will be put before you all at right time, right place by right Soul Surti. To be spiritually awakened, you must have compassion not only for the known / world also for yourself. And you must know that

contentment is too much for Soul Surti.

Attachment is great hindrance in once life with the passage of time, attachment never allows any one to be true spiritual person in the society. It is the most misunderstood concept. Spirituality has nothing to do with your way of living. If at night, you dream that you bump your head against a wall. You may experience an imaginary pain. The moment you wake up, you realise that there is no pain. The pain you experienced was only in your Mind, it was not physical. “The same is true of this dream you are dreaming day and night. Wake up to the one reality and you will see that this life on this planet earth is just a show, it is not more than a dream created by Mind in your Surti consciousness. Thus it is nothing but shadows and light all in and out you”. Our life experiences without true knowledge of self, the world education experiences are for our education and passing time to be in past and future. We never try to establish ourselves to be in the present moment.

Therefore try to realise the cause of anxiety over what has happened in the past, what choices you made and need to make now and what the future holds. Try to see in every person and every event in your life, the dreamer (Mind) behind the dream. Behind the light and shadow of life is only one reality. Mind's (Kaal Niranjan's) joy. There is something supreme in and out of you has responsibility to guide and give you life meaning and point, but when you are blessed with “Alive Holy Naam” from true and real ‘Sat-guru’ of the time to make your life meaning and purposeful on this planet..

GURU NANAK'S ECO-WISDOM

You have to live in the present only one moment which is before you is yours, rest past and future has nothing to do with ‘Truth’, ‘Love’, and ‘Joy’. Get inspiration from others who achieved as per their will. The will power itself is your consciousness. Make a determination to be like that, with due cooperation of true and real ‘Sat-guru’ of the time”. You have two wonderful gifts - choice of action and Surti consciousness. Ordinary person can be extra ordinary provided he get directed by Supreme consciousness with due blessings and being bestowed by “Alive Holy Naam” i.e. ‘Paras Surti’ from true and real ‘Sat-guru’ of the time i.e. ‘Vai Naam Sat-guru’. Watch any plant or animal and let it teach you, then and then you will realise the importance of true and real ‘Sat-guru’ who has been bestowed “Alive Holy Naam” from ‘Sat-guru Vai Naam Ji’ of the time. Our Mind (Kaal Niranjan) is God of these three loks. He is being worshiped by 99.9% population of the world, because they are not aware of Supreme consciousness whose fifth son is ‘Kaal Niranjan’

(God/Nirankar) and every body is worshiping him as Supreme Power.

Enlightenment as the goal which lies in ‘Alive Holy Naam’ possessed by true and real ‘Sat-guru’ of the time to be blessed with. This relieves one of desires, mind, maya, ego etc. True ‘Sat-guru’ establishes true religion which can only be one, just like science. Religious persons made the whole earth a mad house. If science is one, the internal Soul Surti concentration leads to one Supreme consciousness, whose endless ocean has its base in ‘Amarlok / 4th Lok’ of ‘Sat-purush’ and all Hansas on this planet.

Dharma is not a sampradaya, cult, panth, path or mind established way of worship. Dharma in general is get Soul Surti liberated from the bondage of Mind and Maya created by Kal Niranjana whom the whole universe is worshiping one way or the other. Real dharama is to know thyself i.e. true nature of self as Soul Surti consciousness which is a segment of Supreme consciousness of Amarlok as its origin, but it is endless with no boundry no direction, it is prevailing every where with no end (boundry).

‘PRA BHAKTI’ (True worship / Satya Bhakti). It is for a head of Sargun Bhakti, Nirgun Bhakti, religious scriptures, vedas etc. ‘Pra Bhakti’ is true and real mode of worship of ‘Satpurush / Supreme Lord who is immortal and exists in 4th lok, beyond the limit of this perishable universe, beyond Maha shunya.

This bhakti in all respect superior to all other modes of worship. It is beyond the reach of Mind. One has to attain oneness with the Supreme consciousness, which is beyond the reach of Mind and Maya of these three loks. The knowledge of para-bhakti was firstly introduced in these three loks by ‘Satyaguru Kabir Sahib’.

Sant Matt / Pra Bhakti starts from the point where Nirgun Bhakti ends. Its meditation starts from the 8th plexus (chakra), which is at a height of 1+1/4 hands above from 7th Sahasrara chakra. It is outside the body and lasts up to 9th plexus (chakra) which is known to perfect spiritual launching pad of true and real spiritualism.

PRA BHAKTI (makes Mind calm, which is the precursor to excellence, when the Mind is calm, the intellect is clear, and actions brilliant. Make one to rise above desires and become content. Shift from the attitude of grabbing to giving. From profiteering to offering and become content. One must work in a spirit of service and sacrifice for a higher ideal just as to

attain Sant Matt / Pra Bhakti. Selfishness leads to mediocrity and misery. Espouse a higher cause and you achieve amazing success. When a sports person surrenders to the team and plays for the country, he performs magnificently. He breaks records, his team wins and the entire nation celebrates. Lower desires fade away. Yet money, laurels and accolades comes his way and he becomes an icon. Fix enlightenment as the goal and all desires vanish. But you gain the whole world. Seek the blessings of true and real ‘Satyaguru’ and all else will be added into you. Your own performance will teach you accepting of what is surrender to the ‘Sat-guru’. Let it teach you being. Let it teach you integrity, humbleness, truth, love and joy to elevate your soul Surti to be one with Supreme consciousness prevading all around you all the times to make you capable of attaining the stage of a new born baby on the planet with concentrated Surti to please all and get consolation within every moment in every breath in and out.

Our aim should be world unity based on oneness of the soul Surti. It is also essential to develop a spirit of self enquiry to get one with Supreme consciousness (Satyapurush / Sahib Ji / Supreme consciousness). Smile at others like a child to infuse new life in on lookers. Marguerite theophil writes..... After every one hour work one must give rest for five minutes, when no thought, is allowed to enter or go out, be in Surti consciousness without concentrating on any action of any type. See breath without plunging into past or future. Try to be in present simply watch breath and nothing else. The nerves will soothed, the mind relaxed from its core. The body is fully charged with Surti Consciousness.

A fallow filed is land that is ploughed by the farmers which they leave alone and don't cultivate either for a season or more. The understanding is that when the same field is planted over and over, often with the same crop, the nutrients are all depleted from the soil. We could say the land becomes tired, it end up less fertile. It yields less or lesser quality produce.

But the field that has been allowed to lie follow for just one year produces a much higher crop yield when it does get planted. In the same way like many productivity focused farmers, we get carried away working, working, working to produce more and more and more. Then one day we feel just worn out. We can't even find the energy to carry on as usual. Lying fallow is not to be confused with laziness. It means taking break from incessant doing working an acknowledgement that the habitual, forced or unimaginative path we have treading needs some rejuvenation, concentration, moving inwards with closed eyes and balanced breathing cycle well within us. Some times, the more we chase answers, the more they recede without any proper conclusion, so we are forced to reduce or stop our efforts regarding specific task and answer.

If one can take a few minutes of concentrated rest without any thought of Mind or even three to five minutes in your true self are sufficient to recharge yourself from the dragery of hard work or Minds suggestions of any nature. In this context, taking time to be dormant feels wasteful, even indulgent and selfish. Yet, if we pause to reflect on this, we realise that rest is most important to keep mind under control and badly fit to move ahead in the undertaking.

Those who think that they can't afford such frequent breaks in the undertaking task are not doing justice with their own true self which is working day and night under the influence of Mind only. Poets, religious preachers who realise the importance of concentrated rest don't forget this most essential principal in their life to be active, smart and always be in Surti consciousness to elevate the soul Surti from time to time to keep body and Mind calm and composed under all circumstances and situations. In this context, taking time to be dormant feels wasteful; even indulgent and selfish. Yet, if we pause to reflect on this, we realise that fallow time is necessary to grow everything from actual crops to figurative ones, like poetry and art. It is the invisible labour that makes creative life possible which makes us to move towards real spiritualism i.e. relation of Soul Surti to Supreme consciousness through 'Alive Holy Naam' i.e. Paras Surti in which Supreme consciousness is established true and real 'Sat-guru' of the time.

To do any kind of creative work, concentration we need to rest for a while as needed, to replenish, to reconnect. There is need to let go Mind to establish himself in Surti consciousness in 'Alive Holy Naam' i.e. 'Paras Surti'.

बिन 'वे नाम' सब्द प्यारो, भावनाओं का प्रवाह समर्पण से भी ना छूटे रे।

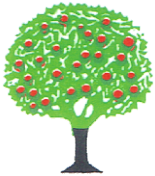
भूलें तुमरी गर्द गुबार प्यारो, कब जानोगे सच्चे भेद को रे।

खुद को देखना प्यारो, खुद को नहीं सतगुरु को पाने से रे।

विषय वासनाओं ने प्यारो, तुम्हारी चेतना को ढका रक्खा रे।

सतगुरु बिन बात ना बने प्यारो, सतगुरु के महं चेतन सब्द से ही कोई पार रे।

उपासना कहां वासना प्यारो, पूर्ण सतगुरु सब्द से ही कोई पार रे।



(आत्मन कोष)



(आत्मन कोष)



वे नाम पास दो वस्तुएँ, सार नाम और सुरत नाम।
ब्रह्मण्ड में नहीं किसी पास, सुरति सब्द सार नाम॥

पँच सदी पहले साहिब कबीर ने, पाई सार दात सतपुरुष सूं।
सन् 1912 निजधाम से होकर, ‘वे नाम’ पाई दौ बार दात सतपुरुष सूं॥

सार सब्द और सुरत सब्द की दात, सतपुरुष सूं।
ब्रह्मण्ड में ऐसी कृपा संत पे देखी ना सुनी, सतपुरुष सूं॥

मिलो सेवादार, सत्तगुरु परमहँस ‘वे नाम’ सूं।
जिन पाई दौ बार दात, सत्तपुरुष साहिबन सूं।
जानो सहज मार्ग भूँगा मत्त, ‘वे नाम’ सेवादार सूं।
सत्त सत्त और सत्त बताऊँ, कुछ ना पाऊँ ना मांगूँ आप सूं॥

साहिब सत्तपुरुष जी ने आज तक किसी भी प्रलयः काल में किसी भी संत सत्तगुरु परमहँस
जी को दौ बार ‘सार सब्द—सुरत दात’ कभी भी प्रदान नहीं की, दौ बार सत्त सुरति दात
साहिब सत्तपुरुष जी से सुरति द्वारा ग्रहण करने वाले एक मात्र संत सत्तगुरु
“वे नाम परमहँस जी” वर्तमान काल में इस धरा पर विद्यमान हैं।

I Ûk i q "k bZd o{k gß fuja>u muds Mky A
fru nð 'kk[kß Hk; hß i kr Qwy I d kjAA

SATGURU NANAK SAHIBby Kulbir Kaur

Those who are in deep sleep, can't understand the silent songs of 'Sat-guru Nanak Sahib, Surti concentration / living current, makes us to understand everything from within and can't be expressed in words. It is soundless sound word which can be listened when Mind is quite calm, body is at rest and only Surti consciousness is there to pick up and its current is conveyed to all who are in Surti consciousness. Mouth and Mind can't convey this under current of concentrated Surti. Rise awake, be calm in Surti consciousness and get connected with any soul or Supreme conscious which is ever ready to receive and send, Surti concentration to any one in any direction, at any place to get connected with Surti consciousness. To be in means to be in concentrated Surti and not Mind. Mind is a great hindrance between 'you' and Supreme consciousness provided you are blessed with "Alive Holy Naam" from true and real 'Sat-guru' of the time. The reason begin (self) is connected to Supreme consciousness whose segments we are on this planet. This message can be conveyed by flower, smile, pointing finger, smile on the face.

Sat-guru Nanak Sahib : propounded the true and real spiritual philosophy of Supreme consciousness - sex, anger, greed, attachment, ego are there in every human being which are in no properties of Soul Surti. Without "Alive Holy Naam", one can't control these evil forces of Mind with Mind. Yog, prayers, rituals, meditation, worshiping of idols, worshiping of god-goddesses, with Mind, intellect can't control Mind and Maya.

All human being are in the trap of Mind and there is no way to get rid of 'Him' i.e. Mind. Every one is worshiping Kal Niranjana (Mind) and not Supreme consciousness i.e. 'Sat-purush / Sahib Ji/Parampurush of Amar Lok / Satlok / Sahib Lok. Without getting blessed with 'Alive Holy Naam' by the true and real 'Sat-guru' of the time, one can't attain permanent salvation / liberation from endless cycle of birth and death, neither can control these evil forces / power of Mind (Kal Niranjana) of these three loks. Sex, Anger, greed, ego, attachment are all due to physical body possessed by Soul Surti as clothes. We all are living in complete darkness with no light of Supreme consciousness of 4th lok (Amarlok / Satlok / Begampur) from where each soul has come on this planet earth which is in the jurisdiction of Kal Niranjana (god). Supreme Lord, resides in 4th lok (Amarpur). We can be liberated by "Alive Holy Naam" from true and real master of the time i.e. 'Satpurush / Parampurush / Sahib Ji of Amarlok.

“Vai Naam Surti Dhara” “Nijdham Ke Santon Ko Samarpit”

He asserts that the Supreme being, Akalprush is to be found in his own Surti soul. The liberation is through “Alive Holy Naam” of Supreme consciousness of Amarlok where ‘He’ along with, Kabir Sahib, Ravi Dass Ji, Osho Ji, Mira Ji is residing in Amarlok of ‘Sat-purush’. He can be sent on this earth at any time by the Supreme power to liberate the masses from the clutches of Kal Niranjana. The spirit of affirmation is the basic tenet of Sahib Guru Nanak’s teachings. The spiritual path revealed by Sat-guru Nanak Ji is not the lonely path of an awakened soul who has renounced the world. The path of salvation, on the contrary, combines meditation in Surti in the form of Sar, Surti Naam, the Divine Naam (Sabad) while fulfilling the responsibilities of every day life, in every breath one should be calm and composed as the lotus in the lake remains undisturbed by the water current, just as the duck is not made wet by floating in water; in the same way, by linking one’s consciousness with the Supreme consciousness. Through utterance of the Holy Naam, Paras Surti of Supreme consciousness, one crosses the worldly ocean of 3-loks.

‘Sat-guru Nanak Sahib’ emphasised the unity of life and negated all forms of divisions. All life forms were regarded as equal. The Almighty resides in every thing and ‘His’ creation is his manifestation. The first sermon of Guru Nanak was ‘Na Koi Hindu Na Musalman’. There is neither Hindu nor Muslim.

When asked, “Who is the greater of the two “Hindu or Muslim” then Guru Ji / Sahib replied, “Without good deeds and true worship, both will come to grief”. When questioned by someone, “of what religion are you”, the Guru Sahib answered, “I am mere man, made up of five elements, a play thing in the hands of god’.

“My god is not in the books of east or the west. He is not the god of not one denomination, race or colour but of human kind”. ‘SAT-GURU NANAK JI’ in the same manner rejected caste based distinctions and social hierarchies. He says, ‘Meaningless is caste and meaning less are caste names, the same shadow protects all beings. What can caste do ? Caste and honour are determined by deeds. Sat-guru Nanak strongly denounced the notion of purity and impurity. ‘Sat-guru Nanak’ writes, “If the idea of impurity be admitted, there is impurity in every thing. There are worms in cow dung and in wood. There is no grain of corn without life. In the first place, there is life in water by which everything is made green. How can impurity be avoided ? It is basically the impurity of Mind of Mind to be washed away by divine knowledge. ‘Sat-guru Nanak’ rejected discrimination based on gender. In Sikhism, women are considered equal to men, with same souls, same sensibilities and equal levels of spirituality. She is regarded as door way of awareness and salvation. Who, because of her ability to

conceive and give birth, becomes not only the creator but also the medium through which society is maintained.

SAT-GURU NANAK SAHIB – ‘Then why call her inferior from whom all great ones are born’, says the ‘Sat-guru’. According to the sikh code of conduct, “It is not proper for a sikh woman to keep her face hidden”. In Sikhism, veil is compared to suppression. The gurus and ‘Sat-gurus’ have even handled the question of ‘gazing’ or staring by men. Instead of woman, men should be blamed for all kinds of sinful thoughts that cross their minds when they are a woman.

PART IINDby Harminder Kaur

SAT-GURU NANAK advocated an integrated approach between human life and nature. He envisioned nature as much a part of God’s creation i.e. Kal Niranjan of these 3-loks. The other shape of god that is Saguna, manifest, is not in humanity alone. It is in the entire nature and universe i.e. 3-loks. It is revealed in various hues and colours, the environment and the aroma (pleasant smell) of nature in the singing birds and the blooming flowers. He said to love god means to love his entire creation, including nature, a broad term for the environment. When we look at the state of the environment today, we realise the wisdom of one ‘noble soul’ in the 15th century who penetrated into the inner most recesses of nature i.e. environmental preservation which in the present times we call sustainable development. While looking at today’s reality all around the environment. The earth is denuded (??% bare) of its forest cover; our water resources stand depleted due to over harvesting; the atmosphere is overloaded with heat trapping gases from our different modes of transport industries and power units.

A smoky haze of pollution envelops our sky line, our life – sustaining rivers, water resources are polluted with industrial waste and human trash is impacting our lakes, streams, ponds and rivers; marine life is under threat due to acidification of the oceans, our glaciers, our main water resources are melting at rapid speed due to global warming. ‘Sat-guru’ Nanak proclaimed that the universe was created by god Onkar / Nirankar / Kal Niranjan of these three lok with a divine purpose / order for all Hansa’s safety. It is, therefore, the duty of human beings not to disturb that divine order. He says that human beings are an integral part of nature, with no conflict with it. In his vision, man and nature are inter dependant. These cannot be a dominance of one over the other as it is being practised in modern times, when man is dominating nature and destroying it endlessly in a mad race of development.

Guru (Sat-guru) Nanak takes a more purposive view of man. If man is the acme of ‘His’ creation, he is the medium of his message, as well as of Supreme consciousness’s message, which is consciousness knowledge of his relationship with nature and therefore, he cannot be at cross purposes with it. Knowledge also places a certain responsibility on human beings - of not conducting himself in any way that is destructive or endangers life in the planetary system. “He (Sat-guru Nanak Sahib) said, “Air is the vital force; water the progenitor, the vast earth, the mother of all; day and night are nurses, fondling all creation in their lap”. In other words, the air is our guru, teacher because it is the medium through which ‘Sat-guru’s (Guru’s) words are brought to us.

Water is our father because it is through water we are conceived and earth is our mother because it has the procreative power that nurtures all life. If we realise this, we cannot harm our environment, because we are a part of it. Living in harmony with nature was guru (Sat-guru) Nanak’s vision of protecting god’s creation. There is a dire need to step back, pause and look for a solution within the frame work of his vision to stop further environmental degradation. He under scores that god can be realised through nature, but not the Supreme consciousness. The Lord who the universe has created, and in it is pervasive. By his creation, known Him.

During night a male nightingale was signing along with ‘Sat-guru Nanak Sahib fully in touch with god. It was never ending type of prayer from both sides. Nanak’s mother approached to Guru Nanak Sahib at about mid night to make Guru Nanak Sahib to sleep now as the night is passing and you are busy with co-partner nightingale to defeat each other in singing. Guru Nanak Ji had totally forgotten this universe and was fully in touch with god internally. He didn’t stop singing as it was ‘His’ prayer toward Almighty god. After sometime ‘He’ automatically became silent and forgot his ‘true self’ in the prayer of god. His love was Supreme for god in the beginning and later on became intense with Supreme consciousness i.e. ‘Sat-purush /Sahib Ji of Amarlok /Satlok / Sahib’s lok. This prayer made ‘Him’ immortal and attained the stage of ‘Param Hansa’ of ‘Amarlok’ to live with ‘Supreme consciousness’ over these with other Hansa’s in Amarlok / Satlok.

Satguru Nanak Ji always remained in touch with god in the beginning and Supreme consciousness in the later stage to sing, pray in Surti consciousness to be one with ‘Sat-purush’ of ‘Satlok’. He never concentrated or meditated in any way under any one’s direction. He got in touch first with god of these three loks and later on put his Surti consciousness in Supreme consciousness of

“Vai Naam Surti Dhara” “Nijdham Ke Santon Ko Samarjit”

Amarlok / Satlok / Begampur, which is endless Supreme consciousness i.e. 4th-lok – There is no death and birth in Amarlok. It is true abode of all Hansas of Amarlok, who attain their true nature as Surti and Nirti the segments of Supreme consciousness. ‘I’ ‘Vai Naam’ Sat-guru has met twice these five great personalities of Amarlok are as under :-

- (1) Sat-purush Sahib Ji**
- (2) Sat-guru Kabir Sahib Ji**
- (3) Sat-guru Nanak Sahib Ji**
- (4) Sat-guru Ravidas Ji &**
- (5) Paramhansa Mira Ji**

These five personalities are main right hands of Supreme consciousness in Amarlok / Satlok / Amarlok / Sahiban Lok which is the true abode of all Hansa’s in Amarlok. No one is liberated without true and real ‘Sat-guru’ of the time. At present ‘Sat-guru Vai Naam Ji’ is the true personality on this planet who can get liberated souls by providing “Alive Holy Naam” in Surti concentration to Surti of a disciple to elevate his Soul-Surti to enable him to reach his true abode i.e. Amarlok / Satlok / Sahiban Lok i.e. Amarlok where there is no birth and death and all Param Hansa’s live under the guidance of Supreme soul Sahib Ji / Sat-purush / Supreme power.

---0---

TRUTH, LOVE & ILLUSION

- 1. One who is in deep sleep is sure to be in illusion.**
- 2. He always remain in a fix, what to do and what not to do.**
- 3. He acts, speaks, works but remains in past and future.**
- 4. He never comes in the present. It is only the present.**
- 5. Which remove, fear, illusion, anger, wishes and desires.**
- 6. Let us work with our physical and spiritual passion.**
- 7. Dedicated unto true and real ‘Sat-guru’ of the time.**
- 8. Awakeful Surti consciousness, let go lust, greed, pride, arrogance and other urges regarding benefits.**
- 9 Work is love with deep consciousness, deep sympathy of ‘Sat-guru’ with blessings and tenderness.**
- 10 Work taken under this attitude becomes a rewarding fulfilment with**

due blessing of true and real ‘Sat-guru’ of the time. Our work should be accompanied with love of grace of ‘Sat-guru’. This kind of work with devotion, love and joy, the achievement exhibits a glow, at once of Supreme consciousness and unique, bringing forth untold, unimagined happiness from the side of spiritual Master (Sat-guru).

Even if plans breakdown, schemes fail, purpose is shattered, and our efforts are wasted, we will find a miraculous power secretly pouring un-ending success in our accomplishing works, things, matter under taken, blessings we never conceived of. Sat-guru’s blessings, your dedication, perceiverance, hard work, pure conscience with love, truth and joy the success is sure to achieved. All these combine to bring enduring achievements in the life of spiritual personality on this planet. Love, truth, faith go a long way in achieving success in any undertaking. Let us grow in cheerfulness, in the ability to act, in our willingness to serve and our wealth of love, truth, faith and joy from the side of ‘Sat-guru’ and Supreme consciousness.

Elevated souls are the need of the time to awaken the masses. Without “Alive Holy Naam” i.e. paras surti from ‘Sat-guru’ of Supreme consciousness no one can glimpse inside human soul which is a segment of Supreme consciousness of 4th lok / Amarlok / Satlok / Sahib Lok, and get to know one’s Surti consciousness, analysing his ways of being silent... of seeing how much he is moved in concentrating Sushmna nerve, establishing platform in Surti Kamal i.e. One and one-fourth (1+1/4) hands above crown chakra i.e. 7th chakra of god, developing, moving towards Supreme consciousness in 8th chakra i.e. Surti Kamal of ‘Sat-guru’ lok which be beyond the jurisdiction of 3-loks of Kal Niranjan. For better results always keep your inner Surti on the lotus feet of true and real ‘Sat-guru’ by whom you are blessed with “Alive Holy Naam” of Supreme consciousness. We must enhance a well cultivated capacity to let go our fears, constant cheerfulness builds life vigour and Surti consciousness to its peak and expands capacities, widens duty towards ‘Sat-guru’ and masses interests and deepens the vision. This sense of cheerfulness, Surti elevation, concentration is all due to concentrated Surti of Supreme consciousness. True and real disciple gets these special blessings of Supreme consciousness through ‘Sat-guru Vai Naam Ji’ of the time on this planet (earth).

Love is founded on truth. This applies to the entire terrestrial manifestation. Only if we live truly can make us to love truly. Love blooms in a atmosphere of truth and joy. The knowledge of truth and joy enriches our love to bloom and spread its fragrance all around. The love we secretly yearn for is not ephemeral; nor, is it physical gratification. It is un-conditional, beyond all attachment. True love has no ego. It is uncondition al love alone can love. Love alone can let go ego.

---0---

LAW OF ATTRACTION

There is only and only one reality in the whole universe including Amarlok of Supreme consciousness and its segment i.e. Surti consciousness in each living being. Majority of people live unreal life because of ignorance. They take and feel reality outside of them for reality and never allow themselves to penetrate within with due guidance of real and perfect spiritual master of the time who possesses “Alive Holy Naam” i.e. soundless sound word to elevate the soul surti and make it free from the clutches of Kal Niranjana who is god of these three perishable loka of this universe.

Our Soul Surti (consciousness) is such a light which travels in straight path without any flicker or deviation. It doesn't make compression and rarefaction, like air, nor makes compression and rarefactions like water. It moves faster than sunlight and completes its journey of Amarlok with a period of half an hour or even less than that.

No one on this earth seems to be interested in understanding this all and moving towards reality of life on this planet which is unique in all respects, especially for attaining nirvana i.e. freedom from life and death cycle on this planet and to reach our true abode Amarlok / Satlok / Sahibana loka. Let us see where the fault lies. Each life time is a journey and we all share the experience of growing up older. It is a process without realising our true self.

Without proper and true guidance, human energy becomes a force rather than a channel. True ‘Sat-guru’ is must in the present times to realise one's true self to move ahead. Whereas many people felt truly to their family, schools, teachers, friends and clubs. Service and merit are not taken into consideration. This makes us to believe that when one door closes another door opens, but we so often look so long and so regret fully upon the closed door like the wasp. We do not see the ones which opens for us. All that we are is the result of what we have. The law of attraction is followed in the relation of Mind and body, in the same way soul surti get attracted by the Supreme conscious of Supreme ‘Sat-purush’. Similarly all that we are, is the result of what we have, thought, it is founded on our thoughts and made up of our thoughts too.

If a man speaks or acts with an evil thought, suffering follows him as the wheel of fortune moves towards misfortune, as there is a saying what so ever you sow, you have to reap the same in return, i.e. “As you

sow, so shall you reap”. This is as per the law of attraction. Your thought are the outcome of the result you get in return. Buddha said thousands of years ago that no event or experience in the universe was wholly new. All you see and experience has already happened not just once but several times, so it can be said that law of attractions is not an altogether new idea, it is old wine in new bottle.

---0---

जैसा कर्म करेगा बन्दे वैसा ही फल पायेगा

“AS YOU SOW, SO SHALL YOU REAP”

When you entertain good thought all around and within you, see the outcome. The ‘outcome’ is as per your thoughts, action as per your thoughts, action as per your Surti concentration which let go all sorts of behaviour and thoughts of your Mind which is your enemy in all respects. Mind cannot and never be your friend. He is Kal Niranjana God of these three loks in which we all are living, working, acting as per the directions of Mind, who always leads towards wrong acts and actions. He never wants souls to get awakened by getting Supreme consciousness from true and real ‘Sat-guru’ of the time like ‘Vai Naam Sat-guru’ of the time to get liberated permanently from the clutches of ‘Kal Niranjana’ who wants to enslave us forever (permanently) , as ‘He’ doesn’t want single soul to escape from ‘His’ bondage on whom ‘He’ is ruling since the creation of universe. Remember when one door closes another door opens provided our soul surti demands internally for the same. We have to awaken ourselves regarding surti consciousness. This is possible only when we get “Alive Holy Naam” from true and real ‘Sat-guru’ of the time, who has been bestowed blessed with this soul Surti consciousness from Supreme being on visiting Amarlok, along with with Supreme soul, ‘Sat-purush’ Himself. ‘Sat-purush’ Himself resides in “Alive Holy Naam” being bestowed to ‘Sat-guru’ of the time.

Good or bad thoughts change within a second as they always take us to past and future. These thoughts are the outcome of Mind which has a tendency to move mostly in the past and for very less time in the future. Future always takes place in the present time so future thoughts have very less impact on our Surti consciousness. A thought with a good intension manifest itself in a good way and a thought with a malafide intension disturb our piece of Mind and at once take us into past and future to relax for sometime. Mind never allows you to focus on positive thoughts for maximum time, as its work is to delude you; put you in problems and problems and never allow you to have positive

thoughts actions one has to concentrate his surti consciousness which requires soundless sound word from true and real ‘Sat-guru’ of the time to let go Mind forever and become Surti consciousness. You have to put this surti consciousness in your breath, then all work is being done.

“Alive Holy Naam” joins surti along with Nirti in breath to make you surti consciousness for ever. Now you are free from life and death cycle on this planet and get permanent salvation by true and real ‘Sat-guru’ of the time, who possesses this “Alive Holy Naam” being blessed by Supreme consciousness while visiting Amarlok along with ‘Sat-purush’ of Amarlok. “Kindle the lamp of surti consciousness, with the soundless sound word of Supreme consciousness to let soul free”.

1 May our ears hear what is good, may our eyes see what is good, but we have to be ready to face and see the reverse, which will shake our whole body. This all is because of Mind which keeps our Surti busy in worldly affairs and never allow us to move towards true and real spiritualism. What is the light of the day for ordinary man jolks, is the darkness of the night for knowledgeable person and vice versa. Light and darkness are two facets of our lives.

2 We are visible in the presence of light and invisible in its absence. Even in the shining of light there is darkness - the shadow.

3 Light, darkness and shadows explain the occurrence of eclipses, which take place due to the motion of the earth around the sun and the motion of the moon around earth.

4 Even days and night occur because of earth’s spinning around its own axis.

5 Day, night, month and year are periodic in time. Eclipses are a periodic or random but controlled by conditions.

6 Periodicity and randomness are also associated with space.

7 Arrangement of atoms in a crystal are periodic.

8 The geography of earth is a periodic.

9 Landscape, mountains, rivers and oceans on earth are largely a periodic.

10 So is the history of the world.

11 There is no regular repetition of any event, large or small.

**12 Thus we live in the midst of regularity and randomness 90%
randomness & 10 % regularity.**

13 Mind :
It is fueled by (1) education, (2) health, (3) knowledge
& thoughts – will power plays a prominent role.

Focused mind through meditation. We can take control of self and others, These persons are spiritual persons. All others lead to destruction.

14 Fate and fortune plays a prominent role in our life. If we are true, strong, truthful with feeling of love honesty we can contribute for the society. If we are worldly people, we waste ours and society character, will power and spiritualism. The society is inter-dependent. Truth, love and joy are three main gradients of soul surti.

15 Mind : Education, health, knowledge and selfishness. It is always materialistic. Mind can never be spiritual. It is the task of soul surti. Mind can be controlled by concentrated surti only. Mind is none else by Kal Niranjan of these three loks. Doubts can be dispelled by concentrated surti only.

Social, well being is outcome of spiritual well being, therefore we must embrace spiritualism as the basic need for attaining true and real spiritualism which leads to permanent salvation i.e. free from life and death cycle by realising our true self, through the guidance, blessing and attaining true and real soundless sound word, in which supreme consciousness resides, being blessed to true and real ‘Sat-guru’ of the time by the Supreme consciousness, ‘Himself’. This “Alive Holy Naam” takes us from social well being to spiritual well being, therefore, we must establish our spiritual well being with fertile soil of truth, love and joy for attaining, establishing true and real relations with true and real ‘Sat-guru’ of the time for seeking peace, love and joy.

**वासना के विरोध से प्यारो, पूर्ण सतगुरु से मेला होता जान रे।
धैर्यवान ही अमर पद का अधिकारी प्यारो, समर्पण प्रतिकूल भी अनुकूल करता रे।**

**मन सुरति को पल पल भटकाता प्यारो, कभी एकाग्र होने देता मत जान रे।
एकाग्रता से ध्यान में जाना प्यारो, चेतन महंसुरति अंदर के खोलती किवाड़ रे।**

RELATION OF SURTI AND SUPREME CONSCIOUSNESS

“Alive Holy Naam” from true and real ‘Sat-guru’ of the time makes us to realise soul surti and nirti to establish truth, love and joy which are the true segments of surti to understand self and other human being and life in general on this planet. Awareness make us to realise that we are eternal souls, where as Mind and body are the outcome of Kal Niranjana. Our body is composed of five elements which have to get mingled with the parent source. The Mind itself is sunnh element which generates other four elements i.e. air, fire, water, earth which ultimated with the inhalation of universe will turn into element which ultimately will join the parent source Sunnh, i.e. black matter in which Kal Niranjana himself resides. Only our soul is eternal which can’t be destroyed by any means. There is no death on this planet in any way or any sense. Therefore, there is no need to have fear of death and destruction. Let go ego, fear, death, destruction, relationship, position, place in society, hope, fear, anger, fear of death, religious differences can be transformed to love, joy, peace, unity, detachment of relations, life style, high and low, rich and poor. All are souls and have to realise their true self and be one in all respects.

Our intension, work, deed, karma enhances soul surti to attain equality, contentment, segments of same source, never to perish under any circumstances, time and space. We have come from Amarlok / Satlok / Sahiban lok to play a match on these three loks and to depart with true and real ‘Sat-guru’ of the time like ‘Vai Naam’ ji of the time.

There is one thing which is most important for all human beings on this planet is to be fully devoted to your true self through ‘Sat-guru Vai Naam Ji’ of the time. You have to realise your true self which is the true essence of life, through true and real spiritual master of the time to make your life meaningful on this planet. Let go ignorance and fear which are symbolised by radiance, effulgence and brightness.

V. V. Imp. : Attachment, sin, ignorance, fear desires and possessive cause distress within us. All these can be eradicated by putting “Alive Holy Naam” in breath through surti consciousness. Secondly the disciple must be awakened in surti consciousness i.e. spiritual consciousness with “Alive Holy Naam” bestowed to you by true and real ‘Sat-guru Vai Naam Ji’ of the time in the whole world. Sub conscious Mind is full of darkness and fear. Thought of self to be selfish and self centered is no way going to help one in attaining spiritualism. Life revolves around our goals our needs, our dreams.

“Vai Naam Surti Dhara” “Nijdham Ke Santon Ko Samarpit”

Thought of self is the greatest obstacle in the way of our spiritual progress, upliftment of soul surti, our faith in true and real ‘Sat-guru’ of the time. It also poses great problems and obstacles to spiritual success, growth and happiness common man is always moving towards power and profit in every aspect of life. The greatest achievers are and were dedicated to higher goals. Great man do great work for the sake of work and not for money, but money runs after them.

--0--

SOUL-SURTI (HANSA)

The Soul (Atman) Surti is not under the comprehension of Indriyan, the senses. Beyond the senses are the objects of the senses. Mind is subtler than the objects of the senses in the Mind. Beyond the Mind is the intellect which is subtler than Mind. Similarly chit is more subtler than intellect. Similarly ahankar is more subtler than intellect. In the same way soul Surti is more subtler than action (Ahankar / kriya). The soul is glorious, segment of supreme consciousness / Sat-purush / Sahib ji of the 4th lok i.e. Amarlok / Satlok. It is deathless, free from time and place i.e. age. It is love, truth and joy. It is ‘fear less’. That which is the subtle essence of this whole universe and Amarlok is called Hansa (Surti + Nirti). Hansa is truth that is the ‘self’. It is without a parallel in these four loks. Nirti is prana which can be picked up by Devdoots, but not the surti can’t be captured by any means, but it follows nirti. The chhandogya upanishad asserts “Tat tvam asi” ; That thou art. Soul surti is free from any kind, wish and desire. It requires supreme consciousness to get concentrated, to reach back to its true and real home Amarlok / Satlok / Sahiban lok i.e. 4th lok of Satlok to get permanent salvation i.e. free from life and death cycle to attain its its true form i.e. ‘Paramhansa’ the segment of Supreme consciousness. It is the most existence of supreme consciousness. His subtlety is unfathomable. Due to subtlety, his identity can not be perceived by senses. It is through concentrated Surti one can see Him in ‘Sat-guru’ form in general and rarely his true self.

**‘Jaaki Surti laag reh jeheinva,
Kahey Kabir ley challun tehvaan’**

**‘Koti Naam sansaar mein pyaro,
tin se mukti mat jaan rey,
Saar Surti Naam yeh gupt pyaro,
jaane Sat-guru pyara rey,
Sajeevan Naam ‘Sat-guru Vai Naam’ paas pyaro,
Mann maya se paar re,
Sajeevan Naam ‘Sat-purush’ se aaya pyaro,
Sajeevan Naam ki mahima jano rey,
‘Sat-guru’ sajeevan naam mein bataye pyaro,
Sang ‘Sat-guru’ ke Hansa ghar jaaey rey’.**

‘Sat-guru’ deeksha is the only true Naam which liberates one from the worldly ocean of Kal Niranjana (Mind). The Hindus remain within the domain of Sunnah, whereas the Muslims have their reach up to Maha Sunnah. But ‘Sat-guru’ Kabir Sahib and ‘Sat-guru Vai Naam’ Ji take one to Amarlok the real abode of Hansas. One has always to remain concentrated to ‘Sat-guru’ of the time to attain permanent salvation from this planet earth.

Whenever an individual engages his Surti concentration the pranas (nirti) will lead over to that place and completely gets merged into it at the time of re-birth.

मन सुरति को पल पल भटकाता प्यारो, कभी एकाग्र होने देता मत जान रे।

एकाग्रता से ध्यान में जाना प्यारो, चेतन महानुरति अंदर के खोलती किवाड़ रे।

**एकाग्रता बिन प्यारो, मन माया का छल कपट समझ में कब आता रे।
मन कारण सुरति कुंद प्यारो, सुरति निरति ही आत्म जान रे।**

काव्य 21

संतों की महिमां

(इस पल में रहना सच्चा काम रे)

संतों की लीला चलना खाना श्रम प्यारो,
तन से काम करना तन में रहना प्रयत्न जान रे।
तन से काम करना श्रम प्यारो,
चेतना का संग सच्चा काम रे।
स्वांसा में सुरति चेतन उर्दमुखि रखना प्यारो,
चेतना का संग पार कराता रे।
चेतन सुरति से प्रयत्न रहितता प्यारो,
सुरति चेतन में वासा सब काम कराती रे।
प्रयत्न रहित सुरति चेतन कराती प्यारो,
उसी चेतना में रहना सच्चा काम रे।
हथ कार वल प्यारो,
सुरति चेतना में समाया यार रे।
तन मन एको जानो प्यारे,
सुरति को महां चेतन सब्द विदेह से, रे जोड़ना सच्चा काम रे।
तन के अंगों पर मत जाओ प्यारो,
सब्द विदेह मन मन से करता पार रे।
प्रेम सत्य हिंसा हर एक में प्यारो,
सुरति चेतन में रहना तन मन से कराता पार रे।
हिंसा की धार से पार होना प्यारो,
सजग होना महांचेतन सब्द में रहना जान रे।
यह सब काम सब्द विदेह से प्यारो,
सुरति चेतन कराती भव पार रे।
गुरजियफ की बात को पकड़ो प्यारो,

झूठ क्रोध में एक दिन का अंतराल रखना जान रे।

यह काम एक धारा के साथ प्यारो,

चलना सिखाता जान रे।

साहिब जी चंदन प्यारो,

हमहें पानी ही बनना रे।

साहिब जी दीपक हम हैं बाती,

जाकि जोत जले दिन राती साहिब जी।

साहिब जी मोती हम धागा प्यारो,

जैसे सोना मिलत सुहागा रे।

---0---

LOVE AND SURTI CONSCIOUSNESS

It is the natural law of cosmos for any segment (entity) to originate or get segmented from and be in one with that, though it merge or may maintain its originality as independent segment as soul surti. Soul Surti has originated from supreme consciousness of supreme soul of 4th lok i.e. Sahiban lok / Amarpur / Satlok. All souls are souls of the supreme soul which is immortal. Therefore, there should not be any discrimination of any kind or nature. In the external world, we notice numerous conflicts, among human beings. There is discrimination in one way or the other, though we pose, say unity in diversity. Unity has to be maintained among all human being and creatures to have true and real life on this planet. There is a dire need of common bond among human beings, as we all are segments of same supreme being (Sat-purush / Parampurush).

To get true and proper answer in this direction one should make a frantic search of true and real ‘Sat-guru’ of the time for guidance and to be blessed with “Alive Holy Naam” to free himself from the clutches of Kal Niranjana (Mind) of these three loks. We all are in bondage and under the control of Mind and Maya of these three loks. This all is due external and internal Mind of human beings which is taking us away from the real path of worship, as we are bound from all sides due to inherent sanskaras. We are influenced by the external Mind and environment. A person influenced by the imposed sanskaras of home and society. Hatered is because of discrimination in one way or the other internally. Internally, all human beings feel, respect, attraction for each other. This attraction is due to love of soul surti which is same in all living creatures.

The fear, anger, jealousy, hatred, hostility is something external. Internally we all are Hansas with no difference at all. A person or group of person influenced by the imposed sanskaras of society at large may start hating another person or group of persons, but this sort of hostility is something personal and external. It has nothing to do with our conscience or soul surti which is true essence of life on this planet.

Internally all living creatures feel deep love, respect and deep attraction for others. We all are hansas on this planet to love, respect and honour each other in their achievement in any field of life and spiritualism. The ‘Sat-guru’ of the time plays a vital role on this planet. He concentrates soul surti to develop feelings of love and oneness among all creatures. It is the moral duty of all human beings to take care of all creatures as segments of supreme consciousness to uplift the soul surti of every hansa on this planet to make their life worth living on this planet earth.

The cosmological balance is maintained due to this attraction of soul surti from atoms and molecules to human beings with concentrated surti of supreme consciousness. All living beings feel love and attraction for one another. ‘Sat-guru’ of the time keeps all the finite entities, souls bound to Him by his true and inscrutable supreme love. All segments drift in the vast divine supreme consciousness flow as the minute manifestations of the supreme consciousness of ‘Satlok / Amarlok / Sahiban lok. All are entitled to cosmic / Supreme love as soul surti, his true and real segment on this planet.

If your past was painful doesn’t mean your future won’t be full of love, truth and joyful. It all depends upon your intension, will power, blessings of true and real ‘Sat-guru’ of the time. Your work, devotion and intension counts a lot in your life and days to come. Success and failures are shadows move towards light and be contended with what you achieve in life. Always follow the path of truth and non-violence under all situations and circumstances. You do your job sincerely and with devotion and never mind for the outcome. Be satisfied under all conditions and situations problems crop up and go, be penetrative, co-operative and think of good for all and sundry under all conditions and situations. Do every work with devotion and true, firm faith. Do every thing in surti and not through the impact of body and Mind. Always show equal respect to all type of people and religions, religious beliefs, but don’t hesitate to tell truth and follow the life of truthfulness. Don’t look down upon anything or creature to be called as awakened personality. I have not only developed firm faith in supreme consciousness but have visualised every thing through “Alive Holy Naam” / concentrated surti to

visualise the truth of supreme consciousness. Our true pilgrimage is Amarlok / Satlok / Sahiban lok i.e. 4th lok of supreme consciousness from where we all hansas have come on this planet to realise our true self and go back to real and true abode i.e. Amarlok / Satlok / 4th lok. Through “Alive Holy Naam” open the Sushmna and meditate for about half an hour in the morning and for the same duration in the evening, concentrating sushmna to reach surti kamal 1 & 1/4 hand above crown chakra.

“Vai Naam” the divine Naam should be repeated in sushmna in breath and have to move to Aghya chakra to crown chakra. The supreme consciousness live in ‘Vai Naam’ sabbad i.e. “Alive Holy Naam” has been bestowed to ‘Sat-guru Vai Naam’ ji by ‘Supreme consciousness’ after his visit to Amarlok / Satlok / Begumpur / Sahiban lok. This “Alive Holy Naam” does every thing for disciples to uplift their soul surti to meditate. One has to go from gross to subtle and from subtle to ‘Supreme surti consciousness’ to reach to surti kamal 1&1/4 hands above crown chakra.

“All the time especially in the morning 3 a.m and in the evening 9 pm to 9.30 pm repetition of “Alive Holy Naam’ in surti should be kept up in breath to concentrate it with supreme consciousness. All sorts of thoughts, wishes, desires of Mind should go and only (Surti + Nirti / prana) should join with supreme consciousness to move upwards to Aghya chakra where ‘Sat-guru’ is present. He will absorb all of saddaks to move towards surti kamal above crown chakra to present his (disciple’s concentrated surti) concentrated surti on the lotus feet of supreme consciousness to accompany him to Amarlok to be called Hansa (Hansatma) to get liberated permanently from the bondage of life and death cycle of these three loks of Kal Niranjana / God.

सुरति निरति अंकुरित किये बिना प्यारो, तीन लोक से पार ना एक रे।
आत्म हीरे की रोशनी कम कहाँ प्यारो, मन मान से अछेदित जान रे।

हमारी सुरति निरति आप में प्यारो, परिपूर्ण घटती बढ़ती मत जान रे।
इन की ताकत गुण एक सा रहता प्यारो, मन माया की धूल से अछेदित जान रे।

---0---

THE SUBTLE EXPANSION UNIT ‘CHETNA TO SUPREME CONSCIOUSNESS

Supreme consciousness i.e. (Sat-purush) / Sahib Ji) is Supreme Power in all four loks. He is the creator of these three loks. Kal Niranjan / God is his fifth son, who is governing these three loks as per guidance and direction of Supreme consciousness whose segment are residing in these three loks of Kal Niranjan. We have to struggle under the guidance of true and real ‘Sat-guru’ of the time to attain Hansa Surti to finally attain permanent salvation in these three loks. Don’t be a thing to think as it is the work of Mind. The thing that doubts, tell a lie, have wishes and desires, feel jealous, always think in terms of gain to be in the world or in the heavens. Make the use of 14 senses along with Mind is doing all the work, things, in terms of gain or loss is under the bondage of Mind.

The fourteen (14) segments of Mind never allow us to move in the direction of permanent salvation i.e. to be free from the cycle of birth and death which is the main hurdle for surti consciousness in the body which is our true self. We are not Mind and body but Surti consciousness which is our true self. Mind, its 14 segments and body are main gradients of Kal Niranjan in these three loks which are cloths on our true self i.e. soul surti which is a segment of supreme consciousness i.e. Sahib Ji / Sat-purush / Parampurusha of Amar lok i.e. 4th lok from where we have come on this planet/earth.

Exceptionally talented people are sometimes emotionally fragile and cannot control their anger, to achieve the assigned task easily and in time. Every one of us has two most wonderful gifts in life i.e. choice of action and surti consciousness. If you pick one other goes. Always pick up both together under the direction and guidance of true and real ‘Sat-guru’ of the time who possesses “Alive Holy Naam” to make one free from the bondage of Mind and Maya. The Mind opts for instant joy and happiness. The intellect pick deferred gratification. Anything that gives joy in the present, move towards true and real ‘Sat-guru’ to make it everlasting pleasure and joy without impact and interference of Mind and Body in any undertaking, provide you shift your surti consciousness to giving and contributing for the welfare of others without any profit and gain in any sense. Think of Supreme consciousness and put your concentrated surti in that direction and path will surely uplift your surti consciousness along with peace and satisfaction within.

Contentment under all conditions is the precursor to success in any undertaking task. If one has the attitude of grabbing and profiteering, you are sure to be discontent. When you turn to giving and helping, you are sure to be at peace. Think of yourself and see within, you are disgruntled and depressed. Think of others and you are content and fulfilled under all circumstances and situations.

---0---

HOW TO BE SPIRITUAL

When the Mind is calm, Surti is concentrated, the intellect is sharp and pointed, so the actions are brilliant. One can move inwardly with full gain and success. If one is blessed with “Alive Holy Naam” from true and real ‘Sat-guru’ and move towards with as ease to concentrate sushmna nerve to make surti and nirti to combine and to move towards Surti and Nirti to combine and to move towards Surti Kamal i.e. 8th chakra to have the glimpses of Supreme consciousness i.e. ‘Sat-purush’ of Amarpur to attain permanent salvation while visiting Amarlok along with Supreme consciousness. When one attain this position, his actions become perfect, which enables one to achieve effortless excellence in any undertaking with concentrated Surti. Then you leverage your talent towards true spiritualism. One can dedicate his actions with concentrated Surti for higher cause i.e. permanent nirvana, Moksha i.e. free from the bondage of Mind and Maya. These people are called pure, successful and free from life and death cycle on this planet. They work for an idea while being free from life and death cycle from these three lok.

For attaining this success in life one must rise above superficial difference and focus on the common factor which binds us all with due grace and blessing of true and real ‘Sat-guru’ of the time. It is change the whole concept of life to become one with Supreme consciousness. Then one see the best in other souls and they give of their best too. Drudgery changes to revelry and together you achieve outstanding success in spiritualism, happiness multiplies. But your love must be guided by Supreme consciousness.

हमारी सुरति निरति आप में प्यारो, परिपूर्ण घटती बढ़ती मत जान रे ।

इन की ताकत गुण एक सा रहता प्यारो, मन माया की धूल से अछेदित जान रे ।

--0--

MIND - SURTI CONSCIOUSNESS

Of this that doubts, affirms, denies, accepts challenges understands a few things, is ignorant of many things, is willing, unwilling, suggests, purpose, incline, decline, move, dance, imagines etc are the acts of Mind and only Mind who is governing these three loks. Supreme consciousness's subtlety, His identity is in between light and Supreme light can't be seen with these eyes and can't be seen with these eyes and can't be perceived with this body. Only refined Soul Surti can perceive 'Him' in Surti Kamal and above i.e. towards Amarlok journey along with Him from Surti Kamal i.e. 1&1/4 hands above crown chakra you as a Soul Surti can feel his presence. Hansa on reaching to Amarlok along with Him is as true as 'Sat-purush'.

Supreme consciousness / Param Hansas residing in Amarlok. 'Sat-guru' after his visit to Amarlok - Disciple ready to visit along with 'Sat-guru' to Amarlok. Disciples God, Gurus, common worshiper of God, believer of God, one who believes in Karmas, Anil Panchi, All human being.

The ethereal factor, air, light, water, earth. These are Ether – not perceptible to the indriyas. It is beyond the scope of human perception concentrated Surti can analyse it.

Expansion – subtlety of the object. The value of anything depends on the subtlety of an object – value in the form of object.

रोशनी का महं सागर

John Milton :- In his book paradiselost says :

The mind is its own place, and in itself can make a heaven's of hell, a hell of heaven. What one should do to achieve success, he was advised to go to an ashram in India. The Bhagwad Gita is a guide to self-management. It helps one to understand himself and identify your purpose. I say get connected with true and real 'Sat-guru' to get connected through concentrated Surti to Supreme consciousness to attain permanent salvation from life and death cycle on this planet. Your mind-set and attitude play a pivotal role to keep you away from our true self. 'Mark twain a writer said, "The two most important days of your life are the day you were born and the day you understand why. My answer to Mark Twain's question is to get one self free from the cycle of birth and

death, through true and real ‘Sat-guru’ of the time who possessed “Alive Holy Naam” to get yourself free from the bondage of Mind and Maya. First of all we must understand the nature of mind in various bodies which possess ‘Soul Surti’ which is true essence of life or this planet which itself is immortal. ‘Osho Ji Says, “people are clinging to a dead love that once was alive. Now it is only a memory and a pain and you are stuck because of the law.

The truth is that love come suddenly; it was not because of any effort on your part when it came, you would not have accepted it, because of Mind and Maya’s interference in your being.

---0---

TO BE ONE WITH SUPREME CONSCIOUSNESS

You may love all creatures equally, but should express love through Surti consciousness which is a common language of all living being on this planet. Understand the nature of essence i.e. Supreme conscious through “Alive Holy Naam” of ‘Sat-guru’ of the time who is blessed by this soundless sound word to elevate your soul Surti to be one with Supreme consciousness of 4th lok / Amarlok / Sahiban lok. It is permanent anchor with each Soul Surti on this planet to achieve salvation on this earth by true and real guidance of true and real ‘Sat-guru’ on this planet. He is always one and only one in these three loks. With this knowledge you will be in a constant state of bliss, provided you are firmly attached with the Supreme consciousness through concentrated Surti with “Alive Holy Naam” of true and real ‘Sat-guru’ of the time. Finally, the lure of the infinite i.e. Supreme consciousness beckons you. You are no longer content with mere play things of these three loks. The world and its attraction which is perishable, lose their lustre before your inner eyes and ears. You become one, true and perfect segment of Supreme Soul and ‘He’ is ever ready to receive you as his best gift i.e. of infinite Supreme Soul, whose segments we are on this planet. Thus you gain, gain and gain while becoming Paramhansa in Amarlok to have a divine nector from Paramhansas in Amarlok to be free from life and death cycle of this planet.

When Surti is concentrated by soundless sound sabbad, Mind attains a state where there is no impact of past and future on Soul Surti. We can only be in the present time when we possess “Alive Holy Naam” from true and real ‘Sat-guru’ of the time who has been blessed with “Alive Holy Naam” / Soundless sound word from

“Vai Naam Surti Dhara” “Nijdham Ke Santon Ko Samarpit”

Supreme Consciousness of Amarlok / 4th lok / Satlok which possesses Supreme consciousness to subdue Mind and Maya from the conscience. These true and real young disciples / saddaks who live in the present moment while concentrating on “Alive Holy Naam”, always live in the present moment i.e. in Surti Consciousness, possessed young, pure soul Surti and the impact of Mind is gone, this is because Mind always live in the past and future, it has no quality to live in the present moment. Mind is very cleaver, it always move from infancy stage to old age and never occupies the youth stage. Their youthful stage gets lost by the impact of Mind.

One who posses “Alive Holy Naam” from true and real ‘Sat-guru’ like ‘Vai Naam Sat-guru’ always remain in youthful stage and never wear the cloth of old age. The soul Surti always remain, fresh, young and concentrated to be in the present moment. Your body will become old, it will attain old age to get dissolved in five elements of which it is made of i.e Sunnh, Air, Light, Water and Earth, thus none dies on this planet by any means or condition. Surti will always remain in the present moment and has never seen past and future. Past and future is due to impact of Mind.

Youth is always there with you, if you possess “Alive Holy Naam” from ‘Sat-guru Vai Naam Ji’ of the time. To be in youth throughout life is a secret that lies with true and real ‘Sat-guru’ of the time. Like ‘Sat-guru Vai Naam Daas’ of the time. The moment one get blessed with “Alive Holy Naam” the impact of Mind is gone, it ceases to exist for that concentrated soul for ever, provided one get Surti concentrated with “Alive Holy Naam” from time to time in a day and have to live, breath, think, act to be in the present moment. Mind has nothing to do with the present, it is a thing of the past and future . Iron remains iron if doesn’t get touched with paras stone. A soul gets permanent youthfulness if it get touched with Paras Surti of ‘Sat-guru’ of the time i.e. ‘Vai Naam Daas’ of the time.

Life is a phenomenon of coming into form, and departure is to go back into respective elements except ‘Soul’ which in the form of Surti and Nirti is in bondage. Nirti can be captured by Devdoots and Surti follow suit after nirti, so both get entangled by Mind in the next body to restart the cycle. This is a vicious cycle of birth after birth and death never occur to anybody, anywhere, anytime in the whole universe. The word death should not exist in this world. It has caused confusion among the masses.

POWER AND VALUE OF “VAI NAAM SABAD” OF TRUE AND REAL ‘SATGURU’ OF THE TIME

There is one thing and only one thing in which, it is granted to you to be free in life, all else is beyond your power ; that is to recognise and profess the truth ; through “Alive Holy Naam” of true and real ‘Sat-guru’ of the time ; ‘Vai Naam Ji’ of the time, who has been blessed with “Alive Holy Naam” from Supreme Power of Amarlok / Satlok / Sahiban lok / Sahib Ji ‘Himself’ of 4th lok. Which is endless and beyond the comprehension of human being who is in deep sleep and without “Alive Holy Naam” in which Supreme power ‘himself’ resides.

Every human being is full of consciousness which requires to be concentrated by “Alive Holy Naam” from true and real ‘Sat-guru’ of the time. Supreme consciousness is Supreme power of 4th lok i.e. ‘Sat-purush’ whose segment we all are on this planet with his Surti i.e. Soul Surti. This soul Surti is union of Surti and Nirti (prana). Surti is very powerful it can’t be captured by Kal Niranjan i.e. the God of three lok. Nirti can be captured by ‘Devdoots’ of Kal Niranjan when prana (Nirti) is captured, Surti automatically follows Nirti and get embedded in the body in which Nirti (Prana) is infused. Every human being due to soul Surti possessed tremendous power, but if you misuse it, you become a demon.

Power, wealth and knowledge are all powers that should be wielded judiciously. Kaam, Krodh, Lobh, Moh and Onkar, Lust, Anger, Jealousy, Greed, Ego and attachment can metamorphose one into a demon. Who is none else but sub-conscious mind. It is the store house of all sins and bad deeds. Mahish means fear. Fear, ignorance are symbolised by black colour. Knowledge is symbolised by radiance, brightness, and effulgence.

Attachment, fear, sin, ignorance, desire and possessiveness are cause of distress. All these can be eradicated by having the knowledge of “Alive Holy Naam” from true and real ‘Sat-guru’ of the time i.e. ‘Vai Naam Ji’ who is being blessed by Supreme consciousness i.e. “Sat-purush / Sahib Ji of Amarlok / Satlok / Sahiban lok”. With this soundless sound word the ship of your life will sail on calm and amiable seas... Story or Sunny days and night, glorious and lonely nights, one should maintain an attitude of gratitude towards true and real ‘Sat-guru’ of the time. Always try to be optimistic, full of faith towards true and real ‘Sat-guru’ of the time.

“Vai Naam Surti Dhara” “Nijdham Ke Santon Ko Samarpit”

Always live in the present moment, without peeping into past and future, as past is gone, which is of mind ; future has not yet come, when it will come, it will come in the present accompanying Supreme consciousness of Supreme Soul i.e. “Sat-purush” of Amarlok. Today is the only day to be blessed by true and real ‘Sat-guru’ of the time. Majority are thinking, feeling in terms of money to occupy hell.

‘One who has died has no significance and relevance with the present’. So past has nothing to do with the present. The future is unknown and uncertain and one can’t see future, it is only the present moment which has the value and significance. One should not think about the past and worry about the future. Ego is past and hope is for the future, both must go.

V.v.imp. : Present moment is “pure and true awareness” so live in the present i.e. in awareness. It is free from resolution (agenda for the future) ego – to show personal worth, achievement to others & hope :- Includes wishes and desires for the future.

**“CHINTAN KEVAL SAT-GURU NAAM KA,
AUR NA CHITVEY DAAS
JO KUCH SURTI NAAM SWANSAN BIN,
SOI KAAL KI PHAANS”**

One should always remain in Surti with “Alive Holy Naam”. One will realise himself as well as Supreme Soul i.e. Supreme consciousness i.e. “Sat-purush” in and out.

**YE KAAM SADHAN SE NA HOI,
SAT-GURU KRIPA SE BAAT BAN JAYI**

It can only be done by ‘Sat-guru’s blessings, contact with environment make our life full of dreams, wishes and desires i.e. in the grip of “Kal Niranjana”. Mind is making every one to dance on its tune. Awareness is only through “Alive Holy Naam”. It is only truth and only truth. Present moment is that in which concentrated Surti exists i.e. truth, love, joy and peace exists externally as well as internally. Agya chakra (7th chakra) to Surat Kamal (11th Aperture).

Crush your – ego & hope – to attain truth (freedom/choice)

क्रोध किया जाता नहीं प्यारो, मन का सारा खेल रे ।
वह जन सत्यगुरु कैसे जाने प्यारो, जब सत्य प्रेम की ना की पहचान रे ।।

(1) Choice (2) Action (3) Intellect

Intellect is there with human beings. Anger is the quality of Intellect, i.e. mental thought process.

Awareness – let go anger. Surti soul is faultless. Child – Surti free to act and give its true reflection Mind segment is very dangerous :-

Try to be in the present moment which is of Surti conscious-ness. We have to realise our own self and universal self, freedom from selfishness and desires. You become rich of what you give without pain there no gain (profit). The attitude of grabbing, cheating impoverishes you, devine and demonic – divine – higher knowledge.

Demonic – Deluded by greed, lust and ego are ignorant of their potentials (confused state of mind – what to do and what not to do, lack good contact and have savage deeds. You think of Mind and Maya and have no idea of consciousness.

V.imp. : Establish – union of body & Mind to engage Surti. Mind is attracted to pleasing or favourite ideas. Don't wrestle with Mind at all bliss derived from Surti consciousness. Mind is a composition of five element – Rajas-Tamas-Satvik-Mind-Body & Surti

- (1) What to do and what not to do ?**
- (2) What to accept and what to reject ?**
- (3) How to move and where to move ?**

Soul is very strong, powerful energy. Make it free from Mind & Maya – create emptiness within.

Saatvik Level Personality – gaining, sympathy.

Tongue (Mouth), Ear, Nose, Eyes, Skin.

1.....Cheated 2....Harassed

“Vai Naam Surti Dhara” “Nijdham Ke Santon Ko Samarjit”

Secret of knowledge is lying in awareness, which is only truth i.e. present moment in which Surti / concentration lies, which is truth, love and joy to provide peace and calmness. Living and working in the present moment; with the knowledge of paras Surti i.e. “Alive Holy Naam” blessed by “Sat-purush” to true and real ‘Sat-guru’ through this Surti one can realise self and to have the knowledge of Supreme soul. Whose segments we all Hansas are on these three loks i.e. cosmos under the bondage of Kal Purush i.e. Mind. It is me ‘Vai Naam Das’, blessed with “Alive Holy Naam” by “Sat-purush” ‘Himself’ on this planet.

----0---

KAL NIRANJAN (SAYYAD) KE KAABOO MEIN HAIN SAB JEEV BICHARE

All these Hansa’s who are present in this cosmos are under complete influence control of Mind i.e. god of death i.e. the creator of these three loks, but not the soul / Hansas. There are seven shunyas i.e. complete illusion i.e. nothingness, seven kamals (plexus). Apertures and seven abodes of Surti concentration / consciousness upto the Limit of this cosmos of 21 universes of Kal Nirnanjan.

‘Vai Naam Sat-guru Param Hansa’ is a humble servant of ‘Sat-guru’ & “Sat-purush” who has been bestowed the knowledge i.e. ladder of Maha Nirvana i.e. permanent salvation / free from birth and death cycle of Kal Nirnanjan.

Role of charity, knowledge and spiritual knowledge and their importance in life.

\

- (1) Charity : It develops ego and keeps us in past.
- (2) Knowledge of universe gives hope and keeps us in future.
- (3) Spiritual knowledge keep us in the present moment. It has nothing to do with past and future.

“Can I drink when I pray” here emphasis is on drinking, praying is secondary.

“Can I pray while I drink ?”

The urge to pray is dominant, drinking is incidental.

Emphasis is always on what we say first.

Love brings harmony, peace within and inner freedom. Meditative Love is not a relationship, but a spool in which relationship with chetan Surti of ‘Sat-uru’, Hansas and finally with the Supreme consciousness is established. Provided you are in the ‘bing’, in awareness have self realisation through concentration on “Alive Holy Naam” from ‘Sat-guru’ of the time to get complete nirvana love therefore, becomes concentrated Surti. Love, therefore expands from uni to universal to have infinite limit in its unidiction. Become love and have your approach to be one with universal love. It has no name, no limit and no space. Have a life of forgive and forget, before attaining universal love of all for all in all you have your own way, children have their own way, you have to love them, accept them without any hitch and problem. It is far better to think of life as journey in which difficulties are hills to climb.

- 1 Let go attachment of any nature of this cosmos.
- 2 Let go expectations of any nature from anybody.
- 3 Reduce your stress and strain of any nature in this cosmos.
- 4 Don’t be rigid - be flexible and allow space for self and others for upliftment of Soul Surti.

5 Try your best to fret out true and real ‘Sat-guru’ of the time to be his disciple and develop the same respect and attitude in others for true and real ‘Sat-guru’ of the time. Your wisdom serves as a beacon light for others to find truth, love, joy in the company of true and real ‘Sat-guru’ of the time. Every human being has transformative potential of empathy, devotion, positive, spiritual, emotional redirection, hope, faith will to get others transformed by the guidance of true and real ‘Sat-guru’ of the time. The blessings and guidance of true and real ‘Sat-guru’ is surely going long way to transform you all and make you one with Supreme consciousness i.e. Supreme soul of ‘Sat-lok / Amarlok / Sahib Ji ‘Himself’. Don’t wish or desire anything in any way be demanded from true and real ‘Sat-guru’ of the time i.e. ‘Vai Naam Ji’ of Amarlok. Empathy / to make it powerful / meaning force to tell its true strength i.e. “Emotional turmoil” Anger, pain and frustration – in emotionally charged situation - for a five year old child like ‘Dhruva’s.

मन मान का आवरण ही प्यारो, सारे दुखों का कारण जान रे ।

सतगुरु की महंचेतन सुरति से प्यारो, सुरति निरति अंकुरित होती जान रे ।

सुरति ध्यान जब गहरा होता प्यारो,
प्रेम के फूल खिलते जान रे।
काम वासना की पूर्ति प्यारो,
प्रेम के फूल खिलाती मत जान रे।
किसी को या निज को प्यारो,
बदलने की चेष्टा करना भूल रे।
“वे नाम सब्द” में जाना सच्ची साधना प्यारो,
कहीं जाना होना अंदर से अंदर रे।
सुरति में सूखे पत्ते समान होना प्यारो,
सत्यगुरु कृपा बरसी जान रे।
इस पल में रहना ही पाना प्यारो,
यही सच्ची साधना जान रे।
जो पाता इसी पल में पाता प्यारो,
भरौसा विश्वास समर्पण करता सच्चा काम रे।
प्रशंसा निंदा करना एक सा प्यारो,
विचारों में भेद भाव सत्य में सब छूटा जान रे।
किसी की बात मत पकड़ो प्यारो,
सोच विचार काल का खेल रे।
सोच से संसार प्यारो,
सत्य प्रेम में रहना पार होना रे।
अंदर की आंख से देखना,
बस देखना सच्चा काम रे।
कौन अच्छा कौन बुरा प्यारो,
यह सब विचारों का खेल रे।
अंदर से एक सा मान प्यारो,
भेद भाव करना कैसे सच्चा काम रे।
जो सत्यगुरु से पाया प्यारो,

“Vai Naam Surti Dhara” “Nijdham Ke Santon Ko Samarpit”

सुरति से पकड़ना जान रे।
स्वीकृति परख समझ प्यारो,
सत्य प्रेम आनंद का जन्म होवा जान रे।
प्रेम दया अपना अपना स्थान पाते प्यारो,
चिंताओं को जन्म देना व्यर्थ जान रे।
मौन रहने का सत्य प्यारो,
बच्चे जैसी सरलता लाती रे।

...0..

Budha said :

- 1 I lost my ignorance
- 2 My Dreams
- 3 My Dogmas (old beliefs)
- 4 My likes and dislikes (past and future)
- 5 My ambitions (future)

Osho Ji says : Wealth of wisdom combined with intelligence & knowledge can go a long way to uplift your soul Surti.

ता से ही सतगुरु का ध्यान करना प्यारो, माना गया जान रे।
ध्यान उसी का ही संभव प्यारो, जिसे बार बार देखा होता रे।

इसी ध्यान से मन माया के बंधन तिरते प्यारो, ता से सतगुरु का करो ध्यान रे।

सतगुरु ही सत्यपुरुष का प्यारो, प्रतिनिधी होता जान रे।

ध्यान मूलम सतगुरु रूपम प्यारो, पूजा मूलम सतगुरु पादकम जान रे।
सब्द मूलम सतगुरु सुरति वाक्यम प्यारो, मोक्ष मूलम सतगुरु कृपा जान रे।

...0...

“Vai Naam Surti Dhara” “Nijdham Ke Santon Ko Samarpit”

KNOWLEDGE OF SELF LEADS US TO OUR REAL ABODE

Existence of God, three loks, atheism, bondage of Mind and Maya, determination, freedom, liberation, societies, sorrow, happiness, death which never happens or exists etc. are pieces of thoughts, wishes desires, hopes, determination, Surti, Nirti (Prana) Hansa, Soul, consciousness, Supreme consciousness need to be understood properly with true knowledge of Soul Surti, “Alive Holy Naam” Paras Surti, Soundless sound word which are the true gradients of understanding Mind, Maya, Soul Surti and Supreme consciousness whose segments are we all on this planet to understand self, ‘Sat-guru’ God and Supreme consciousness.

Knowledge of four loks is very essential to attain permanent nirvana from this planet earth. Ignorance never goes away unless its opposite self realisation is born, achieved through real and true ‘Sat-guru’ of the time. Supreme soul resides in that soundless sound word, as it is given to true and real ‘Sat-guru’ by “Supreme consciousness Himself” to awaken the soul Surti of disciples to enable them to concentrate Surti in Sushmna to make it unidirection i.e. upward motion free from past and future, thoughts, wishes, desires and hopes always takes us to past and future which are the segments of Mind and Maya, they have nothing to do with self realization i.e. to know thyself i.e. Surti consciousness which is true essence of life on this planet which is out come of God Kal Niranjan i.e. Mind itself.

Just as light eradicate deep darkness, in the same way ‘Paras Surti’ eradicates ‘Mind’ and ‘Maya’ from Surti Consciousness and turns it into Hansa soul Surti as true segment of Supreme consciousness. Similarly ignorance is removed in Satsang of true and real ‘Sat-guru’ of the time, who is embodiment of Supreme consciousness on this planet we know that to every action, there is equal and opposite reaction. Thus concentrated Surti can’t be faced by Mind and Maya, they have to depart as darkness before light. However thickness of darkness of wishes, desires hopes are shattered, dispersed by the light of ‘Supreme consciousness’ on this planet. The more yourself i.e. soul Surti is concentrated by “Alive Holy Naam”, the more you come closer to Supreme consciousness i.e. liberation from the impact of Mind and Maya on this planet. The moment of labour of any nature becomes in significant before your living in the present moment which has nothing to do with Mind and Maya. Mind and Maya always take us most of the time in the past and for very less time in the future as it never exists in present moment. Present moment is of soul surti and supreme

consciousness. General masses remain about 99 % in the past and 0.29% in the future while 0.01% in the present moment. This is the greatest tragedy on this planet without the blessings of true and real ‘Sat-guru’ of the time, who always concentrate your Surti to make you live in the present moment.

Without establishing all the qualities of Hansa (Surti+Nirti) with soundless soundword one can’t see or meet Supreme consciousness i.e. ‘Sat-purush’ of Amarlok. Our life is never ending Surti channel to let go thoughts and thoughts and concentrate your Surti to establish permanent link with Supreme consciousness through true and real ‘Sat-guru’ of the time i.e. ‘Vai Naam Sat-guru Paramhansa Ji’ to attain permanent salvation on this planet to be free from life and death cycle. Generally people ignore the main and higher aim of permanent salvation from this planet, generally they don’t like the word sacrifice, but they often compromise higher values like permanent salvation to paradise a place of small enjoyment and to continue the cycle and birth and death on this planet.

We must relinquish lower pleasure for body sake and must surrender our trueself to real and true ‘Sat-guru’ of the time to attain permanent salvation i.e. not to come back on this planet to see and face life and death cycle which is all the play of five elements and has nothing to do with life and death phenomenon on this planet. Kal Niranjan i.e. God is very cleaver in befooling the masses at large on this planet regarding Dev loks, ancentor’s loks, seven heavens, seven hells, sunnh and maha sunnh looks which are also temporary in nature. He never allow masses to establish link with ‘Sat-guru’ of the time to attain permanent salvation on this planet.

Surest way to attain happiness is to seek happiness for others and to establish permanent link with true and real ‘Sat-guru’ of the time to have permanent salvation on this planet. ‘Sat-guru’ is just like a boatman to make you to land safely on the shore of the lake or river. In the same way ‘Sat-guru’ take you along with ‘him’ to Amarlok to have Nirvana i.e. freedom from life and death cycle permanently from this earthly cycle of life and death on this planet which is itself temporary in nature.

Rarer of the rarest person on this planet think of attaining permanent salvation on this planet to be free from life and death cycle on this planet. Spiritually elevated souls must possess positive feeling to radiate outside of you as well to consol and uplift others and to redress their injured feelings to infuse hope and confidence in others for their well being and proper direction to them from your side, is sure to put balm on their wounds. It will raise hope of confidence in them, apply balm on their wounds and upliftment of their Surti through “Alive Holy Naam” is surely

going a long way to uplift their soul surti, when they are in dire need of it. Always think of removing sufferings of others and come forward practically to infuse new life and hope among the masses, when they are in dire need of it. Time is a great healer, don't waste time in gossips and idle talks. Do something solid to raise hope in others to uplift soul Surti.

---0---

ANYBODY CAN BECOME ANGRY

Aristotle says :-

That is easy, but to be angry with the right person and to the right degree and at the right time and for the right purpose, and in the right way is not within everybody's power. Thus to me, anger can't solve any problem but aggravate the situation, place, Surti of both and take you to past and future, which are the acts of none else but Mind which always poses problems and problems in the society”

I must stop you now - said Buddha all at-once. His calm and loving response shocked the two men. A person who is not saadhak is unconscious, living in the dark and is still seeking but in the wrong direction. Every one in the universe is a seeker, but a spiritual seeker is conscious and is aware of what he looks and what he is seeking. But unconscious seeker is unaware of what he is seeking and from whom, which matters a lot.

I am looking for a needle. Where did you drop it, the person inquired. “In my hut”, she said puzzled, the young man asked, “If you dropped in your hut, why are you searching here ? The old lady Rabia answered, “Because there is no light in my hut”.

‘Sat-guru’ says who constantly look outwards are ultimately look outwards and ultimately led to their own down-fall, why ? “Antar-atman na pashyanti”, because they fail to look within themselves. The search with due cooperation of ‘Sat-guru’s of the time can solve all the problems of inner worship ‘Alive Holy Naam’.

Lord Krishna says, “Antah sukham” i.e. happiness lies within every soul Surti. Therefore one should seek the blessings of true and real ‘Sat-guru’ of the time to have the blessings of his Paras Surti to be awakened from deep slumber.

---0---

काव्य — 23

संकल्प जब पारस नाम दात संग में प्यारो,
 साधना में सुरति निरति मेल में देरी कैसी रे।
 दूर हो या पास प्यारो,
 ध्यान इसी पल में किया जाता रे।
 इसी पल में रहना जब आ गया प्यारो,
 सत्यगुरु में देखने की बात रे।
 उस का पता सत्गुरु से प्यारो,
 सत्यगुरु की कृपा में उसे जान रे।
 वे तो हर पल साथ प्यारो,
 सत्यगुरु कृपा से होता सब काम रे।
 सत्य प्रेम आनंद की खोज प्यारो,
 अन्दर से अन्दर “वे नाम सब्द” से जान रे।
 सुरति सुरति सुरति में समाया रहता प्यारो,
 “वे नाम सब्द” से होता सब काम रे।
 बाहिर की खोज धोखा प्यारो,
 “वे नाम सब्द” से पकड़ा जाये रे।
 अन्दर की आंख का खुलना प्यारो,
 सब काम कर जाता रे।
 आंखें खोलने से आकाश खो जाता प्यारो,
 आंखों का खोलना बनाता सब काम रे।
 सत्य प्रेम आनंद अंदर से अंदर जाना प्यारो,
 “वे नाम सब्द” में से प्रकटा जान रे।
 अपनी प्रज्ञा पर ज्ञान की धूलि से दूरी प्यारो,
 सरलता “वे नाम सब्द” सुरति से जान रे।
 सत्यगुरु संगत बिन बात बने ना प्यारो,
 लाख करो जे उपाये रे।

सत्यगुरु दर्शन से सब पाते प्यारो
सरलता भरौसा करते सब काम रे।
सत्यगुरु से प्रेम ही प्यारो,
सत्यपुरुष तक जाने की राह रे।
सत्यगुरु पर अपने आप को न्योछावर करना प्यारो,
प्रीयतम का रूप होना जान रे।
प्रेम अपना आपा सत्यगुरु में मिटता प्यारो,
सत्यगुरु प्रीयतम का ही रूप हो जाते रे।
सबै रसायन कर जाना प्यारो,
प्रेम समान एक मत जान रे।
सुरति में चेतना का वासा प्यारो,
सुरति तन सब चेतन जान रे।
प्रेम छुड़ावे कल और कल को प्यारो,
प्रेम से पहुंचो निजधाम रे।
अंदर सौ रही चेतना को जगाना प्यारो,
“वे नाम सब्द” का सच्चा काम रे।
प्रेम प्रकटने से प्यारो,
वैराग्य और त्याग उत्पन्न होते रे।
तन मन का संग छूटा प्यारो,
उस प्यारे सत्यगुरु से जुड़ गई तार रे।

..0..

All your good karmas accumulate and become your spiritual wealth provided you are moving on the path of ‘Satt Bhakti, Sehaj Marg i.e. Bringa Matta.

Imp. :- Listen to that which you never listened or paid attention to, so as to be in the present, with no wish, desire for the future. Hope for nothing what has to happen, let it happen. Always remain in meditation to avoid past and future which has no relevance with the present moment. Always remain in Surti to avoid Mind which always keep you occupied with desires and hopes, i.e. with past and future which have nothing to do with Surti consciousness which always remain in the present moment. Surti is always spiritual seeking while mind always remains in past and future. It has nothing to do with the present.

Buddha's sermons before thousands flowers used to blood out of the season. You should have come to me ten years ago referred to those who came to him to abuse (Buddha).

काव्य 24

कृपा की दृष्टि सत्यगुरु की प्यारो, हर रोग मिटा जाती रे ।
दूसरी फिर वाणी द्वारा प्यारो, शक्तियां साधकों तक पहुंचती जान रे ।
ता से सत्संग का महत्व प्यारो, धन्य घड़ी जब हो सत्संग मिले ध्यान रे ।
तीसरी ऊर्जा स्पर्श से प्यारो, पांव पर स्पर्श से जान रे ।
पांव छूना दर्शन करना प्यारो, सब कुछ पाया जान रे ।
कंई बार ना होई सके, दौ वक्त कर लो रे ।
सदगुरु दर्शन के किये, काल से बचना जान रे ।
दोय वक्त ना हो सके, दिन में करे ईक बार रे ।
सदगुरु दर्शन के किये, उतरो भव जल पार रे ।
एक दिन ना करि सके, दूजे दिन करि लीजिये ।
सदगुरु दर्शन के किये, उत्तम देहि से पार रे ।
दूजे दिन ना कर सके, चौथे दिन कर लीजिये रे ।

—0—

Mind can't be without desire in normal state, but when Surti is concentrated, it can use Surti for the past and future. Reality, truth is always the outcome of Surti and has nothing to do with Mind and Maya. Mind and Maya can't face concentrated. Surti which possesses “Alive Holy Naam” of Supreme consciousness. It is always here and now to face any challenges of Mind and Maya to delude innocent, awakened personalities Surti is just the present to act and perform what is here and now.

People in general cut truth and reality into compartments, and so are far away from truth and reality and cut it into compartments and fail to see and understand, interdependence of all phenomena of life, truth, love and joy. See one in all and all in one which is imperishable, free from time and space, no binding of mind and maya, unbreakable and

broden our perception of reality provided we possess Paras Surti / “Alive Holy Naam” / Soundless sound word which can't be written, spoken in any form or way - bestowed to us by true and real 'Sat-guru Vai Naam Ji' of the time on this planet. We are not Mind and Body, but Hansas of 'Amarlok', imperishable under any condition and situation on this planet. Our purpose of living on this planet and to go back to our real and permanent abode i.e. 4th lok / Amarpur / Sahiban lok from where we have come on this planet to get “Alive Holy Naam” from true and real 'Sat-guru' of the time to get permanent salvation on this planet. We have to fret out true and real 'Sat-guru' to get liberated permanently from this planet which is perishable and has no significance so far as spiritualism is concerned. Develop silence of speech. We have to make our Mind like still water in a pond. That begins gather about us to make us to see our face in it.

काव्य 25

अपने सागर स्वरूप को जानना ही सच्चा काम रे।
तन मन बदलते रहते प्यारो, देखते देखते सब कुछ खोया जान रे।
साक्षी आत्मां अपने आप को प्यारा, तन मन जान लेती जान रे।
यही बात आगे चल कर, दुख का कारण जान रे।
खोजी चेतना से भरा प्यारो, “वे नाम सब्द” पारस सुरति से लेता काम रे।
निगुरा सोया जान प्यारे, तस्वीरों मूरतों से लेता काम रे।
दर्शन करना ही सब पाना प्यारो, दूरी होने पर करो ध्यान रे।
दर्शन से आध्यात्मिक शक्तियां मिलती जान रे।
सुरति से दूरी कम हो जाती प्यारो, ध्यान करना ही सच्चा काम रे।
सुरति क्रौध में जब प्यारो, क्रौधमय होवे जान रे।
सुरति में रचयो संसारा, सुरति ही का खेल है सारा।
जैसे आग में तपिश प्यारो, सुरति में चेतना जान रे।
चेतन सुरति से आनंदमयी प्यारो, 'नाम' ध्यान के बल पर आत्मां निजघर जाये रे।
जिस का स्पर्श करते प्यारो, उसी की शक्तियां गुण अंदर आन समाते रे।
जिस की भक्ति कोई करता प्यारो, उसी में जा समाता रे।

CONSCIOUSNESS IS ETERNAL

चलती चक्की देख कर दिया कबीरा रोये,
दौ पाटन के बीचा में साबुत बचा ना कोये ।
ओ दाना बच जांदा प्यारो, जो किल्ली नाल खलोये ।

It has no past and future, but present which is in bondage of Mind and Body. It has assumed itself as Mind and Body and acts accordingly in the body. It possesses body for centuries together on this planet and thus has forgotten its true nature of freedom. It can't be captured by Mind and body, but it, itself considers itself as segment of Mind and body and work for them and act as per directions of Mind and body. It has become a parrot of the cage and has forgotten that freedom is his birth right and thousands and thousands of times more powerful than Mind and body. The question is who will come to make it understand its true power and nature. It is only a 'Sat-guru' of the time who possesses Paras Surti / "Alive Holy Naam" / Soundless sound word which can't be written, spoken in any way or form. It is only infused by true and real 'Sat-guru' of the time into Surti of the disciple to get soul separated from Mind and Maya and attains freedom from the bondage of Mind and Maya. It requires true faith, trust submission before true and real 'Sat-guru' of the time to get soul Surti from the bondage of Mind and Maya our Surti consciousness has no past and future, it always resides in the present moment. It is free from thoughts, hopes, wishes, desires, prejudice, revenge, personal gain, to tease some body etc. It has to live in the present moment and only in this moment, rest all in Mind and Maya.

Concentrated Surti with "Alive Holy Naam" of Supreme Consciousness. A true 'Sat-guru' knows your song of concentrated Surti and sings it to you. When you have forgotten for centuries together. Those who love you can't be fooled by mistakes you have committed under the act of Mind, can be rectified in presence of 'Sat-guru' of the time. He is aware of your innocence when you feel guilty, your attitude, purpose when you are confused by the impact of Mind and Maya. Mind is nothing else, but your beliefs collected in memory. 'Sat-guru' make you Surti concentrated by soundless sound word, which can't be spoken or read out in any way or form. Concentrated Surti develop openness of Surti to let go Mind and Maya, which take you in thoughts of past and future, which have no bearing with the present i.e. concentrated surti of supreme consciousness through "Alive Holy Naam" / Paras Surti / Soundless sound word. Paras Surti purify you completely i.e. impact of Mind and Maya Paras Surti makes

you free of wishes, desires, hopes etc. which are there in you because of Mind and Maya. Now Mind can't take you to past thoughts, wishes, desires and future dreams of hope, success and benefits of Mind and Maya revolving all around you all the times to keep you occupied and make you Surti as 'his' slave. Surti always try to keep you in the present moment to concentrate on “Alive Holy Naam” bestowed to you by true and real 'Sat-guru' of the time.

---0---

WHAT IS ULTIMATE SIDDHI

.....by Kripalu Ji

(Expert of Vedic Knowledge)

A true saint, guru or 'Sat-guru' never displays or reveals any miracle or miracles i.e. Siddhis or Supernatural powers. People mostly fall in the clutches of these fraudsters posing as saints who perform miracles of a material nature. Let us understand these siddhis in brief, and listen to what jagad guru Shri Kripalu Ji Maharaj says about them :

There are mainly five types of Siddhis :

- 1 The lowest of all is Tamasika Siddhi. This power is practised by the lowest kind of person and the result of “performing it is hell” and only hell on this planet.**
- 2 The second kind is Rajasika Siddhi. This type of Siddhi is exercised by people to protect themselves. This Siddhi keeps you under the bondage of Maya.**
- 3 The third is Sattvika Siddhi and includes powers such as anima, laghima, prakamya and others with these Siddhis a person can come to know the thoughts of anothers. He can assume many types of bodies, he can become invisible to the external (naked) eye and perform many impossible tasks. Seeing such a person, we could easily be fooled into thinking that he is god Himself. However, we should stay thousand miles away from such people, because they are still under Maya's domain and hence, if they are not able to free themselves from the bondage of Maya, how can they perform good work and can perform noble works in the society.**

---0---

THE ULTIMATE GOAL OF MAHA NIRVANA

4 The fourth Siddhi is a spiritual one. Commonly known as Mukti or liberation. A person who acquires this SIDDHI is liberated from the bondage of Maya, but their personality or individuality is destroyed in the process, just like a river which flows into the sea loses its identity in the same way. We will forever be deprived of the opportunity to attain the divine love, bliss of supreme consciousness of 4th lok i.e. Amarpur / Satlok / Sahiban lok / Begampur.

5 Fifth Siddhi is divine love, which according to some is the ultimate Siddhi and our ultimate attainment. The person who attains this Siddhi is not only freed from material bondage forever, but also relishes the ultimate bliss of god's divine love eternity and true and real salvation, in four loks. So, one must have understood that we should be very careful regarding the first four Siddhis and make the fifth one the goal of our life. i.e. the attainment of divine love. We should stay far away from any person who ourselves at risk of drifting away from the primary purpose of this life on this planet.

Nore : V.imp.:- One doesn't learn from successes, from awards, from failures, from prominent personalities, one only learns from true and real sufferer i.e. from 'Sat-guru' of the time. He is real and true sufferer and winner in four loks.

Awakened person is creative while one in deep slumber is destructive in nature one who is blessed with paras Surti is creative in every sphere in life where as one who moves from pillar to post in spiritualism is destructive in every act of life. He is disturbed and make every body destructive in nature. Countries talk of peace but internally remain busy for the preparation of war. Those who are not satisfied with their ownself, their wishes and desires are unfulfilled so they join politics to amass what so ever they can to keep themselves busy and pose themselves as helper to others. One should be of 'Sat-guru' to have soundless sound word to be in the present moment past and future include only desires and desires.

सत्यपुरुष का ध्यान नाहि प्यारो, मान की निशानी रे ।
सत्यगुरु ध्यान से आगे प्यारो, मूल ध्यान कोई ना रे ।

---0---

कर सेवा सत्यगुरु की प्यारो, काल से पल में लेत छूड़ा रे।
जीव पल पल बीता जात प्यारो, सतगुरु से दात पाई तो बनती बात रे।
सुरति को चेतन करना प्यारो, सत्य प्रेम आनंद से नाता जोड़ना जान रे।
निज की पहचान पूर्ण सतयगुरु से प्यारो, झूठे जग से लेन ना देन रे।
वही जागा नींद से बाहिर प्यारो, जिन जाना सत्य की ओर ही चलना रे।
जीवन में मोत के सिवा कुछ ना दिखे, वह ही जागने की ओर चलता रे।

भय बिन भाव ना उपझे प्यारो, भय बिन होये ना प्रीति रे।
जब सुरति में चेतना आई प्यारो, भय गया प्रीति आन समान रे।
जहां दया कर त्वम प्यारो, लौभ मोह का छूटा संग रे।
जहां क्रोध तहं काल प्यारो, जहां क्षमा तहं सत्यगुरु आप रे।
सत्यगुरु ढूंढा पाया प्यारो, प्रेम सत्य का संग साथ रे।
ऐसे घट में साहिब प्यारो, दुनियां जाने नाहिं रे।
करता था तो क्यों रहा प्यारे, अब करि क्यों पछितार रे।
बोते बीज बबूल का प्यारो, आम कहां से खाये रे।
सब कर्मों का फल प्यारो, अपनी आंखों से देख ले रे।
सत्यगुरु दात पाये बिना प्यारो, निज घर कैसे जाये रे।
प्रेमी से ही प्रेम होता प्यारो, सत्यगुरु साहिब में भेद मत जान रे।
सत्यगुरु पाया दात पाई प्यारो, दात में ही निजधाम रे।
जिस को कुछ ना चाहिये प्यारो, सोहि जागा जान रे।
चाह गई चिंता मिटी प्यारो, सुरति बेपरवाह रे।
जिनको प्रेम ही चाहिये प्यारो, उन को जानो साहिब रे।

—0—

सागर का जल खारा प्यारो, पीने योग्य मत जान रे।
दूसरों को अपना जहल प्यारो, पहुंचा सकता मत जान रे।

—0—

ALWAYS REMAIN IN SATGURU’S BELIEF

Baba Nanak consolidation, path, i.e. treads his own path, each engrossed in their own affairs i.e. day to day activities. They have no time of thinking and helping others. Nation building work is thrown on the shoulders of politicians. No one has time to form establish good relations with relatives, friends, neighbourers or even family members. If we want to usher in real change in anywhere, or in nation building, we must first change our own way of thinking, handling, listening, directing, changing self, others and nation as a whole. First of all we must change our personal character and then of others. The national character of its citizens is essential in nation building. The most crucial task, role in building a nation. The national character of its citizens is essential in national building, just as the quality of cement bricks, is vital in construction work.

Trees show us how to develop character. A tree roots are deeply embedded in the soil. Its trunk rises and its branches spread high above. Through this, the tree shows how to usher in real change in a nation’s citizens first consolidation and then expansion. i.e. base in the ground firmly established.

Expansion to spread out every where. e.g., if Train your learners Minds on +ve lines, spiritual thoughts, clear hearted, listen to all and act of your own. Submission before awakened personality. Tree-roots, Trunk-branches – leave, see source of watering the plant at infancy line.

Do as per situation at a particular place, time, space, genetry, situation, gathering topic atmosphere. Victory and defeat : with empty - thoughts : play for the sake of play. The better will win accept the decision with folded hands, with no excuse. Don’t blame self or others, play itself speaks out. Level is known within minutes and then move ahead without grumble. Be ready to accept defeat with folded hands. The better will come out victorious, so be within yourself all the times. Sometimes luck plays prominent rest in one’s life. Complaint and demands don’t pay in life, be sure about that.

It is in giving that we receive. There is give and take in the whole universe. Every one is needed and useful for self and others. Encounter the defeat not the player. Learn more to encounter defeat next time. Hate the sin not the sinner. Love the qualities not the individual alone. Which is the general law of love. Hate the sin not the

sinner; he needs education ‘What we do for one we love’ counts a lot mere talk have nothing to do with love. It is the diet of soul Surti. When concentrated if, however the driving force is internal or self created one, the ideas have a perennial effect (for a long time) excitation, if these are vigorous, can’t block the flow of ideas. Controlled excitation can discipline the ideas to become cohesive (unity) (sticking together) with paras Surti. Make the entire world to sit up and watch. You must have fire of wanting to win but also the balance to see that if you lose, It’s okay. You never play a game to lose. But if you lose, it is still alright within you is possible with “Alive Holy Naam”.

---0---

PRESENT - PAST AND FUTURE

The only reality is present. If you maintain this balance within you, you are awakened personality and true sportsman. This is upto the mark metaphor for life. As a high voltage electron reaches its culmination and the results were announced, it was time for us to take our inspiration from the playing field with awakened personalities i.e. have established link with true and real spiritual ‘Sat-guru’ of the time. Agree and disagree are like two weapons awakened person knows what to use and when or where to use them. For the victory, the sweetness of triumph should not turn into the lethargy of complacency for the loser. The bitterness of defeat should not turn into despair.

Victory should be the stepping stone for heightened levels of performance. Defeat should lead to an honest, true, proper evolution of what was done and what could be improved. We all want to live on hope and frustration which are the gradients of Mind and has nothing to do with ourselves i.e. Surti Soul. You may be in any field these two thoughts are always hunting you and befooling you to make you busy with useless thoughts of Mind and Maya. Live in the present and trust in your own Surti consciousness through “Alive Holy Naam” of true and real ‘Sat-guru’ of the time. What will you do with worldly things, name and fame which exist so long you are in this body, the moment you leave the body for an other, everything, hope, wish, desire is gone.

The knowledge to be here and now establish your present with “Alive Holy Naam” of Supreme consciousness which keep one in the present moment only. Past has gone and future will be known in the present moment, so why to worry for the future which has not yet come.

Two personalities live only in the present moment i.e. ‘Sat-guru’ and supreme consciousness. Establish link with ‘Sat-guru’ and get yourself established with supreme conscious whose segment you are on this planet. Identify your talent, bliss and peace. Body, Mind, intellect are the segments of Mann and Sunnh segment. They are effected by five elements and cosmos. Soul Surti is free uninfluenced by the Kal Niranjan and five elements. Identify with body, mind, intellect and ego. Human being is helpless victim. Shift your attention with “Alive Holy Naam” from true and real ‘Sat-guru’ of the time and find the change within your true self (soul Surti) along with body. Love your family without expectations. Accept them as they are, not as you would like them to be. Then they will adore you one must try to arise above worldly things wishes, desires and contribute morally and spiritually to uplift the soul Surti of the masses by the grace of true and real ‘Sat-guru’ of the time to have “Alive Holy Naam” to make Surti, Nirti free from the bondage of Mind and Maya.

The Holy Soundless sound word i.e. Paras Surti / “Alive Holy Naam” bestowed to ‘Sat-guru Vai Naam Ji’ of the time, as he is not known by many, but a few on this planet of Kal Niranjan / God who is governing these three lok of Mortal in nature. A thing that ‘Sat-guru Vai Naam Ji’ possesses, is bestowed to ‘Him’ by supreme soul i.e. supreme consciousness of 4th lok / Amarlok / Sahiban lok where “Sat-purush Himself” and param Hansas reside. There is not birth and death of any nature. It is known as Amarlok / Satlok / Sahiban lok of pure Hansas.

Believe in your self like ‘Sat-guru Vai Naam Ji’ of Amarlok, even when others doubt you. You can become true creative and achieve anything of spiritual in nature on this planet which is only one in the whole universe for true and real spiritualism on to uplift soul Surtis of awakened people. You must set your Surti on “Alive Holy Naam” to awaken it to achieve the target of life on this planet. True liberation is only possible on this planet only. The only driving force inside every human being / creature is soul Surti. It can function inside the body, where as Mind simply infuses ideas, desires, wishes and can’t perform any work itself. Thus god can only infuse ideas through Mind and intellect in whole life in these three loks.

Talk in everlasting words and dedicate them all to me and I will give you all my life (the more precious soundless sound word). I am here if you should call to me. You think that I don’t even mean a single word I say.

We all have different ways of looking at the world. We have choices of different in nature, at different times, tear them apart or bring them together we have different ways of looking at the world. Everyday we are faced with choices will you take action against these two type of people. Loving caring words. Do our words cause, division or bring them together or go unheaded. Loving caring words that make people feel comfortable, bring people together, but we seldom think about the words we say or the action we take.

It is important to have loving (words) interaction with every one, that we see, meet. Our words are very potent and have a long lasting effect. When you listen others calmly with patience, when you feel conversation genuine giving peace and developing calmness, you continue and want to continue the conversations. They can provide healing touch to your inner conscience. They can even make them to change their life from out to in , away from Mind and emotional feeling. To develop love and compassion for others.

We should be very careful about the words we utter openly or in silence to ensure that these words are surely going to put balm on other's wounds. These words can influence their way of dealing, behaving, and talking in general with others we care and love. Be careful that these words in no way should harm any one or to injure their feelings one way or the other.

“औरों को शीतल करे आप भी शीतल होये”

Collection, arrangement and way of putting forth is all more important, as they are the garments of the soul Surti, they will remove the old rotten thoughts and ideas which were part and parcel of once life for years together, will shed off old clothes of Mind and Maya and to have of true Surti itself. Saints are jugglers of words to change the life style of lacs and lacs of souls on this planet. Our words, even if spoken in fest, have the power to heal or to harm innocent persons. Feelings of love or hatred words are ointment in the real sense to have instant impact on one's soul Surti. There is surely impact and outcome of our words, ways of talking, ways of addressing, our love, peace, joy's reflection in words. They can put you on the elevated place or to thrown into the dust bin. All is there well in your hands.

AS YOU SOW, SO SHALL YOU REAP

HOW TO ATTAIN AWARENESS

During conversation, listen more than what you speak. Speaking reflects the Mind and listening reflect Surti / Concentration, but that too should be limited otherwise you will start moving in past and future i.e. in time and space and will fall in the clutches of Mind and Maya.

The awaken person talk less, listen less i.e. to be in the present moment and have attained awareness. Nature (prakriti) and Kal Niranjan (God) are always together i.e. (same) complementary and completing each other. (One visible & other invisible). It is all grand show of nothingness. It is purely figment of imagination, rubbish before the awakened surti-consciousness / concentration and abandoned Mind (Mann) and Maya (body). It is nor truth, nor pure, consciousness, nor blissful one i.e. joy. One needs to be aware of himself, Mind and Surti at large, in true essence is the aspiration of the seeker who under the guidance of true and real ‘Sat-guru’ of the time.

Frame of Mind :

There are two defining sentences of the doctrine of dedicated work :-

- (a) Karam Yoga without reward (Lord Krishna)**
- (b) Attain state of calmness under all Kind of situations be it success or failure.**
- (c) State of calmness of Mind (Mann) and senses persistence is all about continuing to perform an actions or working for a personal or universal objective, even if we have failed in our Attempts and tired of trying.**

Martin Luther Kind Jr said, “If you can’t fly, then run, if you can’t run then walk. If you can’t walk, then crawl, but what ever you do you have to keep moving as per directions of true and real ‘Sat-guru’ who possesses soundless sound word i.e. bodyless word bestowed to me, ‘Vai Naam Sat-guru’ of the time who is flying when needed, running when demand is needed, walks when soul Surti want so and crawling for isolated and depressed regarding spiritualism. When your ist step is taken towards the right direction then you are close to the door of success. Try to seek good from the guidance of true and real ‘Sat-guru Vai Naam Ji’ of the time. Persistence, determination, dedication, devotion is needed in any

“Vai Naam Surti Dhara” “Nijdham Ke Santon Ko Samarpit”

undertaking regarding achieving target of attaining permanent salvation i.e. and of life and death cycle on this cosmos. The one who is lost, with soundless word from ‘Vai Naam Ji Sat-guru’ of the time, invariably returns as new with elevated Surti - free from the impact of Mind, Maya and senses.

1 Listen more than speaking reflects a whole state of Mind from the side of speaker and Surti state from the side of listener. Indicative sincerity and humility, which is the essence of a elevated.

2 Surti of a fine action of Surti to let go Mind to have rest in Mool Surti. The awakened persons talk less and listen less is the basic principle of those who are true disciples of true and real ‘Sat-guru’ of the time.

3 Prakriti and Kal Niranjan (God / Kalpurush) are always together i.e. (same) complementing and completing each other. It is all grand show of nothingness. It is purely figment of imagination, all rubbish before the awakened Surti and abandoned Mind and Maya.

V.Imp. :- It is nor truth nor pure consciousness nor blissful one i.e. joy.

4 One needs to be aware of himself, Mind and Surti in large, in true essence, is the aspiration of the seeker who under the guidance of true and real ‘Sat-guru’ of the time.

5 There are two defining sentences of the “Doctrine of dedicated work”, (a) Karam Yoga without reward (In the bhagwad gita one. Samatvam Yoga uchyata.

6 State of calmness of Mind and senses only when, we possess some superior power to suppress the impact of Mind and Maya on Surti of every Hansa.

7 Secondly there should be complete surrender before true and real ‘Sat-guru’ of the time.

8 The choice with reference to action is to go by proper guidance and direction of principles laid down by the ‘Sat-guru’ of the time. Right and wrong should not be as said in scriptures and personal likes and dislikes.

9 Scripture say about Mind and Maya and nothing regarding Soul Surti which is Hansa in jiva Himself fully loaded with all the four essential qualities i.e. Truth, Love, Joy and Peace.

10 In chapter 13 Krishna says that knowledge of the self can be attained by cultivation of virtues.

11 Absence of pride and vanity, non-injury, patience, perseverance (steady effort to achieve an aim), service of teacher - guru, self control, prompting, resisting tempting objects of senses.

12 Reflecting on the ephemerality (very short lived) of life, non-attachment, non-entanglement with family, imperturbability (not easily troubled or worried i.e. calm).

13 Intense devotion to the divine, frequent solitude. Relation of statistical physics and quantum theory.

14 Steady pursuit of spiritual enquiry and strong aspiration for truth, love, peace and joy cultivation of these virtues leads one to attain “knowledge of self”.

15 How many people one served on earth is countable. You get something to share not to hoard or amass. True human being lives for other. We have been sent on the planet to serve the poor and needy rather than hoarding and amassing wealth for their own kith and kins.

16 In the classification of material qualities, Lord Krishna said in chapter 18 of the Gita, “understand that knowledge to be in the mode of goodness by which a person sees the one undivided, imperishable reality within all diverse living beings”.

17 It talks of connection between anything with any other thing. A saatvik person sees a world of many connected to each other.

18 The world is conceived (visualised / presumed) as a truly many body system of interacting entities, connected by an all-unifying force i.e. Surti (truth, love, joy and peace).

Rajasik :- Talking about rajasik nature, Lord Krishna said, “That knowledge is to be considered in the mode of passion (interest / inclination) by which one sees the manifold living entities in diverse bodies as individual and un-connected. As they have to grind their own axe.

19 Rajasik person sees the world as isolated, non-interacting, un-connected. The idea of inter connection is the basis behind the many body theory in statistical physics and is handled by both classical and quantum theories, more so by the later. Visualising an unconnected world is easy.

Therefore many people think that way. That is why rajasik people are more in number than the saatvik persons. It is a self centric picture of the society. But the true picture of life is an inter connected one. We all living human being, animals, birds, water deweters, insect of all nature have Surti soul in them. This represents unity in diversity, we all have come from 4th lok, Amarlok / Begampur / Satlok. If one member of the army segment takes a wrong step, he immediately corrects it by skipping one step.

20 Once there is relaxation in the discipline, they let loose. The order dissipates. Some who do see whether or not the world is connected. For them it is meaningless, because they always live in a self-created darkness, devoid of self knowledge.

21 These are tamasik people who are lazy, slothful inert and blind to reason and truth. Extremely spiritual i.e. Saatvik are rarer of the rarest as in the presence of Mind & Maya one can't attain awareness.

22 ‘Vai Naam’ Paramhans says that every living creature, in this cosmos is Hansa i.e. union of Surti and Nirti i.e. Pran, and having nothing to do with Mind and Maya, senses, it is complete in itself and are segments of Super Soul “Sat-purush” Himself.

23 So every Hansa in every respect connected to each other regarding their qualities of truth, love, joy (Annand) and peace which are the qualities of Supreme consciousness i.e. “Sat-purush” Himself, who is limitless and endless.

24 The main hurdle in attaining awareness and self realisation is Mind and Maya which are one and the same thing. They are related to time and space, whereas we as Hansas have nothing to do with time and space. Hansas have no relationship with body, Mind.

25 Senses and everything else, be it inanimate or animate, visible or invisible, static or in motion, so time is past and future and not present moment. It exists in memories. It is past and future only. It is indeed perplexing, but the reality of Mind and Maya has confused Surti of every Human being on this planet.

26 Time can be correctly understood if we realise that all Surti Souls are inter connected. If you ignore this aspect of human life. You can't attain awareness and can't realise your ownself and the existence of Supreme Soul can't be realised by any one on this planet.

---0---

सतगुरु भक्ति से शिष्य प्यारो, अंदर से अंदर सतगुरु चरणों तक पहुंचा जान रे ।
ता से जन्म मरण से पार प्यारो, 'वे नाम' सब्द सुमिरन से उस पार रे ।

पल पल सुरति 'वे नाम' सब्द में प्यारो, सुश्मिन चेतन करावे भव पार रे ।
तन मन छूटे सुरति चेतन से प्यारो, जीवित मरना अजर अमर कर जाये रे ।

मन मस्तिष्क जान कर प्यारे, मति करो विश्वास रे ।
सब्द सुरति में चले प्यारो, कबहु ना ग्रासे काल रे ।

साधक तन तजे कया रोईये, चेतन सुरति महां चेतन घर जाये रे ।
रोईये साकट बापुरे, जो चौरासी के बाजार बिकने जाये रे ।

—0—

सतगुरु संगत लाभ

नाम दान (सार सब्द) जो “सतपुरुष” सुरती से सतगुरु की सुरती में डालते हैं। ‘सतगुरु सुरती’ से जब “सतपुरुष सुरती” का मेल होता है वह पारस सुरती बन जाती है। नाम दान देते समय सतगुरु पारस सुरती जीव के मन और आत्मा को अलग कर देती है। अच्छे बुरे का भेद मिलता है। क्या करूं, क्या नां करूं, सुरती से जाना जाता है। सुरती से सुनना, सुरती से देखना, कुछ नां करना। सुरती से सुनना, कुछ नां बोलना, बहुत कम बोलना, दुश्मन से सन्धि करना, कोई वचन नां देना। भूतकाल को भूल जाना, वर्तमान काल में इसी पल में जीना, सदा सुरती में रहना। श्रद्धा और विश्वास जगाना। सदैव सुरती में रहना, विचार व मनन नहीं करना। निरख परख के सतगुरु से सब्द लेना। वहम को कौसों दूर रखना, ये प्रेम तार तौड़ देता है। सत्संग की महत्त्वता। प्रेम का फूल खिलने लगता है। ध्यान ही आत्मा, ध्यान ही सुरती का भेद। सुरती जागी, मन माया नांहि (कुछ भी नांहि), संसार गया। अच्छे बुरे का भेद। क्या करूं और क्या नां करूं। सतगुरु सुरती, वाणी, दर्शन सुरती एकाग्र करे। मन, मान, माया, औंकार का संग टूट जाता है। प्रेम की जोत जग जाये। शब्द और सब्द में भेद मिलता है। ज्ञान क्या है – इसकी जानकारी मिलती है। भक्ति में कर्मों का महत्त्व। अमर लोक/सत खंड-चौथा लोक ही हम सब हंसों का सच्चा देश और घर है। पूर्ण मोक्ष की जानकारी मिलती है। गुरु और सतगुरु में भेद। सतपुरुष ही अमरलोक और उनका हम सब हंसों से नाता। रिश्ते नाते ही तो बंधन का कारण हैं।

रोग, सोग, ताप, संताप का भेद और कारण। सब्द महान की महिमा।
सतगुरु सम भगवान/औंकार/निरंकार की महिमा नाहिं।
सतगुरु भक्ति (परा भक्ति) निर्गुण सर्गुण से पारा।
तीन लोक में मन है राजा, चौथा लोक सतपुरुष का प्यारा।
सतगुरु चौथे लोक का भेदी, आत्मा और मन को अलग करना।
साधक को अमरपुर कैसे संग लेता है।
चौथे लोक (अमरपुर) का आद और अंत नाहिं।

पाँच चौर –

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार को आत्मा से अलग करता है।
जात, धर्म, पंथ, पद-प्रेम में जान दरार।
सतगुरु दास/गुलाम होता है-सेवा करता है करवाता नहीं।
सार सब्द-सुरत सब्द की महिमा न्यारी ज्ञान समाधि सुरती सूं।
सुरती सब्द, स्वांसा, सुरती ईक तार कैसे बने।

सुरती निरती आत्मां का जोड़ कैसे ?

खर, अक्षर, निःअक्षर का भेद कैसे पाओ ?

आशा में सेवा का कोई लाभ नहीं कैसे ?

मान क्या हमारा शत्रु है — पर कैसे ?

मित्र, स्तर से छोटा बड़ा क्यों ?

भाव वंत बनो — क्यों, कैसे ?

निर्लोभी, निष्कामी सतगुरु महान कैसे ?

सतगुरु दर्शन बार बार क्यों ?

सतगुरु, ‘किल्ली’ क्यों और कैसे ?

सुरती ध्यान, कथा कीर्तन की महत्त्वता कैसे ?

सतगुरु सब्द मोक्ष प्रदान कैसे है ?

सतगुरु महिमां, महंदि, कदली, सीप, भुजंग मुख से क्यों की गई ?

दुख सुख एक समान कैसे लें ?

निज का दोष क्यों नहीं दिखता ?

चाह गई, चिंता मिटी कैसे ?

सत्संग में सतगुरु संग विरह और विराग कैसे उत्पन्न होता है ?

सत जानी, संतन संग कैसे ?

हमारे अंदर लाल रत्न कैसे और क्यों हैं ?

जीवन में जीव का जागना कैसे हो का भेद ?

हम कहां से आये — क्यों और कहां जाना है हमको ?

नाम बिन सभी झूठ कैसे ?

गुरु मन क्यों ?

मन का तजना सहल नां क्यों ?

सत, तप, भक्ति, प्रेम, विराग क्यों सहज के अंग हैं ?

शांत होना ही पाना है, कैसे और क्यों ?

दुख सुख दोनों काल क्यों और कैसे ?

निर्गुण सगुण में सहज के गुण नांहि, चार युग ईक कैसे हों ?

मुक्ति फल, भक्ति, कर्म, चार मोक्ष के धाम कैसे और क्यों ?

चार मुक्ति अवधि पश्चात पुनः गर्भ स्थान क्यों ?

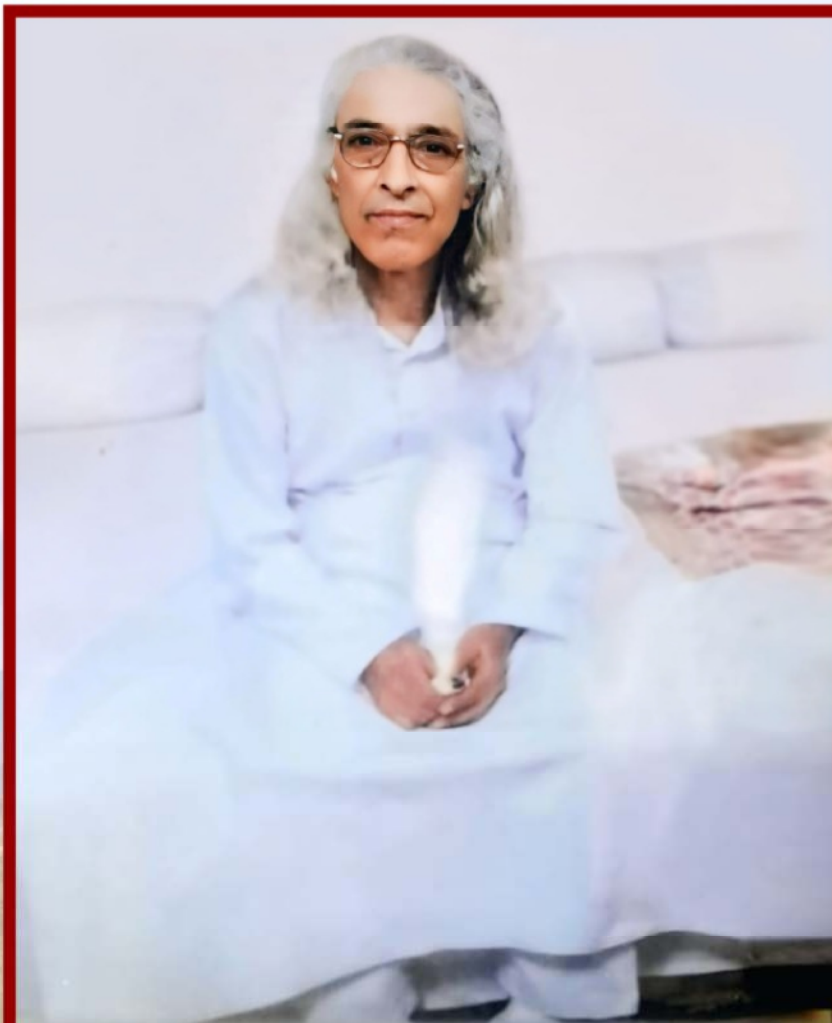
—0—

इति श्री

एक समर्पित साधक 'उज्जवल जी' और "बड़े साहिब (सक्षम) जी"



हम सब कितने भाग्यशाली आत्मा हैं जिनको जगाने के लिये इसी पावन घरती पर कोई ना कोई संत आते रहते हैं। सर्वप्रथम संतों के संत परमहंस साहिब कबीर जी आये उन्होंने अपनी ड्यूटी बड़ी श्रद्धा से पूरी की, फिर उनके निजधाम जाने के बाद कोई संत निजधाम से घरती पर नहीं आया। 600 साल बाद संत शिरोमणि 'परमहंस संत वे नाम जी' इस दास के रूप में इसी पावन घरती पर आये। पूर्ण संतों का आगमन हर जीव आत्मा को जगाना सुरति सूँ चेतन करना, फिर अपने घर निजधाम लेकर जाना, ऐसा संत पूर्ण ब्रह्माण्ड नहीं अपितु चारों लोकों का मालिक बन कर आज इस पावन घरती पर आया है। मुझ दास द्वारा कई जीव आत्माओं को मौख मिला, सीधा मानसरोवर और निजधाम भेजा गया। निराकार भगवान भी अपनी पूरी पराकाष्ठा से काम करते हैं और सत्यपुरुष अपनी ऊर्जा से पूर्ण सतगुरु में तदरूप बनकर ही काम करते हैं।



Sat pursh Jyot Sawroop Ji
1 feb 2022